

श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्

संवृत्तिकं

श्रीहरिनामामृतव्याकरणात्

श्रीगौडीयवैष्णवसम्प्रदायाचार्यवर्येण-वेद-षड् दर्शनेतिहास-पुराणशब्दानुशासन-ज्योतिष-
काव्यालङ्कार-संज्ञीत-छन्दः-शास्त्रादिपारावारपारीणेन महामहोपाध्यायाध्यापक-
निकरैः परमबृहत्तमसिद्धसङ्घैश्च निषेवितपदपङ्कजेन वैष्णवसिद्धान्तराज्य-
रक्षणैकसेनापतिना श्रील-सनातन-रूपानुगवरेण परमहंसकुलमुकुट-
मणिना श्रील-श्रीजीवगोस्वामिप्रभुणा प्रणीतम्

श्रीवृन्दावनधामवास्तव्येन न्यायवैशेषिकशास्त्रि, नव्यन्यायाचार्य,
काव्यव्याकरणसांख्यमीमांसा वेदान्ततर्कतर्कतर्क
वैष्णवदर्शनतीर्थादिचुपाध्यलङ्कृतेन
श्रीहरिदासश्यास्त्रिणा
सम्पादितम् ।

सद्ग्रन्थ प्रकाशक
श्रीगदाधरगौरहरिप्रेस
श्रीहरिदास निवास, कालीदह,
पो०—वृन्दावन, जिला—मथुरा,
(उत्तर प्रदेश) पिन—२८११२१

श्रीश्रीगौरगदाधरो विजयेताम्

मुद्रक*प्रकाशक :—

श्रीहरिदासशास्त्री

श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस, श्रीहरिदास निवास, कालीदह,

पो०—वृन्दावन, जिला—मथुरा (उ० प्र०)

पिन—२८११२१

प्रथमसंस्करणम्—एकसहस्रम्

प्रकाशन सहयोग—१०५.००

प्रकाशनतिथि—

श्रीश्रीजगन्नाथदेवस्वरथयात्रा

श्रीगौराङ्गाब्द ४६६

५ आषाढ़

वङ्गाब्द १३६२

खुष्ठाब्द १६८५ २० जून

सर्वस्वत्वं सुरक्षितम् ।

[१]

* श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् *

विज्ञप्ति:

श्रीचैतन्यमतानुगा बहुविधैस्तत्त्वैः समुद्भासिता,
सद्भक्ति प्रतिपालनी सुवचसा प्रेमार्थ संस्थापिका ॥
जीवातुर्हरिभक्तजीवनचये चित्तश्रुतिप्रीतिदा,
श्रीजीव प्रतिमा जगद्विजयिनी सर्वैधिया धार्यताम् ॥

प्रस्तुत ग्रन्थ सुप्रसिद्ध श्रीहरिनामामृत व्याकरण है, इसमें प्राचीन एवं अर्वाचीन शब्दानुशासन सम्बन्धीय सुसिद्धान्त समूह सङ्कलित हैं। सुप्रसिद्ध सामग्री समूह एवं सुख्यात प्रक्रिया समूह विभूषित होने पर भी श्रीजीवगोस्व मि चरण के हस्त सौष्ठव से यह ग्रन्थ अपूर्व आस्वादनीय हुआ है। ग्रन्थोपसंहार में ग्रन्थकार की उक्ति यह है—

कृष्णत्राकृतमेतत्तस्माद्विफला न चात्र मात्रापि ।
अपितु महाफलयुक्ता, तल्लीलाकाव्यवज्जयति ।
हानीयं पाणिनीयं रसवदसवत् काकलापः कलापः
सार प्रत्यागि सारस्वतमपहतगीर्विस्तरो विस्तरोऽपि ॥
चान्द्रं दुःखेन सान्द्रं सकलमविकलं शास्त्रमन्यन्नधन्यं
गोविन्दं विन्दमानां भगवतिभवतीं वाणि नोचेद् ब्रवाणि ॥
पानीयं पाणिनीयं रसमृदुरसवन्मुत् कलापः कलापः,
सार श्रीसारि सारस्वतमधिमधुगीर्विस्तरो विस्तरोऽपि ।
चान्द्रं सौख्येनसान्द्रं सकलमविकलं शास्त्रमन्यत् प्रशस्तं
गोविन्दं विन्दतीं त्वां यदि भगवति गीर्वाणि वाणि ब्रवाणि ॥

अग्रिम ग्रन्थ में और भी आपने लिखा है—

भगवन्नामवलिता भगवद्भक्तितत्परैः । वृन्दावनस्थ जीवस्य कृतिरेषातु गृह्यताम् ॥

निर्निमित्त हितकारी निसर्ग करुण निखिल ऐश्वर्य्य माधुर्य्यादि शक्तिमण्डित विश्वकर्त्ता श्रीपरमेश्वर की रचि एवं कृति की अतीव अभिव्यक्ति मानव शरीर रचन में हुई है। श्रीमद्भागवत ३।२६।२८-३३ में उक्त है—

“जीवाः श्रेष्ठा ह्यजीवानां ततः प्राणमृतः शुभे । ततः सचित्ताः प्रवरास्ततश्चेन्द्रिय वृत्तयः ॥
तत्रापि स्पर्शवेदिभ्यः प्रवरा रसवेदिनः । तेभ्यो गन्धविदः श्रेष्ठास्ततः शब्दविदोवराः ॥

रूप भेदविदस्तत्र ततश्चोभयतोदतः । तेषां बहुपदः श्रेष्ठाश्चतुष्पादस्ततोद्विपात् ।

ततो वर्णाश्च चत्वारस्तेषां ब्राह्मण उत्तमः । ब्राह्मणेस्वपि वेदज्ञो ह्यर्थज्ञोऽभ्यधिकस्ततः ।

अर्थज्ञात् संशयच्छेत्ता तत श्रेयान् स्वधर्मकृत् । मुक्त सङ्गस्ततो भूयानदोग्धा धर्ममात्मनः ।
तस्मान्मय्यपिताशेष क्रियार्थात्मा निरन्तरः । मय्यपितात्मनः पुंसो मयि संन्यस्त कर्मणः ।
न पश्यामि परं भूतकर्तुः समदर्शनात् ॥”

समस्त प्राणिनों के मध्य में मानव श्रेष्ठ है । उसमें से अपने को भगवदधीन मानकर निरभिमानी व्यक्ति श्रेष्ठ है, उसमें से भी सर्वत्र भगवान् की स्थिति को उपलब्धि करके आत्मवत् अपर के हिताचरण में जो व्यक्ति रत रहता है वह श्रेष्ठ मानव है । इस प्रकार श्रेष्ठ मानवना एकमात्र ईश्वरीय शिक्षा से ही होती है । और यह शिक्षा शास्त्राध्ययन से पूर्ण होती है । मङ्गलदायक अनुशासन को ही शास्त्र कहते हैं, और अनुशासित जीवन ही श्रेष्ठ है । शिक्षा प्रदायक शास्त्र में वेद एवं वेदानुगत शास्त्रों का स्थान सर्वोद्भूत है । उसमें भी व्याकरण का स्थान मुख्यवत् कथित है—

“शिक्षाघ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्”

कारण, पद पदार्थ का सम्यक् विशुद्ध ज्ञान व्याकरण से ही होता है । ज्ञानोन्मेष के समय से सुनिश्चित शिक्षा की आवश्यकता होती है, अतः ऋषियों ने भा० २।१।११ में निर्णय किया है—

“एतन्निविद्यमानानामिच्छतामकुतोऽभयम् ।

योगिनां नृप निर्णीतं हरेर्नामानुकीर्तनम् ॥

साधक सिद्ध प्रभृति व्यक्तियों के पक्ष में श्रीहरिनाम व्यतीत अन्य श्रयस्कर अवलम्बन नहीं है । कारण, श्रीहरिनाम ही सर्वजीव हितकर आचरण का मूर्त आदर्श है । भोगलिप्सु मानवों के पक्ष में भी श्रीहरिनाम ही मुख्यरूप से तत्तत् फल साधक है,—अर्थानुसन्धानपूर्वक श्रीहरिनाम ग्रहण करने से स्पृद्धासूया मत्सरदि विद्वरित होकर चित्त निज अभीप्सित पथ में रत होता है । इससे एकता होती है । मुमुक्षु-व्यक्तियों के पक्ष में यही मोक्ष साधन है । कारण, भा० ६।२।१० में उक्त है—

“नामव्याहरणं विष्णोर्यतस्तद्विषयामतिः ॥”

“नाम व्याहरणात् तद्विषया नामोच्चारक पुरुष विषया मदीयोऽयं मया सर्वतो रक्षणीय इति विष्णोर्मति-र्भवति” योगी ज्ञानी प्रभृति का भी यही हरिनाम फल रूप में निर्णीत है । नात्र प्रमाणं वक्तव्य मित्यर्थः” अतएव जावालि संहिता में उक्त है—

“हरेर्नाम परं जप्यं ध्येयं गेयं निरन्तरम् कीर्तनीयञ्च बहुधा नवृत्तीर्बहुधेच्छता”

हरिनाम ग्रहण से ही श्रीहरि को ‘यह मेरा है’ इस प्रकार निश्चयात्मिका बुद्धि होती है, अतः श्री-हरिनामामृत व्याकरण का गुम्फन अवरोह भूमिका क्रम से हुआ है । अन्यान्य शब्दानुशासन समूह आरोह भूमिका क्रम से होने के कारण उसके अध्ययन से प्रायशः भगवद्बहिर्मुखता ही होती है । सूत्रारम्भ से इसका निर्वाह यथायथ रूप से हुआ है—“नारायणादुद्भुतोऽयं वर्णक्रमः” यह प्रथम सूत्र है । इसका विवरण श्रीमद्भागवत के १।१।१ “तेने ब्रह्महृदा च आदिकवये” एवं भा० २।४।२२ “प्रचोदिता येन पुरा सरस्वती” में है । इससे प्रतिपन्न होता है कि श्रीनारायण ही निज नाभिकमलज ब्रह्मा के मुख से शब्द ब्रह्मा को प्रकट किये थे । श्रीमद्भागवत १२।६।४३ के अनुसार श्रीनारायण से प्राप्त नाद ब्रह्मा से ही श्रीब्रह्मा ने अन्तःस्थ एवं उष्मादि वर्णसमूह को प्रकट किया है ।

इसमें मातृका वर्णमाला क्रम से ही क्रमयुक्त वर्णसमूह स्वीकृत हैं, एवं (चतुर्दशः सर्वेश्वर) स्वर वर्णों का ग्रहण भी हुआ है, व्याकरण प्रणेता के मत में ‘लू’ स्वीकृत नहीं है, किन्तु क्रमोत्पन्न वर्णसमूह में दीर्घ

लूकार का बहुल प्रयोग है। मातृका वर्णन्यास में यह सुप्रसिद्ध है। अतः प्रस्तुत व्याकरण की संज्ञा सहज सुखबोध एवं स्वाभाविकी है। स्वरवर्ण-सर्वेश्वर, दश वर्ण-दशावतार, लघु वामन-गुरु-त्रिविक्रम, त्रिमात्र-महापुरुष, व्यञ्जन-विष्णुजन, प्रभृति संज्ञा भी अन्वर्थ गुण सम्पन्न हैं। एवं पुरुषोत्तमलिङ्ग, लक्ष्मीलिङ्ग, ब्रह्मलिङ्ग संज्ञा भी, अनवद्य सौष्ठव पूर्ण है।

सन्धिसूत्र—

“दशावतार एकात्मके मिलित्वा त्रिविक्रमः” “इद्वयमेव यः सर्वेश्वरे” इत्यादि स्थलों को अवलोकन करने से सारल्य की प्रतीति सुस्पष्ट होती है। सूत्र विरचन में अर्थबोध हेतु, वृत्ति टीका भाष्यादि की आवश्यकता न हो, इसका निर्वाह भी सुष्ठुरूप से इस ग्रन्थ में हुआ है। कारण—सूत्र रचन में—प्रथमा, द्वितीया, षष्ठी, सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है। इस विषय में ग्रन्थकार का कथन यह है—

एवं सूत्रं ततो वृत्तिरिति विस्तर शङ्कया, सूत्रेनैवार्थ सिद्धिस्तु यथा स्यात् क्रियते तथा। साधनानुक्रमार्थश्च नाधिकारेण सूत्र्यते। अन्यथा प्रक्रिया भिन्ना मृग्येताज्ञप्रबोधिनी ॥ ‘प्राङ्’ निमित्तं तथा ‘कार्यो’ ‘कार्यं’ ‘पर निमित्तकम्।’ अत्र क्रमेण वक्तव्यां प्राय सूत्रेषु सर्वतः। क्रमाच्च पञ्चमी षष्ठी प्रथमा सप्तमी तथा। क्वचित् परनिमित्तस्य स्थाने विषय सप्तमी। कार्यं पूर्वं पञ्चमी स्यात्, कार्यस्थाने तु षष्ठिका। कार्यं तु प्रथमा वाच्या, सप्तमी विषये परे। विनायोगे निषेधार्थं द्वितीया क्वचिद्विषयते। सर्वाङ्गासम्भवो यत्र स्वल्पान्यङ्गानि तत्र तु। अतो बालक बोधाय पदं विच्छिद्यमूर्द्धनि। अङ्गादेया विष्णुभक्ति व्यक्त्यर्थं सर्वसूत्रतः ॥”

ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा भी यह है “असिद्धरूपं न त्याज्यम्, प्रतिज्ञेयं कृद्वाप्तका।”

अत्र व्याकरणे त्वन्यत्रैवासिद्ध रूपं मध्ये मध्ये न त्यज्यते, किन्तु सिद्धं कृत्वंव त्यज्यते। तत्तच्च कृत् पर्यन्तं ज्ञेयम्। न समासतद्धितयोरित्यर्थः। दर्शनीयन्त्वग्रे। (४३)

शब्दानुशासन समूह के मध्य में श्रीहरिनानामृत व्याकरण सर्वाङ्गीण वैशिष्ट्य मण्डित अनुपम ग्रन्थ है, इस संस्करण के प्रथमांश में अन्यान्य व्याकरणों के विषयों का तुलनामूलक चित्रण विन्यस्त है। ग्रन्थोप-संहार में ग्रन्थकर्ता का निर्देश यह है—

“छान्दसाप्रचरद्रूपरुद्धशब्दान् विना मया।

अत्रालेखि तदिच्छाचेद्दृश्योऽन्यः शास्त्रसंग्रहः ॥”

तदनुसार प्रस्तुत संस्करण में वैदिक प्रक्रिया, शिक्षा प्रकरणम् उणादि प्रकरणम्, गणपाठः, धातु-संग्रहः, सूत्रसूची, कारिकासूची, प्रभृति प्रयोजनीय विषयों का सन्निवेश हुआ है। प्रस्तुत व्याकरण—क्रमबद्ध संज्ञा सन्धि प्रकरणम् (१) विष्णुपद प्रकरणम् (२) आख्यात प्रकरणम् (३) कारक प्रकरणम् (४) कृदन्त प्रकरणम् (५) समास प्रकरणम् (६) तद्धित प्रकरणम् (७),—इन सात प्रकरणों से पूर्ण है। इस ग्रन्थ की बालतोषणी टीका, तद्धितोद्दीपनी टीका, अमृता टीका, एवं जयपुरस्थ श्रीगोविन्द मन्दिर ग्रन्थागार में रक्षित अप्रकाशित एक टीका भी है। भरतमल्लिक कृत कारकोल्लास ग्रन्थ भी श्रीहरिनानामृत व्याकरण के कारक प्रकरण के अवलम्बन से रचित है। लघु हरिनानामृत व्याकरण भी मुद्रित एवं हस्तलिखित उपलब्ध है।

श्रीचैतन्यभागवत (मध्य १।१४.) में लिखित विवरण के अनुसार विदित होता है कि—शिक्षाव्रती निगर्स करुण श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु गयाधाम से प्रत्यावर्त्तन पूर्वक व्याकरण शास्त्राध्यापन के समय सूत्र

वृत्ति, एवं टीका की व्याख्या में श्रीहरिनाम की ही समन्वयात्मक व्याख्या करते थे। अनन्तर श्रीमन्महाप्रभु श्रीचैतन्यदेव श्रीसनातन को श्रीभागवतानुसारि भक्तिशास्त्र प्रणयन हेतु जो उपदेश किये थे उसमें प्रस्तुत व्याकरण सम्बन्धीय विषय सन्निविष्ट था। उसके अनुसार लघु हरिनामामृत व्याकरण की रचना श्रीसनातन के उपदेश द्वारा हुई थी। उसका ही सुपरिष्कृत रूप प्रस्तुत श्रीहरिनामामृत व्याकरण है।

व्याकरणशास्त्र बालशास्त्र नाम से सुप्रसिद्ध होने पर भी श्रीहरिनामामृत व्याकरण ही उसका अपवाद है, अर्थात् यह केवल बालशास्त्र ही नहीं है, किन्तु यह प्रौढ़शास्त्र है। कारण, श्रीहरिनामामृत व्याकरण पठन-पाठन से श्रीभागवतनाम की असकृत् आवृत्ति हेतु भागवत साहित्य सुख ही आस्वादिता होता है। ग्रन्थारम्भ में ग्रन्थकार ने स्वयं ही कहा है—

“कृष्णमुपासितुमस्य स्रजमिव नामावलिं तनवै ।

त्वरितं वितरेदेषा तत् साहित्यादिजामोदम् ॥”

श्रीमद्भागवतार्थ स्वादन ही जब विद्या का चरम कल निद्दिष्ट हुआ है, तब जिसके अध्ययन से प्रथम अवस्था से ही श्रीकृष्ण के नाम, रूप, गुण, परिकर एवं लीलादि विषय में चित्त प्रवणता होती है, उस श्रीहरिनामामृत व्याकरण ही आलोच्य है। कारण, व्याकरण शास्त्र में लब्धव्युत्पत्ति न होने से दर्शन, स्मृति प्रभृति शास्त्र में प्रवेशाधिकार ही नहीं होता है।

श्रीजीवगोस्वामि कर्तृक प्रणीत ग्रन्थसमूह—

षट्सन्दर्भ, सर्वसम्वादिनी, श्रीहरिनाम मृत व्याकरण, लघु हरिनामामृत व्याकरण, सूत्रमालिका, धातुसंग्रह, भक्तिरसामृत शेष, श्रीमाधव महोत्सव महाकाव्य, श्रीगोपालचम्पू, सकल्प कल्पद्रुम, श्रीगोपाल-विरुदावली, श्रीगोपालतपनी टीका, ब्रह्मसंहिता टीका, रसामृत सिन्धु टीका, उज्ज्वलनीलमणि टीका, गायत्रीभाष्य, क्रमसन्दर्भ, बृहत् क्रमसन्दर्भ, वैष्णवतोषणी, श्रीराधाकृष्णार्चन दीपिका, श्रीराधाकृष्ण कर-पद चिह्न समाहृति प्रभृति हैं।

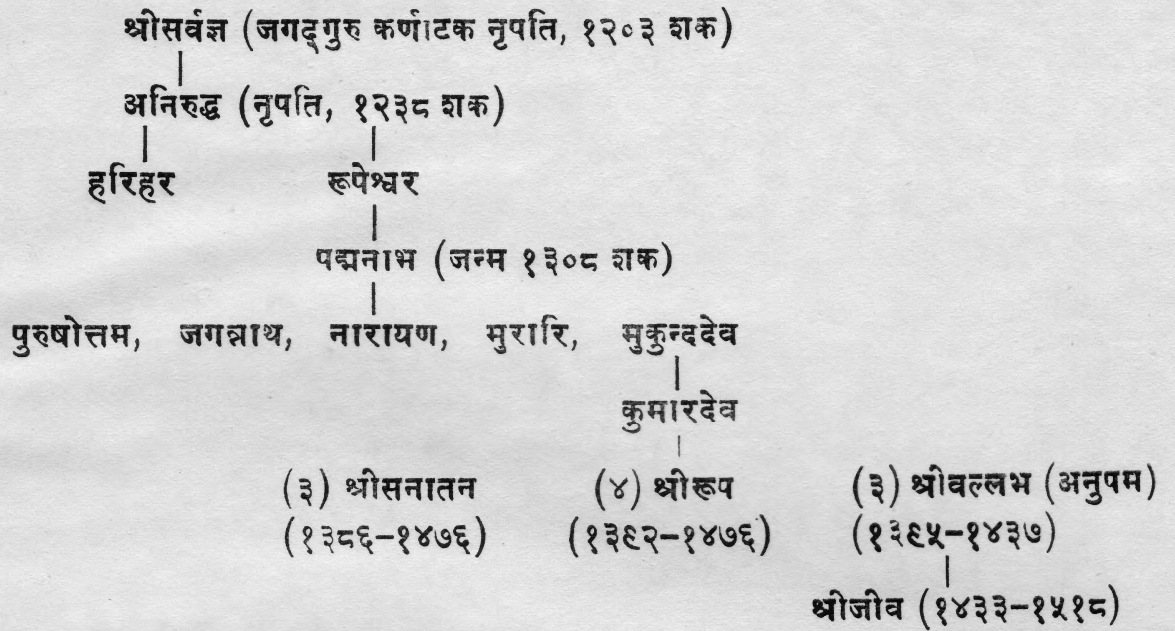
परिचय—

सुविख्यात श्रीकृष्णचैतन्यमतीय भागवतीय भक्तिग्रन्थ प्रणेता श्रीजीवगोस्वामिचरण हैं, स्वकृत लघु वैष्णवतोषणी नाम्नी श्रीमद्भागवतीय टीका के उपसंहार में आत्म-परिचय प्रदान उन्होंने इस प्रकार किया है—ऊर्ध्वतन सप्तमपुरुष ‘सर्वज्ञ’ कर्णाटदेशाधिपति ब्राह्मणवृन्द वरिष्ठ जगद्गुरु नाम से प्रख्यात थे। आप सर्वशास्त्र विशारद एवं भरद्वाज गोत्रीय यजुर्वेदी ब्राह्मण थे। सर्वज्ञ के पुत्र अनिरुद्ध-यजुर्वेद के सुपण्डित, महायशः एवं वरेण्य थे। उनके रूपेश्वर एवं हरिहर पुत्रद्वय शास्त्र एवं शस्त्रविद्या में निपुण थे। अतः हरिहर के द्वारा पितृप्रदत्त राज्य अपहृत होने से रूपेश्वर पौरस्त्य प्रदेश में निवास किये थे। उनके ‘पद्मनाभ’ नामक रूप गुण विद्यादिसम्पन्न एक पुत्र थे। जिन्होंने नवहट्ट (नैहाटि) ग्राम में निवास किया था। पद्मनाभ के अष्टादश कन्या एवं पञ्च पुत्र थे। कनिष्ठ पुत्र का नाम मुकुन्द था, उनका ‘कुमारदेव’ नामक परमधर्म आचरण परायण एक पुत्र था। धर्म विप्लव के कारण, जिनका निवास वाकला चन्द्रद्वीप में हुआ था। कुमारदेव के अनेक पुत्र के मध्य में सनातन, रूप, अनुपम प्रसिद्ध थे। पितृवियोग होने के पश्चात् आप गौड़ राजधानी के निकटवर्ती साकुर्मा पल्ली में विद्याशिक्षार्थ मातुलालय में निवास किये थे। अनन्तर उपयुक्त समय में गौड़राज हुसेनसाह के मन्त्रित्व पद में वृत्त सनातन रूप (अमर-सन्तोष) आकरमल्लिक, दवीरखास नाम से मूषित हुये थे। उनके कनिष्ठभ्राता (वत्सभ) अनुपम के पुत्र ही प्रस्तुत ग्रन्थकर्त्ता श्रीजीवगोस्वामी हैं।

बाल्यकाल में ही श्रीजीव का पितृवियोग हुआ था। आबाल्य श्रीजीव श्रीभगवदनुरागी थे। भक्तिरत्नाकर में उक्त है—

“श्रीजीव बालक काले बालकेर सने ।
श्रीकृष्ण सम्बन्ध विना खेला नाहि जाने ।
कृष्ण बलराम मूर्ति निर्माण करिया ।
करितेन पूजा पुष्प चन्दनादि दिया ।” (१।७।१६)

श्रीजीव की वंशवल्ली



श्रीचैतन्यदेव की प्रेरणा से श्रीरूप सनातन, जीव निवह के हितकर कार्य में आत्मनियोग करने पर श्रीजीव के हृदय में प्रबल विषय-भोग वितृष्णा का उदय हुआ था। भक्तिरत्नाकर ग्रन्थ में इस प्रकार उल्लेख है—

“नाना रत्न भूषा परिधेय सूक्ष्म वास ।
अपूर्व शयन शय्या भोजन विलास ॥
ए सब छाड़िल किछु नाहि भाय चिते ।
राज्यादि विषयबार्ता ना पारे शुनिते ॥

क्रमशः वृन्दावन निवासी श्रीरूप सनातन गोस्वामीयुगल के आकर्षण से जीव का मन गृह में संसक्त नहीं हुआ। एक दिन स्वप्न में श्रीमन्महाप्रभु का साक्षात् होने पर श्रीजीव अधीर होकर परिजन वर्ग को कहे थे—“मैं शास्त्राध्ययन हेतु नवद्वीप जाऊँगा” इस छल से श्रीजीव, वाक्ला चन्द्रद्वीप से नवद्वीप आये थे एवं श्रीवासुअङ्गन में उपस्थित होकर श्रीनित्यानन्द प्रभु की कृपा प्राप्त किये थे। भक्तिरत्नाकर (१।६७५) में वर्णित है—

नित्यानन्द प्रभु महावात्सल्य विह्वल ।
धरिला श्रीजीव माथे चरण युगल ॥”

श्रीनित्यानन्द प्रभु ने कहा—“मैं खड़दह से तुम्हारे निमित्त यहाँ आया हूँ। कुछ दिन नवद्वीप में अवस्थान कर तुम श्रीवृन्दावन जाओ ॥”

श्रीजीव, श्रीनित्यानन्द प्रभु से आदेश प्राप्तकर नवद्वीप से काशी आये थे, एवं वहाँ शास्त्राध्ययन पूर्वक श्रीवृन्दावन में आकर श्रीरूपसनातन के निदेशानुवर्त्ती हुए थे। श्रीजीव, लोकोत्तर प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे, उनका अवदान चिरकाल मनुष्य समाज को उद्भासित करता रहेगा।

—हरिदास शास्त्री

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य मातृकानुक्रमणी सूत्रसूची

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या	सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अ		अङ्गुलेर्दारुणि	७११५०
अ-आ-इ-ई-उ-ऊ अनन्ताः	१११०	अङ्गुल्यादेर्माधवठः	७११०६८
अ-आ वमोः	३१३३	अङ्गेत्यनेन युक्तस्याख्यातस्य	१८६६
अ-आ वर्जिताः सर्वेश्वरा ईश्वराः	१८	अङ् परे णौ, न तु	३१२३१
अ-इद्वयस्य हरः	७१४६	अचश्चतुर्भुजानुबन्धानाञ्च	२१६४
अं इति विष्णुचक्रम्	१११४	अचितु-हस्ति-धेनुभ्यो	७१३४५
अंशं हारी	७१६३३	अचित्ताददेशकालान्माधवठः	७१५४७
अः इति विष्णुसर्गः	१११६	अचो ये हलि संलग्नास्ते	११४५
अं इति विष्णुचापः	१११५	अचाऽरामहरो भगवति	२१६६
अक आशिषि	५१२१६	अच्	७१६००
अकर्मक गति ज्ञान शब्द-	४१२६	अच्युतादयः पञ्च, शिवश्च	३१२२
अकर्मक-गति-भोजनार्थेभ्यः	५१७१	अच्युताभ विष्णुनिष्ठा-	४१४१
अकर्मण्यारामात् कः स्थो	५१२२०	अच्युताभाव्ययकृद्वाञ्च न	६१६३
अकालाच्छयवासिवासेषु वा	५१३१०	अजातावनुपेन्द्रोपपदे	५१२६३
अकालाद्वास वासि शयेषु	६१२१८	अजादेराप्	७१२४१
अकृच्छकृच्छार्थे खल् तदर्था-	४१४६	अजाविभ्यां थ्यः	७१७१३
अकृच्छ्रे प्रियसुखयोर्वा	६१३६७	अजिनान्तस्योत्तरपद-	७१०३६
अकृष्णस्थानो सर्वेश्वरो	२१८८	अजेर्वी घणं विना	३११३४
अक्षदुचतादिना निर्वृत्तम्	७१६२१	अजेर्वी वा टने	५१४६१
अक्ष-शालका-संख्याः परिणा	६११७१	अज्ञातवैशिष्ट्ये	७१०३३
अक्षौहिणी सेनासंख्या	६१३०५	अज्ञानार्थस्य ज्ञः करणं वा	४११०५
अक्ष्णोऽप्राण्यङ्गे	७११०१	अञ्चतेर्महाहरः	७११००३
अग्नायीवृषाकपाद्यादयः	७१२२५	अञ्चेः खरामो वा स्वार्थे न	७११०७७
अग्नीषोमावग्नीवरुणौ च	६१२२८	अञ्चेः पूजायां नलोपाभावः	३११२६
अग्रग्रामयोः कर्मणोनियः	५१२७२	अञ्जेरिट् सौ	३१३६८
अग्रान्त-शुद्ध-शुभ्र-श्यावारक-	६१३४४	अणौ ये स्युरकर्मकाः	४१२७४
अग्नीयाग्रियौ च साधू	७१७०१	अण्केशवगौरादिभ्यः	७१२०७
अग्ने प्रथमं पूर्व-मु क्त्वाणम्	५११०२	अत आ ईस्तथयोः	३१३६
अग्ने प्रभृतिभ्य एव वनस्य	६१३१३	अत इट् युसि	३१३८
अङ्गाणिङ् निरसने	३१५५२	अतरुणेऽनेकशफ-ग्राम्य-	६१२००
अङ्गिकृतौ समः	४१२४७	अतस्यर्थयोगे षष्ठी	४११३६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अतः व्यवायेऽप्यासेवम्	३।५७४
अतिक्रमे	६।१५७
अतिगोष्ठाभ्यां शुनः	७।११६
अतिग्रहाचलनिन्दास्वकर्त्तरि	७।११०४
अतिरतिक्रमणे	४।१०८
अतीतादौ क्त क्तवतू	४।४४, ५।२७
अतीते	५।२६६
अतो मुगाने	४।४३, ५।३
अतो या ईः	३।३७
अतो याम इयम्	३।३६
अतो हेर्हरः	३।४१
अत्ति-पिवति दम्यादीन्	४।२७५
अत्यन्तिवृष्येभ्यो नित्यम्	३।१४६
अनुप्रतिषेधो मा-नास्मयोमे	३।५७
अत्यन्तसंयोगे च	६।५६
अत्यादय द्वितीयया	६।६५
अत्र कृष्णादि-शब्दा संज्ञा	२।१५७
अत्र द्वितीयादि-	६।६२
अत्र निशानासिकयोनिश्	२।६६
अत्र पाद-दन्त-मास-यूष	२।२८
अत्र वचेनिजेश्वभूतेश्वरे	७।१०३१
अत्र समानार्थ नानाधातु-	४।१६८
अत्र हविवेणुविधिर्वा वक्तव्यः	३।४६१
अत्रानादरे षष्ठी च	४।१४५
अत्रि-भृगु-कुत्स-वशिष्ठ-	७।३२१
अत्रेणो निषेधः	४।२३
अत्वसन्ताद्धवस्य त्रिविक्रमो	२।१११
अथ घणोऽपवादोऽल् घणर्थे	५।४१५
अथ गोरणौ यत् कर्मणौ	४।२५८
अथ तद्धिताः	७।६२
अथ पीताम्बरे	७।२१६
अथ पुरुषात्तमवत्	६।२४८
अथ मध्यपदलोपिनः	६।२५
अथ वामनः	६।२४०
अथ वारणे रक्षितुमिष्टः	४।८४
अथ विरामे त्याज्यः	४।८२

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अथ शिक्षायां गुरुः	४।८७
अथ समास कार्यविशेषाः	६।१८१
अथ स्मृ-ज्ञा-पश्यतीनां सनः	४।२५२
अथार्हियेषु	७।७२६
अथासहनार्थपराजेः	४।८०
अथोदोऽनुद्धर्वचेष्टने	४।२२२
अदरिद्रातेरिति वाच्यम्	५।१४७
अदस-आयन कुलिकादिषु	६।२२३
अदस एत ई बहुत्वे, न तु	२।१६२
अदसस्त्वचि अमुमुयच्, अदमुयच्	५।२८७
अदसो दस्य सः, सोरौच्	२।१६०
अदसोऽमीत्यस्य	१।७२
अदादेः शपो महाहरः	३।२७७
अदूरे एतोऽपञ्चम्या वा	७।१००८
अदेरट् भूतेश्वर-दि-स्योः	३।२७६
अदेशकालयोरधीते	७।६६८
अदो घसलृभूतेशसनो-	३।२८१
अदो जग्धिः कपिलतरामे	५।६७
अदो मात् परस्य सर्वेश्वरस्य	२।१६१
अद्वय-भो-भगो-अघोभ्यो	१।१४१
अद्वय-माभ्यां तदुद्धवाभ्यां	७।५८
अद्वयमिद्वये ए	१।४८
अद्वयस्य आ, इद्वयस्य ऐ	२।४३
अद्वयस्य ई वयनि	२।५१४
अद्वयस्य मिलित्वा वृष्णीन्द्र ऋते	६।३००
अद्वयस्य वावीरामः, अन्यस्य	७।११२१
अद्वयस्य हर एवेऽनवधारणे	६।२६६
अद्वयादूठो वृष्णीन्द्रः	२।१४७
अधातुविष्णुभक्तिकमर्थवन्नाम	२।१
अधान्यानां शाकटशाकिनौ	७।८५७
अधिकरणवाचि-क्तस्य योगे	४।५८
अधिकरणे च	५।२४८
अधिकरणे मिक्षा सेना-	५।२३७
अधिकरणे शेतेरत्, करणे	५।२३३
अधिकरणे सप्तमी	४।७०
अधिकारसूत्रे प्रथमनिर्दिष्ट-	७।२५७

सूत्रसूची]

३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अधिकार्थनोपेन युक्तात्	४।१४८
अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः	७।५३८
अधिशीङ्गस्थासामाधारः कर्मः	४।७२
अधोक्षजे तु वा	३।३३१
अध्यर्द्धपूर्वात् त्रिराम्याश्चा-	७।७३६
अध्यात्मादेः	७।५१०
अध्यारूढस्याधिको वा साधुः	५।६१
अध्वज्जिते गत्यर्थकर्मणि	४।३६
अन आप् वा पीताम्बरे	७।१८८
अन उद्धवहरयोग्याद्वा	७।१६७
अनक्षस्य धुरः	७।६७
अनप्रपूर्वस्यार्वणोऽर्ध्वतु	२।१२७
अनडुहो नुम् च सौ	२।१४८
अनतिक्रमे	६।१६७
अनत्यन्तगतौ क्तात्	७।१०७४
अनद्यतनभूते दिवादयो	३।६
अनद्यतनभूते भूतेश्वरः	४।१५३
अनद्यतने बालकलिकः	४।१६१
अनन्तस्य वामनः के, न तु	७।६५
अनन्तावसथेथिह-	७।१०८७
अनन्ते कर्मण्यदः क्विप्	५।२७७
अनयोर्विष्णुपदत्वे सत्येव	२।१६५
अनवने भुनक्तोः	४।२५७
अनश्च	७।१४०
अनिरामेतां विष्णुजना-	३।६१
अनीवन्तगोप्या एक-	६।२४५
अनोश्वरादपि ररामजः	१।१४५
अनुकम्पायाम्	३।१०३६
अनुक्ते कर्तरि करणे च	४।१६
अनुक्रमे	६।१६८
अनुज्ञां विना	४।२५३
अनुत्तरपदस्थयोरिसुसोः	६।३३४
अनुपदं बद्धा	७।८६३
अनुपदादिनिरन्वेष्टरि	७।६२३
अनुपेन्द्रश्रितीभूभ्यः	५।३८६
अनुपेन्द्राद्गद-मद-चर-	५।१६५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अनुपेन्द्राद्विभाषा	४।२३८
अनुपेन्द्राद्वचधिजपिभ्यां	५।४१६
अनुपेन्द्रान्मदः	५।४२२
अनुपेन्द्रे ग्रहेः क्यप्	५।१८६
अनुपेन्द्रे लिपि विद्लू-	५।२०७
अनुपेन्द्रे वद्धो यत्-क्यपौ	५।१७७
अनुप्रतिगृणः प्रशस्यमानवचनः	४।६८
अनुप्रवचनादिभ्यश्छरामः	७।८२३
अनुब्राह्मणी नान्तः साधुः	७।३५१
अनुरुधादेर्णिनिः	५।३२४
अनुर्यस्य समीपमाह-यस्य च	६।१७२
अनुशतादीनाञ्च	७।१६
अनुहरतेर्गतिताच्छील्य	४।२१८
अनुङो न तु निषेधाः	६।२५८
अनूचानः कर्तरि	५।२४
अनूप देशे	६।३५४
अनुवो मानवके, बह्वृच	७।६६
अनेकप्राप्तावेकस्य	६।१८६
अनेकमन्यपदार्थे पीताम्बरः	६।१०२
अनेकसर्वेश्वरकासि	३।१५३
अनेकसर्वेश्वरस्य संसार-	३।५४६
अनां भावे	५।४५७
अनो ये तु भावकर्मणोरेव	७।४०
अनोरकर्मकात्तत्र	४।२४३
अनो वहेरनडुह् साधुः	५।२७६
अन्तःशब्दो णत्वविधौ	३।४६५
अन्तरङ्गस्वादेर्महाहर	३।५१३, ६।१०
अन्तरस्तवदेशे	३।२८४
अन्तरो बाह्यपरिधानीययो	२।१७६
अन्तर्धनो देशे	५।४२७
अन्तर्द्धौ शङ्कास्पदम्	४।७६
अन्तर्भिन्नपदत्वेऽप्येक-	६।३
अन्तर्वहिभ्यां लोमनः	७।१५६
अन्तस्य वृष्णीन्द्रो नृसिंहे	३।५६
अन्तहरे न गोविन्दवृष्णीन्द्रौ	३।१६१
अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वान्त	५।२५८

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अन्तार्थे	६।१६६
अन्तिकस्य कादेर्हरस्तसि वा	७।४७
अन्तेगुरु-मध्येगुरु	६।२११
अन्त्यसर्वेश्वरात् परं मितः	२।७६
अन्त्यसर्वेश्वरादिवर्णाः	१।७५, २।३८
अन्त्यात् पूर्ववर्ण उद्धवसंज्ञः	२।८०
अन्नन्ता वा नलोपस्तूभयत्र	६।५१
अन्नमोदने साधुः	५।६८
अन्नर-व्यवधानेऽपि	३।३८६, ४०८
अन्नाण्णरामः	७।६८२
अन्यतोऽपीष्यते	७।१०७२
अन्यत्र च	५।३०१
अन्यत्र वमपर्यन्तवर्जमक्षराणि	२।१६७
अन्यथैवं कथमित्थं सु	५।१०६
अन्यपदार्थात् प्राङ् मध्यपदा-	६।६४
अन्यपूर्वत्वे च	५।२४७
अन्यस्यान्यत् कारकशब्दे	६।२७६
अन्यदिभ्यस्तुक् स्वमो-	२।२१५
अन्यादेरिवेन सह	५।२६६
अन्यार्थादिभिर्योगे पञ्चमी	४।१२३
अन्ये प्रत्यया रामधातुकाः	३।२३
अन्येभ्योऽपि	५।३६१
अन्येभ्योऽपि मनिवादयः	५।२८०
अन्यैः सहोक्तौ तदादे	६।१६६
अन्वच्यानुकूल्ये	५।१३८
अन्ववतप्तोभ्यो रहसः	७।१०६
अन्वाङ्परिभ्यः क्रीडश्च	४।२१३
अपः सुपो योनि-	६।२१०
अपपरियुक्तात् पञ्चमी	४।१२५
अप-परि-वहिरञ्चन्ताः	६।१७४
अपमित्येत्स्मात् नृसिंहकः	७।६२३
अप-विभ्यां लषो	५।३२७
अपरस्पराः क्रियासातत्ये	६।३५५
अपादान-सम्प्रदान	४।१०६
अपादाने कर्मणि च त्वरायाम्	५।१२७
अपादाने च	५।४५६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अपादाने पञ्चमी	४।७६
अपाद्गुरो गार वा	५।६७
अपाद्वदः	४।२६२
अपायादिष्वबधिरपादानम्	४।७५
अपिजात्वोर्योगे	४।१८५
अपृथुकृष्णधातुको निर्गुणः	३।३१
अपेतादिभिः प्रायशः	६।७६
अपेरादिहरो धाज्नद्धयो	३।३५४
अपो दा भे	२।१५०
अप्राणिजातेरामाद्रज्ज्वादि-	७।२३६
अप्राणिद्रव्यजातीनाम्	६।१२२
अब्रह्माण्डवा शिश्च	२।८१
अभावे	६।१५८
अभित आदिभिर्योगे	४।११०
अभिनिष्क्रामति द्वारम्	७।५३७
अभिप्रती लक्षणेनाभिमुख्ये	६।१७३
अभिवादि दृशारात्मपदे	४।३१
अभिधिधौ वि- विषये	७।११२४
अभूततद्भावे कृभ्वस्ति-	७।११२०
अभूततद्भावे पुं वच्च	५।१०१
अभूततद्भावे व्यभिचारः	२।२६१
अभाजनार्थस्योपवर्सेन	४।७४
अत-चम-विश्रमां वेत्येके	३।१५८
अमनुष्ये तु वा	७।४५५
अमन्तस्वाद्वर्थे णमुरमश्च	५।६६
अमावास्याया अरामवुरामो	७।४७६
अमाविःक्वेहतसित्रेभ्यः	७।४३२
अमुष्येत्यस्य षष्ठ्यलुक् च	७।२६४
अम्बश्चादयः	५।४६५
अम्बादीनां गोप्याश्च वामनो	२।६७
अयज्ञपात्रे तु युजे	४।२५५
अयरा मोद्धवादुरामान्तृजातो	७।२३८
अयादीनां यवयोर्वा	१।६८
अयानेयं नेयः	७।८६५
अयास-द्वयेभ्य आमघोक्षजे	३।२३५
अयोधन-प्रघण-विघन-द्रुघणाः	५।४२८

सूत्रसूची]

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अरण्याण्णरामः	७४३३
अरलित्यन्तस्य वृष्णीद्रः सौ	३१६५
अरामः	७६४, १५२
अरामवाह्यादिभ्यामिहः	७२५६
अरामहर ए अयोरविष्णु	३३२
अरामहरस्य निमित्तमरामः	३८७
अरामहरो रामधातुके	३१५१
अरामादन्यतो न	३४६२
अरामादिनि-ठरापौ	७६५७
अरामान्तः कृष्णसंज्ञः	२११
अरामान्तजातेनित्यलक्ष्मी	७२३३
अरामान्ता त्रिरामी लक्ष्मीः	६५०
अरामान्तादव्ययीभावान्न	६१५४
अरामान्तादहस्य	६३१६
अरामान्यवर्णादन्ते	३६३
अरीहणादेवु	७३८७
अरुनुद जन्मेजय कूलमुद्गुज	५१२४४
अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहो	७११२२
अर्चसि पूजनार्थसि	७१०६०
अर्त्तिपितृर्निरस्येरामः	३३४७
अर्त्तिपितृसङ्गादृचदन्तयो	३१६३
अर्त्ति-ह्री-वली-री-वनुयी-क्षमाय्या	३४२७
अर्त्तर्गोविन्दः क्वसौ	५१२१
अर्थी याचके साधुस्तदन्ताच्च	७६८७
अर्थे तु वा	६१२८
अर्द्धं चतसृभिः	६६६
अर्द्धं समविभागे वा	६३६
अर्द्धजरत्यादयोऽसम-	६४०
अर्द्धपूर्वाच्च	७१२७
अर्द्धर्चादयः ब्रह्माणि	६१४२
अर्द्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य	७२५
अर्द्धादियरामः सपूर्वन्माधवठः	७४५६
अय्याणी क्षत्रियाण्या वा	७२२७
अर्श आदेररामः	७६६८
अर्हः शत्रु पूज्ये	५११३
अर्हतो नुम् च	७८४२

५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
अर्हशक्त्याविधिविष्णुकृत्यतृणः	४१८०
अर्हानर्हयोश्च	४१४४
अर्हार्थेऽनद्यतनभविष्यति च	३१०
अलंकृत्र-निराकृत्र-प्रजन	५३१७
अलंखल्वोः प्रतिषेधार्थयो	५७३
अलावृत्तिलोमाभङ्गाण्युभयो	७८८१
अलुकि वा	६३१०
अल्पे	७१०४६
अवक्षेपे कः	७१०५६
अवग्राह-निग्राहावाक्रोशे	५४०२
अवटीटावनाटावभ्रटा	७८८०
अवतारावस्तारौ साधु	५४०५
अवन्ति कुन्ति कुरु	७३१४
अवयववृत्तेः संख्यायाः	७८६५
अवयवाहतोः	७१०
अवयवे च प्राण्योषधि	७५७७
अवयसि ठ प्यरामौ	७७६७
अवयस्य पश्चादस्तातो साधुः	७१००५
अवसमन्धेभ्वस्तमसः	७१०३
अवस्य तंसे	३३५५
अवादयस्तृतीयया	६६६
अवादयः	४१४६
अवान्तरदीक्षि देवव्रतिनौ	७८०६
अवारं परमत्यन्तमनु	७८६७
अवारपारात् खरामः	७४१८
अविकटाविपटी	७८७७
अवितृ स्तृत्तन्दिभ्य ईर्लक्ष्याम्	५३६८
अविषोढाविदूषा	७३७४
अविष्णुपदान्तस्य नस्य यस्य च	२८४
अवृद्धायामसिक्नी असिता	७२२६
अवोद्धृत्तां नियः	५३८८
अव्यक्तानुकरणशब्दानामद्	११२६
अव्ययं सप्तमाद्यर्थेषु नित्यम्	६१५३
अव्ययञ्च	६१०३
अव्ययविशेषणं ब्रह्म	२१६१
अव्ययस्यारादादिवर्जम्	७४८

अव्ययात् कालवाचिनः	७।४३०
अव्ययात् स्वादेर्महाहरः	२।२१७
अव्ययादिसंख्यान्तात् कृष्णः	७।१४८
अव्ययादूराधिकामन्त्राः	६।११०
अव्ययाद्वातन दोषातन	७।४७०
अव्ययीभावः	६।१५१
अव्ययीभावाण्यरामः, न तू	७।५०८
अव्ययीभावे	७।१३४
अव्ययीभावे चाकाले	६।२७०
अव्यये करोते	५।१३४
अशनाय बुभुक्षायाम्	६।५२०
अशब्दे यराम खरामौ वा	७।५१६
अशालार्था च	६।१४८
अशास्वृदित उद्धवस्य वामनः	३।२२७
अशिष्टव्यवहारे सम्प्रयच्छतेः	४।६६
अशनाति नरान्तुडधोक्षजे	३।३८०
अश्मनो विकारे वा	७।३६
अश्मादिभ्यो रः	७।३६४
अश्रद्धामर्षयोर्विधिकल्की	४।१८६
अश्वस्य-वृषस्यौ मैथुनेच्छायाम्	३।५२३
अषो तृतीयास्थस्य तु आशीः	६।२७७
अष्टका । पतृदैवत्ये काले च	७।७४
अष्टन आ कपाले	६।२६५
अष्टनः संज्ञायाम्	६।२३७
अष्टन् आ विष्णुभक्तिषु वा	२।१२५
अष्टाचत्वारिंशका	७।८०५
अष्टीवदादयश्च	७।६१
असंयोगपूर्वस्य प्रत्ययो	३।२०४
असंयोगपूर्वस्यानेक	३।१४१
असंयोगादलिदधाक्षजः	३।८४
असन्तस्य कृ कमि कंस कुशी	६।३२६
असमासान्तविधेर्वा, न तूडि	७।१७६
असाधुनानर्चायां सप्तमी	४।१४७
असि उसि अने च चक्षिडः	५।३३४
असिः	५।२६२
असिद्धरूपं न त्याज्यं	१।४३
असूर्यम्पश्य ललाटन्तप	५।२४६

सूत्राणि

प्रकरण-सूत्रसंख्या

अस्ति नास्ति दिष्टं मतिरस्य	७।६५७
अस्ति सिंभ्यामीड् दिप्सिपोः	३।८१
अस्तेः सलोपः से	३।३०४
अस्तेः सस्य हे एरामे	३।३०६
अस्तेनरामहरोभूतेश्वरे	३।३०६
अस्तेर्भूर्ब्रूवो वची राम	३।३०७
अस्त्यर्थे मधुमाधवादय	७।७०३
अस्पृशी प्रयत्नः सर्वेश्वराणाम्	१।३४
अस्भुवोस्त्वस्भूवत्	३।१२२
अस्मदस्त्वगौरवेऽपि	४।५
अस् माया मेधा सगम्भ्यो	७।६६७
अस्पति वक्ति ख्यातिभ्यो	३।२६८
अस्यतेरस्थो डे	३।३७१
अस्य स्वाद्यभाव एव	२।१५६
अस्वाङ्गादपि बन्धे वा	६।२१५
असहरेधि	३।३०८
अहरादीनां पत्यादौ	६।३३६
अहीवत्यादयः संज्ञायाम्	७।६०
अह्नः खरामः क्रतुविषये	७।३४१
अह्नष्ट-खरामयोयव	७।३१
अह्नो विष्णुसर्गस्य रो	१।१४६
अह्नो विष्णुसर्गो	२।१५५

आ

आ ईरामानुबन्धाद्विकल्पितेऽटः	५।३२
आ ए यति	५।१५४
आकर्षादेः केशवठः	७।६१३
आक्षेपगर्भे निगृहीत	१।८४
आख्याताच्च	७।१०२५, १०२७
आख्यातमाम्	७।१०२१
आख्यातात्तराम्	७।१०२३
आख्यातादयो यत्र क्रियन्ते	४।११
आनमो विष्णुः	१।४०
आगवीनः आ गोप्रतिदानात्	७।८६६
आगस्त्यस्यागस्तिश्च	७।३१८

सूत्रसूची]

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
आगारान्तात् ठरामः	७।६६७
आग्नावैष्णव्यादयश्च	६।२३०
आग्निष्टोमिकी प्रभृतयो	७।८१०
आडो दात्रो न चेद्	४।२१०
आडोऽन्येन विष्णुपदेन	३।४८
आडो रु प्लुभ्याम्	५।४०७
आडो लभेर्नुम् यति	५।१५८
आडुपूर्वस्यान्धूधसोः स्यादेव	५।६३
आडुपुर्व्यात्तु यमेर्हने	४।२२५
आडुमाङ्भ्यां नित्यम्	१।११८
आडुयुक्तात् पञ्चमी मर्यादा	४।१२६
आवर्त्य मगुरौ	५।१६३
आचि बहुलम्	६।३७१
आच् कृत्र्यागे	७।१११०
आच् प्रत्ययान्ताच्च	३।५३८
आढकाचितपात्रेभ्यः	७।७३६
आढय सुभग-स्थूल-पलित	५।२६५
आतो युगिणि नृसिंह	३।१८०
आत्मनस्तृतीयायाः पूरणे	६।२०५
आत्मपदप्रथमपुरुषैकवचन	३।२८
आत्मपदस्थानीयत्वाद्बाहुल्याच्च	५।६
आत्मपदान्येव कर्मणि	३।२७
आत्मपदिभ्य आत्मपदानि	३।२५
आत्मपदे तु वा	३।२६६
आत्माध्वनोरखरामे	७।३६
आथर्वणि कस्येकलोपश्च	७।५७५
आथर्वणिकादयश्च	७।४४
आदराम गोपालयोरुनित्यम्	१।१४०
आदिवृष्णीन्द्राच्छरामः	७।४३६
आदिवृष्णीन्द्रात् शरादेश्च	७।५८१
आदिवृष्णीन्द्रादपि बहुवचन	७।४४५
आदिवृष्णीन्द्राद्गोत्रान्नृसिंह	७।३०५
आदिसर्वेश्वरस्य वृष्णीन्द्रो	७।१
आदेशहीन नराद्यक्षरस्य	३।११२
आदेशो विरिञ्चिः	१।३६
आद्यन्तान्त बहु-नान्दी-लिपि	५।२४१

७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
आधमर्ण्यं तुमु भविष्यदर्शनक	४।५५
आधिक्ये तु	६।३६६
आनुपूर्व्वे च	६।३६८
आप ईप्सः	३।४६६
आप्रपदं व्याप्नोति	७।८६२
आभीक्ष्ण्यवीप्सयोः	६।३५६
आभीक्ष्ण्ये वीप्सादिषु च द्वित्वं	५।६६
आमः कृ-भ्विस्तयोऽनु	३।१२०
आमन्त्रितं पुर्व्वमसद्वत्	२।२०६
आमयावी रोगिणि	७।६६६
आमो मस्य हरिवेणुविधिर्वा	३।१२४
आम्रेडितस्य संसारो	१।८५
आय ईयङ् कमेणिङ् च	३।१५२
आयस्थानेभ्यो माधवठः	७।५३०
आयुक्तकुशलयोगे	४।१४१
आयुधाच्छठी	७।६१७
आरम्भे च विष्णुनिष्ठा, तत्र	५।५३
आरम्भे प्रादुपात्तथा	४।२३७
आरामहरः कंसारि	३।१८२
आरामहरो यदु सर्व्वेश्वरे	२।२६
आरामणल ओ	३।१८१
आरामादन उस्	३।१८८
आरामादनः खलर्थे, न तु	५।१४६
आरामादन्यतो न	३।४६२
आरामान्ताद्व्यधादेश्च णः	५।२१०
आर्त्तत्वं प्राप्तौ	७।८१८
आवसथात् केशवठः	७।६७१
आशंसायां भविष्यति	४।१६८
आशिते कर्त्तरि भवतेः	५।२५६
आशिषि	७।७७
आशिषि कामपाल	४।१८१
आशिषि गोवत्स हलेष्वेव	६।२६८
आशिषि चतुर्थी कुशलाद्यैः	४।१२१
आशिषि यात् यास्तामित्यादयः	३।६
आशिषि हिताद्यर्थयोगे च	४।१३८
आशीःप्रेरणादौ तुवादयो	३।५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
भाश्चयुज्या वुर्तुसिंहः	७।४६३
भासः शानस्य ईनः	५।६
आहित वोढव्याद्वाहनस्य	६।३१६
आहित्यागनादिषु वा	६।१६३
आहिश्च दूरे	७।१०१०
आह्वः स्पद्ध	४।२३०

इ

इ-ई-उ-ऊ चतुःसनाः	१।११
इ-उरामान्तो हरिसंज्ञः	२।३०
इतिडौ नित्यमधिपूर्वौ	३।२६७
इक्षुतिपौ धातुनिर्द्देशे	५।४५४
इडश्च	३।४५६
इडश्चाकर्त्तरि	५।३८३
इडो गाड् सन्नङ् परे णौ	७।४४४
इडो गामधोक्षजे	३।३३७
इङ्धारिभ्यां शत्रुकृच्छ्रकर्त्तरि	५।१४
इच्छार्थधातुसत्त्वे विधिनिमन्त्रणा-	४।१७६
इच्छार्थाद्वर्त्तमाने विध्यच्युतौ	४।१७५
इच्छार्थे शक्यादौ कालादौ	५।१४०
इच्छा-सनन्तान्न सन्	३।४७६
इज्यादीनां क्तिर्नेति	५।४४४
इज्यः-व्रज्या-कृत्या भावे	५।१८७
इटः सिलोप ईटि	३।८२
इट् रामधातुके	३।६१
इङ् व्यवधाने तु का	३।६८
इण-णश-जि-सत्तिभ्यः	५।३४६
इणस्तो हरः	३।६०
इणो गमिरबोधने सनि	३।४५५
इणो गा भूतेशे	३।२६४
इण् च भावे लक्ष्म्यां	५।४५५
इण् भूतेश-ते भावकर्मणोः	३।५८
इण्वदिक्	३।२६६
इण्वदिटि च	३।२२६
इण्वदिटो न त्रिविक्रमः	३।२१४
इण्-स्था-पिवति-	३।५३

सूत्राणि

प्रकरण-सूत्रसंख्या

इतः प्रत्ययपरिभाषा	७।२४५
इतरेतरयोग-समाहारयो	६।११७
इतो विकल्पेन समासः	५।१२४
इतौ तु छन्दस्येव	३।२३३
इत्या भावकरणयोः साधुः	५।१८८
इदं भक्ष्यं हितमस्मै	७।६६०
इदमदोभ्यामकरामाभ्यां	२।१८८
इदमोऽकरामस्य अनष्टौसोः	२।१८५
इदमाज्यं सौ, इयन्तु	२।१८४
इदमाच्यार्थशब्देन च	६।७४
इद्वयमेव यः सर्वेश्वरे	१।५६
इद्वयस्य ए, उद्वयस्य ओ	२।३२
इनन्ते तु न	५।३१२
इनीवन्ताश्च	७।३४३
इनो नानपत्याणि, न क्षेपि	७।३२
इनो लक्ष्म्याम्	७।१७३
इन्द्रादेररामस्याराम	६।२२७
इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमित्याद्यर्थे	७।६२६
इन्द्रियादिभ्यो वुर्तुसिंहः	७।५६५
इन्-हन्-पूषन्-अर्यमन्	२।१२१
इमनिः पुंसि	७।८३७
इयाभ्यां नृसिंहाभ्यां	७।३०२
इरनुबन्धान् डो वा भूतेश	३।८८
इरामादक्तचर्थाद्वा ईप्	७।२३०
इरामान्ताद्विसर्वेश्वरान्माधव	७।२७१
इरामान्तान्नृजातेः	७।२३४
इरामेद्धातोर्नुम्	३।६३
इरुन्तधातोरुद्धवस्य	२।१३७
इवन्त ऋध भ्रसज् दन्भुश्चि	३।४६१
इवार्थे कः प्रतिकृतौ	७।१०५७
इवेन नित्यं समासो	६।४६
इषप्रभृतयो मासि संज्ञा	७।७०४
इषु गमि यमां छः ऋवे	३।१६१
इषु सह लुभ रुष रिष इड्	३।१७५
इष्टकेषीका मालानां चित्	६।२४३
इष्टादिभ्यश्च	७।६२६

सूत्रसूची]

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
इसुसोः क्रियापेक्षायां वा	६।३३३
ई	
ई-ऊ-लक्ष्मीर्गोपीसंज्ञा	२।७३
ईडीशिभ्यामिट् सध्वोर्न तु	३।३३६
ईदूदेतां द्विवचनस्य	१।७१
ईप्	७।१८६
ईवापोः संज्ञायां बहुलम्	६।२४२
ईयिवस् प्रभृतयः	५।२७
ईराम एवानपत्य यस्य हरः	७।५६
ईष्यो यिः सन वा द्विः	३।४५७
ईशममीपाद्विष्णुजनादनित्	३।२१६
ईशस्य न गोविन्मवृष्णीन्द्रौ	३।३५
ईशस्य वोत्तरपदे	६।२४१
ईशस्यानेकात्मके वामनश्च	१।६१
ईशाच्च	३।२२०
ईशात्	५।४१६
ईशान्तस्य गोविन्दोऽन उषि	३।३२०
ईशान्तस्य वहे, न तु पीलोः	६।२३५
ईशान्तस्य वृष्णीन्द्रः सौ	३।१३६
ईशान्तहन्त्योरिडादेशगमेश्च	३।४५३
ईशाद्धव किरति	५।२०४
ईशाद्धवादनिटो	३।१७३
ईश्वर इत्यर्थे च	७।७५३
ईश्वर हरिमित्र कङ्केभ्यः	२।२३
ईश्वर हरिमित्र हकारेभ्यः	३।६७
ईश्वराराभ्यां पाशकल्प	६।३२७
ईषदकृदन्तेन	६।१६
ईषदसमाप्तौ	७।१०२६
उ	
उ-ऊ-ऋ-ॠ चतुर्भुजाः	१।१२
उकण कर्त्तरि	४।५४
उकस्यापि योगे कर्मणि न	४।५३
उक्तपुरुषोत्तमस्येवन्तस्या	६।२४४
उक्तस्य यस्य क्रियाकालोऽन्यस्य	४।१४३
उक्तादन्यदनुक्तम्	४।१२

६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
उख्यादयश्च	७।३७१
उन्नः सन्ध्यभावः, ऊं	१।६४
उणादयो बहुलम्	५।३६६
उत्करादिभ्रष्टरामः	७।४१४
उत्कारनिकारौ धान्यक्षेपे	५।३६२
उत्तमणलि वा	३।३१६
उत्तमणल् नृसिंहकार्यकरो	३।१०८
उत्तरपथेनाहृतश्च	७।७८८
उत्तरपदलोपे च न	७।७२
उत्तरपदवल्लिङ्गं रामकृष्ण	६।१३८
उत्तरपदस्य	७।८
उत्तरपदस्य पीताम्बरे	६।३३८
उत्तराच्च	७।१०११
उत्तराधरदक्षिणेभ्य आतिः	७।१००७
उत्तरान्नृसिंहाहः	७।४३५
उत्तरात्तराण्यात्मपदसंज्ञकानि	३।२०
उत्तानादिषु च	५।२३४
उत्पातेन ज्ञाप्याच्चतुर्थी	४।११७
उत्सङ्गादिना हरति	७।६१८
उदः श्रि यौति नी पू द्रुभ्यः	५।४०४
उदः मकर्मचरते	४।२४८
उदः स्थास्तम्भोः सस्य हरः	३।१६२
उदकस्योदः	६।२८८
उदध्यादयश्च साधवः	५।४३७
उदन्य पि भासायाम्	३।५२१
उद मेघ क्षीरादादयः	६।४६२
उदरादाद्युने	७।६२१
उद्ग्राह मुष्टिसंग्राहौ साधू	५।३६६
उद्धवऋवामस्येर्	३।४२५
उद्धवसज्ञस्य ऋद्वयस्य	३।४२६
उद्धवारागस्य वृष्णीन्द्रा	३।१०७
उद्वयं वः	१।६०
उद्वयग्रहगुहेभ्यो नेट् सनि	३।४५०
उद्वयस्य गोविन्द न तु	७।५१
उद्वयस्य हरो ढरामे न तु	७।५२
उद्वयाण्यदावश्यक	५।१७०

सूत्रानि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
उद्वये ओ	१।५०
उद्विभ्यां काकुदस्य	६।३५०
उद्विभ्यां तपतेः	४।२२६
उत्तिभ्यां ग्रः	५।३६१
उपज्ञानूपकर्णोपनीविध्यो	७।४८७
उपज्ञातम्	७।५६२
उपज्ञोपक्रमौ	६।१४५
उपप्रतिभ्यां सुट् किरतो	३।३८७
उपमानक्रियाद्वतिस्तत्क्रिया	७।८२८
उपमानपूर्वाद्दुरोरुड् सहित	७।२३७
उपमानमुभयस्थधर्मवचनैः	६।२७
उपमानात् पक्षपुच्छाभ्याम्	७।२०५
उपमानाभ्यां ताभ्याम्	७।१२१
उपमेयं व्याघ्रादिभिरुप	६।२६
उपर्यध्वघसां सामीप्ये	६।३६१
उपर्युपरिष्ठात्	७।१००४
उपशाय विशायौ पर्यायेण	५।३६६
उपशुनोपजरस सरजसानि	७।१३६
उपात्	४।२७०
उपात् किरतो सुट् च	५।१३२
उपात् सुट् किरतो छेदने	३।३८५
उपादपि मतं स्तम्भे षत्वं	३।५७२
उपाद्भू षण समवाय प्रतियत्न	३।४११
उपाधिभ्यां त्यको लक्ष्म्याम्	७।८८२
उपाध्यायानी मातुलान्यो वा	७।२२६
उपान्वध्याङ्भ्यो वस आधारः	४।७३
उपासनेऽपि श्रुवः	३।४५१
उपेन्द्र प्रादुर्भ्यामस्तेः सः	३।३०५
उपेन्द्रस्य त्रिविक्रम घणि	५।४११
उपेन्द्रस्य पूर्वपदस्य च	५।२८५
उपेन्द्रात् क्रियते तद्वचवा	३।५७१
उपेन्द्रात् क्वचिद्विष्णुपदादौ	१।३६
उपेन्द्रात् णोपदेशस्य	३।४४, ११७
उपेन्द्रात् सुवतेः षत्वं	३।५६८
उपेन्द्राददः नेर्णश्च अदो	५।४१८
उपेन्द्रादनो णत्वमन्तस्य च	३।३१५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
उपेन्द्रादपि षोपदेशस्य षत्वं	३।६६
उपेन्द्रादिणो न त्रिविक्रमः	३।२६५
उपेन्द्राद्दूहतेर्वाभिनः कपिल	३।२५२
उपेन्द्राद्धनो णत्वं वमोर्वा	३।२८५
उपेन्द्राद्धन्तेररामपुर्वस्य	३।२८३
उपेन्द्राद्वयहर एओरामयो	२।१२६
उपेन्द्राद्नेर्णत्वं नद-गद-पत	३।११८
उपेन्द्रारस्त्रिविक्रमः	३।२००
उपेन्द्रात्लभेर्नुम् खल्घणोर्न	५।१४३
उपेन्द्रे आरामान्तात् कः	५।२०५
उपेन्द्रे कर्मणि च भर्जेण्विः	५।२७४
उपेन्द्रोर्ग्यादि व्यन्ताजन्त	५।८६
उप्तः	७।४६२
उभयपदिभ्य उभयपदानि	३।२६
उभयप्राप्तौ विष्णुकृत्ये षष्ठी	४।६१
उभयोः पदयोः	७।७१
उरश्छदादयश्च वामनेन	५।४३१
उरस केशव-णश्च	७।६६०
उरसः प्रधानार्थात्	७।१२२
उरसस्तसियौ	७।५६१
उरामस्य वृष्णीन्द्रः शब्लुकि	३।२६१
उरामात् प्रत्ययादसंयोग	३।२०६
उरामान्त गुणवचनात् खरुसत्	७।२३२
उरामान्ता कर्तरि शीलार्थे	४।५१
उरामेतो वेट् क्तिव	५।८२
उरामोद्धवाद्धौवादिकाद्धावा	५।५५
उर्णायुर्मेषकम्बले	७।६७३
उणनसो नान्तत्वं सलोपित्वं	२।१४४
उ-इन्वोर्गोविन्दः	३।२०३
उषर-शुषिर-पुष्कर-मधुराणि	७।६४६
उषर्बुधोऽनौ निपात्यते	७।३३७
उष वेत्ति जागृभ्य आम्	३।१७६
उष्ट्राद्धनृं सिंहः	७।५६२
उष्णङ्करण भद्रङ्करणौ	५।४६०

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
ऊ	
ऊङन्तात्	७।२६६
ऊङ्	७।२३६
ऊत्यादयः साधवः	५।४४३
ऊधसः सो नश्च	७।१६५
ऊर्णोतिरिट् निर्गुणो वा	३।३३६
ऊर्णोतिर्गोविन्दो दिस्योः	३।३३८
ऊर्णोतिर्नाम्	३।३४०
ऊर्णोतिर्वर्वा	३।३३७, २६२
ऊर्ध्वकर्त्तरि शुषि पूरिभ्यां	५।१२२
ऊर्ध्वन्धमोर्ध्वदेहाभ्यां	७।५१२
ऊर्ध्वात्तु वा	६।३४२
ऋ	
ऋक्पथिपूरपः	७।६५
ऋग्यणादेः केशव णः	७।५२८
ऋच्छर्वज्जितगुर्वीश्वरादेराम्	३।११६
ऋण प्र वसन वत्सर वत्सतर	६।२६६
ऋणात् पञ्चमी	४।१३१
ऋतु नक्षत्र संख्यावर्णनां	६।१८८
ऋतेरीयङ्	३।२२१
ऋतिववाचकेभ्यश्छरामः	७।८५०
ऋतिवजो नृसिंह-खः	७।७८२
ऋद्विगमे	६।१५६
ऋद्वयो लृद्वयोयेकात्मकत्वं	१।४७
ऋद्वयं रः	१।६१
ऋद्वय विष्णुजनाभ्यां ण्यत्	५।१६६
ऋद्वयाद्वययाऋति	१।६२
ऋद्वयाद्विष्णुजनान्तेशोद्धवाच्च	३।१०४
ऋद्वयान्तदृश्योर्गोविन्द ङे	३।१६६
ऋद्वये अर्	१।५२
ऋध ईत् सः	३।४६४
ऋ पूङ् स्मि अन्जु अशू कृ	३।४६०
ऋमध्यधातु नरतो री यङि	३।४६४
ऋराम गोपी सर्पिरादिभ्यः	७।१७०
ऋरामतो ङसि ङसोरस्य उच्	२।५५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
ऋरामवृभ्य इङ् वा सनि	३।४५४
ऋराम सखिभ्यामुशनस्	२।४२
ऋरामस्य गोविन्दः पाण्डवेषु	२।५४
ऋरामस्य तु वा	३।४०५
ऋरामस्य न	३।१७८
ऋरामस्य रिः श-यक् काम	३।१६७
ऋरामस्य री क्य यङोः	३।४८५
ऋरामस्य रो ये	७।६४
ऋरामस्याराम ऋरामान्त	६।२२६
ऋराम हनिभ्यामिट् स्ये	३।१६६
ऋरामाच्चतुर्भुजानुबन्धात्	७।१६०
ऋरामात् केशव णः	७।६४८
ऋरामात्तु नित्यं नेट्	३।१४७
ऋरामाद्विद्या योनिसम्बन्धे	६।२२४
ऋरामान्त तदुद्धवयोर्नरतो	३।५०६
ऋरामोद्धव सहजानिटोऽम्	३।१७२
ऋरामोद्धवादकृपः क्यप्	५।१८०
ऋषभोपानद्भ्यां ण्यः	७।७२३
ऋषिशब्दादध्याये	७।५२४
ऋष्यादे कः	७।३८६
ऋ	
ऋरामभृभ्य इट्स्त्रिविक्रमो वा	३।२१३
ऋरामवृभ्य इङ् वा सनि	३।४५४
ऋरामवृ सत्सङ्गादृचदन्तेभ्य	३।१६४
ऋरामस्येर् कंसारी	३।२१२
ऋरामान्त त्वादिभ्यां क्तेर्निः	५।४४१
लृ	
लृद्वयं लः	१।६२
लृद्वये अल्	१।५३
ए	
ए अय्	१।६३
ए-ऐ-ओ-औ चतुर्व्यूहाः	१।१३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
ए-ऐ स्थाने इरामः, ओ-औ स्थाने	२।६३
ए-ओ-भ्यामस्य हरो	१।६७
ए-ओभ्याम् डसि डसोरराम	२।३६
ए ओ वामनेभ्यो बुद्धस्यादर्शनम्	२।२५
एक एकक एकाकी	७।१०४७
एककर्तृ कयोः	४।४८, ५।७४
एकगो पूर्वान्माधवठः	७।६६४
एकद्विबहुत्वेकद्विबहुवचनानि	४।१
एकधास्थाने ऐकध्यञ्च	७।१०१४
चकशालायाश्ररामो वा	७।१०६६
एक सर्वेश्वर पूर्वपदा	७।१०४३
एकसर्वेश्वराच्च	७।५८२
एकसर्वेश्वरान्तस्य	५।२६५
एकस्थक्रिययोर्मध्ये यः	४।१४२
एकस्य पीताम्बरवत्त्वञ्च	६।३६३
एकस्य विशेषणस्य विशेष्य	२।१६३
एकस्य शेषो रामकृष्णो	६।१६४
एकाक्षरात् कृतो जातेः	७।६५६
एकाच्चपूर्ववत्तरतमौ	७।१०५५
एण्या माधव ढः	७।५६४
एतदिदमोरेनः	२।१८६
एतदोऽतोऽत्र, इदम	७।६६४
एतिस्तुशामुवृत्रद्विजुषः क्यप्	५।१७८
एतिहुर्योर्वौ कृष्णधातुक	३।१४२
एद्वये ऐ	१।५५
एनप्रत्ययान्तयोगे	४।१३६
एरामात् क्वौ वस्य हरः	५।२८३
एवं तद्धितभावेनापि	६।८७
एवं नीतिदानमानितयो	७।१०३७
एवमत्ययव्यवहारसमूह	७।१०६७
एवम् इहलोक परलोक	७।२०
एष स परो विष्णुजने	१।१४२
एहीहादयोऽन्यपदार्थे साधवः	६।६६

ऐ

ऐ आय्

१।६४

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
ऐश्वर्यार्थेनाधिना युक्तात्	४।१५०
ऐवमोह्य श्वसस्त्यश्च	७।४३१
ओ	
ओ अक्	१।६५
ओ आ अमृशसोर्न च सो नः	२।६२
ओ औ पाण्डवेषु	२।६१
ओज आदिना वर्तते	७।६३०
ओजोऽञ्ज सहोऽम्भस्तमस	६।२०४
ओजोऽप्सरसोः सस्य च हरः	३।५३०
आत्वोष्ठयोस्तु वा	६।२६८
ओद्वयस्यावावौ प्रत्यय ये	३।५१५
ओद्वये औ	१।५७
ओमि च तथा	१।५१
ओरामस्य बुद्धिनिमित्तस्येतौ	१।६०
ओरामस्य हरः इये	३।३६३
ओरामान्तानामनन्तानां	१।७०
ओषधेः केशवणोऽजातौ	७।१०६६
ओष्ठयोद्वयस्य ऋत उर् कंसारौ	३।३४८

औ

ओ आव्	१।६६
ओक्षमनपत्ये	७।३८
ओचित्यादयः	७।८३६
ओपम्ये तु नियोगेऽप्यद्वय	६।२६८

क

कंयु शंयु शुभंयव	७।६८६
कंमार्द्धाभ्यां केशवठः	७।७३६
कचटतपा हरिकमलानि	१।२१
कठचरकाभ्यां महाहरः	७।५५५
कठिनान्तप्रस्ताव संस्थानेषु	७।६६६
कण्डूयादीनां येद्विर्वचनम्	३।५६३
कण्ड्वादिभ्यो यक् करात्यर्थे	३।५६२
कतर कतमौ जातिप्रश्ने	६।३६
कत्यावेरप्रतिषेधः	७।७३२

सूत्रसूची]

१३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
कथंयोगे गर्हायां	४१८१
कथादेर्माधवठः	७६६७
कद्रूपङ्गूशश्र्वादयः	७२४०
कन्याया माधव ठः	७४२२
कन्यायाः केशव राः	७२६४
कप्	७१६६
कर्मेणिङ्	३२२४
कम्पाहारार्थेस्तद्वत्	४२७३
कम्बल्यामूर्णपिलशते साधु	७७०६
कम्बोजादे राजापत्ययोः	७३१२
करणपूर्वात् क्तादल्पाख्यायाम्	७२१४
करणपूर्वात् क्रीतात्	७२१३
करणे	५११५
करणे कर्मणि वा पाणिघ	५२६१
करणे यजो णिनिः	५२६७
करामोद्धवाद्देशात् केशवणः	७४४८
करोतेस्तु नित्यं ये च	३२०५
करोत्परामस्य उर्निर्गुणे	३४०६
कर्कलोहिताभ्यां ठीर्नृसिंहः	७१०७०
कर्णजाहादयः कर्णादिमूले	७८७३
कर्णादेः फिर्नृसिंहः	७३६६
कर्णिका ललाटिके अलङ्कारे	७५२०
कर्तृरधीनं प्रकृष्टं सहायं	४११००
कर्तृकरणे कृता	६६२
कर्तृकर्मणोः प्राप्तौ कर्तरि	४३६
कर्तृकर्मणोः षष्ठी कृदयोगे	४३७
कर्तृकर्मणोराधारोऽधिकरणम्	४६६
कर्तृगामिकले त्वथ	४२६१
कर्त्रोर्जीवपुरुषयोनंशिवहि	५१२१
कर्त्रादिभ्यो माधव ढकः	७४२५
कर्मकरो भृत्ये, दृतिहरि	५२४२
कर्मकर्तरि कर्मवदात्मपदादि	४२१
कर्मकर्त्रूपमाने	४१२३
कर्मणि	५११०८
कर्मणि च	७८४०
कर्मणि डुकृत्रः खमुणाक्रोशे	५११०३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
कर्मणि दृशेः क्वनिवेव	५१३०३
कर्मणि द्वितीया	४१८
कर्मणि प्रपूर्वाभ्यां	५२२२
कर्मणि राजघक्लेशापह	५२६२
कर्मणि विशिपतिपदि	५१२६
कर्मणि शोकापनुदः सुखदे	५२२१
कर्मणि समः ख्यः कः	५२२३
कर्मणि हतो णिनिर्निन्दायाम्	५२६८
कर्मणि हन्तेष्टक् अमनुष्य	५२५५
कर्मणि हरतेरदनुत्क्षेपे	५२२६
कर्मण्यण् तुम्भर्थे	५१४१
कर्मण्यण् ह्वेज-वेज	५२१७
कर्मण्यणुपेन्द्रगायतेष्टक्	५२२४
कर्मण्यणुपेन्द्रादारामात् कः	५२१६
कर्मण्यणुहतेरत्	५२२६
कर्मण्याशिपि हन्तेरच्	५२६३
कर्मन्द कृपाश्वाभ्यामिनिस्तयोः	७५५८
कर्मवेशाभ्यां यरामः	७८१४
कर्माध्ययने वृत्तमस्य	७६६१
कलापिनः कालापाः	७५५६
कल्यं प्रातःकाले साधु	७८१६
कल्याण्यादेर्माधवेनेवः	७२७२
क्वतेर्नरस्य न चो यडि	३४८७
क्वरमणिविषशरेभ्यः पुच्छात्	७२०४
क्वर्गन्तरस्य चवर्गः	३६४
कष्ट-सत्र-कक्ष-कृच्छ्र-गहनेभ्यो	३५३६
कस्क आदिषु च	६३३५
काकतालीयादयः साधवः	७१०६६
काण्डीराण्डीरौ	७६५२
कादयो विष्णुजनाः	११७
कापुरुष कुपुरुषौ	६२८२
कामपाल परपदं कपिलः	३७८
काम्यश्च पूर्वव्ययार्थे	३५२५
काम्ये तु नररामजविष्णुसर्गं	६३२८
कारुणाम्	६११५
कार्मुकं धनुषि साधु	७८१७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
काम्म कर्मशीले	७।४३
कार्षापण सहस्रसुवर्ण	७।७४०
कार्षापणस्य कार्षापणिक	७।७३७
कालः क्तेन	६।५८
कालकमस्थिरतद्वर्णं स्यात्	७।१०६५
कालवाचिभ्यो भवार्थवत्	७।३३५
कालसमयवेलाप्रयोगे	४।१७६
कालसामान्ये	४।१८४
कालाः षष्ठ्यन्तेन तत्परिमाणं	६।५४
कालात्	६।४६०, ७।६१
कालाध्वनोरत्यन्तव्याती	४।१०६
कालान् डेर्वा तर तम काल	६।२१७
कालान्माधवठः	७।४६२
कालायस महानसादयश्च	७।१६२
कालिकं प्राप्प्रकृष्टदीर्घं	७।८२०
कालेऽधिकरणो सर्वदादयः	७।६६६
काले सम्भवति द्रव्येण	७।६१७
काशादेरिलः	७।३६१
काशिव्रह्मादयो देशे	७।१२४
काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां	७।५५४
काश्यादिभ्यष्ठो नृसिंहो	७।४४४
का सङ्ख्यैषां कतिर्वा	७।८६४
किं कतर कतमैयंगे	४।१८८
किं कतर कतमैलिप्सायाञ्च	४।१६३
किंकिलास्त्यर्थयोर्योगे तु	४।१६०
किं क्षेपे	६।२४
कियत्तद्भ्यो गुणक्रिया	७।१०५३
किच्च डिच्च कंसारिः	३।१७
किञ्चित्त्वेन विभागे गम्येऽपि	६।१६
कित् कपिलः	३।१५
किमः को विष्णुभक्तौ	२।२१२
किमिदमोः कियदियन्तौ	७।८६३
किमेरामाख्याताव्ययेभ्यः	७।१०८०
किशरादेः केशवठः	७।६५२
कुः पापेषदर्थयोः	६।२५
कुक्कुट्यादयोऽण्डादिषु	६।२५२

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
कुञ्जादेर्माधवायन्यो बहुत्वे तु	७।२६५
कुटादेरनृसिंहो निर्गुणः	३।३६०
कुटिलिकायाः केशवणः	७।६२०
कुटीशमीशुण्डादिभ्यो रः	७।१०५१
कुण्डपाय्यसञ्चार्यौ क्रतौ	५।१७४
कुत्रस्य ववेति च	७।६६५
कुत्सिते	७।१०३४
कुप्रादयो मध्यपदलोपश्च	६।४३
कुमहद्भ्यां ब्रह्मणो वा	७।१२३
कुमारश्चाध्यापकादिभिः	६।३४
कुमारीमूढवान् कुमारः	७।३६८
कुमारी श्रमणादिभिः	६।३३
कुमुदनडवेतसेभ्यो मतुच्	७।४०६
कुमुदशर्करादेष्टरामः	७।३६०
कुमुदसोमवारादिभ्यो	७।४०३
कुम्भपद्यादयः	६।३४७
कुर्वादिभ्यो ण्यरामः	७।२८२
कुर्वादिर्ण्यरामः नरामादेश्च	७।३०७
कुलक्षीग्रीवाभ्यो माधव	७।४२१
कुलस्य करामाद्धवाभ्यां	७।६०६
कुलस्य कुल्य कौलेय	७।२८८
कुलिजान्महाहरखरामौ वा	७।७६८
कुशाप्राच्छरामः	७।१०६५
कुशिरञ्जिभ्यां श्यः कर्मकर्तरि	४।२४
कुसीदं प्रयच्छति कुसीदिकः	७।६३२
कुत्र आमन्तवातुवत्	३।१२१
कुत्रः कर्म वा प्रतियत्ने	४।६३
कुत्रस्तु नित्यम्	३।४०३
कृतलब्धक्रीतकुशलाः	७।४८५
कृता यथाविधानम्	६।७६
कृते द्विवचनेऽनेक	७।११०८
कृते संज्ञायाम्	७।५६४
कृतो ग्रन्थः	७।५६३
कृतो बाहुल्यात् क्त्वा च	५।१००
कृत्स्नत्वाद्यं सप्तम्यन्तं पूर्वं	५।६८
कृद्गोप्या निषेधः	६।२४६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
कृपादौ लृत्वं नेष्यते	५।४४८
कृपेऋलृ	३।२४६
कृपेर्नेट् सरामादि	३।२५०
कृपेर्बालकल्कौ च	३।२४७
कृपेश्चलीकलृप्यः, स्वयः	३।४६६
कृविधिव्योः कृधी इनौ	३।३७६
कृशाश्वादेश्छो नृसिंहः	७।३८८
कृष्णनाम-कृष्णतो डसेः स्मात्	२।१६६
कृष्णनाम-कृष्णतो डेः स्मिन्	२।१७१
कृष्णनाम-कृष्णतो डेः स्मै	२।१६८
कृष्णनाम-कृष्णतो जसः शीः	२।१६७
कृष्णनाम-कृष्णराधाभ्यां	२।१७०
कृष्णनाम बहुभ्यां, न तु	७।६६१
कृष्णनामयोगे निमित्तकारण	४।१३५
कृष्णनाम-राधातः स्याप्	२।२१३
कृष्णनामविष्वग्देवानां	५।२८६
कृष्णनाम वृत्तिमात्रे	६।२५१
कृष्णपुरुषे	६।२७६, ७।११०
कृष्णप्रवचनीयैर्योगे द्वितीया	४।१०७
कृष्णस्य ए आसि	२।१६
कृष्णस्य ए वैष्णवे बहुत्वे	२।१६
कृष्णस्य त्रिविक्रमो गोपाले	२।१३
कृष्णात् डसः स्य	२।१८
कृष्णात् डसेरात्	२।१७
कृष्णात् डर्यः	२।१५
कृष्णात् टा इनः	२।१२
कृष्णादाप्	७।१८४
कृष्णाद्विस् ऐस्	२।१४
कृष्-स्पृश्-मृश्-तृप्-टप्	३।१७०
कृ-सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-क्षु-स्रुभ्य	३।१०५
केकयाद्वा	७।३१५
केचिच्छब्दा विशेषणत्वेऽपि	२।१६२
केदारान्नृसिंह यश्च	७।३३८
केलिमः कर्मकर्त्तरि	५।१६१
केवलसमासाश्च दृश्यन्ते	६।१८०
केवलस्य प्रत्ययवेर्हरः	३।५३४

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
केवलाभ्याश्च	७।७४४
केशादेर्वो वा	७।६५१
कोः कत् सर्वेश्वर त्रिवद	६।२८०
कोः का पथ्वक्षयोरीषदर्थे	६।२८१
कोटरावणादयः संज्ञायाम्	६।२३४
कोऽयं प्रभुश्च	७।६११
कोशल कर्म्मरि छाग	७।२८५
कोषाद्विकारे माधवः	७।४८६
कोष्ण कवोष्ण कदुष्णा	६।२८६
कौण्डिन्यस्य कुण्डिनश्च	७।३१६
कौपिञ्जल हास्तिपादाभ्याम्	७।५७४
कौरवक यौगन्धरकौ वा	७।४४६
कौषेयं वस्त्र, गोमयं गोः	७।५८४
क्त-अनतुमुखलर्थेषु तु	५।१५२
क्तः कर्त्तरि च वाच्यः	५।२६
क्तवतुर्भूते	५।२५
क्तस्येनन्तस्य योगे कर्मणि	४।६८
क्तिर्लक्ष्यां भावे	५।४३८
क्तो भूते भावकर्मणोः	५।२६
क्त-वाणम्	५।१३३
क्त्वा मान्ताश्च कृदव्ययम्	४।४७
क्त्वार्थे णमुश्चाभीक्ष्णे	५।६५
क्त्वि तु क्रमो वा	३।५०१
क्त्वो यवनञ्पूर्वसमासे	५।८५
क्यस्य तु वा	३।४८२
क्रतुभ्यो यज्ञादिभ्यश्च	७।५२३
क्रतुविशेषादुक्त्यञ्ज	७।३४७
क्रमस्त्रिविक्रमः परपदे शिवे	६।१५६
क्रमादिभ्यो वुः	७।३५०
क्रयाक्रयिकादयः	६।१७
क्रयं क्रयार्थं प्रसारिते	५।१६४
क्रयादादयश्च साधवः	५।२७८
क्रियाप्रकारवृत्तेः संख्याया	७।१०१२
क्रिया यत् साधिका तत् कर्म	४।१७
क्रियायारिचह्ले हेतौ च शतृ	५।५
क्रियार्थत्वे तुमुः	४।४६

सूत्रानि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
क्रियाविशेषणं कर्म तच्च	४।१६
क्रियाविशेषणस्य न षष्ठी	४।३८
क्रियाव्यवधाने काले	५।१३०
क्रियासमभिहारे	४।१६६
क्रियासम्बन्धविशेषि कारकम्	४।१०
क्रियासातत्यसामीप्ययोर्यथा	४।१६६
क्रीमः पर्यवेः परात्	४।२०६
क्रुञ्चाया वामनश्च, उक्ष्णो	७।४१५
क्रुञ्च् दधृष सज् उष्णिहश्च	५।२७०
क्रुद्धोः सोपेन्द्रयोः	४।६४
क्रुधाद्यर्थानां यं प्रति कोपः	४।६३
क्रोधभूषार्थेभ्यश्चानः	५।३३७
क्रोष्ठु शब्दस्य पाण्डवेषु	२।५६
क्रयादेः शप् स्ना	३।४१२
क्रियन्ते ऽक्षिण तद्वति पुरुषे	७।६३८
क्वचित् कृत्तुल्यार्थेनाव्ययेन च	४।५०
क्वचित् क्यङः क्विप्	३।५३३
क्वचित्तद्विवक्षायाञ्च	६।७३
क्वचिदकृतापि	६।६४
क्वचिदन्यत्रापि	५।७०
क्वचिदसंज्ञायामपि	५।३८१
क्वचिदाख्यातलोपः	६।१०६
क्वचिद्बहुनां विशेषणत्वे	२।१३४
क्वचिद्वा	५।४१३, ६।१०८, ७।२२४
क्वचिद्विशेषणेन च विशेषणम्	६।१५
क्वचिन्न	५।४१४
क्वचिन्न समासः	६।१४
क्वचिन्निन्दश्च	६।२३
क्वचिन्मध्यपदलोपः	६।१०७
क्वाण-क्वण-निक्वाण-निक्वणाः	५।४२०
क्विप् पर्यन्तास्तच्छील	५।३१५
क्षमार्थान्मृषो विष्णुनिष्ठा न	५।५४
क्षय्याजय्यौ शक्यार्थे	५।१६५
क्षान्तौ ण्यन्तागमेः	४।२११
क्षिपोऽभिप्रत्यतेः परात्	४।२६६
क्षियस्त्रिविक्रमो मयते	५।६३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
क्षियस्त्रिविक्रमो विष्णुनिष्ठायां	५।२८
क्षीरस्यलवणस्यौ दधिस्य	३।५२४
क्षुद्रजन्तूपतापेभ्यश्च	७।६३६
क्षुद्रादिभ्य एरण् वा	७।२७६
क्षुब्धादयो मन्थादौ साधवः	५।५७
क्षुब्धादिषु न णत्वम्	३।४१६
क्षेत्रियो जन्मान्तरेचिकित्स्ये	७।६२४
क्षेमप्रियमद्रेषु कर्मसु	५।२५३

ख

खच्छथफा हरिखड्गाः	१।२२
खड्गकण्ठदन्तेश्च तथा	६।११४
खनः खेयं निपात्यते	५।२८१
खल-यव-मास-तिल-वृष	७।७१२
खारीकाकिनीभ्यामीकः	७।७४३
खाय्या वा	७।१२८
ख्यत्याभ्यां ङसिङ्सोरुस्	२।४७
ख्यातौ	६।१६०

ग

गजडदबा हरिगदाः	१।२३
गत्यार्थाकर्मकश्लिषशीङ्	५।६६
गत्यार्थाद्विङ् कौटिल्य एव	३।४८३
गत्वरः साधुः	५।३४८
गन्धने तु भर्त्सने यत्न	४।२३१
गम ओच्	५।३७५
गम-हन-जन-खन-घसामुद्धवा	३।२१०
गम-हन-विन्द-दृश-विशिभ्य	५।२२
गमादेर्हरिवेणुहरः क्वौ	५।२८४
गमिगाम्यादयस्तु भविष्यति	५।१६६
गमेरिट् सरामादिराम	३।२११
गम्भीर वहिर्देवपञ्चजनेभ्यो	७।५०७
गम्यस्य यवन्तस्य कर्मणोऽधि	४।१२२
गगदिः	७।३१७
गगदिर्माधव यरामः	७।२६२
गह्य पाशः	७।१०१५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
गल्भादेरात्मपदञ्च	३५३५
गवाक्षा गृहरन्ध्रे, गवेन्द्रो	६३०३
गवादौ नाभेर्नभञ्च, शुनः	७१७०७
गवादौ विन्दतेः शः	५१२०६
गवाश्वादीनाम्	६११२७
गव्यपयस्ये	७१५६५
गव्युतिः क्रोशयुग्मे	६३०४
गहादिभ्यश्छरामः	७१४५०
गायतेस्थक टणनौ	५१२१३
गार्गीप्रभृतेगार्ग्यायण्यादयो	७१२०८
गार्हपत्योऽग्निभेदे, नाव्यं	७१६८७
गिरादेराप् वा	७११८७
गिरिनद्यादिषु वा	६३२२
गिरो रो लः सर्व्वेश्वरे	३३८८
गिरौ तु गिरिशः साधुः	५१२३६
गुणप्रकर्षयुक्तात्तमेष्टौ	७१०२०
गुणवचनाद् ब्राह्मणादेश्च	७१८४१
गुणवचनी त्वतापोः	७१८६
गुणवाचिभ्यो मत्वर्थस्य	७१६३१
गुणाद्धेतो पञ्चमी तृतीया	४१३२
गुन्फादेर्नलोपः शे वा	३३८६
गुपूधूपविच्छिपनिपणिभ्य	३१५०
गुपेः कुप्यम् अहेमरूप्ये	५११७५
गुप्-तिज् किद्धचः सन्	३१२१७
गुरुलघ्वादेः	७१६
गुरोरनृतोऽनन्तस्या	११७८
गुहादयोऽधिकरणादौ	५१४४६
गोः सर्व्वेश्वरादिप्रत्यय	७१२५६
गोगेयुगादयोः पशुद्वित्वे	७१८७८
गोगाष्टादयः पशुस्थाने	७१८७६
गोचरसञ्चरवह्व्रजव्यजापण	५१४२६
गोत्र प्रशंसायां युवा वा	७१३००
गोत्रक्षत्रियाख्याभ्यां बहुलं	७१५४६
गोत्रचरणाभ्यां वुर्तु सिंहः	७१५७०
गोत्रचरणाभ्यां श्लाघादि	७१८४६
गोत्रपाप ईः पुत्रपत्याः	६१२५६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
गोत्रलक्ष्यां ण माधवठौ	७३०४
गोत्रादुक्षादेश्च वुर्तु सिंहः	७३५६, ५३२
गोत्रे	७३२६०
गोद्विसर्व्वेश्वराभ्यां यरामो	७३७५०
गोधाया गौधार गौधेर	७३७५
गोधूलः कालभेदे	७३५६
गोपालपूर्व्वस्य तु न तौ	७३६३
गोरतद्धितलुकि	७३११७
गोरामे वा सन्धिः	६३०१
गोपीप आप ऊङ्श्चान्तस्या	६५६
गोरारवः सर्व्वेश्वरे वा	६३०२
गोषङ्गवादयः पशुषट्के	७३८७६
गोष्ठं व्रजे निष्णातनदीष्णौ	५१४६६
गोष्ठीनो भूतपूर्व्वगोष्ठ	७३८७०
गोह ओ ऊ सर्व्वेश्वरे	३१२५८
ग्रहणे तु हर वा	७१६१६
ग्रहवृद्धगमवशरणेभ्यः	५१४१७
ग्रहादेर्णिनिः	५११६८
ग्रहि-ज्या-व्ययि-व्यधि-वशि	३१२६५
ग्रहेरिटस्त्रिविक्रमोऽन	३१४१६
ग्रामकौटाभ्यां तक्षणः	७३११८
ग्रामगः कर्त्तरि च अगो	५१२६०
ग्रामगजनबन्धुसहायेभ्यः	७३४०
ग्रामजनपदैकदेशत्वे	७३५६
ग्रामाद्यनृसिंहखौ	७३२०
ग्राहो जलचरे साधुः	५१२११
ग्रीष्मवसन्ताभ्यां वा	७३६४
ग्रीष्मावरसमाभ्यां वुर्तु सिंहः	७३६६
ग्रैवग्रैवेयके	७३०६
ग्लाहोऽक्षस्य परो उपसरो	५१४२४
ग्लास्थाभ्यां स्तुः	५३२१

घ

घञ्जठधभा हरिघोषाः	११२४
घटादीनामुद्धवस्य वामनः	३१४३१
घण्	५३७६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
घण्णलथुकयः पुंसि	५१३७७
घनः काठिन्यकठिनयोः	५१४२६
घ्राघेट् शाछासाभ्य	३१६७
ङ	
ङजणनमा हरिवेणवः	११२५
ङिता वृष्णि संज्ञाः	२१३३
ङिन्निर्गुणः	३११६
ङौ नलापनिषेधः क्ये	३१५२७
च	
चक्रपाणेस्तु वा	३१३४२
चक्रे बन्धः	५११२०
चक्षादेरुसिः	५१३७४
चक्षिङः ख्याञ् रामधातुके	३१३३०
चछयोः शरामः	१११३४
चजोः कगौ घिण्यतोरज	५११६७
चटकादेरन् लक्ष्म्यान्तु महा	७१२७४
चतुरनडुहोराम् कृष्णस्थाने	२११३०
चतुर्थी	६१७१
चतुर्थी हिताद्यर्थैः	४११२०
चतुर्ते तुर्यतुरीयो	७१६०३
चतुर्थ्यर्थे च	७१७५६
चतुर्भुजानुबन्धगोप्याः	६१२४७
चतुर्भुजान्तादिसन्तात्तान्तादोष	७१३२
चतुर्व्युहान्तानामारामान्त	३११७६
चरणोभ्या धर्मवत्	७१३४४
चरति	७१६१२
चरफलघोरस्य उस्ते	५१३६
चरादीनामत्प्रत्ययान्तानां	५१२०१
चर्मविकृतेः केशवणः	७१७२४
चर्मोदरयोः पूरेः वृष्टि	५११११
चलनशब्दार्थादिकर्मकादनः	५१३३३
चवर्गस्य कवर्गो विष्णुपदान्ते	२१६७
चातुरथिकस्य स्मरहरस्तन्नाम्नि	७१४०४
चातुर्मासिक चातुर्मासिनौ च	७१८०६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
चातुर्मास्यस्तद्भवयज्ञे	७१८०७
चातुर्वर्ण्यादयः स्वार्थे	७१८५२
चादयो निपातसंज्ञाः	२१२१८
चापले यावद्बोधम्	६१३७०
चायतेरिचः क्त्वौ अपचितिः	५१४३६
चार्म्मः कोषे	७१३७
चित्तेस्त्रिविक्रमश्च	७११७५
चित्तात् क्यन्तात्मपदं चाश्चर्ये	३१५४५
चित्ता रोहिणी रेवतीभ्यो	७१४८०
चिरत्नपुस्तने च अग्रिम	७१४७१
चीवरादज्जने परिधाने च	३१५५१
चुरादेर्णिः	३१४२३
चूडादेः केशवणः	७१८२२
चूर्णादिनिः	७१६२६
चेर्हस्तादाने, न तु स्तेये	५१४०६
छ	
छत्तादिभ्यः केशवणः	७१६५६
छदिर्बलिभ्यां माधवढः	७१७२२
छन्दसोः स्वार्थे	७१३७६
छन्दसा निर्मितं छन्दस्यम्	७१६८६
छन्दसो यरामाणी	७१५२६
छन्दोगौकथिक याज्ञिक	७१५७२
छशो राज् यज् भ्राज्	२११०३
छश्च पूर्णाविधिः	७१७२७
छस्य शो, वस्य उट्	३१४२१
छादेर्घः प्रायेण	५१४३०
छाया छायावतां बाहुल्ये	६११४६
छेदादिभ्यो नित्यत्वे	७१७७५
ज	
जक्षादिरपि नारायणः	३१३१६
जङ्गलधेनुबलजान्तस्य	७१२४
जज्ञशरामेषु जरामः	१११११
जटाघाटाकालाभ्यः क्षेपे	७१६३५
जन-खन सनामारामो वा	३१२५६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
गल्भादेरात्मपदञ्च	३५३५
गवाक्षा गृहरन्ध्रे, गवेन्द्रो	६३०३
गवादौ नाभेर्नभञ्च, शुनः	७७०७
गवादौ विन्दतेः शः	५१२०६
गवाश्वादीनाम्	६१२७
गव्यपयस्ये	७५६५
गव्युतिः क्रोशयुग्मे	६३०४
गहादिभ्यश्छरामः	७४५०
गायतेस्थक टणनौ	५१२१३
गार्गीप्रभृतेगार्ग्यिण्यादयो	७१२०८
गार्हपत्योऽग्निभेदे, नाव्ये	७६८७
गिरादेराप् वा	७१८७
गिरिनद्यादिषु वा	६३२२
गिरो रो लः सर्व्वेश्वरे	३३८८
गिरौ तु गिरिशः साधुः	५१२३६
गुणप्रकर्षयुक्तात्तमेष्टौ	७१०२०
गुणवचनाद् ब्राह्मणादेश्च	७८४१
गुणवचनी त्वतापोः	७८६
गुणवाचिभ्यो मत्वर्थस्य	७६३१
गुणाद्धेतो पञ्चमी तृतीया	४१३२
गुन्फादेर्नलोपः शे वा	३३८६
गुपूधूपविच्छिपनिपणिभ्य	३१५०
गुपेः कुप्यम् अहेमरूप्ये	५१७५
गुप्-तिज् किद्धचः सन्	३२१७
गुरुलघ्वादेः	७६
गुरोरनृतोऽनन्तस्या	१७८
गुहादयोऽधिकरणादौ	५४४६
गोः सर्व्वेश्वरादिप्रत्यय	७२५६
गोगेयुगादयोः पशुद्वित्वे	७८७८
गोगाष्टादयः पशुस्थाने	७८७६
गोचरसञ्चरवह्व्रजव्यजापण	५४२६
गोत्र प्रशंसायां युवा वा	७३००
गोत्रक्षत्रियाख्याभ्यां बहुलं	७५४६
गोत्रचरणाभ्यां वुर्तु सिंहः	७५७०
गोत्रचरणाभ्यां श्लाघादि	७८४६
गोत्रपाप ईः पुत्रपत्याः	६२५६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
गोत्रलक्ष्यां ण माधवठौ	७३०४
गोत्रादुक्षादेश्च वुर्तु सिंहः	७३५६, ५३२
गोत्रे	७२६०
गोद्विसर्व्वेश्वराभ्यां यरामो	७७५०
गोधाया गौधार गौधेर	७२७५
गोधूलः कालभेदे	७१५६
गोपालपूर्व्वस्य तु न तौ	७१६३
गोरतद्धितलुकि	७११७
गोरामे वा सन्धिः	६३०१
गोपीप आप ऊङ्श्चान्तस्या	६५६
गोरारवः सर्व्वेश्वरे वा	६३०२
गोषङ्गवादयः पशुषट्के	७८७६
गोष्ठं व्रजे निष्णातनदीष्णौ	५४६६
गोष्ठीनो भूतपूर्व्वगोष्ठ	७८७०
गोह ओ ऊ सर्व्वेश्वरे	३२५८
ग्रहणे तु हर वा	७६१६
ग्रहवृहगमवशरणेभ्यः	५४१७
ग्रहादेर्णिनिः	५१६८
ग्रहि-ज्या-व्ययि-व्यधि-वशि	३२६५
ग्रहेरिटस्त्रिविक्रमोऽन	३४१६
ग्रामकौटाभ्यां तक्षणः	७११८
ग्रामगः कर्त्तरि च अगो	५२६०
ग्रामगजनबन्धुसहायेभ्यः	७३४०
ग्रामजनपदैकदेशत्वे	७४५६
ग्रामाद्यनृसिंहखौ	७४२०
ग्राहो जलचरे साधुः	५२११
ग्रीष्मवसन्ताभ्यां वा	७४६४
ग्रीष्मावरसमाभ्यां वुर्तु सिंहः	७४६६
ग्रैवग्रैवेयके	७५०६
ग्लाहोऽक्षस्य परो उपसरो	५४२४
ग्लास्थाभ्यां स्तुः	५३२१
घ	
घञ्जठधभा हरिघोषाः	१२४
घटादीनामुद्धवस्य वामनः	३४३१
घण्	५३७६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
घणलथुकयः पुंसि	५१३७७
घनः काठिन्यकठिनयोः	५१४२६
घ्राघेट् शाछासाम्य	३११८७
ङ	
ङग्रणनमा हरिवेणवः	११२५
ङिता वृष्णिसंज्ञाः	२१३३
ङिनिर्गुणः	३११६
ङो नलापनिषेधः क्ये	३५२७
च	
चक्रपाशस्तु वा	३१३४२
चक्रे बन्धः	५११२०
चक्षावेरुसिः	५१३७४
चक्षिङः ख्याञ् रामधातुके	३१३३०
चछयोः शरामः	१११३४
चजोः कगौ घिण्यतोरज	५११६७
चटकादेरन् लक्ष्म्यान्तु महा	७१२७४
चतुरनडुहोराम् कृष्णस्थाने	२११३०
चतुर्थी	६१७१
चतुर्थी हिताद्यर्थैः	४११२०
चतुर्त्तुर्त्यतुरीयो	७१६०३
चतुर्थ्यर्थे च	७१७५६
चतुर्भुजानुबन्धगोप्याः	६१२४७
चतुर्भुजान्तादिसन्तात्तान्तादोष	७१३२
चतुर्व्युहान्तानामारामान्त	३११७६
चरणोभ्यो धर्मवत्	७१३४४
चरति	७१६१२
चरफलयोरस्य उस्ते	५१३६
चरादीनामत्प्रत्ययान्तानां	५१२०१
चर्मविकृतेः केशवणः	७१७२४
चर्मोदरयोः पूरेः वृष्टि	५११११
चलनशब्दार्थादिकर्मकादनः	५१३३३
चवर्गस्य कवर्गो विष्णुपदान्ते	२१६७
चातुरर्थिकस्य स्मरहरस्तन्नाम्नि	७१४०४
चातुर्मासक चातुर्मासिनौ च	७१८०६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
चातुर्मास्यस्तद्वयज्ञे	७१८०७
चातुर्वर्ण्यद्वयः स्वार्थे	७१८५२
चादयो निपातसंज्ञाः	२१२१८
चापले यावद्वोधम्	६१३७०
चायतेरिचः क्त्वौ अपचितिः	५१४३६
चार्म्मः कोषे	७१३७
चित्तेस्त्रिविक्रमश्च	७११७५
चित्तात् क्यन्तात्मपदं चाश्चर्ये	३१५४५
चित्रा रोहिणी रेवतीभ्यो	७१४८०
चिरत्नपुरुत्ते च अग्रिम	७१४७१
चीवरादर्ज्जने परिधाने च	३१५५१
चुरादेर्णिः	३१४२३
चूडादेः केशवणः	७१८२२
चूर्णादिनिः	७१६२६
चेर्हस्तादाने, न तु स्तेये	५१४०६
छ	
छत्वादिभ्यः केशवणः	७१६५६
छदिर्बलिभ्यां माधवढः	७१७२२
छन्दसोः स्वार्थे	७१३७६
छन्दसा निर्मितं छन्दस्यम्	७१६८६
छन्दसो यरामाणी	७१५२६
छन्दोगौकथिक याज्ञिक	७१५७२
छशो राज् यज् भ्राज्	२११०३
छश्च पूर्णाविधिः	७१७२७
छस्य शो, वस्य उट्	३१४२१
छादेर्घः प्रायेण	५१४३०
छाया छायावतां बाहुल्ये	६११४६
छेदादिभ्यो नित्यत्वे	७१७७५
ज	
जक्षादिरपि नारायणः	३१३१६
जङ्गलधेनुबलजान्तस्य	७१२४
जज्ञशरामेषु शरामः	१११११
जटाघाटाकालाभ्यः क्षेपे	७१६३५
जन-खन सनामारामो वा	३१२५६

सूत्रसूची]

१६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
जनने प्रकृतिः	४१७८
जनपद पाण्डोश्च नृसिंहये	७१५३
जनपदसनामभ्यः क्षत्रियेभ्यो	७१३०६
जनि बध्योर्मान्तानाञ्चा	३११५७
जन्या जामातुर्व्यस्येषु जनीम्	७१६७६
जम्वा केशव णो	७१६००
जराया जरस् वा सर्वेश्वरे	२१६८
जल्पमिक्षकुट्टलुण्ठवृड् आकट्	५१३४०
जवर्जहरिगदादेरक	२१११४
जहातेरारामहरः	३१३५०
जहातेहिः क्त्वि	५१८४
जागर्त्तेरुक्	५१३४६
जागर्त्तेर्गोविन्दः सर्वत्र	३१३१८
जागृशुभजृषां गोविन्दश्च	५१४४७
जातमहद्वृद्धेभ्यः उक्षणः	७११०८
जातिः प्रशसावचने	६१२६
जातिकाल सुखादिभ्यः	६११६२
जातिगुणक्रिया द्वारा यस्य	२११६०
जातिर्षु वत्यादिभिः	६१३०
जातेर्वा न त्वाच्छादनात्	७११६६
जात्यन्ताच्छरामो द्रव्ये	७११०७
जात्याख्यायामेकवचने	४१६
जान्तनशोरुद्धवनरामहरो वा	५१८३
जायायाः पत्यौ जम्भावो	६१२३१
जायाया जानिः	६१३३६
जिभूभ्यां स्नुक्	५१३२०
जिह्वामूलीयाङ्गुलीयो	७१५०४
जीर्यतेरतृ भूते च	५११८
जीवनाहेतौ परिक्लिश्यमाने	५११२८
जुचङ्कम्यदद्रम्यसृष्टिगृधिजल	५१३३६
जुहात्यादेः पूर्ववद्विर्वचनम्	३१३४४
जृ भ्रमु लस फणादीनां	३१११४
जृ व्रश्चिभ्यामिट् क्त्वि	५१८१
जृ स्तन्भु भ्रुचु म्लुचु ग्लुञ्चु	३१२७३
जेर्गिः सन्नधोक्षजयोः चेः	३११६६
जेस्त्वन्त्वोस्त्यन्ती	३११६८

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
ज्ञ उपेन्द्रविनाभावात्	४१२६४
ज्ञपेर्ज्ञप्सः	३१४६५
ज्ञाजनोर्जा शिवे	३१३७६
ज्ञोऽकर्मकापह्नवार्थतः	४१२३६
ज्योतिर्गणजन	६१२७२
ज्योत्स्नातमिस्रा	७१६५६
ज्योत्स्नादेः केशवणः	७१६४४
ज्वर त्वर स्त्रिव्व मवान्तु	३१४२२
ञ	
ञवर्जितास्तु विष्णुगणाः	११२०
ञिद्ध्य उभयपदिभ्यो णोः	४१२०१
ञिरामेतो बुद्धीच्छा	५१७२

ट	
टच् स्तोमे	७१८८७
टठयोः षरामः	११३०५, १३५
टनः करणाधिकरणयोः	५१४५८
टनः कर्मदौ च	५१४६४
टित् केशवः, टणिन्माधव इति	७१२४६
टित् केशवसंज्ञः	७१११४
टुरामेतोऽथुर्भावे पुंसि	५१४३४

ड	
उढणेषु णरामः	११११०
डोडो नेट च	५१३५
डुरामेतः क्त्वि मः क्रिया	५१४३३

ढ	
ढस्य हरो ढे पूर्वस्य	३११७७

ण	
णक तृनौ	५११६४
णको लक्ष्म्यां भावे इरामो	५१४५२
णटाभ्यां सः षः	३१५०८
णमुः	५११०५
णिः प्रेरणादौ	३१४२६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
णिजिविजिविषां नरस्य	३।३५१
णित् नृसिंहः	३।१४
णि श्रि द्रु स्रु कमिभ्योऽङ्	३।२०८
णेरुभयपदम्	३।४२४
णैर्णौ हरे न दशावतार	३।४३०
णैर्न हर आम अन्त आलु	३।२३२
णैर्व्वा ख्यातेश्च, नरामोद्धवाद्	५।७
णैर्हरोऽनिडादौ रामधातुके	३।२२५
णैर्हरो विष्णुनिष्ठायाम्	५।५६
ण्यन्ताच्च	५।३१६
ण्यन्तादासः श्रन्थादेश्चानो	५।४५१
ण्यन्ते च न	५।८
ण्यार्षक्षत्रियेभ्यो नृसिंहे	७।३२७

त

त एतद्विजिता विष्णुदासाः	१।२६
तं हरति वहत्युत्पादयति	७।७६२
तच्चरति महानाम्न्यादिभ्यः	७।८०८
तत आगतः	७।५२६
ततः प्रभवति	७।५३४
ततः शश्छो वा	१।६६
तत्कर्मार्हंतीत्यत्रापि	७।७८३
तत्कालेऽपि क्त्वा ववचित्	५।७६
तत्परस्य नरलघोस्त्रिविक्रमः	३।२३०
तत्पूर्येकविष्णुजनादौ च वा	६।२६१
तत्प्रकृतवचने केशवमयः	७।१०८३
तत्र जटशङ्का इतः	२।५
तत्र जातः	७।४७३
तत्र टिन्मितौ सर्वत्रागमौ	२।२१
तत्र तत्र गृहीत्वा तेन तेन	६।११२
तत्र दीयते कार्यं वा	७।८०३
तत्र दीयते कार्यं वेति	७।८११
तत्र नाम्नः सुँ औ जस्	२।४
तत्र नियुक्तः	७।६६६
तद् प्रायो वर्तमानकाले	३।३
तत्र भवः	७।५००

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
तत्र भुक्तोत्सृष्टमित्यर्थे	७।३६६
तत्र श्यामरामकर्मधारयो	६।२
तत्र संपरिभ्यां भूषणे	३।४०६
तत्र संस्कृतं भक्ष्यञ्चेत्	७।३७०
तत्र समासान्ताः	७।६३
तत्र साधुः	७।६६३
तत्रादौ चतुर्दश सर्वेश्वराः	१।२
तत्रावन्तलक्ष्मी राभासज्ञा	२।६३
तत्रार्हीयाः	७।७२८
तत्रैव तस्यैव वा	७।८२६
तथयोः शरामः	१।१०६, १३६
तथा केवलेन सरामेण	३।५०६
तथाख्यातमाख्यातेन	६।१००
तथाङ्पूर्वाज्ज्योतिरुद्गम	४।२३५
तथा नव सूर मत्त यविष्ठ	७।१०८८
तथा, प्रत्याङ्पूर्वं वर्जयित्वा	४।२५४
तथा यावदियत्तायाम्	६।१६६
तददूरभवश्च	७।३८६
तदधीते वेद वा	७।३४६
तदधीन वचने कृम्वस्ति	७।११२५
तदन्तश्चक्रपाणिसंज्ञः	३।४६८
तदर्हति	७।७७४
तदर्हम्	७।८३०
तदस्मिन्नधिकमिति दर्शान्तादच्	७।८६७
तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि	७।३८७
तदस्मिन् वृद्धिरायो लाभः	७।७५८
तदस्मै दीयते नियुक्तम्	७।६६३
तदस्य अस्मिन् वा स्यादिति	७।७२५
तदस्य पण्यम्	७।६५१
तदस्य परिमाणम्	७।७७०
तदस्य प्रयोजनमत्रार्थे	७।८२१
तदस्य प्रहरणम्	७।६५५
तदस्य ब्रह्मचर्यम्	७।८०४
तदस्य शिल्पम्	७।६५३
तदस्य शीलम्	७।६५८
तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य	७।८८३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
तदस्य सोढम्	७४६६
तदस्यां प्रहरणमिति	७३८१
तदस्यास्त्यस्मिन् वा मतुः	७६३०
तदस्येत्यर्थे प्रयोजनाद्	७३८०
तदा तस्य, नरस्य च तदिष्यते	६५७६
तदादिद्वये द्वयम्	१३८
तदादिसप्तानां संसारस्या	२१८३
तदाहेति माशब्दादिभ्यः	७६०५
तदुच्चति	७६४४
तदेकधर्मत्वे तु न समासः	६१११
तद्गच्छति पथिदूतयोः	७५३६
तद्धितविप्रत्यये तु नेति	५२६७
तद्रक्षति	७६४५
तद्वहति	७६७३
तद्वहतीत्यतः प्राङ् माधवठः	७६०३
तद्विध्यति न चेद्वनुषा	७६८०
तनादेः शपोऽपवाद उः	३४००
तनादेः सेर्महाहरो वा	३४०२
तनोतेराराम वा यकि	३४०१
तनोतेरुद्वयस्य त्रिविक्रमो	३४६२
तन्तनेस्नसि न हरिवेणुहरः	३४६६
तन्त्रको नवकर्पटे	७६२०
तपः कर्मकस्य तपेः कर्त्तरि च	४१२२
तपस्वि सहस्रिणौ तापस	७६४३
तमधीष्ठो भूतो भूतो भावी	७७६३
तयो रूपाणि सुजसुड्डसुसु	५२६१
तरतम कल्पचेलेषु ब्रुवादिष्विव	७६६
तरति	७६१०
तरतो चेत्येके	३३५६
तरान्तगुणेन तरलोपश्च	६८५
तवर्गस्य चवर्गश्चवर्गयोगे	२६५
तश्च से	११०३
तसिर्वा	७११०२
तसिश्च	७५६०
तस्यप्रत्ययान्तस्वाङ्गे कृभूभ्याम्	५१३५
तस्मात् जसुशसारीश	२१२६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
तस्मान्नुड् द्विविष्णुजने	३१११
तस्मै प्रभवति सन्तापादिभ्यः	७८१५
तस्मै हितम्	७७१०
तस्य धर्म्यम्	७६४६
तस्य निमित्तं संयोगोत्	७७४६
तस्य निवासः	७३७५
तस्य पूरणे केशवाः	७८६६
तस्य भार्येत्यर्थे	७२२२
तस्य भावस्त्वतापो	७८३१
तस्य वापः	७७५६
तस्य विकारः	७५७६
तस्य विषये देशे	७३७६
तस्य व्याख्यानमिति	७५२१
तस्य समूहो ब्रह्मणि	७३३६
तस्यापत्यम्	७२५८
तस्यावक्रयः	७६५०
तस्याव्ययत्वं ब्रह्मत्वञ्च	६१५२
तस्येदम्	७५६६
तारका नक्षत्रे	७७३
तालादेः केशवणः	७५८८
तावक तावकीन यौ माक	७४४०
तावदादेरिको वा	७७३३
तिक्तादेनृसिंह फिः	७२८४
तित्तिरि वरतन्तु खण्डिकेभ्यः	७५५३
तित्तिर्यादिना प्रोक्तं छन्दः	७५५२
तिथटि च दृश्यते	७८६
तिरसस्त्वगतौ च वा	६३३१
तिर्य्यवस्तिरश्चरुदच उदीचि	२१०१
तिलपिञ्ज तिलपेजौ	७३७५
तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यो	७८५६
तिवादि नवनवानां	३१६
तिष्ठद्गुप्रभृतीनि काल	६१७८
तिसृचत्त्रा रः सर्वेश्वरे	२७२
तीयस्य कृष्णनामता वृष्णिषु	२१८२
तीरात्तरपदात् केशवणः	७४३६
तीर्थकाकादयः पात्रे	६६१

सूत्रानि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
तुदादेः शपः शः	३१३८१
तुन्दातरिलस्तौ च	७१६६२
तुन्दि बलि वटिभ्यो भः	७१६६०
तुभ्यम् तवयोस्ते, मह्यम्	२१२००
तुमुणकौ तत्क्रियार्थत्वे	५११३६
तुमा मस्य हरः काममनसोः	६११०४
तुम्बन्तक्रियान्तरे गम्ये	४१११८
तुरासाह् जलानाह् पृष्ठवाहः	५१२७५
तुल्यशब्दानां भिन्नार्थानामपि	६११६५
तुल्याधिकरणेत्यनुवृत्तेः	६१४५
तुल्यार्थः षष्ठी च	४१११२
तुह्योस्तातडाशिषि वा सर्व्वत्र	३१४०
तूर्य्यवादकानाम्	६११२६
तूष्णींशीले तूष्णीकः साधुः	७११०४६
तूष्णीमस्तूष्णीकां साधु	७११०३२
तूष्णीमि भूवः	५११३७
तृणादेः सः	७१३६२
तृनीया	६१६०
तृतीयान्तविशेषात् धात्वर्थ	३१५५६
तृतीयायामुपदंशेद्वितीय	५११२५
तृतीया योगतः समः	४१२४६
तृतीयार्थकृतगुणवचनेनार्था	६१६१
तृतीयासप्तम्योस्तु वा	६११५५
तृन्	५१३१६
तृप्तचर्थकरणे षष्ठी वा	४११०४
तृलादि कृति तु षष्ठ्येव	४१३३
तृहः इनमो नेः पृथुविष्णुजने	३१३६६
तृ फल भज त्रपां नलोपि	३१११३
तेन क्रीतम्	७१७४८
तेन ग्रहीतरि पूरण	७१६१५
तेन दीयते कार्य्यं वा	७१६१२
तेन दीव्यति खनति जयति	७१६०४
तेन दीव्यतीत्यतः	७१२४७
तेन दृष्टं साम	७१३५३
तेन निर्वृत्तः	७१३८४, ७६२
तेन परिजय्यं लभ्यं	७१८०२

[श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
तेन परिवृत्तो रथः	७१३५७
तेन प्रोक्तम्	७१५५१
तेन रक्तं रागात्	७१३२८
तेन वित्तश्चञ्चुचनो	७१८५८
तेनातिक्रमणे च	३१५५७
तेनेकदिक्	७१५५६
ते मान्ता पञ्च पञ्च	१११६
तेषां द्वौ द्वावेकात्मकौ	११४
तेषां न सन्धिर्नित्यम्	११६६
तेषामतित्वदादीनां	२११६६
तेषु कर्त्तृषु तादृशेषु भुवः	५१२६६
तेष्वयं श्यामरामसंज्ञः	६१६
तैकायन्यादेः केशवारामस्य	७१३२६
तैलं यावच्च संज्ञायाम्	७१५८७
त्याम्नस्त्वरामः	७१२४६
त्यणत्ययोश्च	७१७१
त्रपुजतुनोस्त्रापुषजातुषे	७१५७८
त्रसिगृधिघृषिक्षिपिभ्यः क्तुः	५१३२२
त्राणे भय हेतुः	४१८६
त्रिककुत् गिरौ	६१३४६
त्रिचतुर्भ्यां हायनस्य वयसि	६१३१७
त्रि नञ् सु व्युपेभ्यश्चतुरः	७११५८
त्रिप्रभृतीनामन्त्यमुत्तमम्	७१२४३
त्रिमात्रो महापुरुषः	११७
त्रिरामीतः सर्व्वेश्वरादि	७१२५३
त्रिरामी प्राप्तापन्नालं	६११३६
त्रिराम्याः	७१२१६
त्रिराम्या केशवठः	७१७६७
त्रिराम्यान्तु नित्यम्	७१८८६
त्रिराम्याम्	७११२५
त्रिराम्या यरामः	७१७६५
त्रिविक्रमः	६१२३२
त्रिविक्रमश्च	७१६५४
त्रिविक्रमो गुरुः	११८०
त्रेस्त्रयो नामि स्वार्थे	२१४०
त्वचिसारादयः संत्रायाम्	६१२१२

सूत्रसूची]

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
त्वर स्पश स्मृ अद प्रथ	३१४३२
त्वां मां त्वा मा	३१२०१
थ	
थाम्नोऽजिनान्ताच्च महाहरः	७१५१७
द	
दंश नलोपो वा	३१५०४
दंष्ट्रा नद्धी च साधू	५१३६५
दक्षिणपूर्वादयस्तदन्तराले	६१११६
दक्षिणाकडङ्गराम्यां छरामश्च	७१७७६
दक्षिणाददूरे आरामः	७१००६
दक्षिणा पश्चात् पुरोभ्यो	७१४२७
दक्षिणेर्मा व्याधव्रणित	७११६८
दक्षिणोत्तराभ्यामतसिः	७१००१
दण्डादिभ्यो यरामः	७१७७७
द तौ परवर्णौ लचटवर्गेषु	१११०२
दधि अस्थि कक्थि अक्षि	२१८७
दधोरुः सिपि वा	३१३०१
दन्ताबलशिखाबली	७१६५५
दन्तुर उन्नतदन्ते	७१६५८
दन्श रन्ज षन्ज स्वञ्जाम्	३१२१५
दम्भो धीप्सधिप्सौ	३१४६३
दरिद्रातेरारामहरो	३१३२३
दरिद्रातेरिरामो णिर्गुण	३१३२१
दश दशावताराः	११३
दशनो दन्ते साधुः	५१४६२
दशमी वृद्धे साधुः	७१६८१
दशावतार एकात्मके मिलित्वा	११४६
दशवतारस्य त्रिविक्रमः शसि	२११०
दशावतारा ईशाः	११६
दशावतारादमृशसोरारामहरः	२१६
दाणः सा चेच्चतुर्थ्यर्थे	४१२५०
दान्तशान्तपूर्णच्छन्नज्ञप्तदस्त	५१५८
दाप् नी शस् यु युजिर् स्तु	५१३६४
दाप् दैप दीङो विना दाधा	३१५४

२३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
दामोदर विना शनानारायण	३१३४६
दामोदर मा स्था गा पिवति	३११८४
दामोदरस्यैव नरादर्शने हौ	३१३५३
दामोदराणां दित्सधित्सौ	३१४६८
दामोदरादीनामेरामः	३११८५
दामोदरादेरीरामो न यपि	५१६१
दिक्पूर्वपदस्य च	७१००६
दिक्पूर्वपदादनाम्नि	७१४३७
दिक्पूर्वाद्धादिभौ	७१४५८
दिक्शब्देभ्यः सप्तमी पञ्चमी	७१०००
दिक्संख्ये तद्धितार्थोत्तरपद	६१४७
दिगादिभ्यो यरामः	७१५०१
दिग्ध सहाच्च	५१२३५
दिग्बहुव्रीहौ कृष्णनामता वा	२१२१४
दित्यदिती वा भ्रुवो	७१२७०
दित्यदित्यादित्यधमेभ्यो	७१२४८
दिव उर्विष्णुपदान्ते	२११५२
दिवः करणं कर्म वा	४११०१
दिवादेः शपः श्यः	३१३६१
दिवो विष्णुनिष्ठातस्य नो न	५१३८
दिव् औ सौ	२११५१
दिशस्त्वमद्राणाम्	७११२
दिश्योस्तु रुदादेरीट् च	३१३१४
दीङ् आ वा सनि	३१४५२
दीङो युट् कपिलसर्वेश्वरे	३१३७५
दीप् जनी बुध्यति पूरी	३१२३६
दुःखात् प्रातिलोम्ये	७१११६
दुरादौ कर्तुं पूर्वपदाद्भुवः	५११४५
दुहो न यक्	४१२७
दुह् लिह् दिह् गुहेभ्यः	३१२५६
दूताद्भावकर्मणोः	७१७०२
दूरादेत्यः	७१४३४
दूरान्तिकार्थवहियोगे षष्ठी	४११३७
दूराह्वानादावन्त्यसर्वेश्वरस्य	११७४
द्विति कुक्षि कलशि वस्ति	७१५०५
दृशिविदिभ्यां साकल्ये	५११०६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
दृष्टे सामनि जाते च	७।३५५
देहः सनरस्य दिगिरधोक्षजे	३।२३६
देयमृणम्	७।४६५
देयेऽधोने च सातिस्त्रा च	७।११२६
देवताद्वन्द्वे च	७।२१
देवतान्तात्तादर्थ्ये यरामः	७।१०८५
देवपथादिभ्यश्च	७।१०५६
देव मनुष्य पुरुष पुरु	७।११२७
देवात्ताप लक्ष्म्याम्	७।१०६२
देवान्नसिंह यो वा	७।२५१
देवाच्चासिङ्गति कृतिमैत्रीषु	४।२२३
देविका शिशपा दीर्घसत्र	७।३
दोषा दोषन् यदुषु वा	२।१४०
द्युतिस्पतिमास्थामिः शास्त्रोर्वा	५।६५
द्युतादिभ्यः परपदं वा	३।२४३
द्युतिष्वाप्यान्तरस्य सङ्कर्षणः	३।२४५
द्युप्रागवागुदक्प्रतीचो	७।४२६
द्युमद्रमौ	७।६५०
द्रव्यं भव्ये साधु	७।१०६४
द्रव्यविभागे च	७।१०१३
द्रोणादेर्माधव फो वा	७।२६७
द्रोर्द्रव्यं साधु द्रोमनि	७।५६६
द्रव्यसदधनौ केशवाबुद्ध्वं	७।८८४
द्रव्योरेकतरस्य गुणप्रकर्षे	७।१०२२
द्विः सर्वेश्वरमात्राच्चः	१।११६
द्विगुणार्थं प्रयच्छति गर्हा	७।६३१
द्वितीयकादयश्च तद्भवरोगे	७।६१८
द्वितीय तृतीय चतुर्थं तुय्यं	६।४१
द्वितीय तृतीय शम्भ वीजेभ्यः	७।११११
द्वितीय तृतीयौ पूरणे साधू	७।६०६
द्वितीयात् सर्वेश्वराच्चतुर्थी	७।१०४०
द्वितीया श्रितादिभिः	६।५७
द्वितीयैकत्वे कथितानु	२।२१६
द्वित्रिचतुरां वारार्थवृत्तीनां	६।३३२
द्वित्रिपूर्वार्न्निष्काद्विस्ताच्च वा	७।७४१
द्वित्रिपूर्वार्भ्यां केशवणश्च	७।७४७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
द्वित्रिभ्यां मूदघ्नः	७।१५१
द्वित्रिभ्यामायुषस्त्रिराम्याम्	७।१०६
दित्वबहुत्वयोर्न समासः	६।८१
द्विदण्ड्यादयश्च	६।११३
द्विपदा ऋचि त्रिपदा	७।१८६
द्विर्वचननिमित्तसर्वेश्वरपर	३।१२५
द्विवर्जतदादिमात्राच्च	४।३
द्विषः शतुर्वर्वा	४।४२
द्विषः शतृ शत्रौ	५।१५
द्विसर्वेश्वर ऋराम ब्राह्मण	७।५२७
द्विसर्वेश्वरान् केशवणान्तात्	७।२८६
द्वैप वैयाघ्रचौ तच्चर्मणा	७।३५६
द्व्यक्षरधातोरन्तः पूर्वश्च	३।७६
द्व्यञ्जल त्र्यञ्जले	७।१२६
द्व्यन्तर्भ्यामप ईपः	६।३५३
द्व्यष्टनो संसारस्यारामो	६।२६२
द्व्येषयोश्च वा	७।८१
ध	
धनं गणं वा लब्धा	७।६८१
धनकहिरण्यको तयोः	७।६१६
धनायातिलोभे	३।५२२
धनुषो धन्वन् संज्ञायान्तु वा	६।३४०
धर्मपथ्यर्थन्यायेभ्योऽनपेते	७।६८८
धर्ममधर्मश्च चरति	७।६३८
धर्मशीलवर्णान्ताच्च	७।६८३
धर्मात् केवलादनिः	७।१६६
धर्मार्थादिषु यथेष्टम्	६।१८७
धात्रो नरस्य धो	३।३५७
धात्रुकृसृजनिगमिनमिभ्यः	५।३५४
धातुसम्प्लन्धिनस्तु नान्यनिमित्तस्य	३।५१६
धातुसम्बन्धे प्रत्ययाः	४।१६५
धातोः	३।२
धातोः कृद् बहुलं कर्त्तरि	५।१
धातोः क्रियाव्यतीहारे	४।२०३
धातोः पूर्वमत भूतेश्वर	३।५१

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
धातोरन्तस्य गोविन्दः प्रत्यये	३।३०
धातो रव प्रागिदूतोस्ति	२।११७
धातरीदूतारियुवौ	२।४६
धातोर्द्विर्वचनमधोक्षज सन्नङ्	३।६६
धातोर्मो न विष्णुपदान्ते	२।१२६
धाताश्चतुःसनस्येयुवौ	३।१३६
धात्वन्तयक्पूर्वस्यापो नित्यम्	७।८०
धात्वर्थमात्रवाचिनावधिपरी	३।१६७
धात्वादेः षः सः	३।६५
धात्वादेर्णो नः	३।११५
धान्यानां भवने क्षेत्र	७।२५४
धान्यानां भवने क्षेत्रे	७।८५३
धारेर्धनिकः	४।६२
धिपेषवासवाहनेषु	६।२८६
धी प्रधीप्रभृतयः साधवः	५।२७३
धुरो यराम माधवद्वौ	७।६७५
धेट् पा घ्रा ष्मा दृशिभ्यः	५।२०६
धेट् श्विभ्यामङ् वा भूतेशे	३।१८६
धेनुम्भव्या साधुः	५।१६०
धेनुष्या गौर्महिषी वा	७।६८६
धेन्वनडुह स्त्रीपुं सादयश्च	७।१३३
ध्वंसु श्र सु वस्तनोडुहां दा	२।१४१

न

न कगावावश्यकार्थण्यति	५।१६८
न कृष्णनाम तृतीयासमासे	२।१७६
न कृष्णनाम द्वन्द्वे, जसि तु वा	२।१८०
न क्तवत्वाद्यन्तस्य	६।१०६
नक्षत्रेण युक्तः कालः	७।३६०
नक्षत्रेभ्यो नेतुः	७।१५७
नक्षत्रेभ्यो बहुलं महाहरः	७।४८४
न च चादिभिर्योगे	२।२०५
न च नतो भावोप्रत्ययेन	६।८६
न च त्रिविक्रमाद्वरुणस्य	७।२२
न च दर्शनार्थैरचाक्षुषत्वे	२।२०७
न च प्रथमान्यपदार्थत्वे	६।१०५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
न च षत्वं सिचेर्यङि	३।५८३
न जानि स्वा ज्ञाम्यामीप्	६।२५६
नञः शुचीश्वर क्षेत्रज्ञ कुशल	७।२७
नञो यथातथ यथापुरयोः	७।२८
नञोऽरामशेषः सर्वेश्वरे	५।८६
नञोऽर्थात्	७।१७२
नञ्	६।५३
नञ्कृष्णपुरुषाच्च न, पथस्तु	७।१४४
नञ्पूर्वस्य वदेरवद्यं गह्यं	५।१६०
नञ्प्रयोगेऽपि कर्तृत्वादि	४।१४
नञ्यनिराक्राशे भावे	५।४५६
नञ्श्यामरामौ विना	६।१४४
नञ् सु दुर्भ्यः प्रजाया	७।१६४
नञ् सु दुर्भ्यो हलि	७।१५३
नडादाभ्यां वलच्	७।४११
नडादिभ्य कुक् च	७।४१४
नडादेर्माधव फः	७।२६३
न तु गुणीन्युपलक्षितेन	६।८८
न तु जातेः	७।३६५
न तु नञ्प्रमासाक	१।१४३
न तु नारायणस्य	३।२६३
न तु राज्ञ्याः	७।११६
न तु सह स्वद स्विदाम्	३।४७५
न ते वाक्यादौ लशाक	२।२०४
न त्वितौ	७।११०६
न त्से	१।१०७, १३७
न दक्षिणपूर्वादिषु	७।१७७
न दधिपय आदीनाम्	६।१३४
न दिव उराम उद्वयवज्जित	६।८४
नदी गिरि पौर्णमास्या	७।१३८
नदी देश नगराणां	६।१२३
नदीभिश्च समाहारे	६।१७७
नद्यां मत्तु संज्ञायां	७।४०७
नद्यादिभ्यो माधव ङः	७।४२६
न द्विस्त्रिस्तु वन्तस्य	१।१२८
न द्वे र्म्मः	२।१६३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
न ध्याख्यापृ मदिमूर्च्छभ्यो नः	५।४६
न नञ् कृष्णपुरुषाद्वक्ष्यमाणाः	७।८३५
न नारायणाच्छतुर्नुम्	५।१६
न नारायणोद्धवस्य गोविन्दः	३।३५२
न नित्यसमासे न	१।६३
न नृत्यादेरीट्	३।५०७
नन्द्यादेरनः	५।१६७
न भ्रातुः स्तुतौ	७।१८२
नम आधिभिर्योगे चतुर्थी	४।११६
नम आदिभ्यः परपदञ्च	३।५४३
नमःपुरस गतिसंज्ञयोः	६।३३०
नमि कम्पि स्मि कमि	५।३५१
नरञ्चरामस्यारामः	३।१२३
नरतो हेर्धिर्न त्वडि	३।३७८
नरविष्णुजनानामादिः शिष्यते	३।८६
नरस्य गोविन्दो यडि	३।४७८
नरस्य वामनः	३।१३०, १३८
नरात् स्तौति ण्यन्तयोरेव	३।४७४
नरादेररामस्य त्रिविक्रमः	३।११०
नराद्धन्तेर्हस्य घः	३।२६०
नरान्न तृतिश्च	३।४२०
नरामोद्धवादेव थफान्तात्	५।८०
नरारामस्येरामः सनि	३।२२६
न रुध इण्	४।२६
नरे कृतेऽप्येकसर्वेश्वरा	५।२०
नरेण स्थादिकस्य तु षत्वं	३।५७५
नरेदुतोरियुवावेकात्म	३।१२८
नरोद्धवस्य इः पवर्गहरिमित्र	३।४४५
नवकेषु त्रीणि त्रीणि प्रथम	३।२१
नवज्जतवर्गस्तस्य नस्य न णत्वम्	२।१२८
नवस्य नूतन नूतन नवीनाश्च	७।१०८६
न वृष्णीन्द्रहेतु तद्धित लक्ष्मी	६।२५५
न शुभ रुच गृणातिभ्यो यङ्	३।४७६
नशेर्न णत्वं षत्वे	३।३६६
नशेर्नशिङ् वा	३।३६७
न शौरिपरेषु तेषु	१।१३३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
नश्च्युतेरिति वाच्यम्	१।१००
न श्च पूर्वस्येरामे	७।७
न षत्वञ्च प्रादेः सिवुसहो	३।५८५
न संज्ञा पूरण्यौ	६।२५४
न संज्ञायाम्	७।१७६
न सखिर्हरिसंज्ञादौ	२।४६
न सुत्रः स्यसनोः	३।५८२
नस्य हरो वा ब्रह्मणि बुद्धे	२।१५४
न स्वाङ्गाभ्यां नाडीतन्त्री	७।१७८
न हस्त्यादेः	६।३४६
नाथतेः कर्म वा	४।६५
नाथेराशिषि तन्मतम्	४।२१६
नानेत्यव्यये धार्थप्रत्यये	५।१३६
नानोस्तप इण्	३।१५५
नान्तधातुवर्जितसान्तसत्सङ्ग	२।८२
नान्तमेव विष्णुपदं क्ये	३।५१८
नान्तस्य न त्वनीपोः	७।३०
नान्तादसङ्ख्यादेरमचि	७।६०१
नान्तोद्धवस्य त्रिविक्रमो नामि	२।१२४
नाभे संज्ञायाम्	७।१५५
नामधातु धृञ् षत्वञ्च षिवां	३।१६६
नामधातुहनो न घत्वं, न च	५।१६५
नामधातुहनो न घत्वम्	३।५६१
नामधातूनां यथेष्टम्	३।५६४
नामधातौ तु वा तदलश्च	३।२०१
नामधातौ वा	३।१२७
नामविष्णुपदात् प्रत्ययः	३।५१०
नामशब्दे कर्मण्यादिशिग्रहि	५।१३१
नामसंज्ञश्चतुर्विधः	२।६
नामान्तविष्णुभक्त्योर्वा, न तु	६।३२३
नामान्तस्य नस्य हरो	२।११५
नाम्नि सदलमुद्विषद्रुहदुह	५।२७१
नाम्नो लक्ष्म्याम्	७।१८३
नाम्न्यारामात् मनिप् क्वनिप्	५।२७६
नारायणादन्तो नस्य हरः	३।३१७
नारायणादुद्भूतोऽयं वर्णक्रमः	१।१

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
नारायणे सदिस्वन्जो	३१५८६
नाद्धवाचिपूर्वार्त्त	७११०७५
नाद्धात् परिमाणस्थस्याराम	७१२६
नावः	७१२६
नावादिभ्यश्चरामः	७१६६१
नवादेनं तद्धितमहाहरे	७१३०
नासिकाया नस् यतसिधुद्रेषु	६१२८६
नासिकोदगौष्ठजङ्घादन्त	७१२०२
निसादीनां कृतीत्येके	३१४७
निसनिङ्क्षन्निन्दां वा	३१४६
निःश्रोभ्यां श्रेयस	७११०४
निकटे वसति	७१६७०
निकायो गृहे निचिते	५१४०१
नित्य ग्रन्थान्ताधिकामेयेषु	६१२६६
नित्यं ध्रुवे साधु	७१४२४
नित्यं शतादेर्मासाद्ध	७१६०८
नित्यं हरिवेणुविधिः	२११३४
नित्यमाङ्पूर्वोऽयम्	३१३२६
नित्यवैरिणाम्	६११२४
निन्दहिंसाक्लिशखादिविनाशि	५१३३२
निमित्तात् कर्मसंयोगे	४११४६
निमूलसमूलयोः कषः	५१११२
निरः कुष इङ् विष्णुनिष्ठायाम्	५१४६
निरः कुषो वेट्	३१४१८
निरः पुवः, अभेलुं वः	५१३६०
निरादयः पञ्चम्या	६१६८
निर्दुर्बहिःप्रादुराविश्चतुराम्	६१३२६
निनिविपूर्वस्य स्फुरोऽपि	३१५७६
निर्वृत्ताद्यर्थपञ्चके	७१७६८
निर्वो निर्वणिो न तु वाते	५१४१
निर्विण्णो निर्विद्यते	५१४२
निष्कुलान्निष्कोषणे	७११११४
निष्प्रवाणिर्नवपटे	७११८०
निस षत्वं तपतौ सकृत्	३११५४
निसस्त्यरामो देशान्निर्गते	७१४२३
नीखाद्यदिह्याशब्दाय	४१३०

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
नीराधाम्यां ङे राम्	२१५१
नील्या अरामः	७१३३२
नृतीकृत्यादेरिङ्वा से सि	३१३६२
नृतीखन्योष्टकः शिल्पिनि	५१२१२
नृतरयोर्नारी	७१२३५
नृसिहनस्नयोश्च	७१८३४
नृसिह नस्नाभ्यां क्वरपश्च	७१२१०
नृसिहय केशवणयोरेकत्वे	७१३२३
नृसिहेरामस्य बहुसर्वेश्वरात्	७१३२२
नृसिहेरामाद्गोत्रात्	७१४३८
नेट् यसर्वेश्वरयोः	३१७७
नेट् स्वार्थे सनि	३१२१८
नेङ् वनृतित्रादौ भणादि	५१२८२
नेयसः	७११८१
नेयुवस्थानं गोपी, स्त्रियं	२१७५
नेविशः	४१२०७
नेकसर्वेश्वरत्वे	१११२७
नेशिक प्रादोषिको वा	७१४६४
नोद्धवस्य गोविन्द	३१४०४
नोऽन्तश्चछयोः शरामो	१११०४
नोपेन्द्रतो विना	४१२३४
नौ च लिपेः शः	५१२०८
नौतेपृच्छेश्चाङ् यदि	४१२१२
नौद्विसर्वेश्वराभ्यां ठरामः	७१६११
न्यग्रोधश्च केवलोऽत्र	७१५
पः पिवः, घ्रो जिघ्रः, धमो	३११६०
पक्षतिः पक्षमूले	७१८७४
पक्षादेर्माधवफः	७१३६८
पक्षि मत्स्य मृगान् हन्ति	७१६३४
पक्षे त्वतापो	७१८३३
पङ्क्तिं विंशत्यादयः	७१७७२
पचती द्रोणात् केशवणश्च	७१७६५
पचादेरत्	५१२००
पञ्चजनाच्च	७१७१५

सूत्रानि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
पञ्चतदशतौ वर्गे वा	७।७७३
पञ्चमी	६।७७
पञ्चमीतस्तसिः	७।६६२
पञ्चालादेः केशवणः	७।३०६
पणः परिमारो	५।४२१
पण पाद मासशतेभ्यो	७।७४५
पण्यं विक्रये अर्थः	५।१६२
पतः पुम् डे	३।२५३
पतपदोः पित्सः	३।४७२
पत्नी भार्यायां यज्ञयोगे	७।२२१
पत्यन्तान् पुरोहितादेश्च	७।८४४
पथः केशवठः	७।७८७
पथिन्मथिन्मथुक्षिन्नित्येषां	२।११८
पथ्यतिथिवसतिस्वपतिभ्यो	७।६६८
पथ्यादीनां संसारहरो	२।१२०
पथ्यादीनामिरामस्यारामः	२।११६
पदमस्मिन् दृश्यं पद्यः	७।६८४
पदरुजविशः	५।३७८
पदस्तु नित्यम्	३।२३७
पदोत्तरपदं प्रतिकण्ड	७।६३७
पदोत्तरपदिकः साधुः	७।३४६
पफ्योरुपध्मानीयः	१।१३२
पयसन्तु वा	३।५३१
परजनदवराजभ्यः कीयः	७।४५२
परदारादिकं गच्छति	७।६०७
परपदादि कर्त्तरि	३।२४
परपदिनश्च शानस्ताच्छील्य	५।१०
परपदेन	६।८३
परस्परयोगे तु न निषेधः	२।२०६
परस्परयोगेऽपि न	२।२०८
परस्त्रियाः पारस्त्रैण्य	७।२७३
परस्त्रिविक्रमः	१।६
परस्परैतरेतरान्याऽन्य	४।२०६
परादेयनस्य अन्तरस्त्वदेशे	६।३१८
परानुभ्यां कृञस्तद्धत्	४।२६५
परार्थमात्रे	७।२००

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
पराद्धादिर्यारामः	७।४५७
परावरत्वे गम्ये च	५।७५
परावराभ्यां वा	७।१००२
परिक्रयणे करणं सम्प्रदानं	४।१०२
परिखाया माधवढः	७।७२६
परिणायः शारीणां	५।३६७
परिपन्थश्च तिष्ठति	७।६३५
परिमाणात् क्रीतवत्	७।५६१
परिमाणादसंख्याकाल	७।२१७
परिमाणाद्विप्सायां कर्मणि	४।३४
परिषदः समवैति प्यः	७।६४१
परिषदा ष्यकेशवणो	७।६६६
परेदिविक्षितारटवददहमुहो	५।३२५
परेनिविभ्यां सेवस्य सितस्य	३।५७६
परेनिविभ्याश्च सिवोः	३।५८१
परेमृषः	४।२६८
परेर्वर्जने वा, न तु समासे	६।३६०
परोक्षभूते णलादयो	३।८
परोक्षातीते ववसु	४।४५, ५।१६
परोक्षानद्यतनभूते	४।१५५
परो नारायणः	३।७४
परोवरं परस्परं	७।८६६
पर्यादयश्चतुर्थ्या	६।६७
पर्यायोऽनुपात्यये	५।३६८
पर्वताच्छरामः	७।४५४
पर्वतेभ्यश्च आयुधजीविनि	७।५४३
पवर्गान्तान् यत्	५।१५७
पशुजातिर्गभिण्या	६।३१
पश्चाच्छब्दस्य पश्चभावोऽर्द्धे	७।२६३
पश्चादयोग्ययोः	६।१६१
पश्चङ्गे भागे षष्ठकः	७।१०१७
पाच्छब्दस्य वामनो भगवति	२।११३
पाणिनीयप्रत्याहार	२।१०७
पाण्डुकम्बलादिनिः	७।३५८
पाण्डोर्यारामनृसिंहः	७।३०८
पातेः पाल् णौ वातेः	३।४३८

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
पात्रात् केशवठः	७।७५७
पात्राद्घरामश्च	७।७७८
पात्राद्यन्ता न	६।५२
पाद ईप् वा	७।१८५
पादशतभ्यां संख्यादि	७।१०८१
पादस्य गादिषु	७।२८७
पानस्य देशे भाव	६।३२०
पापादीनि निन्दैद्यः	६।२२
पारायणोत्तरायणचान्द्रायणं	७।७८४
पाराशर्यशिलालिभ्यां	७।५५७
पारे मध्ये इत्येतौ षष्ठ्या	६।१७५
पार्णिधमन्योस्त्रिविक्रमश्च	७।६३४
पाश्यादयश्च लक्ष्म्यां	७।३४२
पितृमातृपूर्वायाः स्वसुः	७।२७६
पितृव्यादयः पितृभ्रात्रादौ	७।३७३
पितृ पृथुः	३।१३
पित्रादौ जीवति पौत्रादे	७।२६
पिषनिप्रह्नोन्नादुचज्जास्युत्	४।६६
पिष्टकः पिष्टिका च संज्ञायाम्	७।५८५
पीडायाञ्च तद्वत्	६।३६४
पीतात् करामः	७।३३१
पीताम्बरात् प्राक् समासाः	६।८
पीताम्बरे	६।१६०, ७।१४५, १६४
पीताम्बरे वा	६।२६७
पीलुकुणादया पीलवादिपाके	७।८७२
पुंसः पुमसुः कृष्णस्थाने	२।१४३
पुं सानुज अनुषान्धौ	६।२०७
पुं स्त्रमित्यादौ षत्वनिषेधा	७।६१
पुं स्शब्दात् पाण्डवे नित्यम्	७।२०३
पुच्छाणिङ् उत्क्षेपादौ	३।५४६
पुण्यसुदिनाभ्यामहो ब्रह्म	६।१४३
पुण्याहवाचनादिभ्यो महाहरः	७।८२६
पुत्राच्छयरामौ	७।७५१
पुत्रान्तादादिवृष्णीन्द्रान्नृसिंह	७।२८६
पुत्रे वा	६।२२१
पुत्रतरामस्य न द्वित्वं	६।३०७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
पुनरद्वयसन्धौ आडादेशः	१।४५
पुमः सरामो हरिकमल	६।३२४
पुरन्दरभुजङ्गमादयो भुजग	५।२५०
पुराणस्य प्रण प्रत्न प्रतन	७।१०६०
पुरायोगे भुतेश्वरादित्य	४।१५७
पुरुषहस्तिभ्यां केशवनश्च	७।८६१
पुरुषात् बधविकार समूहेषु	७।७१६
पुरुषादायुषः	७।११२
पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सरतेष्टः	५।२३६
पुषादिद्युतादिलदितो डो	३।२०६
पुष्पफलमूलेषु स्मरहरो	७।६०२
पुष्यासिद्धयौ नक्षत्रविशेषे	५।१७६
पृङ् सेङ् विष्णुनिष्ठा न	५।५१
पूजाचार्यकृतिज्ञानोत्	४।२३२
पूज्यं वृन्दारकाद्यैः	६।२८
पूज्यवाचिभ्यस्वादरादिक्ये	४।४
पूत्रो विनाश एव	५।३४
पूरणद्रव्यं पात्रेण	६।७०
पूरणादर्द्धाच्च ठरामः	७।७६०
पूरणाद्वयसि	७।६८०
पूरणादिः ककुदस्य	६।३४८
पूर्वक्तान्तं पश्चात् क्तान्तेन	६।१८
पूर्वनिपातः	६।१८२
पूर्वपदान्नस्य णः	६।३११
पूर्वपदान्महाहरनिषेधः	६।२०२
पूर्वप्रथमयोरतिशये	६।३७२
पूर्ववदश्ववडवानाम्	६।१४०
पूर्वस्य विष्णुपदवत्त्वं	२।१००
पूर्वादि च व्यवस्थायां सप्तकम्	२।१७३
पूर्वादिनिभूतपूर्वकर्त्तरि	७।६२७
पूर्वादिभ्य नवभ्यः समात्	२।१७८
पूर्वादिनि नव कृष्णनामानि	२।१७७
पूर्वापराधरोत्तरादीन्य	६।३८
पूर्वार्द्धस्य त्वरामः	१।८६
पूर्वार्द्धे तन परार्द्धे तने	७।४७२
पूर्वार्द्धे तनमित्तत्वे सत्येव	३।४३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
पूर्वो नरः	३१७५
पूर्वो वामनः	११५
पृथङ् नानायोगे दशमी	४११२६
पृथिव्या णरामो वा	७१२५०
पृथ्वादिभ्य इमनिर्वा	७१२३६
पृषादरादयः	६१३५७
पृष्ठप्रतिवचने हेर्वा	११८३
पृष्ठाख्याताभ्यामवधिभ्यां	४११२४
पैलादिभ्यो युवप्रत्ययस्य	७१३२५
पोरोडाश पुराडाशाभ्यां	७१५२५
पौषादयो मासे निपात्यन्ते	७१३६२
प्यायः पीयङ्गोक्षजयोः	३१२३८
प्यायः पीविष्णुनिष्ठायाम्	५१६२
प्रकरणे त्वन्न वृष्णीद्रे जात	३१५६०
प्रकारवती जातीयः	७११०२६
प्रकृतिः पूर्वा	२१२
प्रकृत्या	६१७२
प्रकृत्यादिभ्यस्तृतीया	४१११५
प्रगदिनादेर्ण्यः	७१४०१
प्रग्राहो लिप्मुक्तर्तुके	५१४०३
प्रच्छदिकादयो रोगे	५१४५३
प्रछादीनां त्रिविक्रमो न च	५१३६२
प्रज्ञादेः केशवणः	७१११००
प्रज्ञा श्रद्धाच्चा वृत्तिभ्यो	७१६४२
प्रतिग्रहे दाता	४१८५
प्रतिजनादेर्नृसिंह खः	७१६६४
प्रतिनिधौ पञ्चम्याः	७१११०३
प्रतिपथमेति ठरामश्च	७१६३६
प्रतिपदोक्तसर्वेश्वरान्तात्	५११५३
प्रतियुक्ताद् पञ्चमी	४११२७
प्रतिश्रवणे च संसारः	११८८
प्रतीपादिकं वर्तते	७१६४३
प्रतेरुरसः सप्तम्यर्थे	७११३६
प्रत्यण्वेभ्यः सामलोम	७१६८
प्रत्यभिवादवाक्ये संसारः	११७७
प्रत्ययः परः	२१३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
प्रत्ययस्थात् कात्	७१६६
प्रत्याङ् श्रुवः प्रार्थयिता	४१६७
प्रथमचरमतयायात्पाद्ध	२११८१
प्रथमा नाममात्रार्थे	४१७
प्रथमा प्रभृतिभ्यश्च	७११०६
प्रदेयाभिसंबध्यमानं	४१८८
प्रधानस्य सपूर्वस्य पत्युर्नश्च	७११८१
प्र निरन्तः शर कार्याम्	६१३४४
प्र परापरीणां ररामस्य	३१२३४
प्रभवे तत्स्थानम्	४१७७
प्रमदसम्मदौ हर्षे समजः	५१४२३
प्रमाणवाचिभ्यो महाहरश्च	७१८८५
प्रमाणात् परिमाणात्	७१८८६
प्रमादे जुगुप्सायाश्च तद्विषयः	४१८१
प्रलम्भेः गृधिवञ्चघोर्णोः	४१२६०
प्रलयादीनां यादेरीयश्च	७१२
प्रशंसायां रूपः	७११०२४
प्रशानो नस्य चादौ	१११०८
प्रश्नस्योत्तरे ननुयोगे	४११५६
प्रसंभ्यां जानुनो जुः	६१३४१
प्रसितोत्सुकाम्यां	४१७१
प्रस्तीमादयः प्रपूर्वस्य स्त्यायो	५१४५
प्रहासे मन्थत्युप	४११६६
प्राक् क्रीताच्छरामः	७१७०६
प्रागिवीयात् कः	७११०३०
प्राग्दीव्यतीय सर्वेश्वरादौ	७१३२४
प्राग्हितादयरामः	७१६७२
प्राच्यनगरान्तस्य	७१२३
प्राणिजातेर्वयो	७१८४५
प्राणिनि तु नित्यम्	७१८०१
प्राणिभ्यो रजतादेश्च	७१५८३
प्राणिस्थादारामान्ताल्लो वा	७१६३३
प्राण्यङ्गानाम्	६११२८
प्राण्यङ्गान्नेष्यते	७१६७६
प्रात् सृद्रुलपमन्थवदवसो	५१३२८
प्रात् स्तुद्रुसुभ्यः	५१३८६

सूत्रसूची]

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
प्रातः स्तृणातेरयज्ञे	५१३६४
प्रादय उपेन्द्रसंज्ञा	३१४२
प्रादिव्यवहितेऽपि	५११४२
प्रादुढोढघोश्च तथा	११५८
प्रादेरध्वनः	७११०७
प्रादेरुहास्यतिभ्यां वा	४१२२८
प्रादेर्नमः	६१३२१
प्रादेर्नामिकाया नस् च	७११६०
प्रादेर्ष्ययोर्वा तथा	११४६
प्राद्वहः	४१२६७
प्राप्तापन्ने अपि	६१२५३
प्राप्तापन्ने द्वितीयया	६१५५
प्रायभवः	७१४८६
प्रायेणाल्पत्व विवक्षायाम्	७१२१५
प्रावसवेश्च	४१२२१
प्रावृट् शरत्काल दिवां जे	५१३०७
प्रावृषष्ठरामः	७१४७४
प्रावृषेण्यः	७१४६६
प्रासादा गृहे प्राकारः	५१४१२
प्रसृलभ्योऽकः साधुकारिणि	५१२१५
प्रेक्षादेरितिः	७१३६३
प्रेषातिसर्गप्राप्तकालत्वेषु	४११७७
प्रोष्ठपदाभद्रपदयोर्जातार्थे	७११६
प्लक्षादेः केशवणः	७१५६६
प्लादीनां वामनः शिवे	३१४१४

फ

फलपाकशुषश्च स्मरहरः	७१६०१
फले	७१५६७
फुल्लोत्फुल्लसंफुल्लक्षीव	५१४०
फेनिल फेनली	७१६३६

ब

बडवाया वृषे	७१२६७
बलादेर्मनुर्वा	७१६८८
बलादेर्यः	७१६७७

३१

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
बलिहितादिभिश्च	६१७५
बले तु वा यपि च	३१३५
बहुपूगणसङ्ख्येभ्यस्तिथः	७१६०४
बहुवचनविषयाज्जनपदाद्विहित	७१५५०
बहुवचने चेद्वा	२१२११
बहुषु लक्ष्मीं विना	७१३१३
बहुसर्वेश्वरपूर्वपदात्	७१६६२
बहुसर्वेश्वरान्नृनाम्नष्ठरामो	७१०३८
बहूनां जातिप्रश्ने	७१०५४
बहूज्जो नुमप्रतिषेधः	२१५३
बहोर्धा वा निकटकाल	७१०८२
बह्वल्पायां शसि	७१८५
बह्वल्पायां कारकाच्छस्	७११०७
बाहुबलि ऊरुबलिनौ सर्व्वबली	७१६८६
बाहुल्यात् करणादौ च ते	५११६२
बाहुल्यात् कर्मण्यपि णकः	५११६६
बाहुल्यात् क्वचित् मानुषी	७१२६८
बाहुल्यात् क्वचिन्नित्यसमासः	६११३
बुद्धे गोविन्दः	२१५६
बुद्धे तु मातृकस्य	७१७१
बुधेयु धेर्नशिजनोः	४१२७२
ब्रवीत्यादिपञ्चानामाहादयो	३१३४३
ब्रह्मकृष्णात् सोरम्	२१७६
ब्रह्मणस्त्वः	७१५५१
ब्रह्मणि तु वा	७११४१
ब्रह्मणो गाविन्दो वा बुद्धे	२१६०
ब्रह्मतः स्वमोर्महाहरः	२१८५
ब्रह्मतो जस्रसोः शिः	२१७७
ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु कर्मसु हनः	५१२६६
ब्रह्मराजहस्तिपल्येभ्यो	७१०२
ब्रह्मान्त त्रिविक्रमस्य वामतः	२१६१
ब्रह्मेशान्तान्नृक् सर्व्वेश्वरे न	२१६५
ब्राह्मण मानव वाडव पृष्ठेभ्यः	७१३३६
ब्राह्मणाच्छंसी ऋत्विग्भेदे	६१२०६
ब्राह्मो न तु जातो	७१४२
ब्रुव ईट् कृष्णधातुक	३१३४१

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
भ	
भक्ताणः	७।६६५
भक्तात् केशवणो वा	७।६६५
भक्तिः	७।५४६
भगवति तु मुपूर्वस्य यस्य ई	५।२८८
भगवति न तु ढरामे	७।८७
भगवतु अघवतु भवतूनां	२।११२
भजजपयजानमिभ्यो यद्वा	५।१७२
भञ्जेर्नलोप इणि वा	३।३६६
भन्जभासमिदिभ्यो घुरः	५।३४३
भन्जेर्नलोपश्च	५।३३१
भयभीत भीति भीभि	६।७८
भयतिमेवेषु कर्मसु कृञः	५।२५२
भये हेतुः	४।८३
भवतां माधव ठः	७।४४२
भवत्याष्ठच्छरामयोः	७।८८
भवदीयश्च	७।४४३
भविष्णुभ्राजिष्णू साधूः	५।३१८
भविष्यति	४।१६०
भविष्यत्काले स्यत्यादयः	३।११
भव्यगेयप्रववनीयोपन्थानीय	५।१८६
भस्त्राजात्रास्वानां जात	७।८२
भस्त्रादेः केशवठः विवध	७।६१६
भाग रूप नामभ्यो घेयः	७।१०६१
भामाद्यरामश्च	७।७६१
भाण्डाणिङ् समाचयने	३।५५०
भावकर्तृकाणां रुजार्थानां	४।६४
भावकृदन्तानां क्रियायान्तु	४।२०
भावप्रत्ययात् प्राय इमः	७।६२२
भावे कर्मणि सर्वस्माद्धातोः	४।२००
भावे प्रासादेः कर्तृवर्जिते	५।३८०
भाष दीप जीव मील पीड	३।४३४
भिदिच्छिदिभ्यां कर्मकर्तरि	५।३४५
भियो भीष् भापौ णौ	३।४४१
भियो वामनो वा कृष्ण	३।३४६
भीमभीष्मौ भयानके साधू	५।४८

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
भीरुभीरुभीलुकाः साधवः	५।३५८
भीरुष्ठानगविष्ठिरयुधिष्ठिरा	६।३०८
भी ही भृ हुभ्य आम	३।३४५
भुवो न गोविन्दः सिलुकि	३।५५
भुवो भूव् भूतेशाधोक्षज	३।५६
भूतपूर्व केशवचरः	७।१०१८
भूते दिवादयो भूतेश	३।७
भूते भूतेशः	४।१५२
भूतेशात्मपदे तु वा	३।२८८
भूतेशे तु वा	३।३२४
भूतो युट्, तथा प्रशस्यस्य	३।५४७
भूनरस्य भोऽधोक्षजे	३।७५
भूसनन्ताद्या धातवः	३।१
भृञ आमि च	३।३६०
भृञः क्यप् न तु पत्न्यां	५।१८२
भृशादिभ्यः क्यङ् भन्तविष्णु	३।५३६
भाज्या क्षत्रियजातो	७।२४४
भ्रस्जेर्भज्जोऽकंसारी वा	३।३८३
भ्राजादिभ्यः क्विप्	५।३६०
भ्रात्रीय भ्रातृजे भ्रातृव्यस्तु	७।२७८
भ्वादेशादिमेयसोस्त्वादिहवः	७।६३
म	
मड्डुक झर्झराभ्यां	७।६५४
मण्डिजनमन्देरन्तः	५।३७१
मतुश्च	७।६४७
मतुश्चात्र परस्व च	७।६५८
मत्यो मतस्य करणे, जन्यो	७।६६२
मद्रकश्च	७।४४७
मद्रभद्राभ्यां माङ्गलिक	७।१११६
मध्यमादिमावमाधमाः	७।४६०
मध्यस्य मध्यन्दितं केशवनश्च	७।५१६
मध्यस्य मध्यमश्च	७।४५१
मध्यय माध्यम मध्यमीयाः	७।५१५
मध्वादिभ्यश्च	७।४०८
पनश्च न तयोर्न च वर्मणः	७।३३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
मनस आज्ञायिनि	६१२०६
मनुष्यनतस्थयोस्तु वुर्नुसिहः	७१४४६
मनुष्यस्मरहरे च निषेधः	७१३६६
मनुष्ये तस्य स्मरहरः	७११०५८
मन्यो नलोपश्च	५१३२६
मन्योदनशक्तु विन्दुवज्रभार	६१२६०
मन्यतेः खश् णिनी	५१२६४
मन्यतेरनादरार्थात् कर्मोप	४१३५
ममक नरकयोश्च वक्तव्यम्	७१७०
मयङ् वा विकारावयवयोः	७१५८०
मयूरादयो व्यंसकादिभिः	६१४२
मरुत्वान् ककुद्धान्	७१५६
मसृजि नशानुं म वैष्णवे	३१३६८
महतः संसारस्याराम	६१२६०
महाजनान्माधवठः	७१७१७
महापुरुषस्य च	११७३
महाहरः	७१३११, ५६८
महाहरश्च क्रोतवत्	७१५६२
महिषाच्च	७१४१०
महिष्यादेः केशवणः	७१६४७
मांसचनमांस्पाकौ वा	६१२६४
माङ् पाय्यं परिमाणे	५११७३
माङ्योगे सर्वापवादी	४११८२
माणात्तरपदं पदवीमनुप	७१६३६
माधवठः	७१५०६
माधव्यायन्यादयो नित्यम्	७१२०६
मान बध दान शान्भ्यः	३१२४०
मानवचरकाभ्यां नृसिंह-खः	७१७२०
मानिनि न निषेधः	६१२५७
मान्ताव्ययाभ्यां न क्यन्	३१५१६
मामकादयश्च पूर्ववत् साधवः	७१४४१
मायुक्ताच्छतृशानावाक्रोशे	५१४
मामाद्वयमि यरामनृसिंहखौ	७१७६४
मास्मयोगे भूतेशरश्च	४११८३
मितनखपरिमाणेषु कर्मसु	५१२४५
मिथः संलग्नो विष्णुजनः	११८२

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
मिथ्याशब्दोपपदतः पौनः	४१२५६
मिदेर्गोविन्दः शिवे	३१३७३
मिमत् फाण्ठाकृतिभ्यां	७१३०३
मिमीलियां खललोरात्वा	५११४४
मिलित्वादेशः परवत्तुकि	५१८८
मीनाति मिनोतिदीडा	३१३७४
मीनातिमिनोति मानां	३१४६७
मुखतः पार्श्वं तसश्छरामः	७१५१४
मुचादेनुं म् शे	३१३८४
मुचोऽकर्मकत्वे मोक्षङ्	३१४७३
मुण्डमिश्रलक्षण लवण लघु पटु	३१५५८
मुद्गात् केशवणः	७१६२७
मुनेर्वा	७१२३१
मुहूर्त्स्यापरि प्रैषादिषु	४११७८
मुहूर्त्तोहरितनत्वे तु	४११६६
मूर्द्धन्यान्तादयो	३१२२३
मूलपक्रतेरेव गोत्र	७१२६८
मूलमेषां सुखोत्पाटचम्	७१६८५
मृगपूर्वोत्तरेभ्यः सक्थनः	७११२०
मृजेः क्यप् वा	५११७३
मृजेर्वा णीन्द्रः	३१३१०
मृदो मृत्तिका मृत्सामृत्स्ने	७११०१
मृषाद्यादयः कर्मादौ	५११८४
मोच्यरोच्यशोच्ययाच्य	५११६६
मो विष्णुचक्रं विष्णुजने	११११३
म्रियतेः परपदं शिवभूतेश	३१३६३
य	
य इवाचरति तस्मात् क्यङ्	३१५२६
यः पितरि जीवति स्वतन्त्रः	७१३०१
यः प्रभोर्ललाटमात्रं	७१६४२
यक्पूर्वस्यापश्च वा	७१७६
यक् कृष्णघातुके	३१३४
यङन्तादपि क्वचित्	५१३४७
यङन्तादिटो दीर्घो न	३१४६५
यङो महाहरो बहुलम्	३१४६७

सूत्रानि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
यच्च यत्रयोगे गर्ह्यां	४११६३
यच्च यत्रयश्च विधिः	४११६२
यच्च यत्राभ्यामन्यत्रोपपदे	४११६४
यजजनपदन्शवदिभ्यो	५१३५०
यजुर्विहित ससोमक यागा	६११२०
यज्यतन्विश्वप्रश्नस्वप्ना भावे	५४३५
यज्ञादधरामः	७१७८१
यनः कालाध्वनोर्मानं	४११२८
यत्तददसाञ्च	७१७६
यत्तदेतद्ब्रह्मस्तत्परिमाणे	७१८६२
यत्तोपसान्त्वनज्ञानभाषणेषु	४१२४१
यत्र प्रकृतिलिङ्गस्य तद्वचनस्य	७१३६३
यथातथयोर्दुःकृत्रोऽ	५११०७
यथामुखं सम्मुखं वा	७१८६०
यथास्वे यथायथं द्वन्द्वम्	६१३७३
यदर्थमन्यतस्माच्चतुर्थी	४१११६
यद्वच्छा शब्दात् स्वरूपमात्रे	७१८३२
यद्यदियदाजातुयांगे विधिः	४११६१
यम रम नमारामान्तेभ्यः	३११६२
यमिच्छति तस्मात् क्यन्	३१५१२
यमिवाचरति यस्मिन्निव च	३१५२६
यरलवा हरिमित्राणि	११२७
यरामपरो ररामो न	३१४८४
यरामसूददीपदीक्षेभ्यो	५१३३८
यव यवक यष्टिकाभ्यो यरामः	७१८५५
यवयोर्विष्णुपदान्तयोर्हरो	२११३२
यवयोर्हरो बले	३१५०३
यवलेषु सविष्णुचापपररूपञ्च	११११५
य-व-वर्जितविष्णुजनान्ता	३१४५६
य-व-वर्जितास्तु बलाः	१११८
यसः श्यो वा संवर्जोपेन्द्रा	३१३७२
यस्कामिभ्यः स्वार्थबहुत्वे बहुलम्	७१३१६
याचितात् करामः	७१६२४
यादवमात्रे हरिकमलम्	११६८
यादवा अन्ये	११३२
यावकादयः साधवः	७११०६३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
यावति विदलृजीवाभ्यां	५१११०
यावत्पुराभ्यामच्युतः कदा	४११६२
युगन्धरादेर्नृसिंह इः	७१३१०
युजादेर्णिष्वा	३१४२८
युजोऽसमस्तस्य नुम् कृष्णस्थाने	२११०६
युरपिवपिलपित्रपिचमिभ्य	५११७१
युव खलत्यादिभिः	६१३२
युष्मदस्मदोर्णिविवन्तयोर्युष्मस्मो	५१२६०
युष्मदस्मदोस्त्वन्मदावुत्तरपद	३१५१८
युष्मदस्मदोस्त्वमहमादयः	२११६४
युष्मदस्मद्विष्णुपदयोर्वा नौ	२१२०२
युष्मदो गौणस्य त्वद्युवद्युष्मदः	६१३५२
युष्मदो गौरवे त्वेकत्वे द्वित्वे	४१२
युष्मान् युष्मभ्यं युष्माक	२११०६
यूना सहोक्ती वृद्धस्य	६११६८
यूनो न तु भावविहितेऽणि	७१४१
यूनो युवतिः	७११६१
येनाङ्गं न निन्दा तस्मात्तृतीया	४१११३
योगविभागात्	६१४४
योगादयरामश्च	७१८१६
योजनं गच्छति	७१७८६
योद्धवाद्गुरुपोत्तमान्नृसिंह	७१८४७
योगपद्ये	६११६४
र	
र ईश्वरात् सर्वेश्वर	१११४४
‘रक्षेर्वा कः’ इति केचित्	२११३६
रङ्गोरमनुष्ये माधव	७१४२८
रजः कृष्यासुपतिपरिषदा	७१६५३
रञ्जेर्नस्य हरः असि अके	५१२१४
रञ्जेर्नस्य हरो णौ मृगरमणे	३१४४७
रथादयरामः वाहनपूर्व्वत्	७१५६७
रथान्त युग प्रासङ्ग्येभ्यः	७१६७४
रदाभ्यां विष्णुनिष्ठातस्य	५१३१
रघादेरिड् वा	३१३६५
रधिजभोर्नुम्निषेधोऽधोक्षज	३१३६६

सूत्रसूची]

३५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
रन्जेर्नस्य हरो भावकरण	५।४०६
रभलभो रिप्सलिप्सौ	३।४६६
रभि लभोर्नुम् शवधोक्षज	३।२४१
ररामस्य न विष्णुसर्गः सुनि	२।१३१
ररामात्, सर्वेश्वरे तु हरि	१।१२२
रषष्ठद्वयेभ्यो नस्य णः	२।२६
रषनान्तमख्याभ्यो नुडामि	२।१२३
रसादिभ्यो मतुरेव प्रायशः	७।६३२
राच्छत्रयोर्हरः क्वौ कंमारि	३।५०२
राजक्षत्राभ्यां यधगमौ	७।२८७
राजन्यादिभ्यो वुर्नुमिहः	७।३७७
राजयुद्ध राजकृत्व सहयुद्ध	५।३०४
राजशब्दं राजविशेषनाम च	६।१४७
राजसूयादयस्तु संज्ञाशब्दाः	५।१८५
राजादीनां दन्तादिभ्यः	६।१८३
राजाहःसखिभ्यः	७।११५
रात्राह्लाहाः पुंसि	६।१४१
रात्रिचररात्रिचरो द्वावपि	५।२३८
रात्रिमटरात्र्यट तिमिङ्गिला	५।२०३
रात् सस्यैव सत्पङ्कान्तहर	२।११०
रादनुस्वाराच्च परं यवाभ्यान्तु	१।३५
राधागोपीसंज्ञाभ्यान्तु न	४।१३३
राधातो याप् वृष्णीषु	२।६६
राधाब्रह्मभ्यामौ ई	२।६४
राधाया ए टोसां बुद्धे च	२।६५
राधाविष्णुजाभ्यामीपश्च	२।५७
राधीक्षोर्यस्य विप्रश्नः	४।६५
राधो रित्सो हिसायाम्	३।४७१
रामकृष्णाच्छरामो वा	७।३६१
रामणात्तु लक्ष्म्याम्	७।८४८
रामकृष्णदुपतापादगह्यर्चात्	७।६७८
रामकृष्णाद्बुर्वैरविवहनयो	७।५६६
रामकृष्णे	६।१८४, २२५, ७।१३१
रामकृष्णे देवासुरादेः	७।५४०
राय आ सभोः	२।६०
राश्राद्धरामः	७।४१७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
रुच्यर्थेरिच्छन्	४।६०
रुद वेत्ति मुष ग्रहि स्वपि	३।४५८
रुदादिभ्य इट् कृष्णधातुके	३।३१२
रुदादेरीट् च	३।२८०
रुधादेः शप्खण्डी इतम्	३।३६५
रुष्यम वम त्वर संघुषास्वनेभ्यो	५।५६
रुहो रोप् चित्रश्चाप्	३।४४३
रूप्यो दीनारे	७।६६५
रैवत्यादेर्माधवठः	७।२८१
रैवतिकादिभ्यश्छरामः	७।५७३
रामन्तमुद्धर्तयति अस्मिन्नर्थे	३।५४०
रा रे लोप्यः पूर्वश्च	१।१४७

ल

लक्षणस्य कर्णे न तु	६।२३३
लक्षणे जायापत्योष्टृग्	५।२६४
लक्षेर्मुट् च	५।३६६
लक्ष्मणो लक्ष्मीवती	७।६४१
लक्ष्मी पुमान् पयां	७।१७४
लक्ष्मीणकडापोः प्रयोगे तु	४।४०
लक्ष्मी पूरणप्रत्ययात् प्रमाणी	७।१५४
लक्ष्मीप्रत्ययस्य महाहरस्तद्धित	७।५०
लक्ष्मीब्रह्मणोरमादीनामाम्	६।३५६
लक्ष्मीभुभ्रादिभ्यां माधवढो	७।२६७
लक्ष्मीस्थयोस्त्रि चतुरोस्तिमृ	२।७१
लक्ष्म्या सहोक्तौ	६।१६७
लगिकप्योरूपतापशरीर	३।६२
लघुपूर्वात् परस्य रोरय् यपि	५।६२
लघुयुक्तधात्वक्षरपरस्य नरस्य	३।२२८
लघूद्धवस्य गाविन्दः वामनो	३।८०
लभेर्नुम् णम्विणोर्वा	३।२४२
लवणान्महाहरः	७।६२८
लवयान्तस्य तु वा इति	३।४६०
लघहनपतपदस्थाभूवृषकमगम	५।३३६
लाक्षारोचनाभ्यां माधव ठः	७।३२६
लिखमिलौ कुटादी बहुलम्	३।३६२

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
लिपि सिचि ह्यो डो	३।२६८
लियोराराम णौ पूजाभि	३।४४०
लियो लिन्, लातेर्लाल् वा	३।४३६
लुप सद चर जप जभ दह	३।४८६
ले लराम एव	१।१०६
लोक सर्व्वलोकाभ्यां	७।७५४
लोकोत्तरपदात्	७।५१३
लोपोऽसर्व्वेश्वरे क्वापि	७।१०४१
लोप हरः	१।४१
लोमशादयः पामनादयश्च	७।६४०
लोमान्तादरामो बहुत्वे	७।२६२
लोहितको मणिभेदे वर्णे	७।१०६४
लोहिताभेरुभयपदत्वञ्च	३।५३७

व

वक्ष्यमाणकृदादौ च	३।४६
वच उम् डे	३।३११
वपि स्वपि यजादीनां सङ्कर्षणः	३।२६१
वच्यादीनां ग्रहादीनाञ्च नरस्य	३।२६२
वञ्चु श्रंसु ध्वसु भ्रंसु कम	३।४८८
वतोरिथः	७।६०५
वत्सन्तात् केशवद्वयसमात्रौ	७।८६०
वत्सलः कामवति, अशलो	७।६३७
वत्सशालाभिजिदश्वयुक्शत	७।४८३
वत्साक्षाश्वर्षभेभ्यश्च	७।१०५२
वदव्रजयोर्वृष्णीन्द्रः सो	३।१३३
वमो नश्च रः पीताम्बरे	७।१६२
व-म सत्सङ्गहीनस्यानोऽराम	२।८६
वमादयस्ते त्वच्युतादेरेव	३।५०
वयो यस्य वो वा कपिले	३।२६६
वरणादिभ्यश्च	७।४०५
वराहादेश्चृत्सिंह कः	७।४०२
वर्गान्ताच्छरामः	७।५१८
वर्ज्जने तु नादेशः	३।३३२
वर्णका प्रकरणविशेषे	७।७५
वर्णस्वरूप रामः	१।३७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
वर्णाद्दहादेश्च नृत्सिंह य	७।८३८
वर्णी ब्रह्मचारिणि	७।६८५
वर्त्तमानसामीप्ये वर्त्तमानवद्वा	४।१६७
वर्त्तमाणादौ शतृशानावच्युताभौ	५।२
वर्त्तमानेऽच्युतः	४।१५१
वर्त्तमाने भावे च क्तस्य योगे	४।५६
वर्षक्षरवरमानाभ्यो वा	५।३०८
वर्षान् खमाधवठौ तयोर्महा	७।८००
वर्षा दीर्घं संख्यात सर्व्व	७।११३
वर्षा पुनर्हन्करकारकाराभ्यो	२।५३
वर्षाभ्यो माधवठः	७।४६७
वशं गतः	७।६८३
वसतिक्षुभिभ्यादिट् क्त्वाविष्णु	५।५०
वसि घस्योः षः	३।२७१
वयोर्व्वस्य उभंगति	२।१४२
व तेर्माधवठः	७।१०६१
वस्त्राणिः समाच्छादने परिधाने	३।५५४
वस्तनक्रयविक्रयेभ्यष्ठरामः	७।६१६
वस्तनद्रव्याभ्यां ठकरामौ	७।७६३
वहिषा वाह्य वाहीकौ साधू	७।२५२
वह्य वहनस्य करणे	५।१६१
वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूया	६।३६२
वाग्मी पण्डिते	७।६७४
वाचालवाचाटौ	७।६७५
वाचिकं सन्देशे काम्मर्णं	७।१०६८
वाचोयुक्ति दिशोदण्ड	६।२२२
वाच्यलिङ्गलक्ष्मीः	३।५३२, ७।८४
वाच्यलिङ्गलक्ष्मीस्तुल्याधिकरण	४।१५
वाञ्छिनादन्यसिद्धौ च ते	४।१६४
वाढार्थोताप्यायोगे त्रिधिः	४।१७४
वातक्यति सारति पिशाच	७।६७७
वात पित्त श्लेष्म सन्निपातेभ्यः	७।७५५
वातून् वातमह वात	७।६७२
वा परे स्कन्दे वेस्तु निष्ठां	३।५७८
वामदेव्यं साधु	७।३५४
वामनोगोपीराधाभ्यो नुडामी	२।२०

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
वामनवैष्णवाभ्यां सेहरो	३११०२
वामनस्य त्रिविक्रमः कृत्	३११४८
वामनस्य त्रिविक्रमो नामि	२१२२
वामनात् ङ न नाः द्विः	११११६
वामनात्तुक् पृथौ	५१८७
वामनात् सस्य षस्त्वादौ न	७१६०
वामनो लघुः	११७६
वारि जङ्गल स्थल कान्तार	७१७८६
वाष्पादिकमुद्रमति	३१५४१
वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्	५११५१
वानुदेवाज्जुनाभ्यां वुरामः	७१५४८
वास्तव्यो वासकर्त्तरि	५११६३
वाहनं यानेन	६१६६
वाहो वा ऊठ् भगवति	२११४६
विंशतिक विंशक	७१७३५
विंशतिकात् खरामः	७१७४२
विंशतेस्तिहरश्चिति	७११४७
विंशत्यादेस्तमो वा	४१६०७
विंशत्याद्याः सदैकत्वे	२११६५
विकाराद्यर्थदेवदारवादेः	७१५६०
विकृतेस्तदर्थ्यायां प्रकृतौ	७१७२१
विगृहीताच्च	७१४१६
विचारे पूर्ववाक्यस्य संसारः	१८७
विजेरिट् निर्गुणः	३१३६४
वित्तं भोग्ये प्रतीते च	५१४७
विदादेः केशवणः	७१२६१
विदादेरगोपवनादेः	७१३२०
विदूराण्यराम	७१५३५
विदेरामि न गोविन्दः	३१३०२
विद्यान्ताच्च न त्वङ्गक्षत्रधर्म	७१३४८
विद्यायोनिमम्बन्धेभ्यो	७१५३१
विधात्रर्थस्य लक्षणाच्च ते	४११६५
विधिः तद्विषयक्रियातिपत्तौ	४११७१
विधिविषयक्रियातिपत्तौ	४११८६
विधिसम्भावनादौ यादादयो	३१४
विध्याद्यर्थे तव्यानीय	४१६०, ५११४६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
विनयादेर्नुसिहठः	७११०६६
विन्दुरिच्छुश्च साधू	५१३५३
विपराभ्यां जेः	४१२०८
विप्रलापे विभाषया	४१२४४
विप्रसंभ्यो भुव उच्	५१३६३
विभाषा	५१४०६
विभाषा चेदकर्मकः	४१२७१
विभाषा रूप गोत्र नाम	६१२७५
विभाषा समीपे	६१३६६
विभुरयम्	३१५११
विराधिनामद्रव्याणां वा	६१३३३
विशसितुर्वेशस्त्रम्	७१६४६
विशपूरिपदिरुहिप्रकृते	७१८२४
विशेषणं तुल्याधिकरणेन	६१७
विशेषलक्षणात्तृतीया	४१११४
विशेष्यं तदर्थकुत्सनेन	६१२१
विश्रवसो वैश्रवणः	७१२६१
विश्वजनात्मभोगोत्तर	७१७१४
विश्वम्भरादयः संज्ञाशब्दाः	५१२५७
विश्वम्य वसुराटोः	६१२३८
विश्वानरो नाम्नि विश्वामित्रः	६१२३६
विष्णुकृत्यं तुल्यार्थश्चाजात्या	६१३५
विष्णुकृत्यानां कर्त्तरि षष्ठी वा	४१५६
विष्णुकृत्येस्तु निन्दास्तुत्यर्थाति	६१६३
विष्णुगणाद्वा वा सर्वेश्वरे	११६५
विष्णुचक्रस्य हरिवेणुविष्णुवर्गे	११११४
विष्णुजनस्य द्वित्वं वा विरामे	२१६८
विष्णुजनात्तद्धितस्य हरो	७१५५
विष्णुजनात् इत आनो हौ	३१४१५
विष्णुजनात् सारामयस्य हरो	३१४८१
विष्णुजनादपत्यस्य यो हरः	३१५२८
विष्णुजनादेर्लघोरारामस्य	३११०६
विष्णुजनाद्द्विस्योर्हरः	३१२८२
विष्णुजनाद्धरिमित्रस्य हरो	७१५०३
विष्णुजनाद्यात्मदिनाश्चानः	५१३३५
विष्णुजनाद्येकसर्वेश्वराद्	३१४७७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
विष्णुजनाद्विष्णुदासस्यादर्शनं	११२५
विष्णुजनान्तानामनिटां	३१०१
विष्णुजनारामान्तात्	६१२१३
विष्णुजनारामाभ्यामेव	५१३११
विष्णुजने विष्णुजनो वा	११२०
विष्णुदासस्य हरिकमलं वा	२११०६
विष्णुदास हरिगोत्राणि	११३०
विष्णुदासाद्वा	७१४२
विष्णुदासा विष्णुपदान्ते	११६६
विष्णुनिष्ठा सेट् कगुहमद्	५१४४५
विष्णुपदाद्वा अन्वादेशे	२११६८
विष्णुपदान्तात् त्रिविक्रमाद्वा	१११७
विष्णुभक्तिसिद्धं विष्णुपदम्	२१७
विष्णुसर्गस्य स, ईश्वरात्	६१३२५
विष्णुसर्गो जिह्वामूलीयः	११३१
वृक्ष मृग शकुनि तृण धान्य	६१३१
वृक्षौषधिभ्यो वनस्य वा	६१३१५
वृतादिभ्यः परपदं वा	३१२४६
वृतु वृधु शृधु स्यन्दूभ्यो	३१२४८
वृत्युत्साहस्फोटतासु क्रमेः	४१२३३
वृत्रकृन्गोब्रह्मशत्रुचौरेषु	५१२५४
वृष्णीन्द्रस्थानचतुःसनादेशविष्णु	७१४
वृष्णीन्द्रे त्रिविक्रमाभावः	६१२२६
वृहत्तिका वस्त्रविशेषे	७११०७६
वे कषलसकत्थसन्भ्यो	५१३२६
वेः क्षु श्रुभ्याम्	५१३८७
वेः पादविहृतौ तद्वत्	४१२३६
वेः स्कम्भेः	३१५७७
वेज व्येज्यानां न	५१६४
वेज न सङ्कर्षणोऽधोक्षजे	३१२६३
वेजो वयि बाधोक्षजे	३१२६४
वेणुकादिभ्यश्छरामो	७१४५६
वेतनादिना जीवति	७१६१५
वेत्तिप्रभृतीनां वेदादयो	३१२६६
वेत्तिभिदिच्छिदिभ्यः कुरः	५१३४४
वेत्तु प्रभृतीनां	३१३००

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
वेत्तेः शतुर्वसुर्वा	५१११
वेत्ते रुट् तु वा	३१६५
वेरशब्दप्रथने	५१३६५
वेष्टि चेष्ट्योर्वा	३१४३३
वैशाखो मन्थे	७१८२७
वैष्णवाद्योः कंसारि	३१२५७
वैष्णवे त्वश्	२११८६
व्यक्तवाचां सहोक्तिषु	४१२४२
व्यचेस्त्वसि विना	३१३६१
व्यञ्जनमन्त्रे न	६१६७
व्यञ्जनानां वा	३११३२
व्यञ्जनेनोपसिक्तम्	७१६२६
व्यतिहारार्थान्मेङोऽ	५१७७
व्यथो नरस्य सङ्कर्षणोऽ	३१२५१
व्यवहृन्नपणदिवां कर्म वा	४१६७
व्यावादिपूर्वाणः क्रियाव्यती	५१४३२
व्याङ्परिभ्यो रमः	४१२६६
व्यासादेरिकण् स च चित्	७१२६०
व्याहरति मृगः	७१४६८
व्येजो नात्वमधोक्षजे	३१२६७
वृताणिगस्तन्मात्रभोजन	३१५५३
व्रीहिमयः पुरोडाशे	७१५८६
व्रीहिशाल्योर्माधवढः	७१८५४
ब्रूव ईट् कृष्णधातुक	३१३४१
श	
शसि दुहि गुहिभ्यो	५११७६
शकः शिक्षङ्	३१४७०
शकटात् केशवणः	७१६७७
शकन्धवादयश्च	६१३०६
शकलकर्ममाभ्यां वा	७१३३०
शकादिभ्यश्च यत्	५११५५
शकेः सनन्तात् पृच्छायाम्	४१२१५
शक्तियष्टिभ्यां ठीर्माधवः	७१६५६
शक्त्यादिषु कर्मसु ग्रहेरत्	५१२२७
शण्डिकादेर्ण्यः	७१५४४

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
शतमानविशतिकसहस्र	७७३४
शपाठ्ठराम यरामावशता	७७३०
शतृशानी भविष्यति च	५११२
शदन्तविशतिभ्याञ्च	७८६८
शदेरात्मपदं शिवे	३१२५५
शन्नतशद्विशतिभ्य इनिच्	७८८८
शपेस्तु शपथे तत् स्यात्	४१२१६
शप् कृष्णधातुके	३१२६
शप्श्याभ्यां शतुर्नुम्	५११७
शब्ददुर्दुरी करोति	७८३३
शब्दश्लोककलहगाथा	५१२४०
शब्दादिकं करोति	३१५४२
शब्दान्तरद्योतिते तु	४१२०२
शमादीनां त्रिविक्रम इये	३१३७०
शमादेगिनिः	५१३२३
शमिधातोर्त् संज्ञायाम्	५१२३२
शम्भाः शमीनश्च	७१५७६
शरदादेः	७१३३५
शरीरावयवाच्च	७१५०२
शरीरावयवादयरामः	७७११
शर्करादिभ्यः केशवणः	७१०६७
शर्कराया वा	७१४०६
श-ष-स-हा हरिगोत्राणि	११२८
श-ष-साः शौरयः	११२६
शसादयो यदुसंज्ञाः	२१२७
शसु दद वरामादीनां	३१३२
शस्त्रे कर्मणि धृत्रोऽन् न तु	५१२३०
शाखादिभ्यो यः	७१०६३
शाखाभेदानां	६१११६
शा छा सा ह्या वे पाभ्यो	३१४३६
शाण शताभ्यां वा	७७४६
शारदकादयो मुद्गादौ	७१४७५
शारदिकं श्राद्धे	७१४६३
शारद्वतायनादयो	७१२६६
शागे वायुकर्बुरयोः	५१३८४
शासः शिष् कंसारि	३१३२७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
शासियुधिदृशिधृषिमृषिभ्य	५११४८
शास् हेः शाधि	३१३२८
शिखादिभ्य इनिः	७१६६०
शिखाया वलः	७१४१२
शित् शिवः	३११८
शिरसः शीर्षन् ये केशे तु	७१४६
शिरसः शीर्षोऽणि	७१४५
शिलाया ढरामश्च	७१०६२
शिवनाति प्रभृतयः	७१७०५
शिवादेः केशव-णः	७१२६३
शिशुकन्दाद्वयमसभान्	७१५३६
शीङः शे कृष्णधातुके	३१३३५
शीङा रुट् च	३१६४
शीङ्स्विदिमिदिक्षिदिधृषः	५१५२
शीतालु तिग्मालु वलुलु	७१६७१
शीर्षच्छेदादयरामश्च	७१७७६
शीलार्थे तृल् कर्त्तरि	४१५२
शीलितादौ षष्ठी नेष्यते	४१५७
शुक्रादेर्घरामादयः	७१३३४
शुनः सङ्कोच विकारयोरेव	७१३५
शुनो दन्त दंष्ट्रा कर्णेषु	६१२३६
शुषो विष्णुनिष्ठा तस्य कः	५१४४
शुष्कचूर्णरुक्षेषु पिषः	५१११३
शुद्राशामवहिष्कृतानाम्	६१२२६
शूद्रादमहतपूर्वात्	७१२४२
शूर्पात् केशवणो वा	७१७३८
शूलात् पाके	७१११७
शृङ्गारक वृन्दारक फलिन	७१६७०
शृ हृ इत्येतयोर्वामनो	३१४१७
शृ वन्दिभ्यामारुः	५१३५७
शे चान्तो वा	११११२
शेतेः शय् कंसारि ये	३१३३६
शेवल विशाल वरुणार्थ्य	७१०४५
शेषार्थे विधिः	७१४१६
शोकरोगयोर्वा	६१२८५
शोण चण्ड उपाध्याय	७१२१२

सूत्रानि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
शौरिर्वज्जितास्तु सात्वताः	१।३३
शौरिशिरस्कस्तु सात्वतः	३।६०
शौरिषु शौरिर्वा	१।१३८
शौरो णडाभ्यां टको	१।१३०
इनमस्त्योररामहरो निगुंरो	३।३०३
इनानारायणयोरारामहरो	३।३२२
इनान्नस्य हरः	३।३६७
इयतेः संशितं व्रते	५।६६
इयामरामवदुत्तरेषु	६।३६५
इया श्रि व्या ज्या ह्या सङ्कर्षणस्य	३।५०५
इयैडः सङ्कर्षणो द्रवकाठिन्ये	५।३७
श्रदित्यव्ययमुपेन्द्रवद्वात्रि	३।३५८
श्रन्थि ग्रन्थि दम्भिभ्यस्थल् च वा	३।८६
श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितित्य	७।४७८
श्राणामांसोदनाभ्यां	७।६६४
श्राविष्ठाषाढीयो वा	७।४८१
श्रित्रो जागृवर्जं चतुर्भुजा	५।३०
श्रुवः शपः श्रुतस्य श्रुश्च	३।२०२
श्रेण्यादयः कृतादिभि	६।२०
श्रोत्रियस्य यलोपश्च	७।८४६
श्रोत्रियश्छन्दोऽधीयाने	७।६२२
श्लाघह्नुः स्थाशपां ज्ञापयितु	४।६६
श्लिष आलिङ्गनार्थात् सक्	३।३६४
श्लिष्टप्रियादिषु च	६।२५०
श्रवणात् केशवमाधवटो	७।६१४
श्रन् युवन् मघवन् इत्येषां	२।११६
श्रयतेरिरामहरो	३।२७४
श्रशुराद्यरामः	७।२८०
श्रसो वसीयसः	७।१०५
श्रापदो वा	७।६
श्रोः सङ्कर्षणो वा	३।२७५
श्वेताश्वतरस्य श्वेतः	३।५४८

ष

षट् कृत्कृतिपयचतुर्भ्यं
षडङ्गलिदत्तकस्य

७।६०२
७।१०४४

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
षढोः कः से	३।१७१
षण्मासाण्ययरामो वा	७।७६६
षनान्त संख्यातः कतेश्च	२।४१
षन्हन्धुनराज्ञामेवा	७।५७
षष्ठीमस्त्यशीतिनवतिभ्य	७।६०६
षष्ठाष्टमाभ्यां णरामारामो	७।१०१६
षष्ठी	६।८२
षष्ठ्यन्तेन	६।३७
षष्ठ्याः	६।२१६
षष्ठ्या रूप्यश्च	७।१०१६
षष्ठ्या विविधपक्षाश्रये	७।११०५
षस्य डा विष्णुपदान्ते	२।१०५
षात् परस्य टवर्गयुक्तस्य	२।१३५
षात्वणत्विक कात्तेतद्धितिका	७।५२२
षिद्धिदिभ्यश्च	५।४४६
षोडशकादश च निपात्यो	६।२६४
ष्वेनरठरामस्य तरामो वा	३।१६७
ष्विवाचमु क्लमां त्रिविक्रमः	३।१५६
ष्वीवनसीवने वा निपात्येते	५।४६३
ष्वष्क स्विद स्वद स्वञ्ज स्वप	३।६७

स

स एषां ग्रामणीरिति कः	७।६१०
संख्याकृष्णपाण्डुदग्भ्यो	७।१००
संख्या गुणितत्वे वार्थे च	६।१११
संख्यातः संवत्सरसंख्ययोः	७।१३
संख्यातो नदी गोदावरी	७।६६
संख्यादिपूर्वाया मातुः	७।२६५
संख्यादिशब्दास्तु वाच्यलिङ्गाः	२।१५८
संख्यापरिमाणख्यायाश्च	५।३८२
संख्यापूर्वोऽसौ त्रिरामी	६।४८
संख्याप्रयोगे तु न	६।१३५
संख्यायाः परिमाणस्याशाणस्य	७।१५
संख्यायाः वर्षस्याभाविनि	७।१४
संख्यायामल्पीयसश्च	६।१८६
संख्या विद्यायानिसम्बन्धना	६।१७६

सूत्रसूची]

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
संख्याविसायेभ्योऽहस्याहन्	७।६८
संख्याव्ययाभ्यामङ्गुलेः	७।१११
संख्यासूपमानेभ्यः	६।३४५
संघातार्थे सर्वतः सभा	६।१४६
संज्ञ कर्मणि तृतीया वा	४।३२
संज्ञा भर्त्सनयोः	६।२२०
संज्ञायां कः	७।१०५०
संज्ञायां न तु गात्	६।३१२
संज्ञायाश्च नेष्यते	६।२६३
संज्ञायाम्	७।१०३५
संपर्युपेभ्यः सुट्	३।४०७
संपृच विविच रन्ज संसृज	५।३३०
संप्रतिभ्यां समुत्कण्ठा	४।२५०
संयुक्तश्चोश्च	३।१४०
संशयमापन्नः	७।७८५
संसारस्य हरश्चिति	२।३६
संसारस्य हरो भगवति	७।२६
संसृष्टम्	७।६२५
संस्कारद्रव्यं भक्ष्येण	६।६८
संस्कृतम्	७।६०८
सकरामस्य च कथितानुकथने	२।१८७
सकोऽन्तहरः सर्वेश्वरे	३।१७४
सखिपतिभ्यां डेरो	२।४८
सख्यादेर्माधव ङः	७।३६५
सख्युर्वृष्णीन्द्रः सुवज्जं	२।४५
सगर्भाद्वौ भवः	७।७००
सङ्काशादेर्ण्यः	७।३६६
सङ्ख्यातो दाम्नो हायनात्तु	७।१६६
सङ्ख्याया अतिशदन्तायाः	७।७३१
सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तौ	७।१०८१
सङ्ख्यायाः सङ्ख्यसूत्राध्ययनेषु	७।७७१
सङ्ख्याया मयट् भागेन	७।८६६
सङ्ख्यायादच् न तु वहोः	७।१४६
सङ्ख्याङ्कलक्षण घोषेषु वेद	७।५७१
स च परस्परसम्बन्धार्थानां	६।४
सजुष् आशिष् इत्यनयो	२।१३६

४१

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
सतीर्थ्यः समानगुरुकुल	६।२७४
सतीर्थ्यः समानगुरौ	७।६६६
सत्यङ्कारादयः साधवः	५।२१८
सत्यादशपथे	७।१११८
सत्यार्थवेदेभ्य आपुक् च	३।५५६
सत्सङ्गात् पूर्वो वामनोऽपि	१।८१
सत्सङ्गादेरात एरामः	३।१८३
सत्सङ्गादृचदन्तस्य	३।१६५
सत्सङ्गान्तस्य हरा	२।६६
सदा गुणवाचिनैव गुणेन	६।८६
सदृशादिभ्यश्च	७।२११
सदेः प्रतिविवर्जिनः	३।५७०
सद्य आदयश्च	७।६६६
सनन्ताशंस भिक्षिभ्य उः	५।३५२
सनरस्य पिवतेरङ् परे णौ	३।४३७
सन् क्रियेच्छायाम्	३।४४६
सन्धिवेलादेः केशवणः	७।४६५
सन्ध्यक्षरस्य द्वितीय	७।१०४२
सन्नङ् परे णौ च	३।२७६
सन्त्यङास्तु तत्सम्बन्धिनः	३।७२
सपत्न्यादयः पीताम्बरे	७।२२०
सपत्रनिष्पत्राभ्यामतिव्यथने	७।१११३
सपरमर्वेश्वर य व राणामिउ	३।२४४
सपूर्वपदाच्च	७।६२८
सपूर्वपदात् प्रथमान्ताद्वा	२।२०३
सप्तमीतन्त्रः	७।६६३
सप्तमी तृतीययोरूप	५।१२६
सप्तमी विष्णुनिष्ठा विशेषण	६।१६१
सप्तमी शौण्डादिभिः	६।६०
सप्तम्यन्ते जनेरच्	२।३०५
सब्रह्मचारी वेदाध्ययनार्थं	६।२७३
सब्रह्मचार्यादेः समूहाद्यणि च	७।३४
समः क्षणीतेः	४।२५६
समः पृच्छतिगमृच्छिस्वृश्रुभ्यः	४।२२४
समः स्तुवो यज्ञविषये	५।३६३
समनुप्रतिभ्योऽक्षः	७।१३७

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
समयाद्यापनायाम्	७।१११२
समरूपाणां ब्रह्मणा सहोक्तौ	६।२०१
समवायादीन् समवेति	७।६४०
समांसमीना प्रत्यब्द	७।८६८
समानस्य सः	६।२७१
समानात्तदादेश्च	७।५११
समानाधिकरणविशेषणरूपा	२।१५६
समानार्थतया पुरुषोत्तमता	२।६२
समानार्थानाञ्च भिन्नरूपाणां	५।१६६
समाने कर्मण्यन्यतदादिषु च	५।२६८
समायाः खरामः त्रिराम्यान्तु	७।७६६
समासवाक्यं विग्रहः	६।५
समाससाङ्ख्ये तु	६।१७६
समासान्तनाम्नः प्रत्यावृत्तिः	६।१२
समासा बहुलम्	६।१
समासे डेर्न महाहरः कृति	५।३०६
समासे सर्वादिपदं पूर्वपदम्	६।२०३
समाहारे त्रिराम्यामेकत्वं	६।४६
समाहारे ब्रह्मत्वमेकत्वञ्च	६।११८
समीपाध्ययनानाम्	६।१२१
समुच्चितक्रियावचनाद्विधात्रा	४।१६७
समुदाङ्भ्यो यमेरग्रन्थ	४।२६३
समुद्रद्वीपजातादौ द्वैप्यः	७।४६१
समूले हनः अकृते डुकृञः	५।११४
समूहवच्च बहुषु	७।१०८४
समोऽकूजन इष्यते	४।२१४
समोऽतुल्ये कृष्णनाम	२।१७४
समो मस्य हरो वा	६।२६५
समो यु दु द्रुभ्यः	५।३८५
सम्पत्तौ	६।१६३
सम्पदादेः क्विप्क्ती भावे	५।४४२
सम्पादिनि	७।८१३
सम्प्रत्युपयोगाभावे	६।१५६
सम्प्रदाने चतुर्थी	४।८६
सम्बन्धे तदाश्रयात् षष्ठी	४।६
सम्बोधने च	४।८

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
सम्बोधने स्युर्बुद्ध	२।२४
सम्भवत्यवहरति पठति	७।७६४
सम्भावनार्थधातूपपदे	४।१७३
संवत्सराग्रहायणीभ्यां	७।४६७
सररामयोविष्णुसर्गो	२।८
सरसो रुहे च	५।३०६
सरामे ट नाभ्यां तुग्वेति	१।१२६
सत्तिशास्त्यत्तिभ्यो डो	३।१६८
सर्वकुलाभ्रकरीषेषु कर्मसु	५।२५१
सर्वचर्मणावृतः ख नृसिंहखी	७।८५६
सर्वजनान्माधवठश्च	७।७१६
सर्वपूर्वभ्यः पत्यङ्गकर्मपत्र	७।८६१
सर्वं प्रकरणव्यापी वर्णमात्र	१।४४
सर्वभूमिपृथिवीभ्यां	७।७५२
सर्वस्य द्विरुक्तिः	६।३५८
सर्वस्य सर्वदा सदा	७।६६७
सर्वात् णरामो वा	७।७१८
सर्वादि कृष्णनामाख्यो	२।१७२
सर्वादिनि कृष्णनामानि	२।१६६
सर्वादेः सादेस्त्रिराम्याश्च	७।३५२
सर्वान्नानि भक्षयति	७।८६४
सर्वाव्ययाभ्यामेकवर्जं	७।६७
सर्वेण प्रकारेणेत्यादौ	७।६६८
सर्वे नादयो नोपदेशा	३।११६
सर्वेऽपि रामकृष्णाः	६।१३७
सर्वेश्वरदन्त्यपरा धातोरादि	३।६६
सर्वेश्वरपर्यन्तस्यादिभागस्य	३।७०
सर्वेश्वरादिण्वा कर्मकर्त्तरि	४।२५
सर्वेश्वरादित्वे तु सत्सङ्गादि	३।७१
सर्वेश्वरादेर्वृष्णीन्द्रोऽत्	३।१०६
सर्वेश्वरान्तधातोर्थत्	५।१५०
सर्वेश्वरान्तपूर्वपदस्या	५।१०४
सर्वेश्वरान्तात् सहजानिटः	३।१४३
सर्वेश्वरे तु विकल्पः हरे	२।१३३
समुट्कात् कृञः	३।४१०
सस्य जो जे	३।१३१, ३८२

सूत्रसूची]

४३

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
सस्य जो जे न तु	३।१३१
सस्य तः सरामादिराम	३।२७२
सस्य तो दिवलोपे	३।३२५
सस्य शश्ववर्गयोगे	२।१०२
सस्य हरो धे	३।६६
सस्येन सम्पन्नः	७।६१२
सहजसर्वेश्वरान्त हनग्रह	३।६२
सहजस्य मूर्द्धन्यजातकराम	२।१३८
सहजानेकसर्वेश्वरस्य विववन्तस्य	२।५०
सहजागमवतश्च तादृशात्	३।१४४
सहशब्दस्तृतीयान्तेनैक	६।११५
सहस्य सः	६।२६६
सहस्य सधिः समः समिः	५।२८६
सहार्थप्रधाने तृतीया	४।१११
सहिवहोररामस्य ओरामो	३।२५४
साकल्ये	६।१६५
साकाङ्क्ष यज्ञ क्रियातिक्रमो	३।१२
साक्षी साक्षाद्द्रष्टरि	७।६२५
साढः साट्	२।१४६
सातिर्वा वि-विषये कार्त्तस्ये	७।११२३
सात्वतपरत्वे लोप्यश्च	१।१३६
सादृश्ये	६।१६२
सादृश्ये गुणस्य क्रियायाश्च	६।३६६
साधुनिपुणाभ्यां योगेऽ	४।१४६
साधु पुण्यत् पच्यमानाः	७।४६१
साप्तपदीनं मध्ये	७।८७१
सामान्यत विशेषस्य	४।१४०
सामान्यवचनतुल्याधिकरणे	२।२१०
सायन्तन चिरन्तन प्राल्लेतन	७।४६६
सारवैश्वाकहिरन्मयाणि	७।५४
सार्वधुरीणोत्तरधुरीणी साधू	७।६७६
सासहिमुखा यङन्ताः कौ	५।३५५
सास्य देवता	७।३३३
सास्यां क्रियेति घणो	७।३८२
सिकताशर्कराभ्याञ्च	७।६४५
सिचेरपि तथा षत्वम्	३।५६६

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
मित्रादेस्तुः	५।३६७
सिनः कर्मकर्त्तरि बन्धे ग्रासे	५।४३
सि नारायण वेत्तिभ्योऽन उस्	३।८३
सिन्धुनक्षशिलादिभ्यः	७।४५४
सिन्धाः सिन्धुक सिन्धवो	७।४७७
सिभूतेशे	३।५२
सिब्लुपे तु रश्च	३।३२६
सीमोक्ताववरस्मिन् विभागे	४।१७०
सुः पूजायामतिस्तद्वदति	३।५६६
सुकर्म पाप मन्त्र पुण्येषु	५।३००
सुखप्रियाभ्यामानुलोम्ये	७।१११५
सुखादिकं वेदयते	३।५४४
सुखादिभ्यश्च	७।६८२
सुनङ्गमादेरिर्नृसिंहः	७।४००
सुदुरोगमेरजधिकरणे	५।२५६
सुधीभुवोरियुवावेव	२।५२
सुप्रातादयश्च	७।१६३
सुयज्भ्यां ड्वनिप्	५।३१४
मुरा सीध्वोः कर्मणोः	५।२२५
सुवः कृष्णधातुके न	३।३३४
सुवर्णवाचिभ्यः परिमाणे	७।५८६
सुविनिर्दुः पूर्वसूतिसमयोः	३।५८०
सुषमादयश्च	६।३०६
सुसंख्याभ्यां दन्तस्य	६।३४३
सुमर्वाद्धिभ्यो देशनाम्नः	७।११
सुस्तुधुञ्भ्य इट् सौ परपदे	३।२०७
सुस्थादिषु	३।५८४
सुस्तातादिकं पृच्छति	७।६०६
सुहरति तृण सोमेभ्यो	७।१६७
सुहृन्मित्रे दुहृच्छत्रौ	६।३५१
सूचनार्थाद् यमः सिः कपिलः	३।१६३
सूचि सूत्रि सूचि अटि अत्ति	३।४८०
सूतकादीनां वा	७।७८
सून् पूति सुरभिपूर्वाद्गन्धा	७।१६५
सूत्रग्रह इत्यवधारणे	५।२२८
सूत्राणि षड्विधानि	१।४२

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
सूत्रे तृतीयास्तेन प्रथमान्तम्	६।६
सूत्र्यादेराप्	७।२२३
सृष्ट्यादिभ्यः क्मरः	५।३४२
सृजिदृशिभ्याञ्च	३।१४५
सृजिदृशोरमकपिलवैष्णवे	३।२१६
सृजेः श्रद्धावतः स्यश्च	४।२४५
सृप्लृ सृ स्तृ सृज् स्तृ स्त्या	३।६८
सेटक्त्वा न कपिलो	५।७६
सेनाङ्ग क्षुद्रजन्तुफलानां	६।१३०
सेनान्त कारु लक्षणेभ्यो	७।२८३
सेनासुराच्छायाशालानिशा	६।१५०
सोऽत्र वर्त्तत इति	७।३७२
सोपेन्द्रदामोदरात्	५।४३६
सोपेन्द्रारामाच्च	५।४५०
सोममुदग्निचितौ साधू	५।३०२
सोऽस्य निवासः	७।५४१
सोऽस्यांश वस्न भृतयः	७।७६६
सोऽस्यादिरिति छन्दसः	७।३७८
सोऽस्याभिजनः	७।५४२
स्कन्दस्यन्दयोर्नरामहरो न	५।७८
स्कोः सत्सङ्गाद्योर्हरो	२।१०४
स्तनशुन्योः कर्मणार्धेटः	५।२४३
स्तन्म स्तुन्म स्कन्म स्कुन्म	३।४१३
स्तन्यादेरित्तुः	५।३७३
स्तम्बेरमो हस्तिनि कर्णेजपः	५।२३१
स्तेयं स्तन्ये कापेय	७।८४३
स्तोकादिभ्यः पञ्चम्याः क्ते	६।२०८
स्तोकान्तिकदूरार्थाः कृच्छ्रञ्च	६।८०
स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयेभ्यः	४।१०३
स्त्यायतेरीवन्ता स्त्री	५।३७०
स्त्रीपुंसाभ्यां नृसिंह न स्तो	७।२५५
स्त्रीभ्रुवोवियुवौ सर्व्वेश्वरे	२।७४
स्थलवारिभ्यां पथो मधु	७।७६०
स्था ईश भास पिस कसिभ्यो	५।३५६
स्था दामोदरयोरिरामो	३।१८६
स्थानान्त गोपाल	७।४८२

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
स्थानान्ताच्छो वा तुल्यत्वे	७।१०७६
स्थालीविलाच्छरामः	७।७८०
स्थितः	७।४८८
स्थूलादिभ्यः प्रकारोक्तौ	७।१०७४
स्थूलेतरात् संज्ञायाम्	७।१६१
स्थे न च क्वचित्	५।३१३
स्थो निर्गीतौ प्रकाशने	४।२२०
स्तुक्रमिभ्यामिङ् नात्मपद	३।१६०
स्तु नमिभ्यामात्मपद्य	४।२८
स्नेहद्रव्ये पिषः	५।११७
स्नेहे तैलः	७।८७५
स्पर्श उपतप्तरि सारः	५।३७६
स्पृहि गृहि पति कृपि दयि	५।३४१
स्पृहेरभीष्टम्	४।६१
स्पृह्यादेराय्यः	५।३७२
स्फायः स्फार् शदेरगती	३।४४२
स्फायः स्फीर्वा विष्णुनिष्ठायाम्	५।३६
स्फुरते स्फारः साधुः	५।४०८
स्मरणोक्तौ कल्किर्न तु	४।१५४
स्मरहर इलश्च देशे	७।६४६
स्मरहरः कालाविशेषे	७।३६७
स्मरहरार्थस्य विशेषणानि	७।३६४
स्मृत्यर्थदयेशां कर्म वा	४।६२
स्मेन योगे त्वपरोक्षे	४।१५८
स्यन्देः स्यदो जवे	५।४१०
स्रज् दिश् दृश् ऋत्विज्	२।१०८
स्रवति शृणोति द्रवति	३।४४६
स्वञ्जेर्वा	३।८५
स्वतन्त्रं तत्प्रयोजकञ्च कर्त्तृ	४।१३
स्वतिभ्यां न तौ प्रत्ययौ	७।१४३
स्वपि तृषि धृषिभ्यो नजिङ्	५।३५६
स्वभावलक्ष्मीतः कपूर्वस्यापो	७।८३
स्वमज्ञातिधनाह्वये	२।१७५
स्वरति सूति सूयति	३।१००
स्वर्गादिभ्यो यरामः	७।८२५
स्वसुच्छरामः	७।२७७

सूत्रसूची]

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
स्वसृ तृत् तृत् प्रत्ययान्तानां	२१५८
स्वाङ्गकर्मकाच्च यमादितः	४१२२७
स्वाङ्गपूर्वात् कान्ता न तु	७११६८
स्वाङ्गात्तदासक्ते	७१६१४
स्वाङ्गादमुद्धमस्तकात्	६१२१४
स्वाङ्गाद्वा न तु सत्सङ्गोद्धव	७१२०१
स्वाङ्गाद्वृद्धौ च	७१६६३
स्वाङ्गाभ्यामक्षिसक्थिभ्याम्	७११४६
स्वादयः पञ्च पाण्डवाः	२१४४
स्वादीरेरीणोश्च तथा	११५६
स्वादेः शपः श्नुः	३१३७७
स्वाद्यन्तं प्रतिना लेशार्थे	६११७०
स्वाद्यन्तात् प्राग्वहुर्वा कल्पार्थे	७११०२८
स्वापेः सङ्कर्षणोऽङि	३१४३५
स्वामीश्वरे	७१६७६
स्वार्थे	७१२०६, १०८६
स्वार्थे त्वरामण्	७१४७६
स्वीकारे तूपयच्छनेः	४१२५१
स्वे पुषः	५१११६

ह

हनः	५१११६
हनः सिः कपिलः	३१२५६
हनो यद्वा तस्य बधश्च	५११५६
हनो बध भूतेश काम	३१२८७
हनो हस्य घो णिन्नयोः	२११२२
हन्हेर्जहि	३१२८६
हन्तेर्हस्य घटवञ्च	५१२०२
हन्तेस्तो नृसिहे	३१४४८
ह म यान्त क्षण श्वस श्वीनामे	३११४६
हरतेर्न निषेधः स्याद्वहेरपि	४१२०५
हरिखड्गस्य हरिकमलं	३१७६
हरिगदा हरिघोष हरिवेणु	११३१
हरिघोषात्तथोर्ध्वो	३११०३
हरित आप् वा वृष्णिषु	२१७०

४५

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
हरित औ पूर्वसवर्णः	२१३१
हरितः डे रौच्	२१३७
हरितश्च ना न तु लक्ष्म्याम्	२१३५
हरिमित्रयुकसत्सङ्गाद्या	५१३३
हरिमित्र्याद्विष्णुगणो	११२११
हरिवेणुहरविधिर्वा यपि नान्त	५१६०
हरिवेणोरारामो वनिपि	५१२८१
हरिवेणौ हरिवेणुर्वा	११६७
हरिवेण्वन्तसहजानिटां तनु	३१६६४
हरिवेण्वन्तसहजानिटादीना	५१४४०
हरिवेण्वन्तानां जप जभ दह	३१४८६
हरिवेण्वन्तोद्धवस्य त्रिविक्रमः	३१५००
हरिसंज्ञस्य सर्वेश्वराद्य	६११८५
हरेर्गोविन्दो जसि वृष्णिषु	२१३४
हर्षे च जीविकायाञ्च	४१२१७
हलसीराभ्यां माधवठः	७१५६८, ६७८
हलादौ प्राच्यकरनाम्नि	६१२१६
हल्यादिभ्यो ग्रहणाद्यर्थे णिः	३१५५५
हविरपूपादयश्च गवादिषु	७१७०८
ह ष द चवर्गेभ्यः समाहारे	७११३२
हपि जल्पि पठादिभ्यो	४१२०४
हस्तार्थे वृत्तिग्रहिभ्यां	५१११८
हस्ती जातौ	७१६८४
हस्तु विष्णुजने च न	११२२४
हस्य जो नरस्य	३१२६०
हस्य ढः, तहो धः, दादेस्तु	२१२४५
हाङ् माङोर्नरस्येरामः	३१३५६
हाच्च सर्वेश्वरतः परादिति	११२२३
हान्तशश्वतोर्योगेऽधोक्षजस्य	४११५६
हिसार्थस्य हन्तेर्धनी यङि	३१४६३
हिनुमीनानिपाञ्च	३१४५
हिप्रत्ययान्तं कर्मणाभीक्ष्ण्य	६११०१
हिमान्यरण्यान्यौ महत्त्वे	७१२२८
हिम्यादयश्च साधवः	७१६६६
हु वैष्णवाभ्यां हेर्धिः	३१२७८
हृदयस्य हृद् यदुषु वा	२१८३

सूत्रानि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
हृदयस्य हल्लेखलासयो	६।२८४
हृदयान् प्रिये	७।६६१
हृदयामितसुतेभ्यो गमेः	५।२४६
हृद्भगसिन्ध्वन्तानाम्	७।१८
हृष्टहृषितौ विस्मये प्रतिघाते	५।६०
हेतुतत्फलयोर्विधिस्तविषये	४।१७२
हेतुशब्दप्रयोगे हेतौ	४।१३४
हेतोर्मनिवनाम्नश्च रूप्यो	७।५३३
हेतोस्तृतीया	४।१३०

सूत्राणि	प्रकरण-सूत्रसंख्या
हैमन्त हैमन्तौ	७।४६८
है हे प्रयोगे तु	१।७६
हो हरिघोषः	१।१०१
ह्रस्वे	७।१०४८
ह्लादेर्वात्मनः क्तिविष्णु	५।६४
ह्रः संनिव्युपतः सदा	४।२२६
ह्रयतेनिहवाभिहवोपहव	५।४२५
ह्रै नरनारायणायाः	३।२७०

संज्ञासूची

संज्ञा	तदर्थः	प्रकरण-सूत्राङ्काः
अच्युतः	लट्	३।३
अच्युताभः	शतृशानौ	५।२
अजितः	लृङ्	३।१२
अतिदेशः	अन्यतुल्यत्वविधानम्	१।५४
अधोक्षजः	लिट्	३।८
अधोक्षजाभः	क्वसु कि कानाः	४।४५, ५।१६
अनन्ताः	अणः (अ आ इ ई उ ऊ)	१।१०
अव्ययः	अलिङ्ग शब्दः	२।६
अव्ययीभावः	अव्ययीभावः	६।२
अस्पर्शी	स्वरोच्चारणम्	१।३४
आत्मपदम्	आत्मनेपदम्	३।२०
आदिवृष्णीन्द्रः	यस्यादिसर्वेश्वराः आ ऐ ओ रामाः, वृद्धसंज्ञा मतान्तरे	७।२६३
ईशाः	इकः (इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ) १।६	
ईश्वराः	इचः (इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ)	१।८
ईषत्स्पर्शितरः	अन्तःस्थ यकारस्योच्चारणम्, उपसर्गात् परस्य पदादिस्थितस्य च यकारस्योच्चारणम्	१।३५
ईषत्स्पर्शी	अन्तःस्थवर्णोच्चारणम्	१।३४
उत्तरपदम्	समासे सर्वान्तपदम्	६।२०३

संज्ञा	तदर्थः	प्रकरण-सूत्राङ्काः
उद्धवः	उपधा वा उपान्तः (अन्त्यात् पूर्ववर्णाः)	२।८०
उपेन्द्रः	उपसर्गः	३।४२
एकात्मकः	सवर्णः (समान वर्णः)	१।४
कंसारि	किञ्च डिञ्च	३।१७
कपिलः	कित्	३।१५
कल्किः	लृट्	३।११
कामपालः	आशीलिङ्	३।६
कृष्णः	अकारान्त पुलिङ्गशब्दः	२।११
कृष्णधातुकाः	लट् लोट् विधिलिङ्	
	लङ् लुङ् शित्—सार्वधातुकानि	३।२२
कृष्णनाम	सर्वनाम	२।१६६
कृष्णपुरुषः	तत्पुरुषः	६।२, ८
कृष्णप्रवचनीयः	कर्मप्रवचनीयः	४।१०७
कृष्णस्थानम्	घुट् (पुलिङ्गात् स्त्रीलिङ्गाच्च परे स्वादयः पञ्च विभक्तयः शिश्च)	२।८१
केशवः	टित्	७।११४, २४६
गोपालाः	वर्गं तृतीय चतुर्थ पञ्चमवर्णो ह्रस्व	१।३१
गो गी	ई ऊकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्दः	२।७३
गोविन्दः	गुणः	२।३२
चक्रपाणिः	यङ् लुगन्तधातुः	३।४६८

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य संज्ञासूची

४७

संज्ञा	तदर्थः	प्रकरण-सूत्राङ्काः	संज्ञा	तदर्थः	प्रकरण-सूत्राङ्काः
चतुःसनाः	इणः (इ ई उ ऊ)	१११	माधवः	टणित्	७१२४६
चतुर्भुजाः	उकः (उ ऊ ऋ ॠ लृ लृः)	११२	यदुः	शसादयो विभक्तयः	२१२७
चतुर्व्यूहाः	एचः (ए ऐ ओ औ)	११३	यादवाः	वर्गं प्रथमं द्वितीयवर्गः शषसाश्च	११३२
त्रिरामो	द्विगुः	६१२, ४८	युवा	पित्रादौ जीवति पौत्रादेरपत्यं	
त्रिविक्रमः	दीर्घः	११६		ज्येष्ठभ्रातरि जीवति कनिष्ठश्च अन्यस्मिन्	
दशावताराः	अकः (अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृः)	११३	राधा	सपिण्डज्येष्ठे तु वा	७१२६६
दामोदरः	दान दाञ् देङ् दो धा घेट् (दा संज्ञका धातवः)	३१५४	रामः	आकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्दः	२१६३
द्वयम्	वर्णद्वयवाच्यम्	११३८	रामकृष्णः	वर्ण स्वरूपम्	११३७
धातुः	भूसनन्तादिः	३११	रामधातुकाः	द्वन्द्वः	६१२, ११७
नरः	द्विरुक्तधातौः पूर्वभागः	३१७३	लक्ष्मीः	आर्द्धधातुकानि	२१२३
नाम	धातुविभक्ति भिन्नः शब्दः	२११	वामनः	स्त्रीलिङ्गः	२१६
नारायणः	द्विरुक्तधातौः परभागः	३१७४	वासुदेवः	ह्रस्वः (लघुः)	११५
निपाताः	चादयोऽव्ययशब्दाः	२१२१८		स जातीय विजातीयानेकाधिकारव्यापी अधिकारविशेषः स च सूत्रविषये	३१२
निर्गुणः	ङित्	३११६	विग्रहः	समासवाक्यम्	६१५
नृसिंहः	णित्	३११४	विधाता	लाट्	३१५
परपदम्	परस्मैपदम्	३११६	विधिः	कर्तव्यत्वेनोपदेशः विधिलिङ्	११४७, ३१४
पाण्डवाः	स्वादयः पञ्च विभक्तयः	२१४४	विभुः	नामधातुप्रत्ययः,	
पीताम्बरः	बहुव्रीहिः	६१२, १०२		वासुदेवस्यावान्तरानेकाधिकारव्यापी अधिकारः स च सूत्रविषये	३१५११, ३१४
पुरुषोत्तम लिङ्गः	पुं लिङ्गः	२१६	विरिञ्चिः	आदेशः	११३६
पूर्वपदम्	समासे पूर्वादिपदम्	६१२०३	विशेषणम्	येन विशेष्यस्य विशेषः कथ्यते	२११६०
पृथुः	पित्	३११३	विशेष्यम्	जातिगुणक्रिया द्वारा विशेषित शब्दः	२११६०
प्रकृतिः	धातु प्रातिपदिकयोः साधारणं नाम	२१२	विष्णुः	आगमः	११४०
प्रत्ययः	धातुप्रातिपदिकयोः पश्चादयोज्यः	२१३	विष्णुकृत्यम्	तव्यादयः 'कृत्याः' इति प्राचीनाः	४१६०
प्रभुः	केवलाधिकारः (सूत्रविषये सामान्याधिकारः)	३१२		अ-भिन्ना व्यञ्जनवर्णाः	११२०
बलाः	य वर्जित व्यञ्जनवर्णाः	१११८	विष्णुगणाः	अनुस्वारः (विन्दुर्लवश्च)	१११४
बालकल्किः	लुट्	३११०	विष्णुचक्रम्	चन्द्रविन्दुः	१११५
बुद्धः	सम्बोधनस्य सु	२१२४	विष्णुचापः	कादयो व्यञ्जनवर्णाः	१११७
ब्रह्मलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्	२१६	विष्णुजनाः	अवगन्तिवर्गीयाः	११२६
भगवान्	शसादि स्वराः तद्धित यश्च	२१८८	विष्णुदासाः	क्त क्तवत्	४१४४, ५१२७
भूतेशः	लुङ्	३१७	विष्णुनिष्ठा	पदम् (विभक्त्यन्तं धातुरूपं शब्दरूपं वा	२१७
भूतेश्वरः	लङ्	३१६	विष्णुपदम्	कादयः पञ्च पञ्च वर्गाः	१११६
महापुरुषः	प्लुतस्वरः	११७			
महाहरः	आत्यन्तिकलोपः	११४१	विष्णुवर्गाः		

संज्ञा	तदर्थः	प्रकरण-सूत्राङ्काः	संज्ञा	तदर्थः	प्रकरण-सूत्राङ्काः
विष्णुमर्गः	विसर्गः	११६	सात्वताः	वर्ग प्रथम द्वितीयवर्णाः	१३३
वृष्णिः	ङिद् विभक्तिः	२३३	स्पर्शा	वर्गीयवर्णोच्चारणम्	१३४
वृष्णीन्द्रः	वृद्धिः	२४३	हरः	लोपः	१४१
वैष्णवाः	अवगन्तवर्गीयाः शषसहाश्च	१३०	हरिः	इ उकारान्त पुलिङ्गशब्दः	१३०
शिवः	शित्	३१८	हरिकमलानि	क च ट त पाः	१२१
शौरयः	शषसाः	१२६	हरिखड्गाः	ख छ ठ थ फाः	१२२
श्यामरामः	कर्मधारयः	६२, ६	हरिगदाः	ग ज ड द वाः	१२३
संकर्षणः	संप्रसारणम्	३२४४	हरिगोत्राणि	श ष स हाः	१२८
संसारः	टिः (अन्त्य अच् तदादिवर्णश्च)	२३८	हरिघोषाः	घ झ ढ ध भाः	१२४
सत्सङ्गः	संयोगः (संयुक्तवर्णः)	१८२	हरिमित्राणि	य र ल वाः	१२७
सर्वेश्वराः	स्वरवर्णाः	१२	हरिवेणवः	ङ ञ ण न माः	१२५

परिभाषा-सूची

[दक्षिणपार्श्वस्थसंख्या प्रकरण-सूत्राङ्कज्ञापिका, पा सू—पाणिनीय-सूत्रम्, पा—पाणिनीय परिभाषा पाठः]

- १। अन्तरङ्ग-वहिरङ्गयोरन्तरङ्गविधिर्बलवान् १५६, २६६, ५६० [पा ५१]
- २। अर्थवद्ग्रहणेऽनर्थकस्य न ग्रहणम् १५८, २१२६
- ३। आगमविधिर्बलवान् २६३
- ४। आगमशासननित्यम् ३३६ [पा ६५]
- ५। आद्यन्तवदेकस्मिन् २१६
- ६। उक्तार्थानामप्रयोगः ३५१२, ६६
- ७। उत्सर्गपिवादयोरपवादो बलवान् १५६, ५१५१ [पा ५६, ६३-६५]
- ८। उपपद विभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी ४१११६ [पा १०३]
- ९। एकदेशविकृतमनन्यवत् ११४६, २६, ६८ ६३
- १०। एकयोगनिर्दिष्टानां सह वा प्रभृतिः सह वा निवृत्तिः ६१२६ [पा १८]
- ११। कार्यार्थमक्षरं विश्लेषयेन्मेलयेच्च १४५, ३३४० ६३०२
- १२। कृतेऽप्यकृते यः स्यात् स नित्य २१५६
- १३। कृदभिहितो भावो द्रव्यवत् प्रकाशते ५१२२०
- १४। क्वचिदन्तरङ्ग कार्ये क्रियमाणे तदनिमित्तं वहिरङ्गसिद्धम् २६०, ११५
- १५। गौणमुख्ययोर्मुख्ये कार्यसंप्रत्ययः ४४२, २१३ [पा १६]
- १६। द्वन्द्वात् परः पूर्वो वा श्रूयमाणः शब्दः प्रत्येकमभिसंबध्यते ६११७
- १७। धातुग्रहणात् प्रतिपदस्यैव ग्रहणम् ५१५२
- १८। धातुप्रतिरूपादेशस्तद्धातुवत् प्रयोगः वक्तव्यः ३१४२
- १९। धातूनामनेकार्थत्वम् ३३६४
- २०। नाम्नो ग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणम् २१७३, ६३२, ७२७४ [पा ७२]
- २१। नित्यानित्ययोनित्यविधिर्बलवान् १५६
- २२। निमित्ताभाये नैमित्तिकस्याप्यपायः २६६, १०३, ३१६१, ५६०
- २३। पूर्वत्रासिद्धम् ११०२ [पा सू ८२१ पा १२७]
- २४। पूर्वपरयोः परविधिर्बलवान् १५६ (पा ३६)
- २५। प्रकृतिप्रत्ययौ प्रत्ययार्थं सह ब्रूत ४१११, ५१२

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य परिभाषा-सूची

४६

- २६ । भाविनि भूतवदुपचारः ३।१५२, ३३१
 २७ । मातृवत् परिभाषेति नेष्टं हि विरुध्यते ३।२७६
 २८ । मात्रालाघवमात्रं पुत्रोत्सवः
 (इति परे अभिमन्यन्ते) १।२ (पा १३४)
 २९ । यस्य विष्णुस्तस्य सोऽङ्गम् ३।३६४
 ३० । यावन्सम्भवस्तावद्विधिः २।४८, ३।२७६
 ३१ । येन नाव्यवधानं सम्भवति, तेन
 व्यवधानेऽपि स्यात् ३।५१, ३३७
 ३२ । योगविभगेन यथेष्टसिद्धिः ३।३३७, ६।४४
 (पा १२४)
 ३३ । लाक्षणिक प्रतिपदोक्तयोः प्रतिपदोक्तस्यैव
 ग्रहणम् १।७०, २।६६, ३।४०६ (पा ११४)
 ३४ । लुग्विकरणालुग्विकरणयोरलुग्विकरणस्यैव
 ग्रहणम् ४।७४ (पा ६१)
 ३५ । विरिञ्चितो विष्णुर्बलवान् २।७४, १।१३
 ३६ । विष्णुतः सर्वविरिञ्चिर्बलवान् २।११३, ३।१३७
 ३७ । शित् सर्वस्य २।७७, १।२६, १।८७ (पा सू
 १।१।५५)
 ३८ । सकृदपि विप्रतिषेधे यद्वाधितं तद्वाधितमेव
 ३।५५, २।७२, २।७६ (पा ४१)
 ३९ । सन्देहे तु न लुग् विकरणस्य ग्रहणम् ३।४३६
 ४० । सन्निपात लक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विधाताय
 २।६३, ३।१८८, ७।३५६ (पा ८६)
 ४१ । सार्थक निरर्थकयोः सार्थकस्यैव ग्रहणम् ७।१६३
 ४२ । स्थाने सदृशतमः १।६६, १।०६ (पा सू
 १।१।५०)
 ४३ । स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिक्रान्ता
 भवन्ति ७।१०२७ (पा ८४)

न्याय-सूची

- १ । अजा-कृपाणीय न्यायः ७।१०६६
 २ । काक-तालीय न्यायः ७।१०६६
 ३ । गङ्गास्रोत-न्यायः २।७
 ४ । जलतुम्बिका न्यायः १।५२
 ५ । जल-बालुका न्यायः १।५२
 ६ । "पर्वतोऽयं वह्निमान् धूमात्" ४।१३२
 ७ । मण्डूक-प्लुति न्यायः ७।१४६
 ८ । मातृस्य न्यायः ७।५५

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरण-धृत-ग्रन्थादि-नामसूची

(दक्षिण आर्ष्वस्थ-संख्या यथाक्रमेण प्रकरण सूत्राङ्कनिर्देशिका)

- अन्यत्र २।११७, ५।२६६
 अमरकोषः २।१७५, ४।११४, ५।३४, ४३६, ६।१४३
 ७।१०३
 अष्टकवृत्तिः ३।४७
 आख्यानचन्द्रिका ३।३५, ४।२०४
 आपिशलसूत्रम् ४।३५
 कलापम् १।३७, २।११४, ५।२१, ४३२, ७।५६२
 कविकल्पद्रुमः ३।१३५, ५।३४
 कातन्त्रारिशिष्टम् ३।५८६, ६।२६६, २६६, ३२३
 कातन्त्रम् २।६३, ३।५१७, ४।२०४
 कातन्त्रविस्तरः ६।२५१, ७।८६
 कादम्बरी ४।१०५
 कामन्दकीय नीतिसारः ७।५५
 काशिका १।७५, २।१३, १।१४, १।८१, १।८३, १।८२,
 २०६, ३।१५३, १।७२, २०१, २३८, २८६
 ३३४, ४२७, ४३६, ५।१७, ५।५८, ४।२५१,
 ५।८, १।६७, ४०७, ६।१४३, २२६, ७।३३६,
 ५३२, १०६४
 किराताज्जुनीयम् ३।४२२, ४।१५०, २।१६, ७।८६
 कुमारसम्भवम् ४।२६-३०, ५०, ५।२२०, ७।८६,

८२७, १०६६
 केशववृत्तिः ३।३१५
 चान्द्रम् ३।४५७, ४।३५, ७।४५२
 दुर्घटवृत्तिः ७।२३०
 धातुपाठः ३।४२४
 धातुप्रदीपः ३।६८
 नीतिशास्त्रम् ७।१०३७
 नैषधीयचरितम् ३।१६०
 पदचन्द्रिका २।६३, ५।०७५, ६।२६६
 पद्मपुराणम् १।३८
 पाणिनीयम् २।६०, ७५, २११, ५।२६१, ७।२४५,
 ३५२, ५४६, ५६२
 पाणिनीय शिक्षा ७।१०६
 (धातु) पारायणम् ३।११-११६
 प्रक्रियाकौमुदी (तस्याम् = प्रक्रिया-कौमुद्याम्) १।७५
 १२४, १।४८, ७०, ७५, ६३, १०६, ११४,
 ११७, १२६, १३१, १३४, १४३, १८३, २११
 २८४, ३४२, ३६५, ४४०, ५१७, ५३७, ५६४
 (प्रक्रिया) प्रसादम् ३।१६५, ३७५, ५१७, ५।३४, १६५
 भट्टिकाव्यम् २।७५, १६६, ३।७८, ५१४, ४।२८,
 २६-३०, ३५, ३७, ६५-६८, १०१, १५०,
 २५१, ५।११४, १२६, १३४, १६०, १६७,
 २४०, २४५, २४६, ३०६, ४२१, ४२७,
 ६।८७, १७८, ७।३६८, ६४३, ८१३, ८७३-
 ८७४, ८८२, ८२३
 (श्रीमद्) भागवतम्—ग्रन्थारम्भे मङ्गलाचरणम् (४)
 ६।३६६
 भागवृत्तिः ४।१८, ३६, ५६, ६।६१, ७।३३६, ८।४७
 भाषावृत्तिः २।१४३, १५३, ३।१७२, २३८, ३४२,

३६४, ४४०, ५१७, ४।१८, ११२, ६।१४३,
 १८०, २०४, ३३१, ७।१०६४
 (महा) भाष्यम् २।४८, ७४-७५, ११३, १८३, ३।४७
 ११६, २८२, ३१०, ४०६, ४७३, ५१७, ४।७,
 ३५, १५०, ५।१२०, १६८, २६७, २७५,
 २६६, ३०६, ३२७, ७।१६६, २३३
 भाष्यवार्तिकम् ४।३५
 भ्रमः (तस्याम् = प्रक्रियाकौमुद्याम्) १।७५, २।१२६,
 १३४, १४१, १४३, २१७, ३।३४२
 मतभेदाः, मतान्तराणि १।५६, ६८, ७५, २।१७७,
 ३।८६, २३८, ३८४, ४।१०१, ५।२०, २१,
 १६५
 महानाटकम् ७।२५६
 माघकाव्यम् (शिशुपालवधम्) १।६२, ७।८६, १६५,
 ३०७, १०२८
 रसवती ३।५१७
 रामायणम् ७।२५६
 रुद्रकोषः ५।५६
 वार्तिकम् ६।२६७
 विश्वप्रकाशः ६।२६६
 विस्तरः २।५३, ७४, ७५, ६३, ४।४८, २०४,
 ६।११२, २७५
 व्योषकाव्यम् ६।२०४
 शब्दार्णवः ५।२२०
 शाकुन्तलम् ७।८६
 सारस्वतम् १।७५
 सुपद्यम् ३।५१७, ४।२८
 स्मृतिः ६।१३०, ७।७१४

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरण-धृत-ग्रन्थकृत्नामसूची

(दक्षिणपार्श्वस्थ-संख्या प्रकरण-सुत्राङ्कज्ञापिका)

अन्यः ४।३१

अन्ये १।४१, ४, ४८, ८१, ११७, १४३, १७७, ३।३
१२, १६, २०, ५४, २४४, ४।६, १०, ३७,
६८, ७१, ५।२, २७, ४४८, ४५५, ६।२३०,
३०६, ७।३६३, १०६६

अमरः २।४८, ६३, ३।५२४, ५।१६७, २१०, २२०,
२४२, ७।८८२

उज्ज्वलदत्तः २।६३

एक १।७१, २।१, ४, ५३, ५६, ६८, ७५, ८१, ८३
१२२, १३३, १५३, ३।३, १२, २२, २३,
५४, १३२, ३५६, ३७५, ४२८, ४७, ५०६
५३७, ५५८, ४।३१, ३६, ११८, ११६, १३५
२२३, ५।२१, ५३, १६०, २४४-२४५, २६०,
२६८, २६१, ३२४, ६।२०४, ७।१८, १५५,
२०६, २२१, ४५२, ५७२, ८०४, १०५१

करिचत् ३।५५१-५५२, ४।३१, ६७, ६६, ११५-११६
६।२६३, ७।१०८०

कालापाः २।११६, १३६, १८१, ३।१३५, १६५,
२३८, २६७, ३०६, ३५२, ४२२, ४।१३, १७
१५०, ५।१५४, १७१, २१५, ३३२, ७।५५६,

काश्मीरिकः ६।२६६

कृष्णपण्डितः २।४८, १४८, ३।१३५

केचित् १।४२, २।२६, ४८, ६८, ७०, ८४, ११०,
१३६, ३।३५, ११८, २३८, ३२५, ३३७,
४०६, ४५०, ५३४, ५५८, ४।३०-३१, ३४,
३७, १०१, १०३, ११५-११६, १२३, १२६,
१३४, १८३, २११, २६४, ५।५६, ६६, २४३
२४८, ४०७, ६।३३१, ७।२३८

केषाञ्चित् २।१६७, ३।७७, ५।२३, १६५, २४८

कौमाराः ५।२६१

क्रमदीश्वरः २।२६, १४७

क्षीरस्वामी २।७५, ४।११०, ५।१६७, २२०, ६।१४३
७।३५६

गालवः १।६२

चन्द्रगोमी ४।३६, ६३, १२३, १३६

चाणक्यः ७।८२८

चान्द्राः १।७१, २।११३, ३।४२६, ४२६, ४।१५०,
६।२६६

चुल्लिभट्टिः ५।२४६

छान्दसाः २।१४४, १६६, ३।२३२-३३, ३३४, ३४२,
३५२, ४६७, ५।१६, २६८, २७६, ७।३४६,
५२६

जयादित्यः ४।६, ३५, ५।१२१, १२६, ७।१६६,
७७०, ८४७, ८६८, १०७५

जुमरः २।६३, ३।४६२, ५।२०२, २१५, ३०८, ६।१०
३०, ५०, २६०, ३३७, ७।१२७

दुर्गाः (दुर्गसिंहः) ३।४७८, ५३४, ५।३८५

परे १।२

पतञ्जलिः ६।२६६

पद्मनाभः २।१४७, ७।६६

पशुपतिः ७।१५६, ४५२

पा (पाणिनीयाः) ३।५१-५२, ५८, १०६, १७३,
१८६, ४२३, ४२६, ५१२,

पाणिनिः १।३७-३८, २।१८३, ३।१७८, ४२६, ५६७
४।२८, ३७, ५।१७, ८५, ६५, १६४, १६७,
२००, २१२, २५८, २६५, ३४०, ३७६, ४४५
७।१८४, १८६

पाणिनीयाः १।७२, १०२, २।८८, १०७, १३६, १४७
३।५१, १५६, १७८, ३०५, ३३४, ५८६,
४।११६, १२२, ५।१३६, १७१, ६।४७,
७।२३०, ३१५

पुरुषोत्तमः ४।६५, ६७-६८, २१०, २१८, २३२, २५१
५।७३, १२६, २३७, ४४३, ४४८, ७।६६१

प्राचाम् १।३७ ३८, ७८

प्राचीनाः १।२-३, ४।३५, ७।१८३

प्राञ्चः २।१, ७, ३६, ८०, ३।४२, ७४, ४।१०७,
११६, ५।६८, १४६, ६।८-६, ४८, १०२, ११७

भट्टमल्लः ४।२४५, २६७

भर्तृहरिः ४।२१८, ६।८६

भर्तृहरि-विप्रः ५।२४२

भारविः ४।२८

मुरारिः ६।५२

वर्द्धमानमिश्रः २।११३, ४।३४, १५०, २४५, ७।७० वामनः ६।२१६, ७।२१३ वृद्धाः ३।८६, ४।६४
वापदेवः ३।१३५, ४२७ व्याडिः १।६२ शाकटायनः ६।२६६ श्रीपतिः १।६२ सर्व्वे ३।१२

कारिका-सूची

(दक्षिणपार्श्वस्थित-संख्या यथाक्रमेण प्रकरण-सूत्रसंख्या-निर्द्देशिका)

अग्लोपित्वं	३।४२६	अवी-तन्त्री	२।७३	कर्त्ता स्वतन्त्र	४।१३
अङ्का देया	२।८	अशोणितः	७।१३०	कार्यपूर्व्वे पञ्चमी	२८
अतिदेशो	१।४२	आकृतिग्रहणा जाति	७।२३३	कार्यिणं हन्यते	१।५०
अतो बालक	२।८	इति तुभय	४।२८	कार्यं तु प्रथमा	२।८
अत्यन्तसुकर्त्तवेन	४।२०	ईषदर्थ	१।७०	कालाध्वभाव	४।३१
अत्र क्रमेण	२।८	उद्धूतौ यत्र	३।१०३	क्रमाच्च पञ्चमी	२।८
अथ नी वहि	४।२८	उप आडिति	३।४२	क्रियमाणन्तु	४।२०
अदि हदि	३।१३५	उपसर्गविधिः	३।४२	क्रुधि राधि	३।१३५
अनिडेकः	३।१३५	ऊ-ऋरामान्त	३।१३५	क्वचित् पर	२।८
अनित्यं सूत्र	१।४४	एकमात्रो	१।७	क्वचित् प्रवृत्तिः	२।४६
अनुरेषु सहार्थ	४।१०७	एतमातं	१।७०	क्वचिद् विभाषा	२।४६
अन्तःस्थं व	३।१०३	एवं सूत्रं	२।८	क्षिपि सृपि	३।१३५
अन्यथा प्रक्रिया	२।८	कण्डवादि यक्	३।१५०	क्षुद्रजन्तुरनस्थिः	६।१३०
गङ्गास्नातो	२।७	प्राण्यङ्गं मूर्तिमत्	४।२२७	वैदिकेषु तु	६८६
गुपो बधश्च	३।२१७	प्रिया वान्ता	६।२४६	व्यधि शुध्यति	३।१३५
घमिश्च वसतिः	३।१३५	बहूनाममतं	१।७५	व्यधि सुदति	३।४२
चतुर्विधं	२।४६	बाहुल्यादिह	६।१०४	शदि सदि	३।१३५
ज्ञातो धातुरकर्मकः	३।३३	ब्रुवि शासि	४।२८	शब्दानान्तु	२७३
तदुच्यते पञ्चविधं	६।३५७	भजि भज्जि	३।१३५	शिषि शिलषी	३।१३५
तद्वत् प्राणिप्रति	४।२२७	भुजि सज्जि	३।१३५	शीलितो रक्षितोः	५७२
तुदि नुदि	३।१३५	भूमनिन्दा प्रशंसासु	७।६३०	सज्ञा च	१।४२
लास स्यन्द	३।३३	भेद्यभेदकयोः	४।६	संसर्गेऽस्तिविवक्षायां	७।६३०
त्रिमात्रस्तु	१।७	मुख्यो लाक्षणिकः	५।१५	सकृदाख्यात	७।२३३
त्रिविक्रमो	४।६	यच्चैकाज्	३।४६८	स चेत् कर्मणि	४२८
दिशि ह्शि	३।१३५	यजो वपो	३।२६१	सत्ता वृद्ध	३।३३
दिहिदुहि	३।१३५	यत्र त्वेते न	३।४२६	सन् वयन्	३।१५०
दुहि याचि	४।२८	यत्राख्यातादि	४।२८	सन्देहे रुक्	३२१७
द्विष्टो यद्यपि	४।६	यद्गोचर्म	६।१३०	सन्धिरेक	१।४४
द्वौ चापरौ	६।३५७	यभयो मगरो	३।१३५	समस्तस्या	६।१०४
धातोस्तदर्था	६।३५७	युजि भृज्जि	३।१३५	सरामजः	३।१६१
नरामजा	३।१६१	रुष्टश्च रुषित	५।७२	सर्व्वाङ्गासम्भवो	२।८
नारोहति परः	२।७	रूढो वा योग	५।१५	सर्व्वेषाममत	१।७५

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य कारिकासूची

५३

निमित्तिञ्च	११५०	लक्षणवीप्से	४११०७	सर्वैरकर्मकै	४१३१
परिपूर्व्वं वृद्धं	३१५६१	लज्जा जीवन	३१३३	सह साधय	३१३५
पान्थगरोष्वथ	३१३५	लिशि स्पृशि	३१३५	साधनानुक्रमार्थञ्च	२१८
पितृ मातृ	३१५८	लेष्टृ त्वष्टृ	२१५८	सिचिर्मुचि	३१३५
पिषि कृषि	३१३५	लौकिक व्यवहारेषु	६१८६	सुभगा दुर्भगा	६१२४६
पृथुं मृदुं	३१५६१	वद्वसौ	३१२६१	सूत्रेनैवार्थ	२१८
प्रक्रान्तः शयितो	५१७२	वर्णागमो	६१३५७	सूत्रे श्तिपा	३१४६८
प्रतीहि दान्तान्	३१३५	विधेविधानं	२१४६	स्थान्यादेश	४१६
प्र पराऽप	३१४२	विना योगे	२१८	स्वजिह्वद्वरणे	३१३५
प्रयोजकाधीन	४१३३	विष्णोर्भक्तो हरेः पुत्रः		स्वपि वपि	३१३५
प्राङ् निमित्तं तथा वार्यी		श्रीकृष्णस्य पदाम्बुजम्	४१६	स्वस्वामी जन्य	४१६
कार्यं परनिमित्तकम्	२१८	वृद्धं वृत्रभ्यां	३१३५	हनि मन्यति	३१३५

—*—

उद्धृतपद्य-पद्यांश सूची

(दक्षिणपार्श्वस्थितसंख्या प्रकरण सूत्रसंख्याज्ञापिका)

अजिग्रहत्तं	४१३०	गोष्ठ गोस्थानकं	५१२२०	पुत्र मित्रवदा	७१८२८
अतैलपूराः	७१०६६	चन्द्रलेखेव	७१८७४	प्रदीयतां	७१२५६
अन्धायास्तं	४१३५	चालनी तितउः	२१४८	प्राध्वङ्कृत्य	५१८७
अपश्यती	५११७	चिचेत राम	३१७६	प्रामाद्यद्गुणिनां	५११५०
अयाचिनारं न	४१३०	जवाद मारीच	४१२८	प्लवङ्गनख	७११७३
अश्मानं हृषदं	४१३५	जलप्रायमनूप	६१३५४	फलेग्रहीन्	५१२४२
अहो भाग्यमहो	६१३६६	तपसाप्त	६१२०४	बद्धकोपविकृता	७१८६
आः कष्टं	२१७५	तस्मिन्नन्तर्धरो	५१४२७	बभौ बहुच्छत्र	७१८६
आकालिकीं	७१८२७	तां प्रातिकूलिकीं	७१६४३	बुभुक्षित न	४१११०
आतिष्ठद्गु	६११७८	तृणाय दत्वा	४१३५	भग्नवाल	७११६५
आवेदयन्तः	५११३४	तृणाय मन्ये	४१३५	भर्तु विप्रकृतापि	७१८६
इयेष सा	७१८६	तेनादुद्युष्यद्रामं	४११०१	भवन्ति यत्रौ	७१०६६
ईक्षितव्यं पर	४१६५	त्याजितः फल	४३०	भोगः शरीरम्	७१७१४
उद्धासीनि	५१३०६	त्वामस्मि वच्मि	४११३	भ्रकुंसश्च	६१२४२
उपत्यका	७१८८२	दगीगृहोत्सङ्ग	७१०६६	भ्रमरैर्भीतिभीतेन	६१३६६
उपय्युपरि बुद्धीनां	४१११०	दरीमुखोत्थेन	५१२२०	मधवद्वज्रलज्जा	२१११६
उपलभ्यामपश्यन्तः	७१३८६	द्विषद्भ्यश्चाशपं	४१६६	मातृस्यो न्यायः	७१५५
उपायंसते	४१२५१	धातुश्चतुर्मुख	६१५२	मा भैः शशाङ्क	३१३४६
एकैकशो	६१३६३	धातुश्चतुर्मुखी	६१५२	मार्गणैरथ तव	४१२१६
कथमुचितं रचयामि	२१२०६	धायैरामोद	४१३७	मृगस्थानुपदी	७१६२३
करीन्द्रदपं	५१३४५	धृष्टता रहसि	७१८६	यति ते नाग	२१४१

कर्णजाह	७।८७३	न च स्निह्यति	४।१५०	यदङ्गनारूप	७।८६
कामिनां मण्डन श्री	७।८६	नन्दनं वनम्	५।१६७	लघुर्वहुतृणं	७।१०२८
कारं मृतं	५।१३४	नन्दनानि	५।१६७	ल्युः कर्त्तरि	५।१६७
कार्णवेष्टनिकं	७।८१३	नराक्षीणपणा	५।४२१	ल्युः कर्त्तरीमनिज्	५।२२०
क्षीरोऽवतमसं	७।१०३	नित्यं प्रगल्भ	६।५२	वचनेऽस्थित	५।२१०
क्षीवतामुपगता	७।८६	निरीक्ष्य मेने	७।८६	वनेचराणां	७।१०६६
गतेऽर्द्ध	५।१७	न्यक्षं कार्त्तस्य	४।११४	वपुरन्वलिप्त	७।८६
गज्जत्यसौ	५।१७	पथः संख्या	६।१४३	वहति स्वेच्छया	२।११६
गिरमत्युदारां	४।२८	परिरेभिरे	७।३०७	वाणीं भजामि	६।५२
गुणज्ञो ब्राह्मणो	५।३८१	पान्तावल्प	५।२४५	वारोण रक्षः	५।३५
गृण द्रुचोऽणु	४।६८	पितुर्वाक्य	५।२४०	विभावगी	५।१७
गोपायकेद्धना	७।१०३७	पुंस्यर्द्धो	६।३६	विषवृक्षोऽपि	४।५०
वृणते हि	३।४२२	सहमा विदधीत	३।४२२	स्वो ज्ञातावात्मनि	२।१७५
वृषस्यन्ती तु	३।५२४	साङ्केत्यं पारिहास्यं	१ (४)	परिमप्यमंस्त	४।३५
वैकुण्ठनाम	१ (४)	सा बाला	४।५	हरेर्यदक्रामि	३।१६०
व्यध्वो दुरध्वो	६।१४३	सा मुमोच	७।८६	हविर्जक्षिति	२।११६
व्याकोशकोकनदतां	७।८६	सा लक्ष्मीरूप	४।१५०		
शिष्यतां निधुवनो	७।८६	सा स्त्री	४।५	हस्तरोधं	५।१२६
शृण्वद्भ्यः प्रति	४।६७	सीमेव पद्मासन	६।८७	हा देवि	४।११०
स एवमुक्त्वा	२।११६	सुग्रीवो नाम	५।१६०	हा पितः	२।७५
संक्रुध्यसि मृषा	४।६५	सैन्याः श्रिया	७।८६		
सत्यवद्यो	५।१७७	सैष कर्णो	१।१४१	हा रमणीनां	४।११०
स देव	६।११	सैष दाशरथी	१।१४१	हिम ऋतावपि	१।६२
समुद्रोपत्यका	७।८८२	स्त्री विधवा	५।५६	हृदयङ्गम	५।२४६
समूलघातं	५।११४	स्यादबन्ध्यः	५।२४२	हे क्षितिमातृक	७।१७१

नामसूची

(दक्षिणपार्श्वस्थसंख्या विष्णुपदप्रकरणधृतसूत्राङ्कज्ञापिका)

[स = सर्वेश्वरान्तः, वि = विष्णुजनान्तः, पु = पुरुषोक्तमलिङ्गः, ल = लक्ष्मीलिङ्गः, ब्र = ब्रह्मलिङ्गः]

अ	स पु २६	अप्	वि ल १५०	आदिवस्	वि पु १४२
अक्का	स ल ६७	अप्पा	स ल ६७	आशिष्	वि पु १३६-१३७
अक्षि	स ब्र ८७	अब्जा	स पु २६		वि ल १५२
अग्नि	स पु ३६	अभ्र	वि पु १३१	उक्थशास्	वि पु १४४
अग्नेगा	स पु २६	अम्बा	स ल ६६-६७	उम्	वि पु १०७
अघद्विष्	वि ल १५२	अम्बाडा	स ल ६७	उदक्स्पृश	वि पु १३३
अघवत् (तु)	वि पु ११२	अम्बाला	स ल ६७	उदच्	वि पु १०१
अच्	वि पु १०७	अम्बिका	स ल ६७	उदधिक्रा	स पु २६
अतिगोपी	स ल ७३	अम्बु	स ब्र ६३	उन्नी	स पु ५१

श्रीश्रीहरिनामासृत-व्याकरणस्य-नामसूची

५५

अतिदधि	स ब्र ६०	अय्यमन्	वि पु २२१-१२२	उपानह्	वि पु १५२
अतिपुस्	वि ब्र १५६	अव्वन्	वि पु १२७-१२८	उरुश्रवस्	वि पु १३६
अतिलक्ष्मी	स ल ७५	अल्ला	स ल ६७	उशनस्	वि पु १४३-१४४
अतिस्त्री	स ल ७४	अवी	स ल ७३	उणिष्	वि पु १०८
अत्ता	स ल ६७	अव्वा	स ल ६७	उणिह्	वि ल १५०
अनडुह्	वि पु १४८	अशानि	स ल ७०	ऊर्ज्	वि पु ११०
अनन्नी	स पु ५३	अष्टन्	वि पु १२४-१२६		वि ब्र १५३
अनव्वन्	वि पु १२८	अस्थि	स ब्र १८७	ऋच्	वि ल १५०
अनेहस्	वि पु १४४	अहन्	वि ब्र १५५-१५६	ऋत्विज्	वि पु १०८
ऋभुक्षिन्	वि पु ११८-१२०	गिरि	स पु ३६	ददत्	वि पु ११२
कंसजित्	वि पु ११०	गिर्	वि ल १५०	दधि	स ब्र ८५-६०
कसद्रुह्	वि पु १४८	गो	स पु ६१-६२, स ल ७५	दधृष्	वि पु १०८, १३३
कसद्विष्	वि पु १३३	गोकुल	स ब्र ७६-८२	दन्त	स पु २८
कसहन्	वि पु १२१-१२२	गोदुह्	वि पु १४८	दशन	वि पु १२४
कंसहिस्	वि पु १४०, वि ब्र १५३	गोपी	स ल ८३, ७५	दामलिह्	वि पु १४८
ककुभ्	वि ल १५०	गोरक्ष्	वि पु १३८-१३९	दिदिक्ष्	वि पु १३६
कति	स पु ४०-४१	गोविन्द	स पु २६	दिदृक्ष्	वि पु १३६
करभू	स पु ५३	गोविन्दभ्	वि पु ११४	दिव्	वि ल १५१-१५२
करिष्यत्	वि ब्र १५३	ग्लौ	स पु ६२	दिश्	वि पु १०८, १३८
कर्त्तृ	स पु ५७-५८, स ब्र ६३	चतुर्	वि पु १३८-१३९	वि ल	वि ल १५०, १५२
कवि	स पु ३६	१५० वि ब्र १५६	स ल ७१-७२	दीर्घाहन्	वि ब्र १५६
कारभू	स पु ५३	चर्मन्	वि ब्र १५४	दहितृ	स पु ५८
काराभू	स पु ५३	जक्षत्	वि पु ११२	दन्भू	स पु ५३
कुल	स ब्र ८२	जक्षिवस्	वि पु १४२	दृश्	वि पु १०८, १३८
कृति	स ल ७०	जगत्	वि ब्र १५३		वि ल १५०, १५२
कृष्ण	स पु ७-२५	जगन्वस्	वि पु १४२	दृष्टकंसहन्	वि ब्र १५६
कृष्णगुप्	वि पु १२८	जगिषवस्	वि पु १४२	दृष्टपूषन्	वि ब्र १५६
कृष्णपटप्रू	स पु ५१	जभ्	वि पु ११४	दृष्टशार्ङ्गिन्	वि ब्र १५६
कृष्णप्राश्	वि पु १३३	जरा	स ल ६८	दृष्टार्यमन्	वि ब्र १५६
कृष्णप्री	स पु ५१	जलमुच्	वि पु १०६	दैत्यप्रमी	स पु ४८
कृष्णबुध्	वि पु ११४	जामातृ	स पु ५७	दैत्यवृश्च	वि पु १०२-१०६
कृष्णभू	स पु ५२	तति	स पु ४१	दैत्यव्	वि पु १३१-१३३
कृष्णमुह्	वि पु १४८	तत्त्वबुध्	वि पु ११४	दोष्	वि पु ११३, १३६-१४०
कृष्णयुज्	वि पु १०६	तन्त्री	स ल ७३	द्यां	स ल ७५
कृष्णरं	स पु ६० स ब्र ६३	तरी	स ल ७३	धनुस्	वि ब्र १५६
कृष्णवाह्	वि पु १४५-१४७	तादृश्	वि पु १०८	धी	स ल ७३, ७५
कृष्णविद्	वि पु ११२	तितउ	स पु ४८	धृति	स ल ७०
कृष्णश्री	स पु ४६	तिर्य्यच्	वि पु १००-१०१	धेनु	स ल ७०
कृष्णमुखी	स पु ५३		वि ब्र १५३	नदी	स ल ७३

कृष्णस्निह्	वि पु १४८ तुदतृ	वि ब्र १५३ नवन्	वि पु १२४
कृष्णस्पृश्	वि पु १३३ तुरासाह्	वि पु १४६ नारायण	स पु २६
कृष्णाङ्घ्रि, लिह्	वि पु १४८ त्रि स पु ३६-४० स ल ७१-७२	नासिका	स ल ६६
क्रुन्च्	वि पु १०१ त्वच्	वि ल १५० निर्जर	स ब्र ८३-८४
क्रोष्टु	स पु ५६ त्वष्टृ	स पु ५८ निर्जरा	स ल ६८
खलपू	स पु ५३ दण्डिन्	वि पु ११२ निशा	स ल ६६
निश्	वि पु ११३ प्रियक्रोष्टु	स ब्र ६३ मास	वि पु ११३
नी	स पु ५१ प्रियवतुर्	वि पु १३१ विल १५० मुरमथ्	वि पु ११२
नृ	स पु ५७ प्रियतृ	स ल ७० विल १५० मूल	स ब्र ८२
नौ	स ल ७५ प्रियत्रि	स पु ४० स ब्र ६३ यज्वन्	वि पु ११५
पञ्चन्	वि पु १२२-१२४ प्रियपञ्चन्	वि पु १२६ यति	स पु ४१
पटु	स ल ७० प्रियराधा	स ल ६६ यदुपति	स पु ४८
पति	स पु ४८ प्रियविष्णु	स ल ७० यदुराज्	वि पु १०७
पथिन्	वि पु ११८-१२० प्रियषष्	वि पु १३५ यातृ	स ल ५८
पद्	वि पु ११३ प्रियहरि	स ल ७० युज्	वि पु १०६
पद्माक्ष	स ब्र ६० प्रियाष्टन्	वि पु १२६ युवन्	वि पु ११५-११६
पयस्	वि ब्र १५६ फल	स ब्र ८२ यूप स पु २८	वि पु ११३-११५
परमत्रि	स पु ४० बहुप्रेयमी	स ल ७५ रमा	स ल ६६
परमपञ्चन्	वि पु १२६ बहुसखि	स पु ४८ रवि	स पु ३६
परमपति	स पु ४१ बहूर्ज्ज्	वि ब्र १५३ राजन्	वि पु ११५
परमाष्टन्	वि पु १२६ बुद्धि	स ल ७० राधा	स ल ६३-६६
पाद	स पु २८ ब्रह्मन्	वि ब्र १५३-१५४ राम	स पु २५
पितृ	स पु ५४-५७ भक्ति	स ल ६६-७० रामा	स ल ६६
पित्रच्	वि पु १०० भगवन् (तु)	वि पु १११-११२ रुचि	स ल ७०
पिपठिष्	वि पु १३६-१३७ भवतृ	वि पु ११२ वि ब्र १५३ रे	स पु ६० स ल ७५
पिस्पृक्ष्	वि पु १३६ भवत् (तु)	वि पु ११२ लक्ष्मी	स ल ७३
पीनवस्	वि पु १४० भातृ	वि ब्र १५३ लूनी	स पु ५३
पीलु	स ब्र ६२ भू	स पु ४६ लेष्टृ	स पु ५८
पुंस्	वि पु १४३ भूति	स ल ७० बधू	स ल ७५
पुण्ड्र्, भ्	वि पु ११४ भृज्ज्	वि पु १०७ वनमालिन्	वि पु १२१
पुनर्भू	स पु ५३ स ल ७५ भ्रातृ	स पु ५८ वर्मन्	वि ब्र १५४
पुरुदंशस्	वि पु १४४ भ्रू	स ल ७५ वर्षाभू	स पु ५३
पुरोडाश्	वि पु १४४ मघवन्	वि पु ११५-११६	
पुर	वि ल १५५ मति	स ल ७० वाच्	वि ल १५०
पूषन्	वि पु १२१-१२२ मथिन्	वि पु ११८-१२० वातप्रमी	स पु ४८
प्रतिदिवन्	वि पु ११६-११७ मधु	स ब्र ६० वान्श	वि पु १३३
प्रत्यच्	वि पु ६४-१०० वि ब्र १५३ महत् (तु)	वि पु ११० वि ब्र १५३ वामन	स पु २६
प्रत्यञ्च्	वि ब्र १५३ मही	ल ल ७३ वारि	स ब्र ६०

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य-नामसूची

५७

प्रधी	स पु ५१ स ल ७५	मातृ	स ल ५८ ७५	वार	वि ब्र १५६
प्रशाम्	वि पु १२६	माला	स ल ६६	वासुदेव	स पु २६
प्राच्	वि पु १०० वि ब्र १५३	माली	स पु ५१	विद्वस् (सु)	वि पु १४१-१४३
प्राश्च	वि ब्र १५३	मास	स पु २८	विप्रुष्	वि ल १५२
विभक्ष्	वि पु १३६	श्री	स ल ७३-७५	मुपिस्	वि पु १३६
विवक्ष्	वि पु १३६	श्वन्	वि पु ११५-११६	सुभ्रू	स ल ७५
विश्वचिकीर्ष	वि पु १३६-१३७	श्वेतव ह्	वि पु १४४	सुसखि	स पु ४८
विश्वनी	स पु ५०-५१	षस्	वि पु १३३-१३५	सोमपा	स पु २६
	स ब्र ६१-६२	सक्थि	स ब्र ८७	स्त्री	स ल ७४
विश्वपा	स पु २८-२६	सखि	स पु ४२-४८	स्पृश्	वि पु १०८
	स ल ६८	सखी	स ल ७३	स्रज्	वि पु १०८ वि ल १५०
विश्वसृज्	वि पु ११०	सजुष्	वि पु १३६ १३७	स्वनडुह्	वि ब्र १५६
विष्टरश्रवस्	वि पु १३६	समघृ	वि पु १२४	स्वप्	वि ब्र १५६
विष्णु	स पु ४८	समिध्	वि ल १५०	स्वसृ	स ल ५८ ७५
वेधस्	वि पु १३६	सानु	स ब्र ६३	हरि	स पु ३०-३६
वेकुण्ठ	स पु २६	सीनन्	वि ल १५०	हलिन्	वि पु १२१
वेकुण्ठध्वस्	वि पु १४१	सुतुस्	वि पु १३६	हल्	वि पु १३१
वेकुण्ठश्रत्	वि पु १३१	सुद्यो	स ब्र ६३	हविस्	वि ब्र १५६
शर्मन्	वि ब्र १५४	सुधी	स पु ५२	हाहा	स पु २६
शार्ङ्गिन्	वि पु १२१	सुपथित्	वि ब्र १५६	हूहू	स पु ४८
शीर्ष	स ब्र ८३	सुपथी	स ल ७३	हृदय	स ब्र ८३
श्रद्धा	स ल ६६	सुपाद्	वि पु ११२-११३	ही	स ल ७३

कृष्णनामानि

[दक्षिणपार्श्वस्थसंख्या कृष्णनामप्रवरणधृत सूत्रसंख्याज्ञापिका]

अतितद	१८३	अमुक	१६२	तद्	१६६, १८३, २१५
अतित्वत्	१६५-१६७	अस्मद्	१६६, १६४-१६५, १६८-२१०	तृतीय	१८२
अतिमत्	१६५-१६७	इतर	१६६, १८०	त्व	१६६, १७७
अतियुवत्	१६५-१६७	इदकम्	१८८	त्वत्	१६६, १७७, २१४
अनियुष्मत्	१६५-१६७	इदम्	१६६, १८४-१८६, २१४-२१५	दक्षिण	१७३
अतिसर्व्व	१७२	उत्तर	१७३	दृष्टसर्व्व	१७२
अत्यस्मत्	१६५-१६७	उभ	१६६, १७७	द्वय	१८१
अत्यावत्	१६५-१६७	उभय	१६६, १८१	द्वि	१६६, १६३, २१४, २१६
अत्युत्तर	१७३	एक	१६६, १६२, २१४	द्वितय	१८१
अदस्	१६६ १६०-१६२ २१४ २१६	एतत्	१६६ १८३ २१४ २१६	द्वितीय	१८२
अन्तर	१६६ १७६	किम्	१६६ २१२ २१४ २१६	नेम	१६६ १७७ १८१
अन्यत्	२१५	चरम	१८१	पूर्व्व	१६६ १७३ १७७-१८०

पूर्वापर	१८० यद्	१६६ १८३ सञ्च	१६६-१७२
प्रत्वद्	१६५-१६७ युष्मद्	१६६ १६४-१६५ १६८ २१० सञ्च	२१३
प्रथन	१८१ विश्व	१६६ १७७ २१३ सिम	१६६ १७७
भवतु	१६६ २११ २१४ २१६ सम	१७४ स्व	१६६ १८५

धातुसूची

[स्वा—भ्वादिः, अ—अदादिः, ह्वा—ह्वादिः, दि—दिवादिः, स्वा—स्वादिः, तु—तुदादिः, रु—रुधादिः, त—तनादिः, क्रघा—क्रघादिः, चु—चुरादिः, सक—सकर्मकः, अक्—अकर्मकः, पर—परस्मैपदी, आत्म—आत्मनेपदी, उभय—उभयपदी]

धातव	धात्वर्थाः	विवरणानि	अच्युतरूपाणि	आख्यातप्रकरणधृतसूत्राङ्का
अङ्क	लक्षणे (पदे च)	चु सक पर	अङ्कयति	४२७
अज	गतौ क्षेपणे च	भ्वा सेट् सक पर	अजति	१३४-१४३
अट	गतौ	भ्वा सेट् सक पर	अटति	१०६-१११
अद	भक्षणे	अ अनिट् सक पर	अति	२७७-२८१
अन	प्राणने	अ सेट् अक पर	अनिति	३१५
अनचु	गतिपूजनयोः	भ्वा सेट् सक पर	अञ्चति	१२६
अनजु	अक्षणादिषु	रु वेट् सक पर	अनक्ति	३६८
अय	गतौ	भ्वा सेट् सक आत्म	अयते, परा-अय् = पलायते, प्र-अय्—प्लायते, परि-अय् —पत्ययते	२३४-२३५
अर्थ	याच्नायाम्	चु सक आत्म	अर्थयते	४२७
अशूङ्	व्याप्तौ	स्वा वेट् मक आत्म	अशनुते	३८०
अश्	भोजने	क्रघा सेट् सक पर	अश्नाति	४१७
असु	क्षेपणे	दि सेट् सक पर	अस्यति	३७१
अस्	भुवि, सत्तायामित्यर्थः	अ सेट् अक पर	अस्ति	३०३-३०६
आङ् शासू	इच्छायाम्	अ सेट् सक आत्म	आशास्ते	३२७
आच्छि	आयामे	भ्वा सेट् अक पर	आच्छति	१३०
आस	उपवेशने	अ सेट् अक आत्म	आस्ते	३३३
इक्	स्मरणे	अ अनिट् सक पर	अधि—अध्येति	२६६-२६७
इङ्	अध्यने	अ अनिट् सक आत्म	अधि—अधीते	३३७
इण्	गतौ	अ अनिट् सक पर	एति	२६४-२६५
इदि	परमेश्वर्ये	भ्वा सेट् अक पर	इन्दति	२१८-१२५
(अ) इन्धी	दीप्तौ	रु सेट् अक आत्म	इन्धे	३६६
इषु	इच्छायाम्	तु सेट् सक पर	इच्छति	३८६
ईड	स्तुतौ	अ सेट् सक आत्म	ईदुते	३३३
ईश	ऐश्वर्ये	अ सेट् सक आत्म	ईष्टे	३३३

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य धातुसूच

५८

धातवः	धात्वर्थाः	विवरणाणि	अच्युतरूपाणि	आख्यातप्रकवणधृतसूत्राङ्का
उख	गनी	भ्वा सेट् सक पर	ओखति	१२६-१२८
उष	दाहे	भ्वा सेट् सक पर	ओषति	१७६
ऊणुं	आच्छादने	अ सेट् सक उभय	ऊणोति ऊणोति ऊणुते	३३८-३४०
ऊह	वितर्क	भ्वा सेट् सक आत्म	ऊहते	२५२
ऋ	गती प्रापणे च	भ्वा अनिट् सक पर	ऋच्छति	१६०, २००-२०१
ऋ	गती	ह्वा अनिट् सक पर	इर्यति	३५०
ऋच्छ	गत्यादिषु	तु सेट् अक (सक) पर	ऋच्छति	३८४
ऋत	घृणायाम्	भ्वा सौत्रधातुः सक पर	ऋतीयते	२२१
एजृ	कम्पने	भ्वा सेट् अक पर	एजति	२२१
एध	वृद्धौ	भ्वा सेट् अक आत्म	एधते	२२२
कथ	वाक्यप्रबन्धे	चु सक उभय	कथयति, कथयते	४२६
कपि	चलने	भ्वा सेट् अक आत्म	कम्पते	६४
कमु	कान्तौ, कान्तिरिच्छा	भ्वा सेट् सक आत्म	कामयते	२२४-२३३
काशृ	दीप्तौ	भ्वा सेट् अक आत्म	काशते	२३८
कासृ	काशरोगशब्दे	भ्वा सेट् अक आत्म	कासते	२३८
कित्	(शब्दकुत्सायाम्)			
कुट	निवासे, रोगाप-	भ्वा सेट् सक पर	चिकित्सति	२१७-२२०
कुथि	नयने च			
कुष	कौटिल्ये	तु सेट् अक पर	कुटति	३६०-३६१
	हिंसा संक्लेशयोः	भ्वा सेट् पर	कुन्थस्ति	६३-६४
	निष्कर्षे, निष्कर्षः	क्रया सेट् अक पर	कुष्णाति	४१८
	निष्काशनम्			
(डु) कृञ्	करणे	त अनिट् सक उभय	करोति कुरुते	४०६-४११
कृती	छेदने	तु सेट् सक पर	कृन्तति	३८४
कृपू	सामर्थ्ये	भ्वा वेट् अक आत्म	कल्पते	२४६-२५०
कृवि	हिंसायाम्	भ्वा सेट् सक पर	कृण्वति	१७८
कृवि	जिघांसायाम्	भ्वा सेट् सक पर	कृणाति	३७६
कृष	विलेखने, आकर्षणे च	भ्वा अनिट् सक पर	कर्षति	१७०-१७४
कृ	विक्षेपे	तु सेट् सक पर	किरति	३८४-३८७
कृत्	संशब्दने	चु अक उभय	कीर्तयति, कीर्तयते	४२५-४२६
क्रमु	पादविक्षेपे	भ्वा अक पर	क्रामति	१५८-१६०
क्रमु	पादविक्षेपे	दि सेट् सक पर	क्राम्यति	३६६
(डु) क्रीञ्	द्रव्यविनिमये	क्रया सक उभय	क्रीणाति, क्रीणीते	४१२-४१३
क्लमु	ग्लानौ	भ्वा अक पर	क्लामति	१५६-१५७
क्लमु	ग्लानौ	दि सेट् अक पर	क्लाम्यति	३७०
क्षणु	हिंसायाम्	त सेट् सक उभय	क्षणोति, क्षणुते	४०४-४०५
क्षि	क्षये	भ्वा अनिट् अक पर	क्षयति	१४८
क्षिणु	हिंसायाम्	त सेट् सक उभय	क्षिणोति, क्षिणुते	४०४-४०५
क्षुभ	सञ्चलने	क्रया सेट् सक पर	क्षुभ्नाति	४१६

धातवः	धात्वर्थाः	विवरणानि	अच्युतरूपाणि	ग्राह्यातप्रकरणधृतसूत्राङ्का
खनु	अवदारणे	श्वा सेट् सक उभय	खनति, खनते	२५६-२५७
खव	भूति-प्रादुर्भावे	क्रया सेट् सक पर	खौनाति	४२१-४२२
ख्या	प्रकथने	अ अनिट् सक पर	ख्याति	२६८
गण	संख्याने	चु सक उभय	गणयति, गणयते	४२६
गद	व्यक्तायां वाचि	श्वा सेट् सक पर	गदति	१०६-१०८
गमलृ	गतौ	श्वा अनिट् सक पर	गच्छति	१६१, २०८-२११
गाङ्	गतौ	श्वा अनिट् सक आत्म	गाते	२३८
गुप्	रक्षणे	श्वा वेट् सक पर	गोपयति	१५०-१५३
गुप्	गोपन-कुत्सनयोः	श्वा सेट् सक आत्म	जुगुप्सते	२३६
गुफ्	ग्रन्थे	तु सेट् सक पर	गुफति	३८६
गुहृ	सवरणे	श्वा वेट् सक उभय	गुहति, गुहते	२५८-२५९
गृ	निगरणे, निगरणम् तु	सेट् सक पर	गिरति	३८८
	गलाधःकरणम्			
गे	शब्दे	श्वा अनिट् अक पर	गायति	१८४-१८५
ग्रन्थ	सन्दर्भे (संकलेशने	क्रया सेट सक पर	ग्रथ्नाति	४१७
	इति दुर्गः)			
ग्रह्	उपादाने	क्रया सेट् सक उभय	गृह्णाति, गृह्णीते	४१४-४१६
ग्लै	हर्षक्षये	श्वा अकिट् अक पर	ग्लायति	१७६-१८३
घ्रा	गन्धोपादाने	श्वा अनिट् सक पर	जिघ्रति	१६०-१६१
चकासृ	दीप्तौ	अ सेट् अक पर	चकास्ति	३२५-३२६
(आ) चक्षिङ्	व्याक्तायां वाचि	अ अनिट् सक आत्म	आचष्टे	३२६-३३२
चमु	अदने	श्वा सेट् सक पर	(आ) चमति	१५६
चिञ्	चयने	श्वा अनिट् सक उभय	चिन्नाति, चिनुते	३७७
चित्ती	संज्ञाने	श्वा सेट् अक पर क्वचिद्	चेतति	७६-८६
	संज्ञानम् चैतन्यम्	विशेषे ज्ञानेऽपि सकर्मकः।		
चुर	स्तेये	चु सेट् सक उभय	चोरयति, चोरयते	४२३-४२४
चुलुम्फ	लोपे	श्वा अक पर	चुलुम्फति	१५३
च्युतिर्	आसेचने	श्वा सेट् सक पर	च्योतति	६०
छो	छेदने	दि अनिट् सक पर	छद्यति	३६३
जक्ष	भक्ष-हसनयोः	अ सेट् पर	जक्षति	३१६-३१७
जनी	प्रादुर्भावे	दि सेट् अक आत्म	जायते	३७६
जभ (जभी)	गात्रविनामे	श्वा सेट् अक आत्म	जम्भते	२२२
	गात्रविनामः जृम्भणम्			
जागृ	निद्राक्षये	अ सेट् अक पर	जागर्ति	३१८-३२०
जि	जये	श्वा अनिट् सक पर	जयति	१६८-१६९
जृष	वयोहानौ	दि सेट् अक पर	जीर्यति	३६२
ज्या	वयोहानौ	क्रया अनिट् अक पर	जिनाति	४१७
गद	अव्यक्तशब्दे	श्वा सेट् अक पर	नदति	११५-११८
णय	गतौ	श्वा अक पर	नयति	१६४
णह	बन्धने	दि अनिट् सक उभय	नह्यति, नह्यते	३७६

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य धातुसूची

६१

धातवः	धात्वर्थाः	विवरणानि	अच्युनरूपानि	आख्यातप्रकरणधृतसूत्राद्धा
णिजिर	शौचे (पोषणे च)	ह्वा अनिट् सक उभय	नेनेक्ति नेनक्ति	३५१-३५२
णू	स्तवने	तु सेट् सक पर	नुवति	३६२
तनु	विस्तारे	त सेट् सक उभय	तनोति, तनुते	४००-४०३
तप	सन्तापे	भ्वा अनिट् सक पर	तपति	१५४-१५५
तिज	निशाने, क्षमायाश्च	भ्वा सेट् सक आत्म	तेजते, तिनिक्षते	२२२
तुद	व्यथने	तु अनिट् सक उभय	तुदति, तुदते	३८१
तृणु	अदने	त सेट् सक उभय	तर्णोति तृणोति तर्णुते तृणुते	४०५
तृणू	हिसायाम्	तु वेट् सक पर	तृहनि	१७८
तृपु	तर्पणे	क्रया सक पर	तृप्नोति	४१६
तृप्	प्रीणने	दि वेट् सक पर	तृप्यति	३६६
तृह्	हिसायाम्	रु सेट् सक पर	तृणोढि	३६६
तृ	प्लवन-तरणयोः	भ्वा सेट् सक पर	तरति	२१२-२१४
तृसी	उद्वेगे	दि सेट् अक पर	त्रस्यति	३६२
तृसर	छद्मगतौ	भ्वा सेट् सक पर	तृसरति	३८६
दन्भु	दम्भे दम्भः परवञ्चना	स्वा सेट् सक पर	दम्भोति	३७६
दन्श	दंशने	भ्वा अनिट् सक पर	दशति	२१६
दरिद्रा	दुर्गतौ	अ सेट् अक पर	दरिद्राति	३२१-३२४
दल	विदारणे	भ्वा सेट् सक पर	दलति	६६५
दह	भस्मीकरणे	भ्वा अनिट् सक पर	दहति	१७८
(डु) दाञ्	दाने	ह्वा अनिट् सक उभय	ददाति, दत्ते	३५३
दाण	दाने	भ्वा अनिट् सक पर	यच्छति	१६०-१६२
दिवु	क्रीडा विजिगीषा	दि सेट् अक	दीव्यति	
	व्यवहार द्युति	प्रायेण सक पर		
	स्तुति मोद मद			
	स्वप्न कान्ति गतिषु			
दिह	उपचये	अ अनिट् सक उभय	देग्धि, दिग्धे	३६१
दीङ्	क्षये	दि अनिट् अक आत्म	दीयते	३३७
दुह	प्रपूरणे	अ अनिट् सक उभय	दोग्धि, दुग्धे	३७५-३७५
दृप	हर्षविमोचनयोः	दि वेट् पर	दृप्यति	३३७
दृशिर्, (दृश)	प्रेक्षणो	भ्वा अनिट् सक पर	पश्यति	३६६
दृ	भये	भ्वा अक पर	दरति	२१६
दृ	विदारणे	क्रया सेट् सक पर	दृणाति	२१४
देङ्	पालने	भ्वा अनिट् सक आत्म	दयते	४१७
दैप्	शोधने	भ्वा अनिट् सक पर	दायति	२३६
दो	अवखण्डने	दि अनिट् सक पर	द्यति	१८५
द्युत	दीप्तौ	भ्वा सेट् अक आत्म	द्योतते	३६३
द्रा	कुत्सायाम् (गती)	अ अनिट् अक पर	नि—निद्राति (निद्रायाम्)	२४३-२५५
द्विष	अप्रीतौ	अ अनिट् सक उभय	द्वेष्टि, द्विष्टे	२६८
(डु) धाञ्	धारण-पोषणयोः	ह्वा (अनिट् सक उभय	दधाति दत्ते	३५४ ३५८
धिवि	प्रीणने	स्वा सेट् सक पर	धिणोति	३७६

धातवः	धात्वर्थाः	विवरणानि	अच्युतरूपाणि	आख्यातप्रकरणधृतसूत्राङ्का
धुञ्	कम्पने	स्वा अनिट् सक उभय	धुनोति, धुनुते	३७७
धूप	सन्तापे	भ्वा सेट् सक पर	धूपायति	१५३
धेट्	पाने	भ्वा अनिट् सक पर	धयति	१८६-१८६
धमा	शब्दाग्निसंयोगयोः	भ्वा अनिट् पर	धमति	१६०-१६१
नश (णश)	अदर्शने	दि वेट् अक पर	नश्यति	३६७-३६६
नृती	गात्रविक्षेपे दि	सेट् अक पर	नृत्यति	३६२
पण	व्यवहारे स्तुतौ च	भ्वा सेट् सक आत्म	पणते	२२३
पतलृ	गतौ	भ्वा सेट् अक पर	पतति	२५३
पद	गनौ	दि अनिट् सक आत्म	पद्यते	३७६
पन	व्यवहारे स्तुतौ च	भ्वा सेट् सक पर	पनायति	२२३
पा	पाने	भ्वा अनिट् सक पर	पिवति	१६०-१६१
पुष	पुष्टौ	दि अनिट् सक पर	पुष्यति	३६३
पूञ्	पवने	क्रया सेट् सक उभय	पुनाति, पुनीते	४१४
पृ	पालन-पूरणयोः	ह्वा सेट् सक पर	पिपत्ति	३४७-३४८
(आं)प्यायी	वृद्धौ	भ्वा सेट् अक आत्म	प्यायते	२३६-२३८
प्रच्छ	जीप्सायाम्	तु अनिट् सक पर	पृच्छति	३८६
प्रीञ्	तर्पणे (कान्तौ च)	क्रया अनिट् सक उभय	प्रीणाति, प्रीणीते	४१३
प्सा	भक्षणे	अ अनिट् सक पर	प्साति	२८१
फण	गतौ	भ्वा सेट् सक पर	फणति	२५५
(जि) फला	विशरणे विशरणम्	भ्वा सेट् अक पर	फलति	१६५
विदीर्णता				
बध	बन्धने निन्दायाश्च	भ्वा सेट् सक आत्म	बधते, बीभत्सते	२४०
बुध	अवगमने	दि अनिट् सक आत्म	बुध्यते	३७६
ब्रूञ्	व्यक्तायां वाचि	अ अनिट् सक उभय	ब्रवीति, ब्रूते	३४१-३४३
भज	सेवायाम्	भ्वा अनिट् सक उभय	भजति, भजते	२६०
भनृजो	आमर्द्दने	रु अनिट् सक पर	भनक्ति	३६६
(जि) भी	भये	ह्वा अनिट् अक पर	बिभेति	३४६
भू	सत्तायाम् सत्ता	भ्वा सेट् अक पर	भवति	१, २६-४४
विद्यमानता				
भू	प्राप्तौ (अवकल्कने च, चु सक उभय)		भावयति भावयते	४२८
अवकल्कनम्—				
मिश्रीकरणम् इति स्वामी				
(डु) भृञ्	धारण-पोषणयोः	ह्वा अनिट् सक उभय	बिभर्ति	३५६
भ्रसृज	पाके	तु अनिट् सक उभय	भृज्जति, भृज्जते	३८२-३८३
(टु) भ्राजृ	दीप्तौ	भ्वा सेट् अक आत्म	भ्राजते	२५५
मन्थ	विलोडने	भ्वा सेट् सक पर	मन्थति	६१
(टु) मसृजो	शुद्धौ शुद्धिरिह स्नानम्	तु अनिट् अक पर	मज्जति	३८६
अवगाहे तु प्रयोग बाहुल्यम्				

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य धातुसूची

६३

मा	माने	अ अनिट्, अक पर	माति	२६७
मान	विचारणे पूजायाश्च भ्वा सेट्, सक आत्म		मीमांसते, मानते	२४०
(ङ) मित्र्	प्रक्षेपणे	स्वा अनिट्, सक उभय	मिनोति, मिनुते	३७७
(त्रि) मिदा	स्नेहने	दि सेट्, अक पर	मेद्यति	३७३
मिल	सङ्ग	तु सेट्, सक उभय	मिलति, मिलते	३६२
मिह	सेचने	भ्वा अनिट्, सक पर	मेहति	१७७
मीत्र्	हिमायाम्	क्रधा अनिट्, सक उभय	मीनाति मीनीते	४१३
मुच्लृ	मोक्षणे	तु अनिट्, सक उभय	मुञ्चति मुञ्चते	३८४
मुह्	वैचित्त्ये	दि वेट्, अक पर	मुह्यति	३६६
मृङ्	प्राणत्यागे	तु अनिट्, अक आत्म	म्रियते	३६२
मृजूष्	शुद्धौ	अ वेट्, सक पर	मार्ष्टि	३१०
मृश	आमर्शने	तु सेट्, सक पर	मृशति	३८६
म्ना	अभ्यासे	भ्वा अनिट्, सक पर	मनति	१६०, १६२
म्ले	गात्रविनामे	भ्वा अनिट्, अक पर	म्लायति	१८३
यज्	देवपूजा-सङ्गतिकरण दानेषु	भ्वा अनिट्, सक उभय	यजति, यजते	२६१-२६२
यमु	उपरामे	भ्वा अनिट्, अक पर	यच्छति	१६१-१६४
यमु	प्रयत्ने	दि सेट्, सक पर	यस्यति	३७२
या	प्रापणे	अ अनिट्, सक पर	याति	२६८
यु	मिश्रणामिश्रणयोः	अ सेट्, सक पर	योति	२६१-२६३
युज्	संयमने	चु सक उभय	योजयति योजयते	४२८
रद्	विलेखने	भ्वा सेट्, सक पर	रदति	११२-११४
रध्	हिंसायाम्	दि वेट्, सक पर	रध्यति	३६५-३६६
रनुज्	रागे	भ्वा अनिट्, सक उभय	रजति रजते	२६०
रभ्	राभस्ये कौतुके	ध्वा अनिट्, सक पर	रभते आङ्पूर्वास्त्वारम्भे— आरभते	२५१
रहि	इत्यर्थः गतो	भ्वा सेट्, सक पर	रंहति	१७८
रह्	त्यागे	भ्वा सेट्, सक पर	रहति	१७८
राजृ	दीप्तौ	भ्वा सेट्, अक उभय	राजति, राजते	२५५
राध	संसिद्धौ	दि अनिट्, अक पर	राध्यति	३६३
रिष	हिंसायाम्	भ्वा वेट्, सक पर	रेषति	१७४-१७५
रु	शब्दे	अ सेट्, अक पर	रौति	३४०
रुदिर्	अश्रुविमोचने	अ सेट्, अक पर	रोदिति	३१२-३१४
रुधिर	आवरणे	रु अनिट्, सक उभय	रुणद्धि, रुन्धे	३६५
रुष	हिंसायाम्	भ्वा वेट्, सक पर	रोषति	१७४-१७५
लगि	गतौ	भ्वा सेट्, अक पर	लगति	६४
लगे	सङ्ग	भ्वा सेट्, पर	लगति	१४६
(ङ) लभष्	प्राप्तौ	भ्वा अनिट्, सक आत्म	लभते	२४२
लिख	लिखने	तु सेट्, अक पर	लिखति	३६२
लिप	उपदेहे	तु अनिट्, सक उभय	लिम्पति, लिम्पते	३८४

लिह	आस्वादने	अ अनिट् सक उभय	लेढि, लीढे	३३७
लीङ्	श्लेषणे	दि अनिट् सक आत्म	लीयते	३७५
लुप्	छेदने	तु अनिट् सक उभय	लुम्पति, लुम्पते	३८४
लुभ	गार्ध्वे	दि सक पर	लुभ्यति	३७२
	गार्ध्वमाकाङ्क्षा			
लृञ्	छेदने	क्रया सेट् सक उभय	लुनाती, लुनीते	४१४
वच्	परिभाषणे	अ अनिट् सक पर	वक्ति	३११
वज्	गतौ	भ्वा सेट् सक पर	वजति	१३२
वद्	व्यक्तायां वाचि	भ्वा सेट् सक पर	वदति	२७२
(डु) वप्	वीजतन्तुसन्ताने	भ्वा अनिट् सक उभय	वपति, वपते	२६२
वश्	कान्तौ कान्तिरिच्छा	अ सेट् सक पर	वष्टि	२७२
वस	निवासे	भ्वा अनिट् सक पर	वसति	२७१-२७२
वस्	आच्छादने	अ सेट् सक आत्म	वस्ते	३३३
वह्	प्रापणे	भ्वा अनिट् सक उभय	वहति वहते	२६२
वा	गतिगन्धनयोः	अ अनिट् पर	वाति	२६८
	गतिवार्तस्यैव			
विच्छ	गतौ	तु सेट् सक पर	विच्छायति	३८६
(ओ)विजी	भयचलनयोः	तु सेट् सक आत्म	विजते	३६३-३६४
विदलृ	लाभे	तु सेट् सक उभय	विन्दति, विन्दते	३८४
विद्	ज्ञाने	अ सेट् सक पर	वेत्ति	२६६-३०२
विष्लृ	व्याप्तौ	ह्वा अनिट् सक उभय	वेवेष्टि, वेविष्टे	३५२
वृड्	संभक्तौ	क्रया सेट् सक आत्म	वृणीते	४४२
वृञ्	आवरणे	स्वा सेट् सक उभय	वृणाति, वृणुते	३७७
वृतु	वर्त्तने	भ्वा सेट् सक आत्म	वर्त्तते	२४६, २४८
वृहि	वृद्धौ	भ्वा सेट् सक पर	वर्हति, वृंहति	१७८
वेञ्	तन्तुसन्ताने	भ्वा अनिट् सक उभय	वयति, वयते	२६३-२६६
व्यच्	व्याजीकरणे	तु सेट् सक पर	विचति	३६२
व्यथ्	दुःखे भये चलने	च भ्वा सेट् सक आत्म	व्यथते	२५१
व्यध	ताडने	दि अनिट् सक पर	विध्यति	३६३
व्यञ्	संवरणे	भ्वा अनिट् सक उभय	व्ययति, व्ययते	२६७
व्रज	गतौ	भ्वा सेट् सक पर	व्रजति	१३३
(ओ)व्रस्चू	छेदने	तु वेट् सक पर	वृश्चति	३८४
शदलृ	शातने	भ्वा अनिट् पर	शीयते	२५५
शमु	उपशमे	दि सेट् सक पर	शाम्यति	३७०
शासु	अनुशिष्टौ अनुशिष्टिः	अ सेट् सक पर	शास्ति	३२७-३२८
	उपदेशो दण्डनञ्च			
शिष्लृ	विशेषणे	ह अनिट् सक पर	शिनष्टि	३६५
शीङ्	स्वप्ने	अ सेट् सक आत्म	शेते	३३५-३३६
शृ	हिसायाम्	क्रया सेट् सक पर	शृणाति	४१७

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य धातुसूची

६५

धातवः	धात्वर्थाः	विवरणानि	अच्युतरूपाणि	आख्यातप्रकरणधृतसूत्राङ्का
शो	तनूकरणे	दि अनिट् सक पर	इयति	३६३
श्चुतिर्	क्षरणे	भ्वा सेट् अक पर	श्चद्योतति	६०
		दन्त्यादिरयम्		
श्रिभ्	सेवायाम्	भ्वा सेट् सक उभय	श्रयति श्रयते	२६०
श्रु	श्रवणे	भ्वा अनिट् सक पर	श्रृणोति	२०२-२०६
श्लिष	आलिङ्गणे	दि अनिट् सक पर	श्लिष्याति	३६४
श्वस्	प्राणने	अ सेट् अक पर	श्वसिति	३१५
(टु ओ) श्वि	गति-वृद्धयोः	भ्वा सेट् पर	श्रयति	३७२-२७६
षणु	दाने	त सेट् सक उभय	सनोति, सनुते	४०३
षद्लृ	विशरण-गत्यवसादिनेषु	भ्वा अनिट् पर	सीदति	२५४
षनृज्	सङ्गे	भ्वा अनिट् अक पर	सजति	२१५
षसृज्	गतौ	भ्वा सेट् सक पर	सज्जति	१३१
षहृ	मर्षणे	भ्वा सेट् सक आत्म	सहते	२५४
षिच् (सच्)	क्षरणे	तु अनिट् सक उभय	सिञ्चति सिञ्चते	३८४
	(क्षरणमिह सेचनम्)			
षिधु	गत्याम्	भ्वा सेट् पर	सेधति	६५-६६, ६६
षिधू	शास्त्रे, माङ्गल्ये च	भ्वा वेट् पर	सेधति	६६-१०५
षिवु	तन्तुसन्ताने	दि सेट् सक पर	सीव्यति	३६१
षु	प्रसवे	भ्वा अनिट् पर	सवति	२०७
षुञ्	अभिषवे	स्वा अनिट् सक उभय	सुनोति सुनुते	३७७
षू	प्रेरणे	तु सेट् सक पर	सुवति	३८४
षूङ्	प्राणिगर्भविमोचने	अ वेट् सक आत्म	सूते	३३४
षूङ्	प्राणिप्रसवे	दि वेट् सक आत्म	सूयते	३७३
ष्टृञ् (स्तु)	स्तुतौ	अ अकिट् सक उभय	स्तौति स्तुते	३४०
ष्ठा (स्था)	गतिनिवृत्तौ	भ्वा अनिट् अक पर	तिष्ठति	१६०-१६२
ष्ठिवु	निरसने	भ्वा सेट् सक पर	ष्ठिवति	१६६-२६७
(त्रि) ष्वप्	शये	अ अनिट् अक पर	स्वपिति	३१४
सृ	गतौ	भ्वा अनिट् सक पर	धावति	१६०, १६७-१६६
	अजवार्थे तु—		सरति	
सृज	विसर्गे विसर्गः	तु अनिट् सक पर	सृजति	३८६
	सृष्टिस्त्यागो वा			
स्कन्दिर्	गतिशोषणयोः	भ्वा अनिट् सक पर	स्कन्दति	२११
स्कृञ्	आप्लवने	क्रधा अनिट् सक उभय	स्कृनाति स्कृनीते	४१३
स्तृञ्	आच्छादने	स्वा अनिट् सक उभय	स्तृणति स्तृणुते	३७७
स्पृश	संस्पर्शने	तु अनिट् सक पर	स्पृशति	३७६
स्पृह	ईप्सायाम्	चु सक उभय	स्पृहयति स्पृहयते	४२६
स्फुटिर्	विशरणे विशरणम्	भ्वा सेट् अक पर	स्फोटति	८७-६०
	विदारणम् विशरणे इति			
	पाठे विकाशः			

धातवः	धात्वर्थाः	विवरणाणि	अच्युतरूपाणि	आख्यातप्रकरणधृतसूत्राङ्काः
स्फुर	स्फुरणे	तु सेट्, अक शर	स्फुरति	३६२
स्मृ	चिन्तायाम्	भ्वा अनिट्, सक पर	स्मरति	१६३-१६६
स्रु	गतौ	भ्वा अनिट्, सक पर	स्रवति	२०८
स्वृ	शब्दोपतानयोः	भ्वा वेट्, अक पर	स्वरति	१६६
हन	हिंसा गत्योः	अ अनिट्, सक पर	हन्ति	२८२-२८०
ह्य	गतौ	भ्वा सेट्, सक पर	हयति	१६४
(ओ) हाक्	त्यागे	ह्वा अनिट्, सक पर	जहाति	३४६-३५०
(ओ) हाङ्	गतौ	ह्वा अनिट्, सक आत्म	जिहीते	३६०
हि	गतौ, वृद्धौ च	स्वा अनिट्, पर	हिनोति	३७८
हिसि	हिंसायाम्	रु सेट्, सक पर	हिनस्ति	३६७
हु	वह्नौ दाने	ह्वा अनिट्, सक पर	जुहोति	३४४-३४५
हृ	हरणे	भ्वा अनिट्, सक उभय	हरति हरते	२६०
ह्री	लज्जायाम्	ह्वा अनिट्, अक पर	जिह्नेति	३४६
ह्वे	स्पर्धायाम्	भ्वा अनिट्, सक उभय	ह्वयति ह्वयते	२६८-२७०
[शब्दे च]		[अक—शब्दार्थे]		

विशेष-शब्दसूची

[दक्षिणपार्श्वस्थाङ्काः प्रकरण-सूत्रसंख्यानिर्देशिकाः]

अकर्मकः	४।२८	अधिकारः	१।४२, २।१६८	अन्वाचयः	६।११७
अग्लोपित्वम्	३।४२६	अधीष्टिः	४।१७६	अन्वादेशः	२।१६८, २०३
अङ्घ्रिभित्	१।४५	अनद्यतनः	४।१५३	अपचयः	४।७
अतद्गुणसंविज्ञानः	६।१११	अनिट्	३।१३५	अपवर्गः	४।१०६
अतिदेशः	१।४२, ५।४	अनीप्सितम्	४।२८	अपवादः	१।५६
अतिशययोगः	६।३५७	अनुक्तम्	४।१२	अपादानम्	४।७५
अतिसर्गः	४।१७७	अनुनासिकम्	१।१	अपायः	४।७६
अत्यन्तव्याप्तिः	४।१०६	अनुबन्धः	२।५	अप्रवृत्तिः	२।४६
अद्यतनः	४।१५३	अनुशिष्टिः	३।३२७	अभिनिधिः	४।१२६
अधिकरणम्	४।६६	अन्तरङ्गः	१।५६	अवधिः	४।७५
अवयवावयवी	४।६	औपश्लेषिकः	४।७१	दन्तीष्ठ्यम्	१।१
अवरा	३।२२१	कण्ठतालव्यम्	१।१	दन्त्यम्	१।१
असूया	४।६३	कण्ठीष्ठ्यम्	१।१	दीर्घः	१।६
आकृतिः	५।३५७ ७।२४१ ५।१०	कण्ठ्यम्	१।१	द्रव्यम्	२।१
आख्यातम्	४।३६	कथितानुकथनम्	२।१८७ १।८६	द्रोहः	४।६३
आगमः	१।४०	करणम्	४।१००	द्विकर्मकः	४।२८
आगमशासनम्	३।३४६	कर्तृ	४।१३	द्विवचनम्	४।१
आत्मनेपदम्	३।२०	कर्म	४।१७	द्व्यङ्गवेकल्यम्	३।५२५
आवेशः	१।३६	कर्मकर्ता	४।२०	नाम	२।१

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य विशेष-शब्दसूची

६७

आभीक्ष्ण्यम्	५१६५	कर्मप्रवचनीयम्	४११०७	नाशः	६१३५७
आमन्त्रणम्	४११७६	कारकम्	४११०	नगरणम्	३१३८८
आम्रैडितम्	२१२०६-२१०	कार्यम्	११५० २१८	निपातः	२१२१८
आश्रयः	४१६६	कृत्	४१३६	निमित्तम्	११५० २१८
इतरतरयोगः	६१११७	क्रिया	२११	नियमः	११४२ २१११०
इत्थम्भूतम्	४११०७	क्रियातिक्रमः	३११२	निरनुनासिका	१११०६
ईप्सिततमम्	४१२८	क्रियाविशेषणम्	४१६६	निरुक्तम् (पञ्चविधम्)	६१३५७
ईप्सितम्	४१२८	क्रोधः	४१६३	निर्द्धारणम्	४१५०
ईर्ष्या	४१६३	गङ्गास्रोतेऽधिकारः	२१७	निर्विण्णुचापः	११२७
ईषत्स्पर्शितरः	११६८, १४१	गजकुम्भाकृतिलेखः	१११३२	निषेधः	३१२
ईषत्स्पर्शी	११६८, १४१	गतिः	२१७४, ५१८७	परम्परायोगः	२१२०८
उक्तम्	४१११	गुणः	२११	परविधिः	११५६
उत्तमपुरुषः	३१२१	गुणवचनः	६१५१	परस्मैपदम्	३११६
उत्पातः	४१११७	गुरु	११८०	परिभाषा	११४२ (स० प्र० १)
उत्पाद्यता	४११७	गौणः	५११५	पूर्वार्ध	३१२२१
उत्सर्गः	११५६	जननम्	४१७८	प्रकृतिः	२१२
उपचयः	४१७	जन्यजनकः	४१६	प्रगृह्यम्	११७२
उपचारः	४१७	जलतुम्बिका	११५२	प्रतिनिधिः	४११२७
उपधमानीयः	१११३२	जलबालुका	११५२	प्रतिपदोक्तः	११७०
उपपदविभक्तिः	४१११६	जातिः	२११ ७१२३३	प्रतिश्रवणम्	११८८
उपमर्दकरूपा	३१२२१	जिह्वामूलीयः	१११३१	प्रतिषेधः	११४२
उपमानम्	७१८२८	जुगुप्सा	४१८१	प्रत्ययः	२१३
उपसर्गः	३१४२	तद्गुणसंविज्ञानः	६११११	प्रत्यासत्तिः	५१४२६
एकवचनम्	४११	तालव्यम्	१११	प्रथमपुरुषः	३२२१
ओष्ठ्यम्	१११	तुल्याधिकरणम्	४११६	प्रभवः	४१७८
औपचारिकः	५११५	त्याज्यता	४११७	प्रमादः	४१८१
प्रयोजकम्	४११३	वर्त्तमानः	४११५१	सकर्मकः	४१२८
प्रयोज्यः	४११३	बहिरङ्गः	११५६	सन्धिः	११४४
प्रवृत्तिः	२१४६	वाक्यम्	११७४	सन्निपातः	३११८८
प्रसरः	४१७	वाच्यलिङ्गम्	२११५८	समानः	११३
प्रातिपदिकम्	२११	विकरणम्	३१२६	समानाधिकरणम्	२११५६
प्राप्यता	४११७	विकारः	६१३५७	समासः	६१३
प्रेषः	४११७७	विकार्यता	४११७	समाहारः	६१११७
प्लुतः	११७	विधिः	११४२ ४७ ४११७६	समुच्चयः	६१११७
भव्यः	७११०६४	विपर्ययः	६१३५७	सम्प्रदानम्	४१८८
भावः	३१२८	विप्रतिषेधः	३१५५	सम्बन्धः	४१६
भेदकः	४१६	विप्रश्नः	४१६५	सम्बोधनम्	४१८
भेद्यः	४१६	विभाषाः	२१४६	सर्वनाम	२११६६
भ्रमः	११७५	विशेषः	११५६	सविण्णुचापः	११२७

मध्यमपुरुषः	३।२१	विशेषणम्	२।१६०	सहार्थः	४।१११
मर्यादा	१।७० ४।७६	विशेषरूपः	३।२२१	सानुनासिकः	१।१०६
मुख्यः	५।१५	विशेषलक्षणम्	४।११४	सामान्यम्	१।५६
मूर्धन्यम्	१।१	विशेष्यम्	२।१६०	सामान्यवचनम्	२।२१०
यथेष्टसिद्धि	३।३३६	विषयः	४।६६	सामीपिकः	४।७१
योगरूढः	५।१५	वीप्सा	४।१०७	साहचर्यम्	१।१४३
यौगिकः	५।१५	वृत्तिः	६।२५१	साहित्यम्	मङ्गलावरणम् १
रूढः	५।१५	व्यंसकः	६।४२	सिद्धोपदेशः	२।५
लक्षणम्	४।१०७	व्यञ्जनम्	१।७ १७	स्नानिवत्त्वम्	३।१२५ १८२ १८६ ४२६
लघु	१।७६	व्यधिकरणम्	४।१६	स्थान्यादेशः	४।७
लाक्षणिकः	१।७० ५।१५	व्यवस्था	२।१७३	स्वतन्त्रम्	४।१३
लिङ्गम्	२।१ ४।७	व्याप्तः	४।७१	स्वरः	१।२
लुग्विकरणम्	४।७४	शब्दानुशासनम्	५।४५८	स्वस्वामी	४।६
लुप् (स्मरहरः)	७।३६३	संज्ञा	१।४२	स्वाङ्गम्	४।२२७
लोपः	१।४१	संप्रश्नः	४।१७६	हल्	१।१७, ४५
वज्राकृतिलेखः	१।१३१	संस्कार्यता	४।१७	हेतुः	३।१३० १३२
वर्गः	३।१०३	संस्त्यानम्	४।७	हेतुकर्ता	४।१३
		संहिता	१।६१	ह्रस्वः	१।५

गण-सूची

[दक्षिणपार्श्वस्थाङ्काः प्रकरण-सूत्रसंख्याज्ञापिकाः, आ— आकृतिगणः]

अक्षयुतादिः	७।६२१	उत्तानादिः	५।२३४	कोटरादिः	६।२३४
अग्निष्टुदादिः	५।४६६	उत्सङ्गादिः	७।५१८	क्रमादिः	७।३५०
अङ्गुल्यादिः	७।१०६८	उदध्यादिः	५।४३७	क्रयाक्रयिकादिः	६।१७
अजादिः (आ)	७।२४१	उद्गात्रादिः	७।८४५	क्रव्यादादिः	५।२७८
अण्डादिः	६।२५२	उपकूलादिः	७।५०८	क्रौड्यादिः	७।२४३
अध्यात्मादिः (आ)	७।५१०	उर्यादिः	५।८७	क्षिपकादिः (आ)	७।६६ ७।१
अध्यापकादिः	६।३४	ऊत्यादिः	५।४४३	क्षुद्रादिः	७।२७६
अनिटः	३।१३५	ऋग्यणादिः	७।५२८	क्षुब्धादिः	५।५७
अनुप्रवचनादिः	७।८२३	ऋष्यादिः	७।३८६	क्षुब्नादिः (आ)	३।४१६
अनुरुधादिः	५।३२४	ऐन्द्रयाम्यादिः	६।११६	खलत्यादिः	६।३२
अनुशतादिः (आ)	७।१६	कच्छादिः	७।४४८	खलादिः (आ)	७।७१२
अपूषादिः	७।७०८	कण्ड्वादिः (आ)	३।१५० ५६२	गणपत्यादिः	७।२४८
अम्बष्टादिः	५।४६५	कथादिः	३।७६ ७।६६७	गयादिः	५।२८४
अरीहणादिः	७।३८७	कम्बोजादिः	७।३१२	गर्गादिः	७।२६२ ३।१७
अर्थादिः	६।६१	कर्णादिः	७।३६६ ८७३	गल्भादिः	३।५३५
अर्द्धजरयादिः	६।४०	कठ्यादि	७।४२५	गवादिः	५।२०६ ७।७०८

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य गणसूची

६८

अर्द्धर्चादि:	७१[१] ६५	कल्याण्यादि:	७१२७२	गवाश्वप्रभृति:	६१२७
अर्द्धमिलक्यादि:	६१५६	कस्कादि:	६१३३५	गहादि: (आ)	७१४५०
अर्श आदि:	७१६६८	ककादि:	७१४३५	गिरिनद्यादि: (आ)	६१३२२
अवान्तरदीक्षादि:	७१८०६	कालादि-	५११४०	गुडादि:	७१६६७
अशमादि:	७१३६४	काशादि:	७१३६१	गुत्तफादि:	३१३८६
अश्वादि:	७१७५०	काश्यादि:	७१४४४	गुरुलघ्वादि:	७१६
अहरादि:	६१३३६	किशरादि:	७१६५२	गोपवनादि:	७१३२०
अहीवत्यादि:	७१६०	कुक्कुट्यादि:	६१२५२	गौरादि:	७१२०७
आकषादि:	७१६१३	कुक्षिम्भय्यादि:	५१२४२	ग्रहादि:	३१२६२ ५११६८
आहिताग्न्यादि: (आ)	६११६३	कुञ्जादि:	७१२६५	घटादि:	३१४३१
इज्यादि:	५१४४४	कुटादि:	३१३६० ३६२	चकासृप्रभृति:	३१७६
इष्टादि:	७१६२६	कुमुदादि:	७१३६० ४०३	चक्षादि:	५१३७४
उक्थादि:	७१३४७	कुम्भपद्यादि:	६१३४७	चतुर्वर्णादि:	७१८५२
उणादि:	५१३६६	कुर्वादि:	७१२८२ ३०७	चादि: (आ)	२१२१७-२१८
उत्तकरणादि:	७१४१३	कृतादि: (आ)	६१२०	चूडादि:	७१८२२
उन्क्षेपादि:	३१५४६	कृशाश्वादि:	७१३८८	छत्तादि:	७१६५६
छदादि:	५१३६४	पचादि: (आ)	५१२००	भर्गादि:	७१२६६
छेदादि:	७१७७५	पत्यादि:	६१३३६	भस्त्रादि:	७१६१६
जक्षादि:	३१३१६	परदारादि:	७१६०७	भिदादि:	५१४४६-४४७
जातादि:	६१५४	परिमुखादि:	७१५०८	भीमादि: (आ)	५१४८
ज्योत्स्नादि:	७१६४४	पात्तादि:	६१५२	भुजङ्गमादि:	५१२५०
ज्वलादि:	५१२०७	पात्रेसमितादि: (आ)	६१६१	भृत्यादि:	५११८८
तक्षशिलादि:	७१५४५	पापादि:	६१२२	भृशादि:	३१५३६
तारकादि (आ)	७१८८३	पामनादि:	७१६४०	भ्राजादि:	५१३६०
तालादि:	७१५८८	पारस्करादि:	६१३५५	मणीवादि:	११७१
तिकादि:	७१२८४	पार्श्वदि:	५१२३३	मध्वादि:	७१४०८
तिमिङ्गिलादि:	५१२०३	पिच्छादि:	७१६४१	मनोज्ञादि:	७१८४७-४८
तिमिरादि: (आ)	६१३१५	पीलवादि:	७१८७२	मन्थादि:	५१५७
तिष्ठद्वगुप्रभृति:	६११७८	पुण्याहवाचनादि	७१८२६	मयूरव्यंकादि: (आ)	६१४२
तुन्दादि:	७१६६२	पुरोहितादि:	७१८४४	महानास्यादि:	७१८०८
तृणादि:	७१३६२	पुषादि:	३१२०६	महिष्यादि:	७१६४७
तृलादि:	४१३३	पुष्करादि:	७१६८५	माणब्दादि:	७१६०५
त्रादि:	७१८४	पूर्वादि:	२११७३	मुचादि:	३१३८४
दण्डादि:	७१७७७	तृथादि:	३१५४६ ५५८ ५५१	मूलविभुजादि: (आ)	५१२२१
दधिपय आदि:	६१३३४		७१८३६-३७	मृषोद्यादि:	५११८४
दिगादि:	७१५०१	पृषोदगादि: (आ)	६१३५७	यमादि:	३१२६१
दिवादि:	५१२४१	पैलादि: (आ)	७१३२५	यवादि:	७१५८
दुहादि:	४१२८	प्रकृत्यादि:	४१११५	यस्कादि:	७१३१६
दृढादि:	७१८३८	प्रगदिनादि:	७१४०१	यावादि:	७११०६३

देवपथादि: (आ)	७१०५६-६०	प्रच्छादि:	५१३६२	युजादि:	३१४२८
द्युतादि:	३१२०६ २४३	प्रज्ञादि: (आ)	७११००	युवत्यादि:	६१३०
द्वारादि:	(१०) ७१४	प्रतिजनादि:	७१६६४	रजतादि:	७१५८३
द्विदण्ड्यादि:	(१४) ६१११३	प्रभूतादि:	७१६०५	रधाधि:	३१७६५
नडादि:	७१२६३ ४१४	प्रस्तीमादि:	५१५४	रसादि:	७१६३२
नद्यादि:	७१४२६	प्रादि:	३१४२	राजदन्तादि:	६११८३
नन्द्यादि:	५११६७	प्रियादि:	६१२४६-५०	राजन्यादि: (आ)	७१३७७
नम आदि:	३१५४३ ४१११६	प्रेक्षादि:	७१३६३	राजसूयादि:	५११८५
नावादि:	७११३० ६६१	प्लक्षादि:	७१५६६	रुदादि:	३१२८० ३१२ ३१४
नासिकादि:	५१२४३	प्वादि:	३४१४	रेवत्यादि:	७१२८१
निष्कादि:	७१७४१	बलादि:	७१३६७ ०८८	रेवतिकादि:	७१५७३
नृत्यादि:	३१३६२ ५०७	ब्राह्मणादि: (आ)	७१८४१	लोमादि:	७१६४०
पक्षादि:	७१३६८	भणादि:	५१२८२	लोहितादि (आ)	३१५३७
त्वादि:	३१४१७ ५१३३ ४४१	शब्दादि:	३१५४२	समज्यादि:	५११८७
वंशादि:	७१७६२	शमादि:	३१३७० ५१३२३	सम्पदादि:	५१४४२
वच्यादि:	३१२६२	शरदादि:	७११३५	सर्वसहादि:	५१२४६
वरणादि:	७१४०५	शरादि:	७१५८१	सर्वादि:	२११६६
वराहादि:	७१४०२	शर्करादि:	७११०६७	साक्षात्प्रभृति: (अ)	५१८७
वसन्तादि:	७१३४८	शाकगार्थिवादि: (आ)	६१४४	सिन्नादि:	५१३६७
वाष्पादि:	३१५४१	शाखादि:	७११०६३	सिध्मादि:	७१६३३
वाह्यादि: (आ)	७१२५६	शिवादि: (आ)	६१२६३	सिन्धवादि:	७१५४५
विदादि:	७१२६१	शीलितादि:	४१५७ ५१७२	सुखादि:	३१५४४ ७१६८२
विनयादि:	७११०६६	शुभ्रादि: (आ)	७१२६६	सुतङ्गमादि:	७१४००
विश्वम्भरादि:	५१२५७	शौण्डादि:	६१६०	सुषामादि:	६१३०६
वृतादि:	३१२४६	श्रन्थादि:	५१४५१	सुस्थादि:	३१५८४
वृन्दारकादि:	६१२८	श्रमणादि:	६१३३	सुस्नातादि:	७१६०७
वेतनादि:	७१६१५	श्रितादि:	६१५७	स्तन्यादि:	५१३७६
व्यधादि:	५१२१०	श्रेण्यादि:	६१२०	स्थूलादि:	७११०७३
व्याघ्रादि: (आ)	६१२६	युडादि:	५१३४	स्पृह्यादि:	५१३७२
व्युष्टादि:	७१८११	सख्यादि:	७१३६५	स्वरादि: (आ)	२१२१७
व्रीह्यादि:	५११८४ ७१६५७	सङ्काशादि:	७१३६६	स्वर्गादि:	७१७२५
शकन्धवादि:	६१३०६	सत्यङ्कारादि:	५१२१८	स्वस्त्रादि:	२१५८
शकादि:	३११४७ ५११५५	सनादि:	३११५०	स्वागतादि:	७१४, ६
शक्त्यादि:	५१२२७	सन्तापादि:	७१८१५	हरीतक्यादि:	७१६०२
शक्यादि:	(१५) ५११४०	सन्धिवेलादि:	७१४६५	हल्यादि:	३१५५५
शण्डिकादि:	७१५४४	समानादि:	७१२२	ह्लादि:	५१६४

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य आदेशसूची

७१

स्त्रीप्रत्यय-सूची

आप् (ङाप्)—५४४४-५१, ७१८४-१८८, १६३, २०१-२, २१७, २२३-२४, २२६, २४१-२४२

ईप्—७१८५, १८६, १६१-१६२, १६५-६६, २०१ २०५, २०७-२२२, २२४-२३५

ऊङ्—७२३६-२४०

काप्—५४५२-५३, ७६६-८३

याप्—७२४३-४४

—*—

णत्वविधानम्—२१२६ ३४३-४७, ४६, ११६-१८, २८३-२८५, ५६५, ५६७-७, ४२, ४२७, ६३११-३२३

षत्वविधानम्—२१२३, ३४३, ६६, १५४, २७१, ३०५, ५८८, ५६५-६६, ५६८-५८१, ५८६, ५४६५-६६, ६३०८-३१०, ३२५-३२८, ३३२-३४

आदेश-सूची

अ	३४६२-३३ ५८६	अस्माकम्	२११६४	इ	२१३१ ६३ ३१८६ २०६
अघोस्	२१११२	अस्मान्	२११६४	उ	२४४ ३२१ ३४७ ३४६
अदद्रचच्	५१२८७	अस्माभिः	२११६४	ई	३५६-६० ४४५-४६ ५६५
अदमुयच्	५१२८७	अस्मासु	२११६४	उ	७६६-७१ १६५
अद्रि	५१२८६	अहन्	७६८	इन	२११२
अध्याप्	३४४२	अहम्	२११६४	इय्	२४६ ५२ ७४ ३१२८
अन्	२८७	अह्	७६७		१३६
अन	२११८५			इयकम्	२११८४
अन्ति	३११६८	आ	२१३० ४३ ६२ ११६ १२५	इयम्	२११८४ ३१३६
अन्यत्	६१२७६		१८३ ३१३३ ११० १२३ १७६	इर्	३१२१२ ४२५
अम्	२१७६		२५६-५७ ३७४ ४०१ ४४०	ई	२१६४ १६२ ३१३७-३८
अमद्रचच्	५१२७७		४५२ ५१२०१ २६६ २८१	इ	१८४ २४० ३४६ ५१४
अमुयच्	५१२८७		६१११२ २२६-२७ २६२ २६५		५१६१ ६१२५६
		आच्	२४२	ईन	५१६
अमूश्	५१२६६	आत्	२११७	ईप्	६३५३३
अय्	११६३ ५१६२	आत्थ	३१३४३	ईप्स	३४६६
अयकम्	२११८४	आन	३४१५	ईत्स	३४६४
अयम्	२११८४	आम्	२५१ ६३५६	ईश्	५१२६६
अर्	११५२ २१३२	आय्	११६४	उ	११४० २१३१ ६३ ११६
अर्वत्	२११२७	आर्	२४३		१४२ १५२ १६१ ३१२४४
अल्	११५३ २१३२	आल्	२४३		४०० ४०६ ५१३६
अव्	११६५ ३१५१५	आव्	११६६ ३१५१५-१६	उच्	२१५५
अव	६३०२	आवत्	६३५२	उद	६१२८८
अश्	२११८६-८७	आवयोः	२११६४	उदन्य	३१५२१
अशनाय	३१५२०	आवाभ्याम्	२११६४	उदीचि	२११०१
अश्वस्य	३१५२३	आवाम्	२११६४	उर्	३१३४८
अस्थ	३१३७१	आह	३१३४३	उव्	२४६ ५२ ७४ ३१२८ १३६

अस्म	५।२६०	आहतुः	३।३४३	उशन	२।१४४
अस्मत्	२।१६४ ६।३५२	आह्युः	३।३४३	उशनः	२।१४४
अस्मभ्यम्	२।१६४	आहुः	३।३४३	उशनन्	२।१४४
			उस्	२।४७ ३।८३ १।८८	
ऊ	२।१६१ ३।२८	ष	१।१०५	घ	२।१२२ १।४५ ३।२६० ५।२०२
ऊङ्	६।५६	स	१।१०६ ६।३२४	घसृ	३।२८१
ऊर्	२।१४६ ३।४२१	+ (जिह्वामूलीयः)	१।१३१	घि	३।३७८
ऊधन	७।७०७	— (उपध्मानीयः)	१।१३२	घ्नी	३।४६३
ऋ	३।२४४ ४।२६	क	२।१०८ १।३८-३६ २।१२	च	१।१०३
ऋच्छ	३।१६०		३।११७ ५।४४ १।६७ ७।६२	चञ्चुर्य	३।४६६
लृ	३।२४६	ककुत्	६।३४८	चतसृ	२।७१
ए	१।४८-४६ २।१६ १।६ ३।२	कत्	६।२८०	चलीकृलृप्य	३।४६६
६५	३।११२-१।१४ १।८३ १।८५	कन	३।५४७	चवर्गः	१।१०२ २।६५ ३।६४
	३।५३ ५।१५४	कवर्गः	२।६७	चाप्	३।४४३
एधि	३।३०८	का	६।२८१	चेकीय	३।४६६
एन	२।१८६	काकुत्	६।३५०	च्छ	१।११६-१।८
एनत्	२।२१६	कि	३।१६६	छ	१।६६ ३।१६१
ऐ	१।५५ ५।६ २।४३	कीश्	५।२६६	ज	३।१३१ २।६० ३।८२
ऐय्	७।४	कृ	३।३७६	जग्धि	५।६७
ऐस्	२।१४	क्राप्	३।४४२	जम्	६।२३१
ओ	१।५०-५१ २।३२ ३।२५४	क्विप्	३।५३३ ५।३५	जरस्	२।६८
औ	१।५७-५८ २।४३ ४।८ ६।१	क्षीरस्य	३।५२४	जहि	३।२८६
	१।५१ ३।१८१	क्षेप	३।५४६	जा	३।३७६
ओच्	२।३७ १।६०	क्षाद	३।५४६	जानि	६।३३६
औव्	७।४	ख्याम्	३।३३०-३।१	जाप्	३।४४२
औश्	२।१२६	ग	५।१६७	जिघ्र	३।१६०
(विष्णुचक्रम्)	१।११३ २।८४	गम्	३।४४२ ४।५५-५।६	जिघ्रिष	३।४३७
श	१।१०४	गर	३।५४६	जेघ्रीय	३।४६६
ष	१।१०५	गा	३।२६४	जीप्स	३।४६५
स	१।१०६	गाङ्	३।४४४	ज्ञु	६।३४१-४।२
:(विसर्गः)	२।१३६ १।५५	गाम्	३।३३७	ज्य	३।५४७
श्य	१।११५	गार	५।६७	ञ	१।१११
ल्ल	१।११५	गालोड	३।५४८	ञच्	१।११२
व्व	१।११५	गि	३।१६६	टवर्गः	१।१०२ २।१३५
श	१।१०४	गी	३।३३७	ड	२।१०५ १।३८
ढ	२।१४५ ३।६७-६।७	दम्	६।२३१	पद्	२।२८
ण	१।११० २।२६ ३।४४-४।७	दव	३।५४७	पम्फुल्य	३।४६६
	१।१७-१।१८ २।८३-८।५ ३।१५	दिगि	३।२३६	पश्च	६।२६३
	५।६ ६।३११	दित्स	३।४६८	पश्य	३।१६०

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य आदेशसूची

७३

त	२१८३ ३१६७ २७२	दूष्	३१४४२	पाल्	३१४३८
	३२५-२६ ४४८ ५१७७	देध्मीय	३१४६६	पित्स	३१४७२
तव	२१६४	दोषन्	२१४४०	पिव	३१६०
तातङ्	३१४०	द्राघ	३१५४६	पी	३१२३८ ५१६२-६३
ति	३१६८	घ	२१४५ ३१०३ ३५७	पीप्य	३१४३७
तिरश्चि	२११०१	घनाय	३१५२२	पुमसु (पुमस्)	२१४३३
तिरि	५१२८६	घन्वन्	६१३४०	प्र	३१५४६
तिष्ठ	३१६०	घम	३१६०	प्रीण्	३१४३८
तिष्ठिप	३१४३७	धाव	३१६०	वंह	३१५४६
तिसृ	२१७१	धि	३१२७८ ३७६	वर	३१५४६
तुभ्यम्	२१६४	धित्स	३१४६८	भ	३१७५
ते	२१२००	धिप्स	३१४६३	भगोस्	२१११२
त्रप	३१५४७	धीप्स	३१४६३	भज्ज	३१३८३
त्रय	२१४०	धून्	३१४३८	भाप्	३१४४१
त्ररस्	६१२६२	न	२१२० १२६ ३११५ ५१२८	भीष्	३१४४१
त्वत्	२१६४ ३१५१७ ६१३५२		३१ ३३ ३७ ३८ ७१६५	भू	३१५४६
त्वम्	२१६४	नभम्	७१७०७	भूव्	३१५६
त्वया	२१६४	नस्	२१६६ १६६ ६१२८६	भोस्	२१११२
त्वयि	२१६४	ना	२१३५	म	२१८३ ५१४४
त्वा	२१२०१	नि	५१४४१	मत्	२१६४ ३१५१७ ६१३५२
त्वाम्	२१६४	निश्	२१७६	मधुस्य	३१५२४
द	२१४५ १५०	ने	३१३६६	मध्वस्य	३१५२४
दत्	२१२८	नेद	३१५४७	मन	३१६०
दत्	६१३४३-४४	नेशि	३१३६७	मम	२१६४
दद्	५१६५	नौ	२१२०२	मया	२१६४
दधिस्य	३१५२४	पतिस्य	३१५२४	मयि	२१६४
दध्यस्य	३१५२४	पत्यस्य	३१५२४	मह्यम्	२१६४
मा	२१२०१	रु	३१३०१	शिष्	३१३७७
गाम्	२१६४	रोप्	३१४४३	शी	२१६७
मास्	२१२८	ल	११६२ १०२ १०६ ३१२३४	शीय	३१६०
मित्स	३१४६७		३८८	शीर्ष	७१४५
मुमुक्षङ्	३१४७३	लवणस्य	३१५२४	शीर्षन्	२१८३ ७१४६
मे	२१२००	लाल्	३१४३६	शृ	३१२०२
मोक्षङ्	३१४७३	लिप्स	३१४६६	शे	३१३३५
य	११५६ १४१ २१५५ ५०	लीन्	३१४३६	शनस्	३१३६५
	३१४११-४२	व	११६० ६४-६५ २१५० ५३	श्ना	३१४१२-१३
यच्छ	३१६०		३१४२२ २६६ ५१४४ ७१५८	शु	३१२०२ ३७७
यव	३१५४७	वच्	३१३०७	श्य	३१३६१
युवत्	६१३५२	बध	३१२८७ ८८ ५१५५६	श्र	३१५४७

युवयोः	२।१६४	वयम्	२।१६४	इवेत	३।५४८
युवाभ्याम्	२।१६४	वयि	३।२६४	ष	१।१३५ २।२३ १०३ ३।६६
युवाम्	२।१६४	वर्ष	३।५४७	-६६ १।५४ २७१ ३०५ ४७४	
युषन्	२।२८	वस्	२।१६६	५०८ ५६८-८१ ६।३२५	
युष्म्	५।२६०	वाज्	३।४३८	षाट्	२।१४६
युष्मत्	२।१६४ ६।३५२	वाप्	३।४४३	स	१।१३६ २।१८३ १६० ३।६५
युष्मभ्यम्	२।१६४	वाम्	२।२०२	५।२६८ ६।२६६ २७१ ३२५	
युष्माकम्	२।१६४	वावश्य	३।४६६	सधि	५।२८६
युष्मान्	२।१६४	वी	३।१३४ ३।५४६१	समि	५।२८६
युष्माभिः	२।१६४	वृन्द	३।५४७	साध्	३।४४२
युष्मासु	२।१६४	वृषस्य	३।५२३	साध	३।४५७
यूयम्	२।१६४	वेवीय	३।४६६	सीद	३।१६०
र	१।६१ १।४४-४६ २।७२ १३६	श	१।१३४ २।१०२ ३।३८१	सोषुष्य	३।४६६
	१।५६ ३।३२६ ५४६ ६।३३६		४२१	स्थ	३।५४७
	७।६४ १।६२	शय्	३।३३६	स्थव	३।५४७
रि	३।१६७	शात्	३।४४२	स्फ	३।५४७
रित्स	३।४७१	शाधि	३।३२८	स्फार्	३।४४२ ४४३
रिप्स	३।४६६	शि	२।७७	स्फी	५।३६
री	३।४८५	शिक्षङ्	३।४७०	स्मात्	२।१६६
स्माप	३।४४१	स्य	२।१८	हृद्	२।८३ ६।२८४
स्मिन्	२।१७१	ह	३।३०६	ह्रस्व	३।५४६
स्मे	२।१६८	हि	५।६५ ८४	ह्रस्व	३।५४८

आगमसूची

अङ्	३।१८६ २०८	उम्	३।३११	यक्	३।३४ ५६२ ४।२१
अट्	३।२७६	(विष्णुचक्रम्)	३।४८६-६०	याप्	२।६६
अत्	३।५१	क	१।१३०	यि	३।४५७
अम्	२।१३० ३।१७२ २१६ ६।१५४	कृ	३।१२०	युक्	३।१८० ४३६
आप्	२।७०	ङ	३।८८ १।६८ २०६ २६८-६६	युट्	३।३७५ ५४७
आपुक्	३।५५६		२७३ २६८	र	३।५०६
		ट	१।१३०	रि	३।५०६
आम	२।१३० ३।११६ १।५३	तुक्	१।१२६ २।२१५ ५।८७	री	३।४६४ ५०६
	१।७६ २।३५ ३।४५	नी	३।४८८	रुट्	३।६४-६५
इ	५।६३ ४।५२	नुक्	२।८६ १।१६	शप्	३।२६
इट्	३।३८ ६१ १०० १।४३-४६	नुट्	२।२० १२३ ३।१११ ३।८०		
	१।६० १।७५ १।६४ १।६६ २०७		५।८६	इनु	३।४१३
	२।११ ३।१२ ३।३३ ३।६२ ३।६५	नुम्	२।७८ ६४ १०६ १।४८	इय	४।२४

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य आगमसूची

७५

३६८ ४१० ४१८ ४५४ ४६०	३६३ २२२ २४१-४२ ३६८ सक्	३१७३ ३६४
६१ ५१२० २२ ४६-५३ ५५	३८४ ५-१६-१७ १४३ १५८ मि	३१५२ १७०
५६ ८१-८२ पुक्	३४२७ सुगिटौ	३१६२
इण् ३१५८ २३६-३७ ४१२१ २५ पुम्	३१२५३ सुट्	२१७० ३१३८५-८७
इण्वद्विट् ३१६२ ४१२१ भू	३११२०	४०७-६ ४११ ५१३२
ई ७११२१-२२ मुक्	४१४३ ५१३ सुप्	६१२१
ईट् ३१८१ २८० ३१४ ३४१-४२ मुम्	५११०४ स्याप्	२१२१३

धात्ववयवसूची

[स्त्रीत्व-समासान्त-तद्धित-कृदन्तेतर-प्रत्यया]

आय ३११५० १५२ २२३ विवप्	३१५३३-३५ णिङ्	३११५२ २२४ ५४६-५२
ईयङ् ३१२२१ वयङ्	३१५२६-३१ ५३६-४४ यङ्	३१४७७ ४८० ४८३ ४८६
काम्य ३१५२५ णि	३१४२३ ४२८-२६ ५४८	४६६
वयन् ३१५१२ ५२६ ५४५	५५२-५६ सन्	३१२१७ २४० ४४६ ४५१

धात्वनुबन्धसूची

अनुबन्धाः प्रयोजनानि स्वार्थविधायक-प्रकरण-सूत्राङ्काः	अनुबन्धाः प्रयोजनानि प्रकरण सूत्राङ्काः
अ सुखोच्चारणार्थः २१५ लृ भूतेश-परपदे ङः ३१२०६	
दशावतारादर्शनार्थ (तेन सन्निमित्त काट्याद्यभावः) स्थानिवत्त्वार्थः ३१४२६	ए सेटि सौ परपदे वृष्णीन्द्राभावः ३११४६
(तेनोद्धवस्य वृष्णीन्द्र गोविन्दाभावः ३१४२६)	ओ विष्णुनिष्ठा तस्य नः ५१३३
आ विष्णुनिष्ठायां नेट्, आरम्भ ५१३२ ५३	क चिह्नार्थः २१५
भावयोर्वेट् च ५१३२ ५३	ङ् कर्त्तरि आत्मनेपदी ३१२५ ४१२००
इ नुमर्थः ३१६३ (३१६१)	ञ उभयपदी ३१२६ ४१२०१
इर् भूतेश परपदे-विकल्पित ङः ३१८८	त्रि वर्त्तमाने क्तः ५१७२
ई विष्णुनिष्ठायां नेट् ५१३२	ट् ईवर्थः ७१२०७
उ क्ति-व-वेट् ५१८२	टु अथुप्रत्ययार्थः ५४२४
ऊ सेट् ३११००	डु क्ति-मार्थः ५१४३३
ऋ अङ् परे णौ उद्धवस्य वामनाभावः ३१२२७	ण् चिह्नार्थः २१५
	प् चिह्नार्थः २१५
	ष् भावे डापर्थः ५१४४६

कृतप्रत्ययसूची

[उ—उणादिप्रत्ययः]

कृतप्रत्ययाः	पाणिनीय- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि सूत्रनिर्देशाश्च	श्रीहरिनामामृत- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि प्रकरणस्थित सूत्रसंख्याः
अकः	'वुन्' ३।१।१४६	२१४-२१६
अच्	'डः' ३।२।४८	२५८-२६० २६२-३ ३०५-३११ ३१३
अण्	'अण्' ३।२।१	१४१ २१७-८ २५३
अन्	'अच्' ३।१।१४३	२००-२०३ २०७ २२६-२३६ २४१
अथुः	'अथुच्' ३।३।८६	३७७ ४३४
अनः	'ल्युः' ३।१।१३४ 'युच्' ३।२।१४८	१४६ १४८ १५२ १६७ २१४ ३३३-३३८ ४५७
अनिः	'अनिः' ३।३।१३२	४५६
अनीयः	'अनीयर्' ३।१।६६	१४६ १८६ १६२
अन्तः (उ)	'अच्' उ ४१५	३७१
अल्	'अच्' ३।३।५६ 'अप्' ३।३।५७	१४४ ३७७ ४१५-४२८
असिः	'अस्' १।२।१	२६२
आकट्	'आकन्' ३।२।१५५	३४०
आय्यः (उ)	'आय्यः' उ ३८३	३७२
आरुः	'आरुः' ३।२।१७३	३५७
आलुः	'आलुच्' ३।२।१५८	३४१
इक्	'इक्' ३।३।१०८	४५४
इण्	'इण्' ३।३।११०	४५५
इत्नुः (उ)	'इत्नुच्' उ ३१६	३८३
इत्रः	'इत्रः' ३।२।१८४	३६४
इन्	'इन्' ३।२।२४	२४२ ३१२ ४३२
इणुः	'इणुच्' ३।२।१३६	३१७ ३१६
ईः (उ)	'ईः' उ ४४६	३६८
ईप्	'ड्रट्' उ ६१५	३७०
उः	'उः' ३।२।१६८	३५२ ३५३
उकण्	'उकञ्' ३।२।१५४	३३६
उच्	'डुः' ३।२।१८०	३६३
उण् (उ)	'उण्' ३।१।१ उ १	३६६
उसिः (उ)	'शित्' उ २८४	३७४

कृतप्रत्ययाः	पाणिनीय- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि सूत्रनिर्देशाश्च	श्रीहरिनामामृत- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि प्रकरणस्थित सूत्रसंख्याः
ऊकः	'ऊकः' ३।२।१६५	३४६ ३५०
ओच् (उ)	'डोः' उ २३५	३७५
कः	'कः' ३।१।१३५ २०४ २०५ २१६-२२३ 'कञ्' ३।२।६०	२६८ २६६
कानः	'कानच्' ३।२।१६०	६ १६ २३ २४
किः	'किः' ३।२।१७१	१६ ३५४ ३५५ ३७७ ४३६ ४३७
कुरः	'कुरच्' ३।२।१६२	३४४ ३५४
केलिमः	'केलिमर्' ३।१।६६	१४६ १६१
क्तः	'क्तः' १।१।२६	२६-७२ १५२
क्तवतुः	'क्तवतुः' १।१।२६	१६ ३५४ ३५५ ३७७ ३६ ३८ ४० ४४ ४५ ४६- ५६ ५६ ६२ ६४
क्तिः	'क्तिन्' ३।३।६४	६४ ४३८ ४४५
क्तिमः	'क्तिः' ३।३।८८	४३३
क्त्वा	'क्त्वाः' ३।४।१८	५० ७३-८५ ८७ ८६ ८६ १०० १०२ १०६ १०७ १३३ १३४ १३८
क्नुः	'क्नुः' ३।२।१४०	३२२
क्मरः	'क्मरच्' ३।२।१६०	३४२
क्वप्	'क्वप्' ३।१।१०६	१४६ १६० १७५- १८८ १६२ ४४४
क्वनिप्	'क्वनिप्' ३।२।७४	२७६ २८० ३०३ ३०४
क्वरप्	'क्वरप्' ३।२।१७३	३४६-३४८
क्वसुः	'क्वसुः' ३।२।१०७	१६-२३
क्विप्	'क्विन्' ३।२।५८	६१ २६८-२७३ २७७
	'क्विप्' ३।२।६१	२७८ २८२-२८१ २८६ ३०२ ३०६ ३१५ ३६०- ३६२ ४४२
खः	'खच्' ३।२।३८	२४६-२५३ २५७
खनट्	'ख्युन्' ३।२।५६	२६५
खमुण्	'खमुञ्' ३।४।२५	१०३ १०४

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य कृतप्रत्ययसूची

७७

कृतप्रत्ययाः	पाणिनीय- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि सूत्रनिर्देशाश्च	श्रीहरिनामामृत- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि प्रकरणस्थित सूत्रसंख्याः	कृतप्रत्ययाः	पाणिनीय- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि सूत्रनिर्देशाश्च	श्रीहरिनामामृत- व्याकरणस्थ कृतप्रत्ययनामानि प्रकरणस्थित सूत्रसंख्याः
खल्	'खल्' ३।३।१२६	१४२-१४८ १५२	णिवः	'णिवः' ३।२।६२	२७४-२७६
खश्	'खश्' ३।२।२८	२४३-२४८ २६४ २६५	तव्यः	'तव्यः' ३।१।६६	१४६ १५२ १६३ १६५
खिण्णु	'खिण्णुच्' ३।२।५७	२६६ २६७	तुः (उ)	'तुन्' उ ७२	३६७
खुकण्	'खुकण्' ३।२।५७	२६६ २६७	तुमुः	'तुमुन्' ३।३।१०	१३६-१४१ १५२
घः	'घः' ३।३।११८	४२६-४३१	तृन्	'तृच्' ३।१।१३३	१६४ १६५ २०४
घण्	'घण्' ३।३।१६	१४३ ३७६ ३७८ ४१५			२०६ २१४ ३१६
		४१८	त्तः	'ष्टन्' ३।२।१८२	३६४ ३६५
घिनुण्	'घिनुण्' ३।२।१४१	२१४ ३३० ३३१	थकः	'थकन्' ३।१।१४६	२१३
घुरः	'घुरच्' ३।२।१६१	३४३	नः	'नङ्' ३।३।६०	४३५
डाप्	'आङ्' ३।३।१०२	४४५ ४५१	नजिङ्	'नजिङ्' ३।२।१७२	३५३
ङ्वनिप्	'ङ्वनिप्' ३।२।१०३	२६६ ३०४	मनिप्	'मनिन्' ३।२।७४	२७६ २८०
टः	'टः' ३।२।१६	२३७-२४२	मुट् (उ)	'मुट्' उ ४४८	३८६
टक्	'टक्' ३।२।८	२२४ २२५ २५४ २५४ २५५	यत्	'यत्' ३।१।६७	१४६ १५० १५३ १६५
		२६० २६१ २८४			१७२ १७४ १७७
टकः	'ट्वुन्' ३।१।४५	२१२ २१३			१८६ १९० १९२
टणन्	'न्युट्' ३।१।१४७	२१३	यप्	'ल्यप्' ७।१।३७	७५-७७ ८५ ८७ ८८
टनः	'ल्युट्' ३।३।११५	४५८ ४६४			६०-६४ ६६ १२५ १२८
णः	'णः' ३।१।१४०	२०७ २१० २११ ४३२			१३४ १३८
णकः	'ण्वल्' ३।३।१०	१३६ १६४ १६६	रः	'रः' ३।२।१६७	३५१
		२०४ २३२ ४५२ ४५३	वनिप्	'वनिप्' ३।२।७४	२७६ २८१
णमुः	'णमुल्' ३।४।२२	६५-६७ ६६ १०१ १०२	वरः	'वरच्' ३।२।१७५	३५६
		१०५ १०७ १०६ ११३	विः	'विच्' ३।२।७३	२७६
		११६-१२३ १२५-१३४	शः	'शः' ३।१।१३७	२०६-२०६
		१३८	शतृ	'शतृ' ३।२।१२४	२ ४ ५ ११-१८
णिः	'णिच्' ३।१।२५	२८६ २९०	शानः	'शानच्' ३।२।१२४	२-१० १२ १४
णिनिः	'णिनिः' ३।१।१३४	१६८ १६६ २६२ २६३	शतिप्	'शतिप्' ३।३।१०८	४५४
		३।२।७८ २६४ २६७ २६८ ३२३	सक्	'कसः' ३।२।६०	२८६
		३२६	स्तुः	'गस्तुः' ३।२।१३६	३२१
ण्यत्	'ण्यत्' ३।१।१२४	१४६ १५५ १५६ १६०	स्तुक्	'गस्तुः' ३।२।१३६	३२०
		१६६-१७४ १७६ १८१-			
		१८३ १८६			

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य उणादिशब्द-समासान्त-तद्धित-प्रत्ययसूची

कतिपय-कृतप्रत्ययानां श्रीश्रीहरिनामामृत-
व्याकरणोक्त-संज्ञाः

अच्युताभौ—वर्तमानादौ शतृशानौ, 'सत्' इति
पाणिनिः (३।२।१२७)

अधोक्षजाभाः—परोक्षातीते क्वसु-कि-कानाः
(४।४५ ५।१६) पदात्मनेपदयोः ।

विष्णुकृत्याः— विध्याद्यर्थे तव्यानीय-यत्-वयप्
(४।६० ५।१५६) ण्यत्-केलिमा भाव-कर्मणोः,
'कृत्याः' इति पाणिनिः (३।१।६५)
कलापव्याकरणञ्च (४।२।४६) ल्याः
इति मुग्धबोध व्याकरणम् (६८६)
विष्णुनिष्ठा— अतीतादौ क्त-क्तवत्, निष्ठा इति
(४।४४ ५।२७) पाणिनिः (१।१।२६) कलाप-
व्याकरणञ्च (४।३।६३)

उणादिशब्दसूची

अवीः	५।३६८ तन्त्रीः	५।३६८ लक्ष्मीः	५।३६६
कारुः	५।५५६ तरीः	५।३६८ साधुः	५।३६६
गदयित्तुः	५।३७३ दूषयित्तुः	५।३७३ सेतुः	५।३६७
गृहयाय्यः	५।३७२ नन्दयन्तः	५।३७१ स्तनयित्तुः	५।३७३
गौः	५।३७५	स्तरीः	५।३६८
चक्षुः	५।३७४ मण्डयन्तः	स्त्रीः	५।३७०
जनयन्तः	५।३७१ मदयित्तुः	स्पृहयाय्यः	५।३७२

समासान्तसूची

अः	७।६४-११३ १५२-६३ अनिः	७।१६६-६८ इः	७।१६५
अः (केशवः)	७।११५-५१ असिः	७।१६४ कप्	७।१६६-७० १७२-७६

तद्धित-प्रत्ययसूची

[खः—ईनः, घः—इयः, छः—ईयः, ठः—इकः, टी—ईकः, ढः—एयः, ढकः—एयकः, फः—आयनः,
फिः—आयनिः, वुः—अकः । टित्—केशवः, टणित्—माधवः । के—केशवः, मा—माधवः, नृ—नृसिंहः]

अ	७।२४६ २६२ ३३२ ४७६ अक	१०३० १०५४ अकच्	८०५
	८५१ ६६८ १०१६ १०४७ अकिण्	२६० अच्	८६७-६८ ६०० ६०७
अण्	४६८ ४७६ ४६४ ५२६ ८१८ अतमच्	१०५४	
अतरच्	१०५३ इल ३६१ ६३६ ६४१ ६४६-४७	ख (नृ)	४२० ४४०-४१ ६६४
अतसि	१००१-२ १००४	६६२-६३	७२० ७८२-८३ ७६४ ८५३
अतिच्	८६४ इष्ठ	१०२०	८५६

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य तद्धित-प्रत्ययसूची

७६

अमच् (क)	६०१	ईक	७४३-४४	गोष्ठ	८७६
अय	८६५	ईन	६५६	गिमन्	६७४
अरि	६६६	ईमस	६५६	घ २८७ ३३४ ४१७ ७०१ ७८१	
असि	१०००	ईयसु	१०२२	७८३-६२४-२५	
आ	१००६	ईर	६५२	चन	८५८
आच्	११०८ १११०-१६	उ	६७३	चर (के)	१०१८
आट	६७५	उकण्	८१८	चुञ्चु	८५८
आनि	१००७	उपच्	१०५१	छ २७७-७८ ३३४ ३६१ ४१३-	
आमिन्	६७६	उर	६४८	१५ ४३६ ४४३ ४५० ४५३-५५	
आयन्य (मा)	२६५	ऊलु	६७१-७२	४८१ ५०४ ५१४-१५ ५१८	
आरण्	२७५	एण्य	४६६	५७३ ६१६ ७०१ ७०६ ७२१	
आल	६७५	एत्य	४३४	७२५-२६ ७५१ ८२३-२४ ८५०	
आलु	६७१	एन	१००८	६२२ १०६५-६६ १२७८-७६	
भावतुच्	८६२	एरण्	२७४ ७६	छ (के)	६०३
आविन्	६६६	एलु	६७१	छ (नृ)	२७६ ३८८ ५५३
आह (नृ)	४३५	क ३३१ ३८६ ४४७ ६२४ ७३१	जातीय	१०२६	
आहि	१०१०-११	३२ ७३५ ७६३ ६१०-२०	जाह	८७३	
इ (नृ)	२५६ २८३ २८६ २६७	१०१७ १०३०-४२ १०४६-५०	टच्	८८७	
	३०५ ४००	१०५६-५७ १०७३-७५ १०६३	टीट	८८०	
इक	७३३	६५ ११०१	ठ ३७१ ३६० ४७४ ५२० ६११		
इन	८८३	क (नृ)	४०२ ६२३	६१६ ६३६ ६६२ ६६७ ७३०	
इथ	६०५	कच्	७३५	७६०-६१ ७६३ ७६७ ८८०	
इन्	३४३ ३५८ ६२५ ६०३	कट	८८६ ८८१	६५७ ६५६ ६६१-६३ १०४४	
	६५६ ६७७ ६८०-८८	कड्य	३४२	१०६६ १०६४	
इन	८०६	कला	१०२६-२७	ठ (के)	३४६ ६१३-१४ ६१६
इनि	३६३ ५५८ ६२६ ८०५-६	किन्	१०४७	६३२ ६५२ ६६४ ७३६-३७	
	८१३ ६२३ ६२७-३० ६५७	कीय	४५२	७४० ७५७ ७६७ ७८७-८६	
	६५६-६० ६६३ ६७८	कुण्	८७२	८२७	
इनिच्	८८८	कृत्वमु	१०८१	ठ (नृ)	३४५ ४४४ १०६६-६८
इनेय (मा)	२७२ ७३	ख ३४१ ४१८-१६ ५१६ ६७६	ठ (मा)	२८१ ३०४ ३२६-३०	
इम	६२२	७१४-१५ ७४२ ७६६-६८	३४७-४८ ३७२ ४०३ ४४२		
इमच्	४७१	७६६-८०० ८५६-७१ १०७६-	४४४ ४५६ ४५८-५६ ४६२-६४		
इमनि	८३६-३८	७७ १०८६	४६८ ४८७ ४६५ ४६७ ५०८-		
ठी	२५२	ठी (नृ)	१०७०	१३ ५२२-२५ ५६८ ६०३-१०	
ठी मा)	६५६	ढ	१०६२	६१२ ६१४-१५ ६१८ ६२१	
ढ (मा)	२५४ २६६-७१ २७५-	ढक (मा)	४२१ ४२५ ५०६	६२५ ६२६-३१ ६३३-४४ ६५०-	
	७६ २७६ २८८ ३५३ ३७१	ण २५० ३८१-८२ ४३३ ४३६	५१ ६५३-५५ ६५७-५८ ६६०-		
	३६५ ४२६ ४८६ ५०५ ५८४	-३७ ४७७ ६८२ ६६५ ७१८	६१ ६६३ ६६५-६६ ६६८-७०		
	५६४ ६७५ ६६८ ७१६ ७२२	८१२ ६४२ १०१६ १०६७	७१६-१७ ७२७ ७४८-४६ ७५४		

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य-तद्धित-प्रत्ययसूची

८४३ ८५४ १०६१-६२	णिनि	५५४ ५५६-५७ ६२२	-५६ ७५८-५९ ७६२ ७६४ ७६६
ण (के) २४७ २६१ २६३-६५	ण्य	२४८ २८२ ३०३-४ ३०७	७६८-७० ७७४-७६ ७८४-८६
२६८ २७३ २६१ ३०६		३६६ ४०१ ५०७-८ ५७२	७९२-६३ ८०० ८०२-४ ८०८
३२८ ३३३-३४ ३३६ ३४६		६४१ ६६६ ७२३ ७६६-६७	८१० ८१५-१७ ८२०-२१ ८२७
३५३ ३५५ ३५७ ३५९ ३६०		८०७ १०८५ १०८७	८२१-२२ ८६४ १०६८-६९
३६२ ३६६-७२ ३७६ ३७८-	तन (के)	४३० ४३१ ४६६	१०८४ १०८३
८१ ३८३-८६ ४१६ ४२८	तम	६०७-६ १०२० १०५५	१०२१ १०८०
४३६ ४३८ ४४८ ४५५ ४५६	तय (के)	८६५	१०२२ १०५५
४६५ ४७३ ४८१ ४८५-८६	तगट्	१०५१-५२	१०२३ १०८०
४८८ ४९०-६२ ४९८-५००	तस्	६६४	५६१ ६६२ ११०२-५
५०६ ५१५-१६ ५२१ ५५१	ताति	७०५ १०००	३४० ८३१-३६ १०६२
५५६ ५६२-६४ ५६६-६७	ति	८७४	६०४
५७१ ५७४ ५७६ ५७८-८०	तीय	६०६	८७५
५८३ ५८७-६० ५९६ ६००	तन	४७१ १०८६	४२३-२४ ४३१-३२
६२० ६२७ ६४७ ६४६ ६५४	त्य (नृ)	४२७	८८२
६५६ ६६५ ६७७ ६६६ ७०३	त्र	६६३-६४	११२६-२७
७२४ ७३४ ७३८ ७४७ ७५२	त्व	८३१	६०२
-५३ ७६५ ८११ ८२२ ८२७	था	६६८	७६३
८४५-४६ ८४३-४७ १०६८-	दघन	८८४ ८५	६६६-६७
१०००	दानीम्	६६७	१०२६-२७
देश्य १०२६-२७	द्वयस	८८४-८५ ८६०	१०१२-१३ १०८२
धुना ६६७	धेय	१०६१	६४०-६१ ६५६
न (नृ) २५५ ८३४	नाट	८८०	८७७
पाश १०१५	पिञ्ज	३७५	३७५
फ ३०२-३	फ (मा)	२६३-६८ ४२८	२८६
फि (नृ) २८४-८६ ३०५ ६६६	भ	६६०	८८०
म ४६० ६५०	मनु	४०७-८ ६३० ६३३	४०६-४१०
मय (के) १०८३		६५८-६२ ६७६ ६८८	५८०-८२ ५८४ ५८६
मात्र ८८६-६०	मात्रट्	८८४-८५	८६६ १०८४
य २५६ २७८ २८० २८७-८८	ष (नृ) २५१-५२ २८३ ३०८	८६३	२६२ ३३४ ३३६
३३४ ३३८ ३४२ ३५४ ३७१	षतु	८६३	६८६
३६७ ४२० ४२६ ४५६-५८	र ३६४ ६४६ ६५६ १०५१	रूप	१०२४-२५
५०१-३ ५१६ ५२६ ५६१	रूप्य	१०१६	६६७
५६७ ५६५-६६ ६७२-७५	ल	६३३-३६ १०४१	६५१
६७६-८१ ६८३-६३ ६९६-७००	वति (वत्)	८२८-३०	५६६
७०२ ७०६-१२ ७३० ७४५-४७	बल	४१२ ६५३-५६	४११
७४६ ५१ ७६१ ७७६-७६ ७९४	बहु (प्राक्प्रत्ययः)	१०२८	११२० ११२२-२५
-६६ ८१२ ८१४ ८१६ ८१६	विन्	६४३	६६७
८२५ ८३६ ८४३ ८५६ ८६५	बु	३५० ४७५-७७ ५४८	३३७ ३५६ ३७७ ३८७
-६६ १०६३-६४ १०८५ १०८८		५६६ ८०६ १०७१-७२	४४० ४४५-४६ ४४६ ४७५

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य तद्धित-प्रत्ययसूचो

८१

श	६४०	शस्	११०७	४६३-६४ ४६६-६७ ५४६
शाकट	८५७	शाकिन	८५७	५६५ ५७०-७१ ५६३ ८४७-४६
षड्गव	८७६	स	३६२	समस् (नृ) ६६६
सा	११०१	साति	११२३-२६	सु १०८१
स्न (नृ)	२५० २३४	स्ना	११०१	

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणोल्लिखितानाम् इतरव्याकरणादिस्थित-
संज्ञाप्रत्ययादीनाम् अनुक्रमणी

अकः	१३ ७२४५	अ-कारः	१३७ ३८	अक्षराणि	१११
अग्निः	२३०	अघोषाः	१३२	अङ्	३८८
अच्	५१२००	अचः	१२	अट्	३५१
अण्	७२४७	अणः	११०	अत्	१३७
अद्यतनी	३७	अनुनासिकः	११५	अनुनासिकाः	१२५
अनुबन्धः	२१५	अनुस्वारः	११४	अन्त स्थः	१२७
अभिनिष्ठानः	११६	अभ्यस्तम्	३७४	अभ्यासः	३७४
अलः	११	अ-वर्णः	१३८	अव्ययीभावः	६२
आख्यातम्	३१२	आगमः	१४०	आङ्	५४४५
आट् वृद्धिः	३१०६	आत्मनेपदम्	३२०	आदेशः	१३६
आयनः	७२४५	आयनिः	७२४५	आर्द्धधातुकानि	३२३
आशीः	३६	आशीलिङ्	३६	इकः	१६
इचः	१८	इणः	१११	इत्	१३७ २१५
इयः	७२४५	ईकः	७२४५	ईनः	७२४५
ईयः	७२४५	उकः	११२	उपधाः	२८०
उपपदम्	५६८	उपसर्गः	३४२	उपान्तः	२८०
उष्माणः	१२८	एचः	११३	एयः	७२४५
एयकः	७२४५	क-कारः	१३७	कर्मधारयः	६२, ६
कर्मप्रवचनीयाः	४१०७	कित्	३१५	कु चु ङ तु पु	११६
कृत्याः	५१४६	क्यच्	३५१२	क्रियातिपत्तिः	३१२
खः	७२४५	खपः	१३३	खरः	१३२
ख्युनः	५१२६५	गतिः	२७५ ५८७	मुणः	२३२
घः	७२४५	घञ्	५३७६	घिः	२३०
घुः	३५४	घुट्	२८१	घुटः	२४४
घोषवन्तः	१३१	ङित्	३१६	चङ्	३१८६
चतुर्थाः	१२४	चपः	१२१	चर्करीतम्	३४६८
चिण्	३५८	चेक्रीयतम्	३४७७	छः	७२४५
छफः	१२२	जबः	१२३	झपः	१२६

भभः	११२४	भलः	११३०	जमः	११२५
टः	७१११४	टणित्	७१२४३	टाप्	७१२४४
टि	११७५	टिकण्	७१२८१	टित्	७१२४६
ठः	७१२४५	ठी	७१२४५	डः	५१२५८
डित्	२१३६	ढः	७१२४५	ढकः	७१२४५
णमुल्	५१६५	णिच्	३१४२३	णित्	३११४
ण्वल्	५११३६, १६४	तङ्	३१२०	तत्पुरुषः	६१२, ८
तद्राजाः	७१३१५	तिङ्	३११२	तुमुन्	५११३६
तृच्	५११६४	तृतीयाः	११२३	दाः	३१५४
दीर्घाः	११६	द्वन्द्वः	६१२ ११७	द्विगुः	६१२ ४८
द्वितीयाः	११२२	धुटः	११३०	नदी	२१७३
नपुंसकलिङ्गः	२१६	नामिनः	११८	निर्ह्रस्वाः	११५
निष्ठा	५१२७	पञ्चमाः	११२५	पञ्चमी	३१५
पदम्	२१७	परस्मैपदम्	३११६	परोक्षा	३१८
पित्	३११३	पुलिङ्गः	२१६	प्रगृह्यम्	११७२
प्रथमाः	११२१	प्रातिपदिकम्	२११	प्लुतः	११७
फः	७१२४५	बहुव्रीहिः	६१२ १०२	भम्	२१८८
भविष्यन्ती	३१११	मयः	११२०	यणः	११२७
रलः	१११८	रेफः	११३७	लङ्	३१६
लट्	३१३	लवः	१११४	लिङ्गम्	२११
लिट्	३१८	लुक्	११४१	लुङ्	३१७
लुट्	३११०	लुप	७१३६३	लृङ्	३११२
लृट्	३१११	लोट्	३१५	लोपः	११४१
ल्यप्	५१८५	ल्युः	५११६७	वर्गाः	१११६
वर्णाः	१११	वर्तमानाः	३१३	विधिलिङ्	३१४
विन्दुः	१११४	विभक्तिः	२११	विसर्गः	१११६
विसर्जनीयः	१११६	विसृष्टः	१११६	वुः	७१२४५
वृद्धः	७१२६३	वृद्धिः	२१४३	व्यञ्जानि	१११७
शरः	११२६	शलः	११२८	शित्	३११८
श्रद्धा	२१६३	श्वस्तनी	३११०	षाकन्	५१३४०
षिट्	११२८	ष्वुन्	५१२१२	संप्रसारणम्	३१२४४
संयोगः	११८२	सत्	५१२	सन्ध्यक्षराणि	१११३
सप्तमी	३१४	समानाः	११३	सम्बुद्धिः	२१२४
सर्व्वनामस्थानम्	२१८१	सर्व्वनामानि	२११६६	सर्वर्गः	११२०
सर्वर्णः	११२०	सर्वर्णम्	११४	सार्व्वधातुकानि	३१२०
सिच्	३१५२	सुटः	२१४४	सुप्	२१४
स्त्रीलिङ्गः	२१६	स्पर्शाः	१११६	स्यादयः	२१४
स्वराः	११२	हलः	१११७	हणः	११३१
ह्यस्तनी	३१६			ह्रस्वाः	११५

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्थ-संज्ञा-शब्दानां पाणिनीयादि-व्याकरणोक्त

संज्ञा-शब्दानाञ्च-भारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

श्रीश्रीहरिनामामृत व्याकरणस्थ संज्ञाः प्रकरण सूत्राङ्क- सहिताः	पाणिनि-कृता अष्टाध्यायी ६५० तम खृष्ट- पूर्वाब्ददेशीया	सर्ववर्माचार्य-कृतं कलाप-व्याकरणम्, कातन्त्रव्याकरणं वा(५० तम खृष्ट- पूर्वाब्दः १५० तम खृष्टाब्द-देशीयम्)	चन्द्रगोमि-कृतं चान्द्र व्याकरणम् (४५०-५०० तम खृष्टाब्द-देशीयम्)
---	--	--	---

१	२	३	४	५
अच्युतः (३।३)	वर्तमानकाले धातोः परं प्रयुज्यमानाः तिवादयोऽष्टादश विभक्तयः—तिप्, तस् अन्ति, सिप् थस् थ, मिप् वस् मस्, । ते आते अन्ते, से आथे ध्वे, ए वहे महे इति—लट्	वर्तमाने लट् (३।२।१२३)	वर्तमाना (३।१।२४)	वर्तमाने लट् (१।२।८२)
अच्युतादिः (३।१२)	अच्युत-विधि-विधातृ-भूतेश्वर भूतेशाधोक्षज-कामपाल-बालकल्कि कल्कयजितनामानो दश लकाराः ।	तिङ्	आख्यातम्	
अच्युताभौ (५।२)	वर्तमानादौ शतृशानौ कलान्तर- प्रयोगे परस्मै पदात्मनेपदयोः	तौ (—शतृ-शानचौ) सत् (३।२।१२७)		शतृ(१।१।८४) शानच् १।२।८६
अजितः (३।१२)	यत्र साकाङ्क्षं क्रियाया अनिष्पत्तिः निर्दिश्यते तत्र कार्य्य कारण बोधक वाक्ययोर्भूते भविष्यति च धातोः परं प्रयुज्यमानाः स्यदादिका अष्टादश विभक्तयः—स्यत् स्यताम् स्यन्, स्यस् स्यतम् स्यत्, स्यम् स्याव स्याम । स्यत स्यताम् स्यन्, स्यथास् स्येथाम् स्यध्वम्, स्ये स्यावहि स्यामहि इति—लृङ्	लिङ्-निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ (३।३।१३६)	द्यानीनि क्रियातिपत्तिः (३।१।३३)	लिङ्यतिपत्तौ लृङ् (१।३। १०७)
अधिकरणम् (४।६६)	कर्तृकर्मणोराधाररूपं कारकम्	आधारोऽधिकरणम् (१।४।४५)		सप्तम्याधारे (२।१।८८)
अधोक्षजः (३।८)	परोक्षानीतकाले धातोः परं प्रयुज्यमानाः णलादयोऽष्टादश विभक्तयः—णल् अतुस् उस्, थल् अथुस् अ, णल् व म । ए आते इरे, से आथे ध्वे, ए वहे महे इति—लिट्	परोक्षे लिट् (३।२।६१५)	परोक्षा (३।२।२६)	परोक्षे लिट् (१।२।८१)
अधोक्षजाभाः (४।४५ ५।१६)	परोक्षानीतकाले परस्मैपदात्मनेपदयोः प्रायश्छान्दसाः क्वमु-कि-कान प्रत्ययाः			
अनन्ताः (१।१०)	अ आ इ ई उ ऊ	अण् शिव सूत्रम्-१		अण् प्रत्याहार सूत्रम्-१
अपादानम् (४।७५)	अपायादिषु क्रियाषु माध्यासु यदवधिभूत तत् कारकम् ।	ध्रुवमपायेऽपादानम् १।४।२४		अवधे पञ्चमी २।१।८१

हेमचन्द्र-कृतं सिद्धहेम शब्दानुशासनम् १०८८-११७२ तम खृष्टाब्दः	अनुभूतिस्वरूपाचार्य कृतं सारस्वत व्याकरणम् (१२००-२५०० तम खृष्टाब्द देशीयम्)	वोपदेव-कृतं मुग्धबोध व्याकरणम् १२००-१२५० तम खृष्टाब्द देशीयम्	क्रमदीश्वर कृतं संक्षिप्तसार व्याकरणम् १२००-१२५० तम खृष्टाब्द देशीयम्	पद्मनाभदत्तकृतं सुपद्य-व्याकरणम् १३००-१३५० तम खृष्टाब्द देशीयम्
---	--	---	--	--

६ वर्तमाना तिव्—महे ३।३।६	७ वर्तमाने तिव् महे उत्तरार्द्धम् १।७	८ की खी गी घी टी ठी डी ढी- तीथ्योऽष्टादशशः (५२६)	९ धातोस्तिङ् तस् अन्ति—ए वहे महे —लङ् वर्तमाने तिङन्तपादः १	१० वर्तमाने लट् ३।२।१६ लट् लृटोस्तिप् महे ३।२।७६
---------------------------------	---	--	---	--

क्रियातिपत्तिः स्यत् स्यामहि ३।३।१६	स्यप् क्रियातिक्रमे उ० १।४२ लृङ्	थीः—की —तीथ्यो ऽष्टादशशः ५२६	लङ्-लृङ् वत् कृत् शतृ शानौ कृदन्तपादः १ लङ् लृङ् लिङ् हेतौ लिङ् निमित्ते कृत्यानिष्पत्तौ भूते लृङ् च तिङन्तपादः ८४२	क्रियातिपत्तौ ३।२।४८ लुङ् लङ् लृङां दिप् महि ३।२।८५
--	-------------------------------------	---------------------------------	--	--

क्रियाश्रयस्याधारी ऽधिकरणम् २।२।३० परोक्षा एव—महे ३।३।१२	आधारे सप्तमी पूर्वार्धे १।७।१० इत्यस्य वृत्तौ परोक्षे णप् महे उ० १२७—लिट्	कालभावाधारं डं मी ३०६ टी अष्टादशशः ५२६	वैषयिकाद्यधिकरणम् आधारेऽधि- कारकपाद- ३५ करणम् २।१।२१ अण् महे लिङ् परोक्षे लिट् भूतानद्यतन परोक्षे ३।२।२४ लिटो तिङन्तपादः ७६३ णल् महे ३।२।८१ अण सन्धिपादः १ अण् १।१।१	अपायेऽवधिरपादानम् ३।२।२६	विश्लेषावधौ पञ्चमी पूर्व १।७।८ इत्यस्य यतोऽपाय-भी जुगुप्सा पराजय प्रमादादान भू-त्राण विरामान्तद्धि-वारणं जं पी (२६६)	चलत्प्राग्- भूरपादानम् कारकपादः २६	अवधिरपायादिष्व पादानम् २।१।२०
---	--	---	---	-----------------------------	--	--	----------------------------------

संज्ञाशब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

८५

१	२ (संज्ञा विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
अव्ययम् (२१६ २१७)	(१) अलिङ्गः शब्दः अभीष्ट श्रीभगवदंशस्य ब्रह्मणो वाचत्वादस्याः	स्वर्गादिनिपातमव्ययम् (१११३७)		
	संज्ञायाः श्रीभगवन्नामता सिद्धा । (२) वाचक द्योतक भेदाद् द्विविधं स्वरादि चादि वदादि तद्धिताः क्त्वा मान्तश्च कृत् ।			
अव्ययीभावः (६१२ १५१)	समासभेदः अभीष्ट श्रीभगवदंशस्य ब्रह्मणो वाचकत्वादस्याः संज्ञायाः श्रीभगवन्नामता	अव्ययीभायः २११५ अव्ययं	पूर्वं वाच्यं भवेद्यस्य सोऽ	
		विभक्ति साकल्यान्त वचनेषु २११६	व्ययीभाव इष्यते २१११४	
आत्मपदानिः ३१२०	अच्युतादि दश यूथेषु तिवादि नवनवानामुत्तरोत्तराणि ते आते अन्ते इत्यादीनि, आत्मनेपद-संज्ञकानि ।	तडानावात्मनेपदम् ११४१००	नव पराण्यात्मने ३११२	तड्— तडाना यथा पाठम् ११४१४६
आदिवृष्णीन्द्रः ७१२६३	आ ऐ औ कारा यस्यादिस्वराः तद्यदादयश्च ।			
इत् (२१५)	उच्चारणार्थचिह्नार्थो विध्यादिनिमित्तश्च अनुबन्धः । एति गच्छति न तिष्ठतीति इत् ।			
ईशाः (११६)	इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ।	इक् शिवसूत्रे १-२	इक् प्रत्याहार सूत्रे १-२	
ईश्वराः ११८	अ आ वर्जिताः स्वरवर्णाः इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ ओ औ ।	इच् शिवसूत्रानि १-४	स्वरोऽवर्णद्वयौ नामी १११७	इच् प्रत्याहार सूत्राणि १४
उद्धवः (२१८०)	शब्दस्य अन्त्यवर्णात् अव्यवहितपूर्ववर्णः उपधा १११६५	अलोऽन्तात् पूर्व उपधा २११११	अन्त्यात् पूर्व उपधा २११११	
उपेन्द्राः (३१४२)	धातोः पूर्व प्रयुक्ताः प्रादयो विंशतिः उपसर्गाः प्र परा अप् सम् अनु अव निर् दुर् अभि वि अभि सु उत् अनि नि प्रणि परि अपि उप आङ् ।	प्रादय उपसर्गाः क्रियायोगे गतिश्च (१-४१५८-६०)		
एकात्मकः (११४)	स्वरवर्णेषु आदिम दश वर्णानां मध्ये क्रमेण द्वौ द्वौ वर्णौ प्रत्येकं एकात्मकौ सवर्ण संज्ञौ च ज्ञेयौ	तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम् १११६	तेषां द्वौ द्वावन्योऽन्यस्य सवर्णौ (१११४)	
कंसारिः (३११७)	क् इत् ड् इत् च आख्यात प्रत्ययः			
कपिलः (३११५)	क् इत् आख्यातप्रत्ययः			
करणम् ४११००	कर्त्रधीन प्रकृष्टसहायरूपं कारकम्	साधकतमं करणम् ११४१४२		करणे २११६३
कर्त्तृ ४११३	स्वतन्त्रं तत्प्रयोजकश्च कारकम् ।	स्वतन्त्रः कर्त्ता ११४१५४		कर्त्तरि तृतीया २११६२

६ (सिद्धहेम)	७ (सारस्वत)	८ (मुग्धबोध)	९ (संक्षिप्तसार)	१० (सुपद्य)
स्वरादयोऽव्ययम् तदव्ययम् पू० ५११०	स्वरादि-नि-चित्त्यं लिङ्ग संख्या विनिष्मुक्तात्	स्वरादि-नि-चित्त्यं लिङ्ग संख्या विनिष्मुक्तात्	स्वरादि-नि-चित्त्यं लिङ्ग संख्या विनिष्मुक्तात्	स्वरादि चादि
१११३०	व्यम् ६४	सुः पदत्वार्थमव्ययात्	कारकपादः ५६	वदादि तद्धित
चादयोऽसत्त्वे १११३१				क्त्वा मान्तकृद
गतिः १११३६				व्ययम् १११२५
तत्त्वादाय मिथस्तेन पूर्वोऽव्ययेऽव्ययीभावः	वः भिन्नान्यकार्थं समुद्धानावव्ययस्या	वः भिन्नान्यकार्थं समुद्धानावव्ययस्या	वः भिन्नान्यकार्थं समुद्धानावव्ययस्या	अव्ययीभावः
प्रहृत्येति मरूपेण पू० १८१२	द्व्यादि-संख्या	द्व्यादि-संख्या	द्व्यादि-संख्या	४१३३
युद्धेऽव्ययीभावः ३११२६	व्यादीनां च-ह-य-	व्यादीनां च-ह-य-	समासपादः ५७	
	ष-ग-वाः ३१८	ष-ग-वाः ३१८		
पराणि कानानासौ	मः नवशः पमे	नवशः परस्मायात्मने	परार्द्धमाणश्चा-	
चात्मनेपदम् ३१३२४	त्रितोऽन्यङिद्भ्यां	नडादौ तिङन्तपादः	त्मनेपदं तङ् च	
	घे ५३१	१४	३१२८६	
आदिस्वरस्य ऋणिति			णिति वृद्धिरचा	
च वृद्धिः पू ६२१२			मादेः ५११२	
इत् अप्रयोगीत् १११३७	इत् काय्ययित् पू० ११८	इत् कृते ४	चिह्नार्थं मित् २१३१०	
		इक् ३	इक् सन्धिपादः १	इक् ११११
अनवर्णा नामी १११६	अवज्जर्जा नामिनः पू० ११५	इच् (३)	इच् सन्धिपादः १	इक् ११११
	अन्त्यात् पूर्व उपधा	उङ्ः पूर्वोऽ	उपधोपान्त्यः	
	पू० ११६	न्त्यादुङ् ६१	१११२६	
धातोः पूजार्थं स्वति	प्रादिरुपसर्गः	प्र-पराप-सं न्यवानु	उपसर्गाद्बहो ह्रस्वः प्रादुचपसर्गः	
गतार्थाधि पर्यतिक्रमार्थाऽ	पू ११५	निदुर्व्यधि सूत् परि	तिङ्-तपादः ६०७	प्रागधातोः
तिवर्जः प्रादिरुपसर्गः		प्रत्यभ्यत्यप्युपाङ्		१११२७
प्राक् च ३१११		गिः १०		
तुल्यास्थानस्य प्रयत्नः	ह्रस्व दीर्घ प्लुतभेदाः	अपोऽक् समो ण	वर्ग्यस्वरी	
स्वः ११११७	स्ववर्णाः पू ११२	ऋक् च ६	सजातीयो सवर्णो	
			११११५	
		कित् ठी ढीपम्	असंयोगादलित्तिट्	
		५३३	कित् ३१२३	
साधकतमं करणम् २१२२४	साधकतमं करणम् पू० १७१२६	साधन हेतु विशेषण	क्रियातिसाधनं	साधकतमं
		भेदकं धं कर्त्ता	करणं कारक	करणम् २११६
		घस्त्री २८८	पादः १६	
स्वतन्त्रः कर्त्ता २१२१२	स्वतन्त्रः कर्त्ता पू० १७१२८	घः साधन हेतु	क्रियामुख्यप्रयोजको	स्वतन्त्र तत्-
		विशेषण भेदकं धं	कर्त्ता कारकपादः १	प्रयोजको
		कर्त्ता घस्त्री २८८		कर्त्ता २११२

संज्ञा-शब्दानाञ्च-भारतम्-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

८७

१	२ (संज्ञा-विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
कर्म (४।१७)	क्रिया यस्य साधनार्थं प्रवर्तते तत् कारकम् ।	कर्तृरीप्सिततमं कर्म १।४।४६		क्रियाप्ये द्वितीया २।१।४३
कल्किः ३।११	भविष्यत्काले वाच्ये धातोः परं प्रयुज्यमानाः स्यत्यादयोऽष्टादश विभक्तयः—स्यति स्यतस् स्यन्ति, स्यसि स्यथस् स्यथ, स्यामि स्यावस् स्यामस् स्यते स्येते स्यन्ते, स्यसे स्येथे स्यध्वे, स्ये स्यावहे स्यामहे इति—लृट् ।	लृट् शेषे च ३।३।१३	स्यसंहितानि त्यादीनि भविष्यन्ती ३।१।३२	भविष्यति लृट् १।३।२ शेषे लृट् १।३।११६
कामपालः ३।६	आशिषि धातोः परं प्रयुज्यमाना यात् यास्तामित्यादयोऽष्टादश विभक्तयः यात् यास्ताम् यासुस्, यास् यास्तम् यास्त, यासम् यास्व यास्म । सीष्ट सीयास्ताम् सीरन्, सीष्ठास् सीयास्थाम् सीध्वम्, सीय सीवहि सीमहि —इति आशीलिङ् ।	आशीलिङ् आशिषि लिङ् लांटी ३।३।१७३ लिङाशिषि ३।४।११६	आशीः (३।१।३१)	
कारकम् ४।१०	क्रियायाः कर्तृत्वादिसम्बन्धविशेषो यत्र विवक्ष्यते तत् कारकम् ।	कारके १।४।२३		
कृष्णः २।११	अकारान्तः पुंलिङ्ग शब्दः			
कृष्णधातुकाः ३।२२	अच्युत विधि विधातृ भूतेश्वर भूतेश नामानः पञ्च लकाराः लट् विधिलिङ् लोट् लङ् लुङ् श् इन् प्रत्ययाश्च ।	तिङ् शित् सार्व्व धातुकम् ३।४।११३	षडाद्याः सार्व्व धातुकम् ३।१।३४	
कृष्णनामानि २।१६६	सर्वादीनि कृष्णनामानि	सर्वादीनि सर्व्व नामानि १।१।२७		
कृष्णपुरुषः ६।२, ८	तत्पुरुष-समासः	तत्पुरुषः २।१।२२		विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु समास्यन्ते समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुषः स च (२।१।८)
कृष्णप्रवचनीयाः ४।१०७	कर्मप्रवचनीयाः—लक्षण वीप्सेत्यम्भूतार्थेषु अभिः लक्षणाद्यर्थेषु भागे च परि प्रती लक्षणादिषु चतुर्षु सहार्थे च अनुः उपश्च, एतैर्योगे द्वितीया विभक्तिः स्यात्	कर्मप्रवचनीयाः १।४।८३ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया २।३।८		
कृष्णस्थानम् २।८१	क्लीब लिङ्ग शब्दस्य जस् विभक्तिः शस् विभक्तिश्च पुंलिङ्ग शब्दस्य स्त्रीलिङ्ग शब्दस्य च सुं औ जस् अम् औ इति पञ्च विभक्तयः ।	शि सर्व्वनाम स्थानम् १।१।४२	पञ्चादौ घुट् जस् शसौ नपुंसके २।१।३-४	

८८

संज्ञा-शब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६ (सिद्धहेम) कर्तुर्वाप्य कर्म २।२।३	७ (सारस्वत) शेषाः कार्ये कर्तुं सः धनयोर्दानपात्रे विश्लेषावधौ सम्बन्ध आधारभावयोः पू० १७।४ इत्यस्य वृत्तौ	८ (मुग्धबोध) कर्म क्रियाविशेषणा भिनिविशाभिशीङ् स्थासन्वध्युपा वस-ङ् ढं द्वी २८१	९ (संक्षिप्तसार) तत्समुद्दिष्टं कर्म कारकपादः २	१० (सुपद्य) क्रियाव्याप्यं कर्म २।१।३
भविष्यन्ती स्यति स्यामहे ३।३।१५	त्यादौ भविष्यति स्यप् उ० १।४।१ लट्	ती अष्टादशशः ५।२६	लट् लृट् स्यङ् च तिङन्तपादः ८३६	भविष्यति लृट् ३।२।३१ लट् लृटोस्तिप् महे ३।२।७६
आशीः क्वात् सीमहि ३।३।१३	आशिषि यात् सीमहि उ० १।३।७ लिङ्	ढी अष्टादशशः ५।२६	यात् यास्तां यासुस् सीय सीवहि सीमहिङाशिषि २।६८८	आशिषि लोङ् लोटी ३।२।७२ लोडो यात् सीमहिङ् ३।२।८७
क्रियाहेतु कारकम् २।२।१	क्रियासिद्धयकारकं कारकम् पू० १७।१ इत्यस्य पादटीकायाम्	संज्ञाः कम् ३१६	कारके २।१।१ इत्यस्य वृत्तौ	
		पञ्च रः शिचच् ५३०	शिल्लट् लोट् लिङ् लङ् सार्व्व धातुकम् ३।२।१७	
		स्त्रिः ८६	सर्वादिः सर्व्वनाम स्याद्वाल्पादिर्जसि नान्यतः तियश्च डिति पूर्वादिर्डसि ङ्चोर्व्वान्यतः सदा सुबन्तपादः २६३	सर्वादीनि सर्व्व- नामानि स्वार्थेऽसंज्ञायाम् २।४।१
गतिवचन्यस्तत्पुरुषः ३।१।४२	अमादौ तत्पुरुषः पू० १८।११	ष—३१८	तत्पुरुषो वा नञ् समासः समासपादः १	तत्पुरुषः ४।३।१६
शिर्घुट् पुं स्त्रीयोः स्यमौजस् १।१।२८-२९		स्यमौजस् धिः शिः वलीवे ८१-८२	शिः सुट् चावलीवस्य सादिस्थानम् २।३।६	

संज्ञा-शब्दानाञ्च-भारतस्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

८६

१ (संज्ञा-विवरणानि) २ (पाणिनि) ३ (कलाप) ४ (चान्द्र)

केशवः ट् इत् तद्धित प्रत्ययः

७।११४ २४६

केशव-णः ७।२४८ अण् तद्धित प्रत्ययः

गोपालाः वर्गणां तृतीया चतुर्थ पञ्चम वर्णा
१।३१ य र ल वा ह्रस्व—ग घ ङ, ज भ
ज, ङ ण, द ध न, व भ म,
य र ल व ह ।

हश् शिव-सूत्राणि
५-१०

घोषवन्तोऽन्ये
१।१।१२

हश् प्रत्याहार
सूत्राणि ५-६

गोपी
२।७३ ७५

गोविन्दः
२।३२

ई-ऊ-कारान्ता नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दाः यू स्त्र्याख्यौ नदी
१।४।३
इ-द्वयस्य ए, उ-द्वयस्य ओ, ऋ-द्वयस्य अदेङ् गुणः
अर्, लृ-द्वयस्य अल्—गुणः । १।१।२

ईद्वत् स्त्र्याख्यौ
नदी २।१।६
अर् पूर्व्वे द्वे
सन्ध्यक्षरे च
गुणः ३।८।३४
चर्करीतम्

चक्रपाणिः अदादि गणो परस्मैपदिषु पठिता
३।४६८ यङ्लुगन्ता धातवः ।

यङ्लुगन्तः

चतुःसनाः इ ई उ ऊ
१।११

इण् शिवसूत्रम् १

इण् प्रत्याहार
सूत्रम् १

चतुर्भुजाः उ ऊ ऋ ऋ लृ लृ
१।१२

उक् शिवसूत्रे १-२

उक् प्रत्याहार
सूत्रे १-२

चतुर्व्युहाः ए ऐ ओ औ
१।१३

एच् शिवसूत्रे ३-४

एकारादीनि
सन्ध्यक्षराणि
१।१।८

एच् प्रत्याहार
सूत्रे ३।४

त्रिरामी ६।२, ४८ द्विगुसमासः

द्विगुञ्च २।१।२३
संख्यापूर्व्वो द्विगुः
२।१।५२

संख्यापूर्व्वो द्विगुरिति
ज्ञेयः २।५।६

संख्यादिः
समाहारे
२।२।७६

त्रिविक्रमः एकैकवर्णानां परपरो
१।६ ८० वर्णः दीर्घो गुरुश्च ।

उकालोऽज् ह्रस्व
दीर्घ-प्लुतः १।२।२७
संयोगे गुरुः दीर्घश्च
१।४।११-१२

परो दीर्घः
१।१।६

दशावताराः स्वर वर्णेषु आदौ दश वर्णाः
१।३ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऋ लृ लृ

अक् शिवसूत्रे
१-२

दश समानाः
१।१।३

अक् प्रत्याहार
सूत्रे १-२

दामोदरः दाप्-दैप्-दीङो विना दा धा
३।५४ रूपा धातवः ।

धुः दा धा ध्वदाप्
१।१।२०

अदाक् दाधौ
दा ३।१।६

द्वयम् निदिश्यमानैकात्मकवर्णस्य आदिद्वय
१।३८ वाचकम् अस्याः संज्ञाया लक्ष्मी
नारायण-वाचित्वाद् भगवन्नामता

अणुदित् सवर्णस्य
चा प्रत्ययः १।१।६६

उता सवर्णः
१।१।२

८०

संज्ञाशब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६ (सिद्धहेम)

७ (सारस्वत)

८ (मुग्धबोध)

९ (सक्षिप्तसार)

१० (सुधा)

अन्यो घोषवान्
११११४

हव् (३)

खरुज्जितो हल्
हश् १११११

गुणोऽरेदात्
३।३।२
व्यञ्जनादेरक
स्वराद्भृशा
भीक्षये यङ् वा
३।४।६

अरेदोन्नामिनो
गुणः पू० ११६

यूत् स्त्र्येव दी
(६६)

इडोऽरलेङ्
गुः ८

इक एङरलो गुणः
सन्धिपादः ६६

हलाद्येकाचोऽशुभ्
रुचोऽशादेश्च
भृशाभीक्षययोर्यन

यन्लुग् वा ङिङलि
चतुर्ष्वीङ् च तिङन्तपादः
५३७, ५६५

स्त्री स्त्रीयूचानि-
युवो नदी २।३।८

एङरलो गुण इकः
१११२२

यङो लुग् बहुलं
प्रकृतिवत्
परस्मैपदी च
३।१।२१

ए ऐ ओ औ सन्ध्य
अरम् १११।८

ए ऐ ओ औ
सन्ध्यक्षराणि
पू० १।३।१

उक् ३
एच् ३

इण् सन्धिपादः १
उक् सन्धिपादः १
एच् सन्धिपादः १

इण् ११११
उक् ११११
एच् ११११
सन्ध्यक्षराणि
वर्ग्यस्वरो

संख्या समाहारे च
द्विगुश्चानामन्यम्
३।१।६६

संख्यापूर्वो द्विगुः
पू० १।८।१७

ग (३१८)

तद्धितार्थे समाहारे
द्विगुः संख्यायाः
समासपादः ११६

११११५ इत्यस्य वृत्तो
द्विगुः संख्या तद्धितार्थे
समाहारयोः ४।३।७१

ह्रस्व दीर्घ प्लुत भेदाः
सवर्णाः पू० १।२
विसर्गानुस्वार
संयोगपरो दीर्घश्च
गुरुः पू० १।२१

र्धः—आ वत् स्व
र्ध प्लु—५
रुः—स्वर्धो
धुरु (५३६)

गमिणोर्णो दीर्घः
सन्धिपादः ३५

दीर्घो गुरुः १११११७
ह्रस्वश्च संयोगे
११११८

लृ दन्ताः समानाः
१।१।७

अ इ उ ऋ लृ
समानाः पू० १।१
दा-धा दा ५३४

अक् (३)

अक् सन्धिपादः १

अक् ११११

अवौ दाधौ दा
३।३।६

धुः—दा धा धुरप्
१११२३

संज्ञाशब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६१

१	२ (संज्ञा विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
धातुः २।१ ३।१, १५०, २२०	भू सत्तायामित्यादयः सनादि प्रत्ययान्ताश्च एतत् संज्ञाः	भूवादयो धातवः १।३।१ सनाद्यन्ता धातवः ३।१।३२	क्रियाभावो धातुः ३।१।६	
नरः ३।७३	द्विरुक्तस्य धातोः पूर्वभागः ।	पूर्वोऽभ्यासः ६।१।४	पूर्वोऽभ्यासः ३।३।४	
नाम २।१	धातु विभक्ति हीनमर्थयुक्तं शब्दरूपम् ।	अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् १।२।४५	धातु विभक्ति वर्जमर्थवत्लिङ्गम् २।१।१	
नारायणः ३।७४	द्विरुक्तस्य धातोर्द्वितीयभागः ।	उभे अभ्यस्तम् ६।१।५	द्वयमभ्यस्तम् ३।३।५	
निपाताः २।२।१८	चादयोऽव्ययशब्दाः ।	प्राग्विभक्त्यनिपाताः चादयोऽसत्त्वे ५।१।५६-५७		
निर्गुणः ३।१६	ङ् इत् आख्यात प्रत्ययः ।	ङिच्च १।१।५३		ङित् १।१।११
नृसिंह ३।१४	ण् इत् आख्यात प्रत्ययः ।			
परपदानि ३।१६	अच्युतादि दश यूथेषु निवादि नवनवानां पूर्व-पूर्वाणि तिप् तस् अन्ति इत्यादीनि परस्मैपदसंज्ञकानि ।	लः परस्मैपदम् १।४।६६	अथ परस्मैपदानि ३।१।१	
पाण्डवाः २।४४	नाम्नः परे प्रयुज्यमानाः सुं औ जस् अम् औ इति पञ्च विभक्तयः	सुट्—सुडनपुं सकस्य १।१।४३	पञ्चादौ घुट्, जस् शसौ नपुंसके २।१।३-४	
पीताम्बरः ६।२, १०२	बहुव्रीहि समासः	शेषो बहुव्रीहिः अनेकमन्यपदार्थे २।२।२३-२४	स्यातां यदि पदे द्वे तु यदि वा स्युर्बहुव्रीहिः तान्यन्यस्य पदस्यार्थे बहुव्रीहिः विदिक् तथा २।५।६-१०	अनेक मन्यार्थे २।२।४६
पुरुषोत्तमः २।६	पुंलिङ्ग शब्दः ।			
पृथुः ३।१३	प् इत् आख्यात प्रत्ययः ।			
प्रकृतिः २।२	यस्या परं प्रत्ययः प्रयुज्यते सा— नामधातुभेदाद्विविधा ।			
प्रत्ययः २।३	प्रकृते परं प्रयुज्यमानः स्वाद्याख्यात कृत्तद्धितभेदाच्चतुर्विधः			
प्रभुः ३।२	केवलाधिकारः			

संज्ञा-शब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६ (सिद्धहेम)	७ (सारस्वत)	८ (मुग्धबोध)	९ (संक्षिप्तसार)	१० (मुपद्म)
क्रियार्थो धातुः ३।३।३	धातोः भ्वादिः उ० १।१, २	धुः—भ्वादिर्धुः (११)	भ्वादि दशगणा निङ् सनाद्यन्ताश्च धातवः तिङन्तपादः २	भूवादि सनाद्यन्ता धातवः ३।१।४६
		खिः—द्वेः पूर्वः खिः ५३८		पूर्वोऽभ्यासः ३।४।११
अधातु विभक्ति वाक्य मर्थवन्नाम १।१।२७	अविभक्ति नाम पू ७।२ धातु प्रत्ययातिरिक्तमर्थव च्छब्दरूपं लिङ्गम् पू० १७।१ इत्यस्य वृत्तौ	लिः—क्तयन्तान्यौ दली १४		अधातु विभक्त्यर्थ वत् प्रातिपदिकम् २।२।१
		द्विः—द्विरुक्त- जक्षादी द्विः १७४		द्विरुक्त जक्षादि षट् केऽभ्यस्तम् ३।४।१२
	चादिर्निपातः पू० १५।१	निः—चादिर्गि निः १६		निपाताश्चादयोऽ सत्त्वे १।१, २६ ङिदपिल्लुङ् सार्वधातुकेम् ३।२।१
नवाद्यानि शतृ क्वसू च परस्मैपदम् ३।३।१६	नव परस्मैपदानि उ० १।६	प— नवशः पमे त्रितोऽन्य डिङ्ग्यां वे ५३१	नवशः परस्मायात्मने लडादौ लिङन्त- पादः १४	लस्तिङि पूर्वार्द्धं शतृक्क्वसू च परस्मैपदम् ३।२।८८
शिर्घुट् १।१।२८ पुंस्त्रियोः स्यमोजस् १।१।२६		धिः—स्यमोजस् धिः (८१)		शिः सुट् चाक्लीवस्य सादि स्थानम् २।३।६
सुज्वार्थे संख्या संख्येये संख्याया बहुव्रीहिः ३।१।१६	बहुव्रीहिरन्यार्थे पू० १८।१६	—ह— (३१८) अन्यपदार्थो बहुव्रीहिः समासपादः १२२		अनेकमन्यार्थे बहु व्रीहिः ४।३।७२

ह्यः—परस्त्यः
(१४)

सुवाद्या प्रत्ययाः
परे २।२।२

संज्ञा-शब्दानाञ्च-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६३

१	२ (संज्ञा-विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
चलाः ११८	य-व वज्जिता व्यञ्जनवर्णाः	रल् शिवसूत्राणि ५-१४	रल् प्रत्याहार सूत्राणि ५-१३	रल् प्रत्याहार सूत्राणि ५-१३
बालकल्किः ३१०	अर्हार्थेऽनद्यतन भविष्यत्काले च वाच्ये घातोः परं प्रयुज्यमानास्तादयोऽष्टादश	अनद्यतने लुट् ३१११५	श्वस्तनी ३११३०	अनद्यतने लुट् १३३३
	विभक्तयः—ता तारौ तारस्, तासि तास्थस् तास्थ, तास्मि तास्वस् तास्मस् । ता तारौ तारस् तासे तासाथे ताध्वे, ताहे तास्वहे तास्महे इति—लुट्			
बुद्धः २१२४, ८२	सम्बोधनैकवचने 'सु' विभक्तिः	एकवचनं सम्बुद्धिः २११४६	आमन्त्रिते सिः सम्बुद्धिः २११५	
ब्रह्म (२१६)	नपुंसकलिङ्गः शब्दः			
भगवान् २१८८	कृष्णस्थानेतर स्वरास्तद्धिते यश्च	भ—यचि भम् ११४१८		
भूतेशः ३१७	अतीतकाले वाच्ये घातोः परं प्रयुज्यमानाः दिवादयोऽष्टादश विभक्तयः दिप् ताम् अन्, सिप् तम् त, पम् व म ता आताम् अन्त, थास् आथाम् ध्वम्, इ वहि महि इति—लुङ्	लुङ् ३१२११०	अद्यतनी एव मेवादद्यतनी ३११२८	लुङ् ११२१७६
भूतेश्वरः ३१६	अनद्यतनातीतकाले घातोः परं प्रयुज्यमानाः दिवादयोऽष्टादश विभक्तयः—दिप् ताम् अन्, सिप् तम् त, पम् व म । त आताम् अन्त, थास् आथाम् ध्वम्, इ वहि महि इति—लङ्	अनद्यतने लङ् ३१२१११	ह्यस्तनी ३१२२७	अनद्यतने लङ् ११२१७७
महापुरुषः ११७, ७४	दूराद्वाने गाने रोदनादौ च प्रसिद्ध- स्त्रिमात्रत्वेनोच्चार्यमाणो वर्णः प्लुत संज्ञश्च ।	ऊकालोऽज् ह्रस्व दीर्घ-प्लुतः ११२१२७		
महाहरः ११४१, २१६	अत्यन्तिकलयहेतुः लुक्	प्रत्ययस्य लुक् श्लु-लुपः १११६१		
माधवः ७१२४६	ट् इत् ण् इत् च तद्धित प्रत्ययः			
माधव ठः ७१२८१	टिकण् (तद्धित प्रत्ययः)			
यदुः २१२७	शसादयः सुवन्ताः षोडश स्वादि विभक्तयः—शस्, टा भ्याम् भिस्, डे भ्याम् भ्यस्, डसि भ्याम् भ्यस्, डस् ओस् आम्, डि ओस् सुप् इति ।			

८४

संज्ञा-शब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६ (सिद्धहेम)

७ (सारस्वत)

८ (मुग्धबोध)

९ (संक्षिप्तसार)

१० (सुपदा)

श्वस्तनी ता तास्महे ३।३।१४
श्वस्तने ता तास्महे
उ० १।४० लुट्

धिः—आमन्त्रणे
सिधिः पू० ७।२०

डी अष्टादशशः
५२६

धिः—सम्बुद्धौ
सिधिः ८०

ताङ् तास्महे लुङ्
भाविन्यनद्यतने

तिङन्तपादः ८३१

ह्रस्वैङ्भ्यां सोः
सम्बुद्धौ सुवन्तपादः
(५)

अनद्यतने लुङ्
३।२।३२ लुट्स्ता

तास्महे ३।२।८४

सम्बोधनैकवचनं
सम्बुद्धिः २।२।६

पिः अद्यच्

ताच्येप् पिः १००

भ यचि

भमसादिस्थाने

२।३।५

अद्यतनी दि महि
३।३।११

भूते सिः उ०
१।४४ लुङ्

टी अष्टादशशः
५२६

लुङ् सङ् च तिङन्त
पादः ८४४

भूते लुङ् ३।२।२०
लुङ् लङ् लृङ्
दिप् महि ३।२।८५

ह्यस्तनी दिव् महि
३।३।६

अनद्यतनेऽतीते
दिप् महि उ०
१।२५ लङ्

धीः अष्टादशशः
५२६

दुङ् महि लङ् नद्य
तने भूते तिङन्त-
पादः ६४२

अनद्यतने लङ्
३।२।२१, लुङ् लङ्
लृङ् दिप् महि
३।२।८५

एक-द्वि-त्रिमात्रा
ह्रस्व दीर्घ प्लुताः
१।१।५

ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतभेदा
सवर्णाः पू १।२
दूरादाह्वाने च टेः
प्लुतः पू० ४।५

प्लु—आ वत् स्कः
र्घ प्लु (५)

प्लुतः वग्यस्वरौ
सजातीयैः सवर्णौ
१।१।१५ इत्यस्य वृत्तौ

लुक् चिह्नार्थस्य
सुवन्तपादः १

लुक्—न लुक् लुक् लुक्
प्रत्यये तल्लक्षणं
कार्यमङ्गस्य १।१।३३

संज्ञाशब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६५

१	२ (संज्ञा विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
यादवाः १।३२	वर्गाणां प्रथम द्वितीय वर्णाः शष साश्च	खर् शिवसूत्राणि ११-१३	अघोषः वर्गाणां प्रथम द्वितीयाः शषसाश्चाघोषाः १।१।११	खर् प्रत्याहार सूत्राणि १०-१२

युवाः ७।२६६ पित्रादौ जीवति पीत्रादेरपत्यम्
ज्येष्ठभ्रातरि जीवति कनिष्ठश्च ।

राधा २।६३ आप् प्रत्ययान्तः स्त्रीलिङ्ग शब्दः
आ श्रद्धा २।१।१०

शमः १।३७ वर्णस्वरूपमात्रस्य वाचकः तत्परस्तत्कालस्य ता तत्कालः
श्रीरामचन्द्रस्यैकपरिग्रहता १।१।७० १।१।३
ख्यातेरेतत्संज्ञासिद्धिः ।

रामकृष्णः द्वन्द्वसमासः चार्थे द्वन्द्वः द्वन्द्व समुच्चयो चार्थे २।२।४८
६।२, १।१७ २।२।२६ नाम्नोर्वहूनां वापि यो भवेत् २।५।११

रामधातुकाः कृष्णधातुक भिन्नप्रत्यया अधोक्षज आर्धधातुकं
३।२३ कामपाल बालकलिक कल्कयजित शेषः ३।४।११४
नामानः पञ्च लकाराश्च (लिट्, आशीलिङ् लुट् लृट् लङ्)

लक्ष्मीः २।६ स्त्रीलिङ्गः शब्द

वामनः एकात्मक वर्णानां पूर्वपूर्वो वर्णः ह्रस्वो ऊकालोऽज् ह्रस्व पूर्वो ह्रस्वः
१।५, ७६ लघुश्च दीर्घ प्लुतः १।२। १।१।५
२७ ह्रस्वं लघु १।४।१०

वासुदेवः सजातीय विजातीयानेकाधि-
३।२ कारस्य व्यापी अधिकारः ।

विग्रहः ६।५ समासवाक्यम्

विधाताः आशीः प्रेरणाद्यर्थेषु धातोः परं लोट् च आशिषि पञ्चमी ३।१।२६ लोट् १।३।१६२
३।५ प्रयुज्यमानाः तुवादयोऽष्टादश लिङ् लोटौ ३।३।
विभक्तयः—तुप् ताम् अन्तु, हि तम्
त, आनिप् आवप् आमप् । ताम्
आताम् अन्ताम्, स्व आथाम् ध्वम्, ऐप्
आवहैप् आमहैप् इति—लोट्

६ (सिद्धहेम)	७ (सारस्वत)	८ (मुग्धबोध)	९ (सक्षितसार)	१० (सुपद्य)
आद्य द्वितीय शेषसा अघोषाः १।१।१३		खस् (३)		खर् खय् शरी १।१।१० जीवति वंश्ये युवाऽग्रजेऽपि ५।२।११६

कारग्रहणे केवलग्रहणम् चपोदिकाऽकाऽनिता तापर करणं तावन्मात्रार्थम् णः (७) पू० संज्ञा प्रकरणम्	कारग्रहणे केवलग्रहणम् चपोदिकाऽकाऽनिता तापर करणं तावन्मात्रार्थम् णः (७) पू० संज्ञा प्रकरणम्	च—भिन्नान्यैकार्थं द्वन्द्वोऽन्योऽन्य- च ह य ष ग वाः योगे समास- ३१८ पादः १२१	चार्थे द्वन्द्वः सहेतो ३।१।११७	चार्थे द्वन्द्वः ४।३।७७
---	---	--	-----------------------------------	----------------------------

शेषमलुङाद्ध-
धातुकम्
३।२।१८

एक द्वि त्रिमात्रा ह्रस्व दीर्घ प्लुताः १।१।५	ह्रस्व दीर्घ प्लुतभेदाः सवर्णाः पू० १।२ असंयोगादि परो ह्रस्वो लघुः पू० १।२०	आ वत् स्व-र्ध प्लु (५) घु—स्वर्धौ घुरु ५३६	गौ घटादेर्ह्रस्वः सन्धिपादः १३	ह्रस्वो लघुः १।१।१६
--	--	--	-----------------------------------	------------------------

अन्वययोग्याथ समपकः पद समुदायो विग्रहो वाक्यम् पू० १८।१ इत्यस्य वृत्तौ	आशीः प्रेरणयोस्तुप् आमहैप् उ० १२२	गी—अष्टादशशः ५२६	तुङ् डामहै लोट् इच्छार्थं लोङ् विध्यादी विभिसंप्रश्न तिङन्तपादः प्रार्थने च लिङ् ६२० लोटो ३।२।६४ आशिषि लोङ् लोटो ३।२।७२ लोटस्तुप् आमहैप् ३।२।८०
---	--------------------------------------	---------------------	--

संज्ञाशब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६७

१	२ (संज्ञा विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
विधिः ३।४	विधि सम्भावनाद्यर्थेषु धातोः परं प्रयुज्यमानाः यादादयोऽष्टादश विभक्तयः—यात् याताम् युस्, यास् यातम् यात, याम् याव याम । ईत ईयाताम् ईरन्, ईथास् ईयाथाम् ईध्वम्, ईय ईवहि ईमहि इति—विधिलिङ्	विधि निमन्त्रणामन्त्रणा धीष्ट संप्रश्न प्रार्थनेषु लिङ् ३।३।१६१	सप्तमी ३।१।२५	उताप्योर्वाढार्थे लिङ् विधि संप्रश्न प्रार्थनेषु १।३।११७, १२१
विभुः ३।२	अवान्तरानेकाधिकारव्यापी अधिकारः			
विभुः ३।५।११	नामधातुः ।			
विरिञ्चिः	आदेशः । विरिञ्चिर्ब्रह्मा यथैकं वस्तुपादाय १।३६, ४७ अन्यत् करोति तथास्य विधेः प्रवर्त्तमानत्वादेतत्संज्ञासिद्धिः ।			
विष्णुः १।४०	आगमः । विष्णुर्यथा मध्यतः स्वयमाधिर्भूय पोषको भवति तथास्य विधेः प्रवर्त्तमानत्वादेतत्संज्ञासिद्धिः ।		आगम उदनुबन्धः स्वरादन्त्यात् परः २।१।६	
विष्णुकृत्वाः	विध्याद्यर्थेषु भाव वाच्ये कर्म वाच्ये ४।६०, ५।१४६ च धातोः परं प्रयुज्यमानाः तव्यानीय यत् क्यप् ण्यत् केलिमाः कृत् प्रत्ययाः ।	कृत्याः ३।१।६५	ते कृत्याः ४।२।४६	तव्यानीयर् केलिमरः १।१।१०५
विष्णुगणाः १।२०	अ वर्जिता वर्गीय वर्णाः ।	मय् शिवसूत्राणि ७-१२		मय् प्रत्याहार सूत्राणि ६।११
विष्णुचक्रम् १।१४	विन्दुस्वरूपो वर्णः, अनुस्वारः ।		अं इत्यनुस्वारः १।१।१६	
विष्णुचापः १।१५	अर्द्धचन्द्राकृतिनासिकाभवो वर्णः चन्द्रविन्दुः ।			
विष्णुजनाः १।१७	ककारादयो हकारान्ता वर्णाः व्यञ्जनवर्णाः । विष्णोः सर्व- व्यापकतया सर्वेश्वरस्य जना इव स्वरवर्णानामधीना ।	हल् शिवसूत्राणि कादीनि व्यञ्जनानि ५।१४ १।१।६		हल् प्रत्याहार सूत्राणि ५-१३
विष्णुदासाः १।२६	अनुनासिक पञ्चम वर्णैः (ङ अ ण न म) वर्जिता वर्गीय वर्णाः —क ख ग घ, च छ ज झ, ट ठ ड ढ, त थ द ध, प फ ब भ, इति	भय् शिव सूत्राणि ६-१२		भय् प्रत्याहार सूत्राणि ७।११
विष्णुनिष्ठा ४।४४, ५।२७	अतीतादिकालेषु धातोः परं प्रयुज्यमानो भाव कर्म वाच्ये क्तः कर्त्तृवाच्ये क्तवतुश्च ।	क्त क्तवतु निष्ठा १।१।२६	निष्ठा ४।३।६३	क्तवतुः भावा- प्ययोः क्तः १।२।६६-६७
विष्णुपदम् २।७	विभक्तिसिद्धं नाम्नो धातोर्वा रूपम् ।	सुप् तिङन्तं पदम् १।४।१४	पूर्वपरयोरर्थोप- लब्धौ पदम् १।१।२०	

६८

संज्ञा-शब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६ (सिद्धहेम)

७ (सारस्वत)

८ (मुग्धबोध)

९ (संक्षिप्तसार)

१० (सुपद्म)

सप्तमी यात्—ईमहि

३।३।७

खी—अष्टादशशः

५२६

यात्—ईमहि

लिङ् लोटर्थे

तिङन्तपादः

६६३

लिङ्—लिङाशसार्थः

३।२।४१ इच्छार्थे

विधिसप्रश्न प्रार्थने च

लिङ् लोटौ ३।२।६४

लिङो यात्—ईमहि

३।२।८६

नामधातुश्च बहुलम्

सन्धिपादः १०

आदेशः—शत्रुवदादेशः

पू० १।१३

आगमः—मित्रवदागमः

पू० १।२

ल्यः—ते ल्याः

शक्यार्ह्यं प्रेष्यानुज्ञा

प्राप्तकाले वा ६८६

कृत्याः प्राङ्

णकात् ४।१।८

णप् (३)

अं अः अनुस्वार विसर्गौ

१।१।६

वर्णशिरोविन्दुरनुस्वारः

पू० १।२५

नु—अं अः

नुवी १६

अपदान्तस्य शादाव अं डमोऽनुना

नुस्वारः सन्धिपादः सिकाः

१३४

१।१।१४

मुखनासिकाभ्यामुच्चार्यमाणो

वर्णोऽनुनासिकः

पू० १।२२

कादिर्यञ्जनम्

१।१।१०

हसा व्यञ्जनानि

पू० १।७

हस् (३)

झप् (३)

अचोऽन्ये हल्

१।१।२

झय् वर्गोऽडम्

१।१।७

तदन्तं पादम्

१।१।२०

विभक्त्यन्तं पदम्

पू० ७।१

द—क्त्यन्तान्यो

दली १४

क्त-क्तवतु निष्ठा

३।२।१६

सुप्तिङन्तं पदम्

२।३।१

संज्ञा-शब्दानाञ्च-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६६

१	२ (संज्ञा-विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
विष्णुभक्तिः २११	स्वादि-तिवादि विभक्तिः	विभक्तिश्च ११४१०४	तस्मात् परा विभक्तयः २११२	
विष्णुवर्गाः १११६	ककारादयो मकारान्त व्यञ्जनवर्गाः पञ्च पञ्च एतत्संज्ञाः, वर्ग-संज्ञाश्च ।	अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः १११६६	ते वर्गाः पञ्च पञ्च ११११०	उता सवर्गः १११२
विष्णुसर्गः १११६	विन्दुदयाकारो वर्णः विसर्गः ।		अः इति विसर्जनीयः ११११६	
वृष्णिः २१३३	ङ् इत् स्वादिप्रत्ययः ।			
वृष्णीन्द्रः २१४३	वृद्धिः—अ द्वयस्य आ, इ द्वयस्य ऐ, उ द्वयस्य औ, ऋ द्वयस्य आर्, लृ द्वयस्य आल्, ए ओ स्थाने ऐ औ च	वृद्धिरादेच् १११११		
वैदिकाः २१५	चन्द्रविन्दु युक्ता अ कारादि विशेषवर्णाः			
वैष्णवाः ११३०	अनुनासिक वर्ण पञ्चक वज्जिता वर्गीय भल् शिवसूत्राणि वर्णाः श ष स हाश्च—क ख ग घ, च छ ज झ, ट ठ ड ढ, त थ द ध, प फ ब भ, श ष स ह इति ।	धुङ् व्यञ्जनमनन्तः झल् प्रत्याहार स्थानुनासिकम् २११३	सूत्राणि ७-१३	
शिवः ३११८	श् इत् आख्यात प्रत्ययः	अनेकाल् शित् सर्वस्य १११५५	सिदनेकाल् सर्वस्य ११११२	
शौरिः ११२६	श ष स	शर् शिवसूत्रम् १३	शर् प्रत्याहार सूत्रम् १२	
श्यामरामः ६१२, ६	कर्मधारय समासः ।	तत्पुरुष समाना पदे तुल्याधिकरणे धिकरणः कर्म विज्ञेयः कर्म धारयः ११२४२ धारयः २१५५	विशेषण मेकार्थेन २१२१८	
संसारः ११७५, २१३८	शब्दस्य अन्त्य स्वरादारभ्य शेषांशः	अचोऽन्त्यादि टि १११६४		
सङ्कर्षणः ३१२४४	पर स्वरवर्णेन सहितं य व र कार स्थाने क्रमेण इ उ ऋ कागदेशः सम्प्रसारणम्	इगु यणः सम्प्र सारणम् १११४५		
सत्सङ्गः ११८२	मिथः संलग्नो व्यञ्जनवर्णः	हलोऽनन्तराः संयोगः १११७		
समासः ६१३	अन्तर्भिन्नपदत्वेऽप्येव नामत्वेन	समर्थः पदविधिः २१११	नाम्नां समासो युक्तार्थः २१५१	समासः सुप् सुपैकार्थम् २१२११ इत्यस्य वृत्तौ

६ (सिद्धहेम)	७ (सारस्वत)	८ (मुग्धबोध)	९ (संक्षिप्तसार)	१० (सुपद्म)
स्त्यादिविभक्तिः १।१।१६		क्तिः— सित्यादिः क्तिः १२		उदिद् ह्रस्वश्च सवर्णेनाप्रत्ययो ऽतपरः १।१।१६
पञ्चको वर्गः १।१।१२	कु चु टु तु पु वर्गाः पू० १।१५	चपोदिताऽकाऽनिता र्णाः ७		ख्यादिर्द्वयं वर्गस्य १।१।३ इत्यस्य वृत्तौ
अं अः अनुस्वार विसर्गो १।१।६	अः त्रिति विसर्जनीयः पू० १।२४	विः—अं अः नुवी १६	स्रोविसर्गोऽकस्कादेः सन्धिपादः १३८	
		ङिन्—ङिदपिद्रः ५३२	ङिन्—ङिदपिल्लुङ् सार्वधातुके ३।२।१	
वृद्धिरारैदौत् ३।३।१	आरं ओ वृद्धिः पू० १।१७	त्रिः—अच आरालैज् त्रिः ६	वृद्धिरादैजागलैचोऽ- ङः सन्धिपादः १	वृद्धिरादैजारा- लोऽक ऐ जे चश्च १।१।२१
अपञ्चमान्तःस्थो धुट् १।१।११				ङम् यण् हीनो झल् १।१।१२
एताः शितः ३।३।१०				
	शस् ३			शषसाः शश् १।१।६
	कर्मधारयस्तुल्यार्थे पू० १।८।२५	य ३१८	विशेषणस्य विशेष्यैः कर्मधारयः समास पादः ८६	विशेषणमेकार्थेन कर्मधारयो बहुलम् ४।३।५८
	टिः—अन्त्यस्वरादिष्टि पू० १।१८	टिः अन्त्याजादिष्टिः ६२		अचोऽन्त्यादि टिः १।१।३०
		जिः—यलोऽचेग् जिः ५३५		
	स्वरानन्तरिता हसा संयोगः पू० १।१४	स्यः हसोऽनन्तरः स्यः ६५		हलो लग्नाः सं योगः १।१।२०
नाम नाम्नैकार्थे समासो बहुलम् ३।१।१८	समासश्चान्वये नाम्नाम् पू० १।८।१	सः देवयं सोऽन्वये ३१७	समासोऽनेक- पदस्यैक पदवत्ता समासपादः १	समर्थानां समासः ४।३।१

संज्ञाशब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

१०१

१	२ (संज्ञा विवरणानि)	३ (पाणिनि)	४ (कलाप)	५ (चान्द्र)
सम्प्रदानम् ४।८८	प्रदेयाभिसम्बध्यमानं कारकम् ।	कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् १।४।३२	यस्मै दित्सा रोचते धारयते वा तत् सम्प्रदानम् २।४।१०	सम्प्रदाने चतुर्थी २।१।७३
सर्वेश्वराः १।२	वर्णक्रमे आदौ चतुर्दशः वर्णः, स्वरवर्णाः । कादि व्यञ्जन वर्णानामुच्चारणं स्वतन्त्रोच्चारणानामेषा मधीनमिति सर्वेश्वर-संज्ञा सिद्धिः ।	अच शिवसूत्राणि १-४	तत्र चतुर्दशदौ स्वराः १।१।२	अच् प्रत्याहार सूत्राणि १-४
सात्वताः १।३३	वर्णाणां प्रथम द्वितीय वर्णाः—क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ इति ।	खय् शिवसूत्रे ११-१२		खय् प्रत्याहार सूत्रे १०-११
सिद्धोपदेशाः २।५	धातुप्रत्ययगमाः ।			
स्मरहरः ७।३६३	लुप् ।	लुप्—लुपि युक्त बद्धचक्ति वचने १।२।५१		
हरः १।४१	अदर्शनमात्रहेतुलोपः हरो यथा नाशहेतुर्भवति तथास्य विधेः प्रवर्तमानत्वादेतत्संज्ञासिद्धिः ।	अदर्शनं लोपः १।१।६०		
हरिः २।३०	इ उ कारान्तः पुंलिङ्ग शब्दः ।	घिः—शेषो घ्य सखि १।४।७	अग्निः—इदुदग्निः २।१।८	
हरिकमलानि १।२१	वर्णाणां प्रथमवर्णाः—क च ट त प इति ।	चय् शिवसूत्रे ११-१२		चय् प्रत्याहारसूत्रे १०-११
हरिखड्गाः १।२२	वर्णाणां द्वितीय वर्णाः— ख छ ठ थ फ इति ।			
हरिगदाः १।२३	वर्णाणां तृतीय वर्णाः ग ज ड द ब इति ।	जश् शिवसूत्रम् १०		जश् प्रत्याहार सूत्रम् ६
हरिगोत्राणि १।२८	श ष स हाः ।	शल् शिवसूत्रे १३-१४	उष्माणः शषसहाः १।१।१५	शल् प्रत्याहार सूत्रे १२-१३
हरिघोषाः १।२४	वर्णाणां चतुर्थ वर्णाः—घ भ ढ ध भ इति ।	झष् शिवसूत्रे ८-९		झष् प्रत्याहार सूत्रे ७-८
हरिमित्राणि १।२७	य र ल वाः ।	यण् शिवसूत्रे ५-६	अन्तस्था यरलवाः १।१।१४	यण् प्रत्याहार सूत्रम् ५
हरिवेणवः १।२५	वर्णाणां पञ्चम वर्णाः—ङ ञ ण न म इति ।	अम् शिवसूत्रम् ७	अनुनासिका ङ ञ ण न माः १।१।१३	अम् प्रत्याहार सूत्रम् ६

१०२

संज्ञाशब्दानां-तारतम्य-प्रदर्शकं सूचीपत्रम्

६ (सिद्धहेम)

७ (सारस्वत)

८ (मुग्धबोध)

९ (संक्षिप्तसार)

१० (सुपक्ष)

कर्मभिप्रेयः सम्प्रदानम्
२।२।२५

दानपात्रे सम्प्रदान कारके
चतुर्थी पू १७।७ इत्यस्य
वृत्तौ

भः—यस्मै दित्सा प्रदालप्
सुया क्रोधेर्ष्या रुचि- सम्प्रदानम्
द्रोह स्था हनु श्लाघ कारकपादः
स्पृहि शप्राधीक्षा- १७

प्रदानाभिसम्बध्य
मानं सम्प्रदानम्
२।१।२२

प्रतिशु प्रत्यनु गृ-
धार्यार्थी भं ची
तादर्थ्ये च २६४

अौदन्ताः स्वराः
१।१।४

अ इ उ ऋ लृ समानाः
ए ऐ ओ औ सन्ध्यक्षराणि
उभये स्वराः पू १।१।१ ३, ४

अच् (३)

अच् सन्धिपादः १ अच् १।१।१

खप् (३)

खय् खयादिद्वयं
वर्गस्य १।१।३

न लुक् लुका लुप्ते
प्रत्यये तल्लक्षणं
कार्यमङ्गस्य
१।१।३३

वर्णादर्शनं लोपः पू० १।१०

उदितो घिः सख्य
समास पतिवज्ज्यम्
२।३।७

चप् (३)

खथ् (३)

जव् (३)

तृतीयो जश् १।१।४

झम् (३)

यल् (३)

तुर्थो झप् १।१।६

यवरल यण् १।१।६

यवरलवा अन्तःस्थाः
१।१।१५

ञम् (३)

ङम् पञ्चमः १।१।६

अं ङमोऽनुनासिकाः
१।१।१४

श्लोक-सूची

[दक्षिणपार्श्वस्थित-संख्या प्रकरणश्लोकाङ्कनिर्देशिका, म—ग्रन्थारम्भे मङ्गलाचरणम्, उप—उपसंहारः]

अत्रालेखि तदिच्छा	उप ६	चान्द्रं दुःखेन	उप ३	यदत्र व्यक्तमुक्तं	उप २
अपाधानाधि-	४।१	चान्द्रं सौख्येन	उप ४	यदिदं सन्धि	१।१
अपि तु महा	उप १	छान्दसा प्रचरद्रूप	उप ६	लिखितुं ते न	१।७५
अर्द्धर्चादि	१।१	ज्ञेयं शोध्यञ्च	उप २	वृन्दावनस्थ जीवस्य	उप ५
आहतजल्पित	म २	तत्पुरुषः	६।२	व्याकरणे मरु	म ३
इतीव स्मारकं	६।१	तस्य विष्णोः	२।१	सबहुव्रीहि	६।२
इयं मे तद्धित	७।१	तेन मे कृष्ण	१।१	सारप्रत्यागि सारस्वत	उप ३
उभयत्र च मम	उप ७	त्वरितं वितरे	म १	सारश्रीसारि सारस्वत	उप ४
कृत् स एवेति	५।१	धातुं सर्व्व	५।१	सारस्वत प्रक्रियायां	१।७५
कृष्णत्वाकृत	उप १	पानीयं पाणिनीयं	उप ४	हरिनामामृत	म ३
कृष्णमुपा	म १	प्रवर्त्तन्ते क्रियाः	३।१	हरिनामामृतसंज्ञं	उप ७
कृष्णस्य विग्रहे	६।१	भगवन्नामवलिता	उप ५	हरिनामावलि	म २
गोविन्दं विन्दतीं	उप ४	य एकः	२।१	हरेस्तस्यैव	३।१
गोविन्दं विन्दमानां	उप ३	यः कर्त्ता	४।१	हानीयं पाणिनीयं	उप ३

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणे

श्लोकसूत्रसमष्टि निर्णयः

	श्लोकसंख्या	सूत्रसंख्या
मङ्गलाचरणम्	४	
१। संज्ञासन्धिप्रकरणम्	६	१४७
२। विष्णुपदप्रकरणम्	१४	२१८
३। आख्यातप्रकरणम्	१६	५८६
४। कारकप्रकरणम्	१४	२७५
५। कृदन्तप्रकरणम्	४	४६६
६। समासप्रकरणम्	६	३७३
७। तद्धितप्रकरणम्	४	११२७
ग्रन्थोपसंहारः	७	

श्लोक-समष्टिः— ८४

सूत्र-समष्टिः— ३१६२

साङ्केतिक-चिह्नानि

स० प्र०—संज्ञा-सन्धिप्रकरणम्
वि० प्र०—विष्णुपदप्रकरणम्
आ० प्र०—आख्यातप्रकरणम्
का० प्र०—कारकप्रकरणम्

कृ० प्र०—कृदन्तप्रकरणम्
समा० प्र०—समासप्रकरणम्
त० प्र०—तद्धितप्रकरणम्
पा—पाणिनीयं व्याकरणम्

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य

उद्धृत-पद्यपद्यांशसूची

पद्यप्रतीकम्	आकरः	छन्दः	प्रकरणसूत्रसंख्या
अजिग्रहतं	भट्टिकाव्यम् २।४२	उपेन्द्रवज्रा	४।३०
अतम तपो नरः		हरिणी वृत्तांशः	४।२३
अतैलपूराः	कुमारसम्भवम् १।१०	उपेन्द्रवज्रा	७।१०६६
अद्रिः सुतां	कुमारसम्भवम् १।४२	उपजातिः	४।३०
अनङ्गमानभङ्गुरम्		प्रमाणिका	५।३४३
अन्धायास्त	काशिका २।३।१७	अनुष्टुप्	४।३५
अन्यच्च किञ्चिद्		अनुष्टुप्	४।२१०
अपश्यती वनम्	पाणिनिमुनेः काव्यम्	उपजातिः (ऋद्धिः)	५।१७
अपि स्येत् पर्वतं सिंहः		अनुष्टुप्	३।५६६
अथाचितारं न	कुमारसम्भवम् १।५२	उपजातिः	४।३०
अविवेकः	किराताज्जुनीयम् २।३०	वियोगिनी (सुन्दरी)	३।४२२
अशेषाघहरं	श्रीमद्भागवतम् ६।२।१४	अनुष्टुप्	१। [४]
अश्मानं दृषदं	काशिका २।३।१७	अनुष्टुप्	४।३५
अहो भाग्यं भाग्यम्		शिखरिणी वृत्तांशः	६।३६६
अहो भाग्यमहो	श्रीमद्भागवतम् १०।१।४।३२	अनुष्टुप्	६।३६६
अहोरात्रैश्चतुःषष्ट्या		अनुष्टुप्	४।१०६
आः कष्टं	भट्टिकाव्यम् ६।११	अनुष्टुप्	२।७५
आकालिकीं वीक्ष्य	कुमारसम्भवम् ३।३४	इन्द्रवज्रा	७।८२७
आखूतथशलभां तथादि	शब्दार्णवः	अनुष्टुप्	५।२२०
आतिष्ठद्गु	भट्टिकाव्यम् ४।१४	अनुष्टुप्	६।१७८
आत्मनेऽपि द्वयम्	आख्यातचन्द्रिका	अनुष्टुप्	३।३५
आदत्तो मृत्तिकां कृष्णो		अनुष्टुप्	४।२१०
आराद् दूरसमीपयोः	अमरकोषः ३।३।२४२	अनुष्टुप्	४।१२३
आवेदयन्तः	भट्टिकाव्यम् ३।४६	इन्द्रवज्रा	५।१३४
इदानीं दुःख		अनुष्टुप्	१।८६
इयेष सा	कुमारसम्भवम् ५।२	वंशस्थविलम्	७।८६
ईक्षितव्यं	भट्टिकाव्यम् ८।७६	अनुष्टुप्	४।६५
उचितं रचयामि देवि ते		वियोगिनी वृत्तांशः	२।२०६
उद्गच्छति च भास्करः	भट्टिकाव्यम् १८।१६	अनुष्टुप्	२।११६
उद्भासीनि	भट्टिकाव्यम् ६।७५	अनुष्टुप्	५।३०६
उपतिष्ठे सरस्वतीम्	अनर्घराघवनाटकम् १।११	"	६।५२
उपत्यका	अमरकोषः ३।३।७	"	७।८८२
उपयुपरि बुद्धीनां		"	४।११०
उपलम्भ्यामपश्यन्तः	भट्टिकाव्यम् ७।६२	"	७।३६८
उपायंसत		"	४।२५१
एकैकशो		"	६।३६३
एति जीवन्तमानन्दः		"	४।६४

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य उद्धृत-पद्य-पद्यांश-सूची

१०५

पद्यप्रतीकम्	आकरः	छन्दः	प्रकरणसूत्रसंख्या
एवोपम्येऽवधारणे	विश्वप्रकाशः २।६३	अनुष्टुप्	६।२६६
कदध्वा कापथः	अमरकोषः २।३।७	"	६।१४३
करीन्द्रदर्पच्छिदुरो		उपेन्द्रवज्रा	५।३४५
कर्णजाह्निलोचना	भट्टिकाव्यम् ४।१६	अनुष्टुप्	७।८७३
कार्त्स्न्येन भजति प्रियाम्		"	४।११४
काशाञ्चक्रे पुरी	भाषावृत्तिः	"	३।२३८
किं व्यादत्से विहग ! वदनम्		मन्दाक्रान्ता वृत्तांशः	४।२१०
किरति नयना		उपगीत आर्या	६।३४०
कृष्णैकशरणस्यास्य		अनुष्टुप्	२।२०४
कृष्णो मम च सौख्याय		"	२।२०५
कौमारीं पततां वर	भट्टिकाव्यम् ७।६२	"	७।३६८
कौस्तुभेन भगवन्तमद्राक्षीत्	अमरकोषः १।७।३	स्वागता	४।११४
क्षीरोऽवतमसं तम	शिशुपालबधम् १०।३४	अनुष्टुप्	७।१०३
क्षीवतामुपगता	शिशुपालबधम् २।७०	स्वागता	७।८६
खलुक्त्वा खलु वाचिकम्	पाणिनिमुनेः काव्यम्	अनुष्टुप्	५।७३
गतेऽर्द्धरात्रे	पाणिनिमुनेः काव्यम्	उपजातिः (ऋद्धिः)	५।१७
गज्जत्यसौ	किराताज्जुनीयम् ३।१०	उपजातिः (ऋद्धिः)	५।१७
गिरमत्युदारां		उपजाति (माया)	४।२८
गुणज्ञो ब्राह्मणो दाशः	किराताज्जुनीयम् २।३०	अनुष्टुप्	५।३८१
गुणलुब्धाः स्वयमेव	भट्टिकाव्यम् ८।७७	वियोगिनी (सुन्दरी)	३।४२२
गृणद्ध्योऽनु	नीतिशास्त्रम्	अनुष्टुप्	४।६८
गोपायकेद् घनायुषी		"	७।१०३७
गोपीवृन्देन खेलितम्		"	६।३६६
गोष्ठं गोस्थानकं	अमरकोषः २।१।१४	"	५।२२०
चञ्चत्पक्षतिभिः खगैः		"	७।८७४
चन्द्रलेखेव	भट्टिकाव्यम् ४।१६	"	७।८७४
चान्दनिकं हरेर्वपुः		"	७।८१३
चारुतामभिमता	किराताज्जुनीयम् ६।६४	स्वागता	७।८६
चालनी तितउः	अमरकोषः २।६।२६	अनुष्टुप्	२।४८
चिचेत् राम	भट्टिकाव्यम् १४।६२	"	३।७८
जगाद, मारीच	भट्टिकाव्यम् २।३२	इन्द्रवज्रा	४।२८
जन्मजन्म यदभ्यस्तम्		अनुष्टुप्	४।१०६
जलप्रायमनूपं	अमरकोषः २।१।११	"	६।३५४
तति ते नाग		"	२।४१
तपसाप्तसिद्धिम्	रावणाज्जुनीयकाव्यम् १६।२	उपजाति वृत्तांशः	६।२०४
तव हन्त कुतो भयम्	भट्टिकाव्यम् ७।६३	अनुष्टुप्	२।२०४
तस्मिन्नन्तर्धणे	भट्टिकाव्यम् ५।६४	"	५।४२७
तां प्रातिकूलिकीं		"	७।६४३

पद्यप्रतीकम्	आकरः	छन्दः	प्रकरणसूत्रसंख्या
तृणाय मत्वा	भट्टिकाव्यम् २।३६	उपजातिः	४।३५
तृणाय मन्ये		उपेन्द्रवज्रा	४।३५
तेनादुदूचयद्रामं	भट्टिकाव्यम् ५।४६	अनुष्टुप्	४।१०१
त्याजितैः फल	रघुवंशम् ४।३३	"	४।३०
त्रिभुवनविजयी		उपगीत आर्या	६।३४०
त्रिषु स्त्री	रुद्रकोषः	अनुष्टुप्	५।५६
त्वामस्मि वच्मि	साहित्यदर्पणः ४।१२	"	४।१३
त्वामेव पृच्छति हरिः		वसन्ततिलकम्	४।१५१
दरीगृहोत्सङ्ग	कुमारसम्भवम् १।१०	उपेन्द्रवज्रा	७।१०६६
दरीमुखोत्थेन	कुमारसम्भवम् १।८	उपेन्द्रवज्रा	५।२२०
दिदृक्षु मां	भट्टिकाव्यम् ८।७६	अनुष्टुप्	४।६५
देहेऽपि निस्पृहस्यास्य		"	७।६१६
द्रव्यमेव खलु सर्व्ववल्लभम्		रथोद्धता	७।१०६४
द्विषद्भूचश्चाशपं	भट्टिकाव्यम् १७।४	अनुष्टुप्	४।६६
द्वैपायनेनाभिदधे	किराताज्जुनीयम् ३।१०	उपजातिः (माया)	४।२८
धरित्रीं दुदुहुः केचित्		अनुष्टुप्	४।२६४
धातुश्चतुर्मुख		वसन्ततिलकम्	६।५२
धातुश्चतुर्मुखीकण्ठ	अनर्घराघवनाटकम् १।११	अनुष्टुप्	६।५२
धार्यरामाद	भट्टिकाव्यम् ६।८०	"	४।३७
धिगास्तां मम वीर्यस्य		"	४।११०
धृष्टता रहसि	शिशुपालबधम् १०।१७	स्वागता	७।८६
न च स्निह्यति	भट्टिकाव्यम् १८।६	अनुष्टुप्	४।१५०
नन्दनं वनम्	अमरकोषः १।१।४५	"	५।१६७
नन्दनानि मुनीन्द्राणां	भट्टिकाव्यम् ६।७३	"	५।१६७
नराः क्षीणपणा इव	भट्टिकाव्यम् ७।५८	"	५।४२१
नाथसे किमु	किराताज्जुनीयम् १३।५६	रथोद्धता	४।२१६
नित्यं प्रगल्भ	अनर्घराघवनाटकम् १।११	अनुष्टुप्	६।५२
निरीक्ष्य मेने	किराताज्जुनीयम् ४।६	वशस्थविलम्	७।८६
निश्चामभेद्या दैनेयाः		अनुष्टुप्	६।६३
नैकोऽपि तव निश्चयः		"	५।३८२
न्यक्षं कार्त्तस्य	अमरकोषः ३।३।२२५	"	४।११४
न्यक्षेण वीक्षते कृष्णम्		"	४।११४
पथः संख्या	अमरकोषः ३।५।२६	"	६।१४३
पराद्धादिव बद्धोऽसौ		"	४।१३१
परिरेभिरे	शिशुपालबधम् १३।१६	मञ्जुभाषिणी	७।३०७
पर्वताधित्यका	भट्टिकाव्यम् ५।८६	अनुष्टुप्	७।८८२
पान्तावलप	" ६।६७	"	५।२४५
पितुर्वक्त्रिकरं	" ५।६८	"	५।२४०
पुंस्यद्धौ	अमरकोषः १।२।१६	"	६।३६

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य उद्धृत-पद्य-पद्यांश-सूची

१०७

पद्यप्रतीकम्	आकरः	छन्दः	प्रकरणसूत्रसंख्या
पुत्रं मित्रवदाचरेत्	वृद्धवागवयः ७५	,,	७।८२८
पुरीं द्रक्ष्यथ काञ्चनीम्		,,	७।५८३
पुष्पमर्घ्यं पदाम्बुजे		,,	६।६३
प्रदीयतां	रामायणम्, युद्धकाण्डम् ६।२२ २३ वंशस्तविलम्		७।२५६
	महानाटकम् ६।३४		
प्रफुल्लपुण्डरीकाक्षं		अनुष्टुप्	५।४०
प्राध्वङ्कृत्य		,,	५।८७
प्राप्तौ प्राप्नोति	आख्यातचन्द्रिका (भट्टमल्ल कृता)	,,	३।३५
प्रामाद्यद् गुणिनां	भट्टिकाव्यम् १७।३६	,,	४।१५०
प्लवङ्गनखकोटिभिः		पृथ्वी	७।१७३
फलेग्रहीन्	भट्टिकाव्यम् २।३३	उपेन्द्रवज्रा	५।२४२
बद्धकोपविकृता	किराताज्जुनीयम् ६।६४	स्वागता	७।८६
बभौ बहुच्छत्र	शिथुपालवधम् १२।३३	वंशस्थविलम्	७।८६
बह्वेवं विललाप	भट्टिकाव्यम् ६।११	अनुष्टुप्	२।७५
बुभुक्षितं न		उपेन्द्रवज्रा	४।११०
भग्नवाल	शिथुपालवधम् १०।३	स्वागता	७।१६५
भर्तुं विप्रकृतापि	अभिज्ञान शकुन्तलम् ४।१८	शार्दूलविक्रीडितम्	७।८६
भवता चारुविक्रमः	भट्टिकाव्यम् ६।५१	अनुष्टुप्	५।१६०
भवती प्रसादात्		इन्द्रवज्रा वृत्तांशः	६।२५१
भवन्ति यत्नौषधयो	कुमारसम्भवम् १।१०	उपेन्द्रवज्रा	७।१०६६
भवेद् भक्तिलवाद्धरिः		अनुष्टुप्	४।१३१
भीमयुद्धा शिखण्डिनी		,,	४।१६३
भुनक्ति पृथिवीं रामः		,,	४।२५७
भोगः शरीरम्	स्मृतिः	अनुष्टुप् वृत्तांशः	७।७१४
भ्रकुं मरुच	अमरकोषः १।६।११	अनुष्टुप्	६।२४२
भ्रमरैर्भीतिभीतेन		,,	६।३६६
मखेषु मधवानसौ	भट्टिकाव्यम् १८।१६	,,	२।११६
मन्त्रो दुष्टः	प्राणिनीयशिक्षा ५२	वातोर्मि	७।११०६
मन्ये वाष्ट	काशिका २।३।१७	अनुष्टुप्	४।३५
मातृस्यो न्यायः	कामन्दकीय नीतिसारः २।४०	अनुष्टुप्	७।७५
मा भैः शशाङ्क	काव्यमीमांसा धृत पद्यम्	वसन्ततिलकम्	३।३४६
	(शीतायाः)		
मारीचमुच्चैः	भट्टिकाव्यम् २।३२	इन्द्रवज्रा	४।२८
मार्गणैरथ तव	किराताज्जुनीयम् १३।५६	रथोद्धता	४।२१६
मुखं व्यादाच्च मायया		अनुष्टुप्	४।२१०
मृमुक्षोर्धनकः कुतः		अनुष्टुप्	७।६१६
मृगस्यानुपदी	भट्टिकाव्यम् ५।५०	,,	७।६२३
मृगेन मृगलोचना	भट्टिकाव्यम् ५।४६	,,	४।१०१
यति ते नाग		,,	२।४१

पद्यप्रतीकम् यत्र तिष्ठति कंसहा	आकरः श्रीपद्यावली, ३१२ग श्रीपद्मपुराणम् (पातालखण्डे मथुरा माहात्म्ये)	छन्दः अनुष्टुप्	प्रकरणसूत्रसंख्या ५१२६६
यदङ्गनारूप यदि सरसिरुह यस्य माता याः पश्यन्ति रमणानि वनौकसाम् रामस्तव च शर्मणो लक्ष्मणं सा लघुर्बहुतृणं नरः ल्युः कर्त्तरि ल्युः कर्त्तरीमनिज् वकस्यामरवैरिणः वचने स्थित वनेचराणां वपुरन्वलिप्त वहति स्वेच्छया वाणीं भजामि वारोण रक्षः विभावरी विश्वासयुक्ते विषवृक्षोऽपि वृणते हि वृषस्यन्ति तु वैकुण्ठनाम व्यध्वो दुरध्वो व्यभिचारित्वं युक्तीनाम् व्याकोशकोकनदतां व्याददे स व्यादेहीति व्रजति हि शङ्करस्य रहसि शिष्यतां निधुवनोप शृङ्गाटकविहारिणीम् शृण्वद्भ्यः प्रतिशृण्वति श्रीयं लक्ष्मीयमित्यपि स एवमुक्त्वा संकुध्यसि मृषा	शिशुपालबधम् ३१४२ काशिका २।३।१७ भट्टिकाव्यम् ६।७३ भट्टिकाव्यम् ४।३० शिशुपालबधम् २।५० अमरकोषः ३।५।१५ अमरकोषः ३।५।१५ अमरकोषः ३।१।२४ कुमारसम्भवम् १।१० शिशुपालबधम् ६।५१ भट्टिकाव्यम् १८।१६ भट्टिकाव्यम् २।३६ पाणिनिमुनेः काव्यम् रुद्रकोषः कुमारसम्भवम् किराताज्जुनीयम् २।३० अमरकोषः २।६।६ श्रीमद्भागवतम् ६।२।१४ अमरकोषः २।१।१७ शिशुपालबधम् ४।४६ शिशुपालबधम् ११।३३ कुमारसम्भवम् ८।१७ कुमारसम्भवम् ८।१७ अनर्घराघवनाटकम् १।११ भट्टिकाव्यम् ८।७७ दुर्घटवृत्तिः रघुवंशम् ३।५२ भट्टिकाव्यम् ८।७६	उपेन्द्रवज्रा उपगीत आर्या अनुष्टुप् " " " " " " " उपेन्द्रवज्रा प्रमिताक्षरा अनुष्टुप् वसन्ततिलकम् उपजातिः उपजातिः (ऋद्धिः) अनुष्टुप् " वियोगिनी (सुन्दरी) अनुष्टुप् " " वसन्ततिलकम् अनुष्टुप् " मालिनी रथोद्धता रथोद्धता अनुष्टुप् " " वंशस्थविलम्बु अनुष्टुप्	७।८६ ६।३४० ४।३५ ५।४० ५।१६७ २।२०५ ३।५।१४ ७।१०२८ ५।१६७ ५।२१० ४।२१० ५।२१० ७।१०६६ ७।८६ २।११६ ६।५२ ४।३५ ५।१७ ५।५६ ४।५० ३।४२२ ३।५२४ १। [४] ६।१४३ ७।८६ ७।८६ ४।२१० ४।२१० ७।८६ ७।८६ ७।८६ ६।५२ ४।६७ ७।२३० २।११६ ४।६५

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य उद्धृत-पद्य-पद्यांश-सूची

१०६

पद्यप्रतीकम्	अमरः	छन्दः	प्रकरणसूत्रसंख्या
सत्यवद्यो	भट्टिकाव्यम् ५।६०	अनुष्टुप्	५।११७
स देवदारु	कुमारसम्भवम् ३।४४	उपेन्द्रवज्रा	६।११
समुद्रोपत्यका	भट्टिकाव्यम् ५।८६	अनुष्टुप्	७।८८२
समूलघातं निजघान		उपेन्द्रवज्रा	५।११४
समूलघातं न्यवधीद्	" १।२	"	५।११४
सर्वमध्यैष्ट माधवः		अनुष्टुप्	४।१०६
सर्वानुत्तरकोशलान्		"	५।८७
सहसा विदधीत	किराताज्जुनीयम् २।३०	वियोविनी (सुन्दरी)	३।४२२
साङ्केत्यं पारिहास्यं	श्रीमद्भागवतम् ६।२।१४	अनुष्टुप्	१। [४]
सा बाला	साहित्यदर्पणः १०।६०	शादूलविक्रीडितम्	४।५
सा मुमोच	कुमारसम्भवम् ८।१३	रथोद्धता	७।८६
सा लक्ष्मीरूपकुरुते	किराताज्जुनीयम् ७।२८	प्रहर्षिणी	४।१५०
सीमेव पद्मासन	भट्टिकाव्यम् १।६	इन्द्रवज्रा	६।८७
सुग्रीवो नाम	" ६।५१	अनुष्टुप्	५।१६०
सैन्याः श्रिया	शिशुपालबधम् ५।२८	वसन्ततिलकम्	७।८६
सैष कर्णो	उद्धटश्लोकः	अनुष्टुप्	१।१४१
सैष दाशरथी	"	"	१।१४१
सैष भीमो	"	"	१।१४१
सैष राजा	"	"	१।१४१
स्तोभं हेलन	श्रीमद्भागवतम् ६।२।१४	"	१। [४]
स्तुः प्रस्थः	अमरकोषः २।३।५	"	२।६३
स्यादबन्ध्यः	अमरकोषः २।४।६	"	५।२४२
स्वधर्मो रक्षसामयम्	भट्टिकाव्यम् ८।७६	"	४।६५
स्वयमतनुः		उपगीति आर्या	६।३४०
स्वो ज्ञातावात्मनि	अमरकोषः ३।३।२११	अनुष्टुप्	२।१७५
हरिं विनाङ्ग		"	१।८६
हरिमप्यमंसत	शिशुपालबधम् १५।६१	उद्गता	४।३५
हरेर्यदक्रामि	नैषधीयचरितम् १।७०	वंशस्थविलम्	३।१६०
हविर्जक्षिति	भट्टिकाव्यम् १८।१६	अनुष्टुप्	२।११६
हस्तरोधं	" ५।३२	"	५।१२६
हा देवि	ध्वन्यालोकः, काव्यप्रकाशः, शादूलविक्रीडितवृत्तांशः		४।११०
हा पितः	साहित्यदर्पणः २।१६		
हा रमणीनां	भट्टिकाव्यम् ६।११		२।७५
हिम ऋतावपि	अमरकोषोद्घाटनटीका	आर्या वृत्तांश	४।११०
हं मात	भट्टक्षीरस्वामीकृता ३।३।२५६	द्रुतविलम्बितम्	१।६२
हृदयङ्गम	शिशुपालबधम् ६।६१	अनुष्टुप्	२।७५
	भट्टिकाव्यम् ६।११	अनुष्टुप्	५।२४६
	भट्टिकाव्यम् ६।१०६		

कारिका संग्रहः

अनिदेशोऽनुवादश्च विभाषा च निपातनम् ।

एनच्चतुष्टयं ज्ञात्वा दशधा सूत्रमुच्यते ॥

—अभियुक्तोक्तिः ।

अनाश्रिते तु व्यागारे निमित्तं हेतुरिष्यते ।

आश्रितावधिभावं तु लक्षणे लक्षणं विदुः ॥

—हरिकारिका ।

अनुवाद्यमनुक्तवैव न विधेयमुदीरयेत् ।

न ह्यलब्धास्पदं किञ्चित् कुत्रचित् प्रतितिष्ठति ॥

—कुमारिलस्य तन्त्रवार्तिकम् ।

अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः ।

नकारस्य च मूर्द्धन्यस्तेन सिध्यति माणवः ।

—व्याघ्रभूतेः श्लोकवार्तिकम् ।

अपादानं सम्प्रदानं तथाधिकरणं स्मृतम् ।

करणं कर्मकर्त्तेति कारकाणि वदन्ति षट् ॥

—वैयाकरणानाम् आभाणकः ।

अपादानसम्प्रदानकरणाधारकर्मणाम् ।

कर्तुश्चान्धोन्यसन्देहे परमेकं प्रवर्तते ॥

—क्रमदीश्वरीय कारिका ।

अपादानसम्प्रदानकरणाधारकर्मणाम् ।

कर्तुश्चोभयसम्प्राप्तौ परमेव प्रवर्तते ॥

—भर्तृहरिः ।

अपाये यदुदासीनं चलं वा यदि वाऽचलम् ।

ध्रुवमेवातदावेशात्तदपादानमुच्यते ॥

—हरिकारिका ।

अप्राधान्यं विधेयत्र प्रतिषेधे प्रधानता ।

प्रसज्यप्रतिषेधोऽसौ क्रियया सह यत्र नञ् ॥

—कुमारिलस्य तन्त्रवार्तिकम् ।

अप्राप्ते प्रापणं चापि प्राप्तेर्वारणमेव वा ।

अधिकार्थविवक्षा च त्रयमेतन्निपातनात् ॥

—वैयाकरणानाम् आभाणकः ।

अल्पाक्षरमसन्धिर्गन्धं सारवद् गुढनिर्णयम् ।

निर्दोषं हेतुमत् तुल्यं सूत्रमित्युच्यते बुधैः ॥

—वाररुच श्लोकः ।

अल्पाक्षरमसन्धिर्गन्धं सारवद् विश्वतोमुखम् ।

अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ॥

—विष्णुधर्मोत्तरः ।

‘अविकारो द्रवं मूर्त्तं प्राणिस्थं स्वाङ्गमुच्यते ।

च्युतं च प्राणिनस्तत्तन्निभं च प्रतिमादिषु ॥’

‘अथी तन्त्री-तरी-लक्ष्मी-ह्री-धी श्रीणामुणादिना ।

शब्दानान्तु भवत्येषां मुलोपो न कदाचन ॥’

‘अष्टकं धातुपाठश्च गणपाठस्तथैव च ।

लिङ्गानुशासनं शिक्षा पाणिनीया अमी क्रमात् ॥’

—पाणिनीयाभानकः ।

आकृतिग्रहणा जातिलिङ्गानां च न सर्व्वभाक् ।

सकृदाख्यातनिर्ग्राह्या गोत्रं च चरणैः सह ॥

—महाभाष्यम् ।

आगमादेशयोर्मध्ये बलीयानागमो विधिः ।

—वैयाकरणानाम् आभाणकः ।

आगमोऽनुपघातेन विकारश्चोपमर्द्दनात् ।

आदेशस्तु प्रसङ्गेन लोपः सर्व्वापकर्षणात् ॥

—आपिशलीय वचनम् ।

आत्मजन्या भवेदिच्छा इच्छजन्या कृतिर्भवेत् ।

कृतिजन्या भवेच्चेष्टा क्रिया सैव निगद्यते ॥

—कौमाराणाम् आभाणकः ।

आत्मनेपदमिच्छन्ति परस्मैपदिनः क्वचित् ।

—वैयाकरणानाम् उक्तिः ।

आत्मनेपदसंप्राप्तौ परस्मै कुत्रचिद्भवेत् ।

—वैयाकरणानाम् उक्तिः ।

आदेश उपधाती यः प्रकृतेः प्रत्ययस्य वा ।

—वैयाकरणानाम् उक्तिः ।

आधारस्त्रिविधो ज्ञेयः कटाकाशतिलादिषु ।

निमित्तादिप्रभेदाच्च षड्विधः कैश्चिद्विद्यते ॥

—सारस्वतानां कारिका ।

आरम्भोऽथापि सम्बन्धः सूत्रार्थस्तद्विशेषणम् ।

चादकं परिहारश्च व्याख्या सूत्रस्य षड्विधा ॥

—विष्णुधर्मोत्तरः ।

आवश्यकत्वे नैकत्रानावश्यकतया परे ।

पदानां यत्र सम्बन्धः सोऽन्वाचय उदाहृतः ॥

—पुरुषोत्तम सम्प्रदायस्य श्लोकः ।

आसन्नं ब्रह्मणस्तस्य तपमामुत्तमं तपः ।

प्रथमं छन्दसामङ्गमाहुर्व्याकरणं बुधाः ॥

—हरिकारिका ।

‘इदमन्तु सन्निकृष्टं’, समीपतरवर्त्ति चैतदो रूपम् ।
अदमस्तु विप्रकृष्टं, तदिति परोक्षे विजानीयान् ॥’
‘इन्द्रश्चन्द्रः काणकृत्स्नापिशली शाकटायनः ।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशाब्दिकाः ॥’

—कविकल्पद्रुमे वोपदेवः ।

इह जगति संसारे पदार्थो भिद्यते द्वयम् ।
क्वचिद्व्यक्तिः क्वचिज्जातिः पाणिनेस्तूभयं मतम् ॥
—आभाणकः ।

उक्तं तिङादिनिर्दिष्टं मुख्यं कर्म द्विकर्मणाम् ।
अप्रधानं दुहादीनां ण्यन्ते कर्त्ता च कर्म यत् ॥
—सौम्य सूत्रम् ।

उक्तानुक्तदुरुक्तादिचिन्ता यत्र प्रवर्त्तते ।
तं ग्रन्थं वार्त्तिकं प्राहुर्वार्त्तिकज्ञा विपश्चितः ॥
—सुरेश्वरकृतं सम्बन्धवार्त्तिकम् ।

उक्तानुक्तदुरुक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्त्तते ।
तं ग्रन्थं वार्त्तिकं प्राहुर्वार्त्तिकज्ञा मनीषिणः ॥
—पराशरोपपुराणम् ।

उक्तानुक्तदुरुक्तानां व्यक्तिकारि तु वार्त्तिकम् ।
—हेमचन्द्रसूरिः ।
उणाद्यन्तं कृदन्तं च तद्धितान्तं समासजम् ।
शब्दानुकरणं चैव नाम पञ्चविधं स्मृतम् ॥

—गोयी चन्द्रः ।
उत्तरार्थान्वितस्वार्थव्ययपूर्वस्तु यो भवेत् ।
समासः सोऽव्ययीभावः स्त्रीपुलिङ्गविवर्जितः ।

—शब्दशक्तिप्रकाशिका ।
‘उदूढौ यत्र विद्येते यो वः प्रत्ययसन्धिजः ।
अन्नःस्थं तं विजानीयात्तदन्यो वर्ग्य उच्यते ॥’

‘उत्सर्गवशाद् धातुरनेकार्थप्रकाशकृत् ।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥’

—अभिनवशाकटायनस्य धातुपाठः ।
उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
विहागहारसंहारप्रहारप्रतिहारवत् ॥

—सारस्वतव्याकरणम् ।
उपोद्घातः पदं चैव पदार्थः पदविग्रहः ।
चालना प्रत्यवस्था च व्याख्या तन्त्रस्य षड्विधा ॥

—कौमाराणां श्लोकः ।

एकमात्रो भवेद्ध स्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो वञ्जनं चार्द्धमात्रकम् ॥

—सौवरशास्त्रीय वचनम् ।
औपश्लेषिको वैषयिकश्चाभिव्यापक एव च ।
आधारस्त्रिविधो ज्ञेयः कटाकाशतिलादिषु ॥

—पाणिनिसम्प्रदायस्य श्लोकः ।
कर्णेचुरचुराश्चैव कूपमण्डूक इत्यपि ।
कर्णेतिरिति रागेहेप्रगल्भोऽन्ये प्रयोगतः ॥

—प्रमोदजननी धृत श्लोकः ।
कर्त्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं ततः परम् ।
अपादानाधिकरणे कारकाणि भवन्ति षट् ॥

—चाङ्गसूत्रम् ।
कर्त्ता च त्रिविधो ज्ञेयः कारकाणां प्रवर्त्तकः ।
केवलो हेतुकर्त्ता च कर्मकर्त्ता तथाऽपरः ॥

—वैयाकरणानां कारिका ।
कर्त्तृकर्मधिकरणं करणं सम्प्रदानकम् ।
अपादानं च सन्देहे परं पूर्व्वेण बाध्यते ॥

—दुर्गादासोद्धृत कारिका ।
कर्मधारय आद्यः स्याद्द्विगुस्तत्पुरुषोऽपरः ।
बहुव्रीहिरथ द्वन्द्वोऽव्ययीभावः षडोरिताः ॥

—प्रयोगरत्नमाला ।
कर्मस्थः पचतेर्भावः कर्मस्था च भिदेः क्रिया ।
अस्त्यादिभावः कर्त्तृस्थः कर्त्तृस्था च गमे क्रिया ॥

—उमापतेः श्लोकः ।
कर्मस्थः पचतेर्भावः कर्मस्था च भिदेः क्रिया ।
माभासिभावः कर्त्तृस्थः कर्त्तृस्था च गमेः क्रिया ॥

—जयादित्यवचनम् ।
कारकाव्यवधानेन क्रियानिष्पत्तिकारणम् ।
यद्वै विवक्षितन्तेषु करणं तत् प्रकीर्तितम् ॥

—दौर्गटीकाधृत कारिका ।
कार्यपूर्व्वे पञ्चमी स्यात् कार्यस्थाने तु षष्ठिका ।
कार्ये तु प्रथमा वाच्या सप्तमी विषये परे ॥

—श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणम् ।
कार्यिकार्यनिमित्तानां पदानां यदुदीरणम् ।
वक्ष्यमाणार्थसंक्षेपादधिकारः स उच्यते ॥

—विल्वेश्वर धृत प्रमाणम् ।

कार्यिणा हन्यते कार्यी कार्यं कार्येण हन्यते ।
 निमित्तं च निमित्तेन तच्छेषमनुवर्तते ॥
 —वैयाकरणानां कारिका ।
 कार्यी कार्यं निमित्तं च त्रिभिः सूत्रमुदाहृतम् ।
 —वैयाकरणगोष्ठीसम्मतप्रमाणम् ।
 कालभावाध्वगन्तव्याः कर्मसंज्ञा ह्यकर्मणाम् ।
 —पाणिनीय वार्तिकम् ।
 कालभावाध्वदेशानामन्तर्भूतक्रियान्तरैः ।
 सर्वैरकर्मकैर्योगे कर्मत्वमुपजायते ॥
 —भर्तृहरेर्विषयपदीयम् ।
 कालेन यावता पाणिः पर्यति जानुमण्डले ।
 सा मात्रा कविभिः प्राक्ता ह्रस्वदीर्घप्लुता मता ॥
 —सौवर सम्प्रदायस्य श्लोकः ।
 केऽप्येषां द्योतकाः केऽपि वाचकाः केऽप्यनर्थकाः ।
 आगमा इव केऽपि स्युः संभूयार्थस्य वाचकाः ॥
 —सुपक्षमकरन्दधृत कारिका ।
 क्रमिकं यन्नामयुगमेकार्थेऽन्यार्थबोधकम् ।
 तादात्म्येन भवेदेष समासः कर्मधारयः ॥
 —शब्दशक्तिप्रकाशिका ।
 क्रियते साध्यते कर्त्रा यदाश्रित्य वदन्ति तत् ।
 करणं तद्विधा बाह्यमाभ्यन्तरमपि स्मृतम् ॥
 —कारकोल्लासः ।
 क्रियमाणं तु यत् कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति ।
 सुकरैः स्वैर्गुणैः कर्तुः कर्मकर्त्तेति तद्विदुः ॥
 —दौर्गश्लोकः ।
 क्रियाप्रकारीभूतोऽर्थः कारकं तच्च षड्विधम् ।
 कर्तृ कर्मादिभेदेन शेषः सम्बन्ध इष्यते ॥
 —शाब्दिकानाम् उक्तिः ।
 क्रियायाः परिनिष्पत्तिर्यद्व्यापारादनन्तरम् ।
 विवक्ष्यते यदा तत्र करणत्वं तदा स्मृतम् ॥
 —भर्तृहरेर्महाभाष्यदीपिका ।
 क्रियाया द्योतको नायं सम्बन्धस्य न वाचकः ।
 नापि क्रियापदाक्षेपी सम्बन्धस्य तु भेदकः ॥
 —भर्तृहरिः ।
 क्रियावाचकमाख्यातं लिङ्गतो न विशिष्यते ।
 त्रीनत्र पुरुषान् विद्यात् कालतन्तु विशिष्यते ॥
 —भगवान् शौनकः ।

क्रियावाचा माख्यातमुपसर्गो विशेषकृत् ।
 —साम्प्रदायिकोक्तिः ।
 क्रियावाचित्वमाख्यातुं प्रसिद्धोऽर्थः प्रदर्शितः ।
 प्रयोगतोऽन्ये मन्तव्या अनेकार्था हि धातवः ॥
 —वोपदेवस्य श्लोकः ।
 क्रियावाचित्वमाख्यातुमेकैकोऽर्थो निदर्शितः ।
 प्रयोगतोऽनुमन्तव्या अनेकार्था हि धातवः ॥
 —सौनागसम्प्रदायः ।
 क्रियावाचित्वमाख्यातुमेकैकोऽर्थः प्रदर्शितः ।
 प्रयोगतोऽनुगन्तव्या अनेकार्था हि धातवः ॥
 —चन्द्रगोमिनः श्लोकः ।
 क्रियाविशेषणं कर्म तन्नपुंसकमव्ययम् ।
 —पाणिनिसम्प्रदायोक्तिः ।
 क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तः क्वचिद्विभाषा
 क्वचिदन्यदेव ।
 विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुल्य
 वदन्ति ॥
 —अभियुक्तोक्तिः ।
 क्वचिदर्थे प्रादियोगे ह्यकर्मणोऽपि धातवः ।
 सकर्मणः प्रजायन्ते सतां सङ्गाज्जना इव ॥
 —प्रयोगरत्नमाला ।
 क्वचिद्भिनत्ति धात्वर्थं क्वचित्तमनुवर्तते ।
 विशिनष्टि तमोवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा ॥
 —वैयाकरणानां कारिका ।
 गुणभूतैरवयवैः समूहः क्रमजन्मनाम् ।
 बुद्ध्या प्रकल्पिताभेदः सा क्रियेत्यभिधीयते ॥
 —भर्तृहरिः ।
 गुणादिभिस्तु यद्भेद्यं तन्विशेष्यमुदाहृतम् ।
 —वैयाकरणानाम् उक्तिः ।
 गोयूथं सिंहदृष्टिश्च मण्डुकल्पुतिरेव च ।
 गङ्गास्रोतःप्रवाहश्च ह्यधिकारश्चतुर्विधः ॥
 —कौमाराणां श्लोकः ।
 घटादीनां कपालादो द्रव्येषु गुणकर्मणोः ।
 तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्तितः ॥
 —भाषापरिच्छेदः ।
 चकारबहुलो द्वन्द्वः स चासौ कर्मधारयः ।
 —वाररुचसंग्रहः ।

चत्वारि शृङ्गा स्वयो अस्य पादा,
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति,
महोदेवो मर्त्यां आविवेश ॥
—ऋग्वेदः ।

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् ।
केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्क(ण्य)लको हतः ॥
—महाभाष्यम् ।

चान्वाचये समाहारेऽप्यन्योन्यार्थे समुच्चये ।
—शाब्दिकानाम् उक्तिः ।

चाषस्त्वेकां वदेन्मात्रां द्विमात्रं वायसो वदेत् ।
त्रिमात्रं तु शिखी ब्रूयात्तकुलश्चार्द्धमात्रकम् ॥
—सौवरसम्प्रदायस्य श्लोकः ।

तत्माहश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता ।
अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थः षट् प्रकीर्त्तिताः ॥
—प्राचीनकारिका ।

तथाधिकरणं पञ्चमाभिव्यापकमीर्यते ।
औपश्लेषिकं वैषयिकं सामीप्यञ्चौत्चारिकम् ॥
—चाङ्गसूत्रम् ।

तद्गुणोऽनद्गुणश्चेति बहुव्रीहिद्विधा मतः ।
प्रथमो लम्बकर्णः स्याद्वितीया दृष्टमागरः ॥
—चाङ्गसूत्रम् ।

तद्वितार्थे समाहारे स्यादुत्तरपदे परे ।
स समासो द्विगुर्यत्र सख्या संख्येयवाचिभिः ।
—चाङ्गसूत्रम् ।

ददाति दण्डं पुरुषो महीपते-
न चात्र भक्तिर्न च दानकामना ।
यद्दीयते वासनया सुपात्रे
तत् सम्प्रदानं कथितं मुनीन्द्रैः ॥
—चन्द्रकीर्त्तिधृत-श्लोकः ।

दानपात्रं सम्प्रदानं त्रिधा तच्च निरूपितम् ।
देहीति प्रेरणात् किञ्चित् प्रेरकं याचको यथा ॥
—प्राचीनोक्तिः ।

दीपो यथा प्रभाद्वारा सर्व्वगेहप्रकाशकः ।
परिभाषा तथा बुद्ध्या सर्व्वशास्त्रोपकारिका ॥
—अभियुक्तोक्तिः ।

दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह ।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात् ।
—महाभाष्यम् ।

दुहियाचिरुधिप्रच्छिभिक्षाचित्रो
ब्रुविशासिजिदण्डिवृमन्थिवदः ।
इति चोभयकर्म दुहादि विदुः
कृषिनीवहिहृप्रभृतीति परम् ॥
—सुपद्यव्याकरणम् ।

दुहियाचिरुधिप्रच्छिभिक्षाचित्रा
मुपयोगनिमित्तमपूर्वविधौ ।
ब्रुविशासिगुरोर्न च यत् सञ्चते
तदकीर्त्तितमाचरितं कविना ॥
—व्याघ्रभूतिः ।

दुह्याच्पच्दण्ड्रुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमन्थमुषाम् ।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम् ॥
—पाणिनिसम्प्रदायस्य श्लोकः ।

दूराह्वाने च गाने च रादने च प्लुतो मतः ।
द्वन्द्वो दिगुरपि चाहं मदगेहे नित्यमव्ययीभावः ।
तत् पुरुष कर्म धारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः ॥
—उद्भटः ।

द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभावः कर्मधारय एव च ।
पञ्चमस्तु बहुव्रीहिः षष्ठस्तत्पुरुषः स्मृतः ॥
—वैयाकरणसम्प्रदायविशेषः ।

धातवस्त्रिविधा धीरैरुक्ताः केचिदकर्मकाः ।
सकर्मकाश्च कतिचित् कतिचिच्च द्विकर्मकाः ॥
—कारकोल्लासः ।

धातुः सम्बन्धमायाति पूर्वं कर्त्तादिकारकैः ।
उपसर्गादिभिः पश्चादिति कैश्चिन्निगद्यते ॥
—कौमार सम्प्रदायः ।

धातुनोक्तक्रिये नित्यं कारके कर्त्तृतेष्यते ।
व्यापारे च प्रधानत्वात् स्वतन्त्र इति चोच्यते ॥
—वाक्यपदीयम् ।

धातुसूत्रगणोणादिवाक्यलिङ्गानुशासनम् ।
आगमप्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्त्तिताः ॥
—पाणिनीय कारिका ।

धातूनामप्यनन्तत्वान्नानार्थत्वाच्च सर्व्वथा ।

अभिधातुमशक्यत्वादाख्यातख्यापनैरलम् ॥

—सारस्वत-सम्प्रदायः ।

धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थेनोपसंग्रहात् ।

प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽकर्मिका क्रिया ।

—भर्तृहरिः ।

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित्तमनुवर्त्तते ।

तमेव विशिनिष्ट्यन्तोऽनर्थकोऽन्यः प्रयुज्यते ॥

—अष्टममङ्गला ।

धात्वर्थमाश्रित्य भवन्त्युणादिका

उगाद्यधीना निगमेऽपि च स्वराः ।

अतः कृदन्तर्गतमप्युणादिकं

धातोः परं छान्दसतोऽपरं ब्रूते ॥

—प्रक्रियासर्व्वस्वः ।

धात्वर्थस्य विरुद्धार्थः प्रादिभ्यो यत्र लभ्यते ।

तत्रामी द्योतका ज्ञेया बुधैरन्यत्र वाचकाः ॥

—आख्यातमञ्जय्या दिवाकरस्य मतवादः ।

ध्रुवं न कारकं मन्ये नोपकारी भवेद्यतः ।

अपायाधारभूतोऽसौ क्रियते न च कथ्यते ॥

—अभियुक्तोक्तिः ।

नकारजावनुस्वारपञ्चमौ भलि धातुषु ।

सकारजः शकारश्चे रषाभ्यां टुस्तवर्गजः ॥

नखनक्षत्रनासत्या नवेदा नमुचिर्नपात् ।

नभ्राण् नमेरुर्नकुलनाकनक्रनपुंसकम् ॥

—वैयाकरण कारिका ।

न साधयितुमीशा ये वस्त्वन्तरमकर्मकाः ।

सत्तामात्राद्यर्थकास्ते भूवादय उदीरिताः ॥

—कारकोल्लासः ।

नाको नवेदा नकुलश्च नक्रो

नासत्या नक्षत्रं नपादो नभ्राट् ।

नपुंसकं वै नमुचिर्नखं च

नादेशमेतेषु वदन्ति धीराः ॥

—शाब्दिकानां श्लोकः ।

नित्योऽनित्यो विकल्पश्च समासः कर्तुरिच्छया ।

—वैयाकरणसम्प्रदायविशेषः ।

निपाता द्योतकाः केचित् पृथगर्थभिधायिनः ।

आगमा इव केऽपि स्युः संभूयार्थस्य वाचकाः ॥

—भर्तृहरिः ।

निपाताश्चादयो ज्ञेया उपसर्गश्च प्रादयः ।

द्योतकत्वात् क्रियायोगे लोकादवगता इमे ॥

—उद्भटः ।

निपाताश्चोपसर्गश्च धातवश्चेत्यमी त्रयः ।

अनेकार्थाः स्मृताः सर्व्वे पाठस्तेषां निदर्शनम् ॥

निरुक्ता प्रकृतिद्वेधा नामधातुप्रभेदतः ।

नामप्रकृतिकश्चैव धातुप्रकृतिकस्तथा ॥

—जगदीशः ।

निर्दिष्टविषयं किञ्चिदुपात्तविषयं तथा ।

अपेक्षितक्रियं चेति त्रिधाऽपादानमुच्यते ॥

—वाक्यपदीयम् ।

निर्द्देशः कर्म कर्णं प्रदानमपकर्षणम् ।

स्वाम्यर्थोऽथाधिकरणं विभक्त्यर्थाः प्रकीर्त्तिताः ॥

—निरुक्तवृत्तिः ।

निर्व्वर्त्यं च विचार्य्यं च प्राप्यं च त्रिविधं मतम् ।

तत्रेप्सिततमं कर्म चतुर्धाऽन्यत्तु कल्पितम् ॥

—हरिकारिका ।

पदच्छेदः पदार्थोक्तिविग्रहो वाक्ययोजना ।

आक्षेपस्य समाधानं व्याख्यानं पञ्चलक्षणम् ॥

—पराशरोपपुराणम् ।

पदान्तरेण सम्बन्धे संहतेर्यत्र मुख्यता ।

साहित्यवत् पदानां हि समाहारः स उच्यते ॥

—प्रयोगरत्नमाला ।

पात्रेसमिता आखनिकवको

मातरिपुरुष उडुम्बरमशकाः ।

पिण्डीशूरो गेहेविजिती गेहेनर्ही गेहेनर्ती ॥

—मौगधबोधसम्प्रदायः ।

पूज्यानुग्रहकाम्याभिः स्वद्रव्यस्य परार्पणम् ।

दानं तस्यार्पणस्थानं सम्प्रदानं प्रकीर्त्तितम् ॥

—प्रमोदजननीधृत-श्लोकः ।

पूर्वं निपातोपपदोपसर्गैः

सम्बन्धमासादयतीह धातुः ।

पश्चात्तु कर्त्रादिभिरेव कारकै

वदन्ति केचित्त्वपरे विपश्चिः ॥

—कौमारसम्प्रदायस्य श्लोकः ।

पूर्वमध्यान्तसव्यन्य पदप्राधान्यतः पुनः ।

प्राच्यैः पञ्चविधः प्रोक्तः समासो वाभटादिभिः ॥

—शब्दशक्तिप्रकाशिका ।

पूर्वोऽव्ययेऽव्ययीभावोऽमादौ तत्पुरुषः स्मृतः ।

चकारबहुलो द्वन्द्वः संख्यापूर्वो द्विगुः स्मृतः ॥

—पुरुषोत्तमः ।

प्रकृतान् कर्मणो यस्मान् तत्समानेषु कर्मसु ।

धर्मोपदेशो येन स्यादतिदेशः स उच्यते ॥

—मीमांसासम्प्रदायः ।

प्रकृतिं प्रत्ययं चापि यो न हन्ति स आगमः ।

—अभियुक्तोक्तिः ।

प्रकृतेः प्रत्ययस्यापि सम्बन्धो यो भवन्नपि ।

तयोरनुपधाती स्यादागमः स बुधैर्मतः ॥

—दुर्गादासोद्धृत कारिका ।

प्रकृत्यन्तः सनन्तश्च यङन्तो यङ्लुगेव च ।

ण्यन्तो ण्यन्तसनन्तश्च षड् विधो धातुरुच्यते ॥

—वैयाकरणानां कारिका ।

प्रकृत्याक्षितकार्यं स्यादन्तरङ्गमिति ध्रुवम् ।

प्रकृतेः पूर्वपूर्वं स्यादन्तरङ्गतं तथा ॥

—वैयाकरणानां श्लोकः ।

प्रतिज्ञा हेतु दृष्टान्तमुपसंहार एव च ।

तथा निगमनं चैव पञ्चावयवमिष्यते ॥

—विष्णुधर्मोत्तरः ।

प्रत्याहारो हि वर्णैकमुखीकरणमिष्यते ।

—जैनेन्द्रव्याकरणम् ।

प्रधानकर्मण्याख्येये लादीनाहुद्विकर्मणाम् ।

अप्रधाने दुहादीनां ण्यन्ते कर्तुंश्च कर्मणः ॥

—पाणिनीयवार्तिकम् ।

प्रधानत्वं विधेर्यत्र प्रतिषेधेऽप्रधानता ।

पर्युदासः स विज्ञेयो यत्रोत्तरपदेन नञ् ॥

—मीमांसावार्तिकम् ।

प्रपराऽपसमन्ववनिर्दुर्भ

व्याधिसूदतिनिप्रतिपर्यपयः ।

उपआङिति विंशतिरेष सखे

उपसर्गविधिः कथितः कविना ॥

—सुपञ्चव्याकरणम् ।

प्रपरासमन्ववनिर्दुर्व्याङ् न्यधयोऽपती

सूदभयश्च प्रतिना सह पर्युपयोरपि ।

—अभिनव-शाकटायनः ।

प्रयोजनं संशयनिर्णयौ च

व्याख्याविशेषो गुरुलाघवं च ।

कृतव्युदासोऽकृताशासनं च

सा वर्त्तिको धर्मगुणोऽष्टाकश्च ॥

—विष्णुधर्मोत्तरः ।

प्रवृत्तोपरतश्चैव वृत्ताविरत एव च ।

नित्यप्रवृत्तः सामीप्यो वर्त्तमानश्चतुर्विधः ॥

—अभियुक्तोक्तिः ।

प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च कारकाणां य ईश्वरः ।

अप्रयुक्तः प्रयुक्तो वा स कर्त्ता नाम कारकम् ॥

—सौपञ्च-सम्प्रदायः ।

प्रागन्यतः शक्तिलाभान्नद्यग्भावापादनादपि ।

तदधीनप्रवृत्तित्वात् प्रवृत्तानां निवर्त्तनात् ॥

अदृष्टत्वात् प्रतिनिधेः प्रविवेके च दर्शनात् ।

आरादप्युपकारित्वे स्वातन्त्र्यं कर्त्तुं रुच्यते ॥

—वाक्यपदीयम् ।

प्राण्यङ्गं मूर्तिमत् स्वाङ्गं विना द्रवविकारजे ।

तद्वत् प्राणिप्रतिकृतेरङ्गं स्वाङ्गमितीष्यते ॥

प्रारम्भादासामाप्लेस्तु यावन्नो नश्यति क्रिया ।

तावद्वर्त्तत इत्यस्माद्वर्त्तमान उदाहृतः ॥

—अभियुक्तोक्तिः ।

प्रेषणाध्येषणे कुर्वन्तत्समर्थानि वा चरन् ।

कर्त्तव्यं विहितां शास्त्रे हेतुसंज्ञां प्रपद्यते ॥

—वाक्यपदीयम् ।

फनव्यापारयोरेकनिष्ठतायामकर्मकः ।

धातुस्तयोर्धर्मभेदे सकर्मक उदाहृतः ॥

—भूषणकारीका ।

बहवो विषया यस्य स सामान्यविधिर्भवेत् ।

अल्पः स्याद् विषयो यस्य स विशेषविधिर्मतः ॥

—वैयाकरणानां श्लोकः ।

भवेद्वर्णगमाद्वंसः सिंहो वर्णविपर्ययात् ।

गूढोऽऽत्मा वर्णविकृतेर्वर्णनाशात् पृषोदरम् ॥

—न्यासोद्धृत-कारिका ।

भेद्यभेदकयोः श्लेषः सम्बन्धः स चतुर्विधः ।

स्वस्वामी जन्यजनकोऽवयवावयवी तथा ।

स्थान्यादेश इति प्रोक्तः ॥

—कारकोल्लासः ।

भ्वाद्यदादी जुहत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च ।

तुदादिश्च रुधादिश्च तनक्रद्यादिचुरादयः ॥

—पाणिनीय-श्लोकः ।

मधुरालपाक्षरयुतं सारवद्गूढकर्मकम् ।

हेतुमत् तथ्यवच्चित्रं षड्विधं सूत्रलक्षणम् ॥

—चान्द्रसम्प्रदायः ।

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा

—पाणिनीय शिक्षा ।

मूलधातुर्गणोक्तोऽसौ सौत्रः सूत्रैकदर्शितः ।

यागलभ्यार्थको धातुः प्रत्ययान्तः प्रकीर्तितः ॥

—जगदीशः ।

यत् कर्तुः क्रियया व्याप्यं तत् कर्म परिकीर्तितम्

—प्रयोगरत्नमाला ।

यत्रानेकं परस्यार्थं बहुव्रीहिः स उच्यते ।

—चाङ्ग-सूत्रम् ।

यदमज्जायते सद्वा जन्मना यत् प्रकाशते ।

तन्निर्वर्त्यं विकार्यं च कर्म द्वेधा व्यवस्थितम् ॥

प्रकृत्युच्छेदसम्भूतं किञ्चित् काष्ठादिभस्मवत् ।

किञ्चिद्गुणान्तरात्पत्या सुवर्णादिविकारवत् ॥

क्रियाकृतविशेषाणां सिद्धिर्यत्र न गम्यते ।

दर्शनादनुमानाद्वा तत् प्राप्यमिति कथ्यते ॥

—वाक्यपदीयम् ।

यदीयेन सुवर्थेन युतयद्वोधनक्षमः ।

यः समासस्तस्य तत्र स तत्पुरुष उच्यते ।

—शब्दशक्तिप्रकाशिका ।

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत् ।

—लौकिकोक्तिः ।

यद्विशेषणतां प्राप्य स्त्रियां पुंसि च वर्तते ।

भवेन्नपुंसके वृत्तिरुक्तपुंसकं तदुच्यते ॥

—कातन्त्रपरिशिष्टम् ।

यस्य निर्दिश्यते कार्यं स कार्यो गदितो बुधैः ।

क्रियते यत्तु तत् कार्यमादेशप्रत्ययागमैः ॥

यस्मात् परं परे यस्मिंस्तन्निमित्तं द्विधा मतम् ।

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

यावत् सिद्धमसिद्धं वा साध्यत्वेनाभिधीयते ।

आश्रितकर्मरूपत्वात् क्रियेति व्यपदिश्यते ॥

—हरिकारिका ।

येन येन स्वरूपेण या या शक्तिविवक्ष्यते ।

तेन तेन स्वरूपेण सैव शक्तिस्तु कारकम् ॥

—कौमारसम्प्रदायः ।

रामस्तत्पुरुषं प्राह बहुव्रीहिं महेश्वरः ।

रामेश्वरपदे ब्रह्मा कर्मधारयमब्रवीत् ॥

—उद्धटः ।

लक्षणवीप्सेत्यम्भूतेष्वभिभागे परिप्रती ।

अनुरेषु सहार्थं च हीन उपश्च कथ्यते ॥

—कौमारसम्प्रदायधृत-कारिका ।

लघूनि सूचितार्थानि स्वल्पाक्षरपदानि च ।

सर्वतः सारभूतानि सूत्राण्याहुर्मनीषिणः ॥

—मीमांसकसम्प्रदायः ।

लोपस्वरादेशोस्तु स्वरादेशो विधिर्बली ।

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

लौकिकव्यवहारेषु यथेष्टं चेष्टतां जनः ।

वैदिकेषु तु मार्गेषु विशेषोक्तिः प्रवर्तताम् ॥

—गणरत्नमहोदधौ वर्द्धमानोपाध्यायः ।

वर्णागमो गवेन्द्रादौ सिहे वर्णविपर्ययः ।

षोडशादौ विकारः स्याद्वर्णनाशः पृषोदरे ॥

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च

द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थतिशयेन योग-

स्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥

—काशिका ।

वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः ।

आपञ्चापि हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

वहिरङ्गविधिभ्यः स्यादन्तरङ्गविधिर्बली ।

प्रत्ययाश्रितकार्यं तु वहिरङ्गमुदाहृतम् ॥

प्रकृत्याश्रितकार्यं स्यादन्तरङ्गमिति ध्रुवम् ।

प्रकृतेः पूर्वपूर्वं स्यादन्तरङ्गतरे तथा ॥

—वैयाकरणानां कारिका ।

वाताय कपिला विद्युदातपायानिलोहिनी ।

पीता भवति सस्याय दुर्भिक्षाय सिता भवेत् ॥

—महाभाष्यम् ।

विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु ।

समस्यन्ते समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुषः स च ॥

—कातन्त्रसूत्रम् ।

विभक्तिमात्रप्रक्षेपान्निजान्तर्गतनाः सु ।

स्वार्थस्याबोधबोधाभ्यां नित्यानित्यसमासवौ ॥

—जयादित्यः ।

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते ।

एकपद्यं पदानां च स समासोऽभिधीयते ॥

—वैयाकरण-सम्प्रदायः ।

विवादे विस्मये हर्षे दैन्ये मानेऽवधारणे ।

पराक्रमे सम्भ्रमे च द्विस्त्रिरुक्तिर्न दुष्यति ॥

—आलङ्कारिक सम्प्रदायः ।

विशिष्टबुद्धिहेतुः स्यादुपश्लेषो य उच्यते ।

सः सम्बन्धः स चानेकविधिः स्वस्वामिकादिकः ॥

—कारकोल्लासः ।

विशेषणं विशेष्येणाऽप्येकार्थं यदि तद्वयम् ।

स कर्मधारयस्तस्मिन् प्रायः पूर्वं विशेषणम् ॥

—चाङ्गसूत्रम् ।

विशेष्यस्य हि यल्लिङ्गं विभक्तिवचने च ये ।

तानि तव्वीणि योज्यानि विशेषणपदेऽपि ॥

—वैयाकरण-सम्प्रदायः ।

विस्तरेणोपदिष्टानामर्थानां सूत्रभाष्ययोः ।

निबन्धो यः समासेन संग्रहं तं विदुर्बुधाः ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

व्याघ्रपुङ्गवशादूर्ध्वलसिहकण्ठीरवर्षभाः ।

वराहमहिषाकर्षपद्मकुञ्जरहस्तिनः ॥

कमलं पल्लवं नागः केशरी वृषभो हरिः ।

वृषश्चन्द्रः किशलयं कडारोऽन्ये प्रयोगतः ॥

—रामतर्कवागीशधृत कारिका ।

शब्देनोच्चार्यमाणेन यद्वस्तु प्रतिपाद्यते ।

तस्य शब्दस्य तद्वस्तु ज्ञायतामर्थसंज्ञया ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

शब्दैरेभिः प्रतीयन्ते जातिद्वयगुणक्रियाः ।

चातुर्विध्यादमूषां तु शब्द उक्तश्चतुर्विधः ॥

—दण्डी ।

शास्त्रैकदेशसंबद्धं शास्त्रकार्यान्तरे स्थितम् ।

आहुः प्रकरणं नाम ग्रन्थभेदं विपरिचितः ॥

—अभियुक्तोक्तिः ।

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।

—पाणिनीय-शिक्षा ।

शेषो गतायाः प्रहरो निशाया

आगमिनी या प्रहरश्च तस्याः ।

दिनस्य चत्वार इमे च यामाः

कालं बुधा ह्यद्यतनं वदन्ति ॥

—सौपद्य-सम्प्रदायः ।

श्रुतिमात्रेण यत्रास्य तादर्थ्यमवसीयते ।

तं मुख्यमर्थं मन्यन्ते गौणं यत्नोपपादितम् ॥

—अभियुक्तोक्तिः ।

षष्ठी सूत्रे ततः स्थाने पञ्चमी च तदुत्तरे ।

सप्तमी च परे वाच्ये गम्ये चोपपदे क्वचित् ।

—व्याघ्रभूतिः ।

षोढा समासः संक्षेपादष्टाविंशतिधा पुनः ।

नित्यानित्यत्वयोगेन लुगलुक्त्वेन च द्विधा ॥

तत्राष्टधा तत्पुरुषः षड्विधः कर्मधारयः ।

षड्विधश्च बहुव्रीहिर्द्विगुराभाषितो द्विधा ॥

द्वन्द्वश्चतुर्विधो ज्ञेयोऽव्ययीभावो द्विधा मतः ।

तेषां पुनः समासानां प्राधान्यं तच्चतुर्विधम् ॥

चकारबहुलो द्वन्द्वः स चासौ कर्मधारयः ।

यस्य येषां बहुव्रीहिः शेषस्तत्पुरुषः स्मृतः ।

—वररुचिः ।

संख्यात्वव्याप्यसामानैः शक्तिमान् प्रत्ययस्तु यः ।

सा विभक्तिर्द्विधा प्रोक्ता सुप् तिङ् चेति प्रभेदतः ॥

—शब्दशक्तिप्रकाशिका ।

संख्याशब्दयुतं नाम तदलक्ष्यार्थबोधकम् ।

अभेदेनैव यत् स्यात् स द्विगुस्त्वविधो मतः ॥

—शब्दशक्तिप्रकाशिका ।

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च ।

अतिदेशाधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ॥

—गोयीचन्द्रः ।

संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे ।

काट्यादिविद्यादनुबन्धमेकच्छास्त्रमुणादिषु ॥

—महाभाष्यम् ।

संयुतस्य हि विशिलष्टिक्रियारम्भो भवेद् यतः ।

तदेवावधिभावेन ह्युपादानमिति स्मृतम् ॥

—दुर्गसिंहधृतं श्लोकः ।

संयोग समवायश्च सम्बन्धो द्विविधः स्मृतः ।

—कारकोल्लासः ।

संस्त्यानप्रसवौ लिङ्गमास्थेयौ स्वकृतान्ततः ।

संस्त्याने स्त्यायतेर्ङ्स्त्री सूतेः सप् प्रसवे पुमान् ।

—महाभाष्यम् ।

सहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः ।

समासे चैव सा नित्या वाक्ये सा स्याद् विभाषया

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सकलेभ्यो विधिभ्यः स्याद् बली लोपविधिस्तथा ।

लोपस्वरादेशयस्तु स्वरादेशो विधिर्बली ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सत्तालज्जास्थितिजागरणं

वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।

शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्था

नैते कर्मणि धातव उक्ताः ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सत्त्ववृद्धिशुद्धिसिद्धयत्नवासरोदने

स्थानभीतिनृत्तमृत्युभासदीपजीवने ।

स्वप्नदाहशोषरोषहर्ष युद्धकम्पने

नैव कर्म चाप्नुवन्ति भावमात्रवाचकाः ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सत्त्वे निविशतेऽपैति पृथग् जातिषु दृश्यते ।

आधेयाश्चाक्रियाजश्च सोऽसत्त्वप्रकृतिगुणः ॥

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्व्वसु च विभक्तिषु ।

वचनेषु च सर्व्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

—गोपथब्राह्मणम् ।

सन्धिरेकपदे नित्यं नित्यं धातूपसर्गयोः ।

अनित्यं सूत्रनिर्द्देशेऽन्यत्र चानित्यमिष्यते ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सन्धिरेकपदे नित्यो नित्यो धातूपसर्गयोः ।

सूत्रेषु च भवेन्नित्यः सोऽन्यत्रैव विभाषितः ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायविशेषः ।

सन्ध्यभावः पौनरुत्तयं विभक्तीनां च लोपनम् ।

व्याख्येयव्याख्ययोरैक्यं सुखबोधकृते कृतम् ।

—प्रयोगरत्नमाला ।

सम्यग्यन्ते द्वितीयाद्या नामापरपदेन यत् ।

स तत्पुरुष इत्युक्तो यत्परं तत्परं बहु ॥

—चाङ्गसूत्रम् ।

समासे खलु भिन्नैव शक्तिः पङ्कजशब्दवत् ।

—भट्टोजिः ।

सम्प्रदानं तदेव स्यात् पूजानुग्रहकाम्यया ।

दीयमानेन संत्यागात् स्वामित्वं लभते यदि ॥

—चाङ्गसूत्रम् ।

सम्बन्धः कारवेभ्योऽन्यः क्रियाकारकपूर्व्वकः ।

श्रुतायामश्रुतायां वा क्रियायां सोऽभिधीयते ॥

—वाक्यपदीयम् ।

सम्बन्धस्य विवक्षायां षष्ठीत्याहुर्मनीषिणः ।

—कारकोल्लासः ।

सम्बोधनपदं यच्च तत् क्रियाया विवक्षणम् ।

व्रजानि देवदत्तेति निघातोऽत्र तथा सति ॥

—वाक्यपदीयम् ।

सम्बोधने तूशनसस्त्रिरूपं

सान्तं तथा नान्तमथाप्यदन्तम् ।

माध्यन्दिनिर्वृष्टिगुणं त्विगन्ते

नपुंसके व्याघ्रपदां वरिष्ठः ॥

—व्याघ्रभूतिः ।

सर्व्वेषां तु स्वतन्त्राणां पदानामनपेक्षया ।

क्वचित् क्रियायां सम्बन्धः समुच्चय उदाहृतः ॥

—प्रयोगरत्नमाला ।

सवाक्ये यः समासः स्यात् सः विकल्पः सुसम्मतः ।

वाक्याभारे तु नित्यं स्यादिति शब्दविदो विदुः ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सादृश्ययोग्यतावीप्सापदार्थानतिवृत्तयः ।

यथाऽर्था वाचकं तेषां सादृश्ये न यथादयः ॥

—पुरुषोत्तमः ।

सामीप्यको वैषयिक आभिव्यापक एव च ।
औपश्लेषिक इत्येवं स्यादाधारश्वतुर्विधः ॥

—अग्निपुराणम् ।

सावकाशविधिभ्यः स्याद्वली निरवकाशकः ।

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सिंहावलोकितारुच्यश्च मण्डूकप्लुतिरेव च ।

गङ्गास्रोत इति ख्यातो ह्यधिकारास्त्रयो मताः ॥

—मौग्यबोधसम्प्रदायः ।

सिद्धं साध्यं फलं चेति प्रवृत्तेर्विषयस्त्रिधा ।

तत्र सिद्धमुपादानां क्रिया साध्यं फलं सुखम् ॥

—वैयाकरणसम्प्रदायः ।

सिद्धस्याभिमुखीभावमात्रं सम्बोधनं विदुः ।

प्राप्ताभिमुख्यो ह्यर्थात्मा क्रियायां विनियुज्यते ।

सम्बोधनं न वाक्यार्थ इति वृद्धेभ्य आगमः ॥

—वाक्यपदीयम् ।

सुपां सुपा तिङा नाम्ना धातुनाथ तिङां तिङा ।

सुवन्तेनेति विज्ञेयः समासः षड्विधो बुधैः ॥

—पाणिनीय-श्लोकः ।

सूत्रं व्युदासश्च तथा तथोदाहरणं नृप ।

प्रत्युदाहरणं चैव चतुरङ्गं प्रकीर्तितम् ॥

—विष्णुधर्मोत्तरः ।

सूत्रस्थं पदमादाय पदैः सूत्रानुसारिभिः ।

स्वपदानि वर्णयन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥

—पराशरोपपुराणम् ।

सूत्रार्थश्च पदार्थश्च हेतुश्च क्रमशस्तथा ।

निरुक्तमथ विन्यासो व्याख्या योगस्य षड्विधा ॥

—विष्णुधर्मोत्तरः ।

सूत्रार्थं वर्णयते यत्र वाक्यैः सूत्रानुसारिभिः ।

स्वपदानि च वर्णयन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः ॥

—अभियुक्तोक्तिः ।

सोऽव्ययीभावो यत्र नानाविभक्तिष्वेकरूपता ।

अयं पूर्वोत्तरान्यार्थमुख्योऽव्ययं समस्यते ॥

—पुरुषोत्तमः ।

स्तनकेशवती स्त्री स्याल्लोमशः पुरुषः स्मृतः ।

उभयोरन्तरं यच्च तदभावे नपुंसकम् ।

लिङ्गात् स्त्रीपुंसयोर्ज्ञाने भ्रूकुंसे टाप् प्रसज्यते ॥

—महाभाष्यम् ।

स्तनकेशादिसम्बन्धो विशिष्टा वा स्तनादयः ।

तदुपव्यञ्जना जातिलिङ्गमेतन्निरुच्यते ॥

—श्रीपतिदत्तः ।

स्त्रीलिङ्गमपि पुलिङ्गं क्लीबलिङ्गमिति त्रिधा ।

शब्दसंस्कारसिद्धयर्थं भाषया नाम भिद्यते ॥

—जगदीशः ।

स्थानं निमित्तं वक्ता च श्रोता श्रोतृप्रयोजनम् ।

सम्बन्धाद्यभिधानं च हुचपोद्धातः स उच्यते ॥

—माठराचार्यः ।

स्यातां यदि पदे द्वे तु यदि वा स्युर्बहुन्यपि ।

तान्यन्यस्य पदस्यार्थं बहुव्रीहिविदिक् तथा ॥

—कातन्त्रसूत्रम् ।

स्युत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जरा ।

सिंहशादूर्ध्वलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थवाचकाः ॥

—अमरः ।

स्वकीयार्थविशेषाभ्यां कर्मणा साधयन्ति ये ।

द्विकर्मका अमी ते च विज्ञातव्या दुहादयः ॥

—कारकोल्लासः ।

स्वतन्त्राणां पदानां हि सापेक्षाणां परस्परे ।

योगः क्रियायां कस्याच्चिदितरेतर उच्यते ॥

—प्रयोगरत्नमाला ।

स्वल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम् ।

अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ॥

—विष्णुधर्मोत्तरः, पराशरोपपुराणश्च ।

स्वसा नप्ता च नेष्टा च त्वष्टा क्षत्ता तथैव च ।

होता प्रोता प्रशास्ता च अष्टौ स्वसादयः स्मृताः ॥

—समन्तभद्रः, दौर्गवृत्तिश्च ।

स्वस्वामी जन्यजनकोऽव्यवावयवी तथा ।

स्थान्यादेश इति प्रोक्ताः सम्बन्धाश्चोपचारतः ॥

स्वार्थो द्रव्यं च लिङ्गं च संख्या कर्म्मदिरेव च ।

अमी पञ्चैव लिङ्गार्थास्त्रयः केषाञ्चिदग्रिमाः ।

—पाणिनियसम्प्रदायः ।

स्वान्तर्निविष्टद्वित्र्यादिनामभिविग्रहात् पुनः ।

बहुव्रीहिर्बहुविधो द्विपदत्रिपदादिकः ॥

—जगदीशः ।

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य विषय-सूची

विषयाः	पत्राङ्काः
भङ्गलाचरणम्	१
[ग्रन्थप्रयोजनं, ग्रन्थफलं, भङ्गला ग्रन्थनाम-निर्देशश्च]	
१। संज्ञा-सन्धि-प्रकरणम्	२-१४
संज्ञा-प्रकरणम्	२-५
सूत्रस्य षड्विधत्वम्	५
सन्धि-प्रकरणम्	५-१४
सर्वेश्वरसन्धिः	५-६
विष्णुजनसन्धिः	१०-१२
विष्णुसर्गसन्धिः	१३-१४
२। विष्णुपद-प्रकरणम्	१५-४१
नाम नामभेदाश्च	१५
सर्वेश्वरान्ता पुरुषोत्तमलिङ्गाः	१५-२१
ग्रन्थस्थसूत्रनिर्मणपद्धतिः	१६
सर्वेश्वरान्ता लक्ष्मीलिङ्गाः	२१-२४
सर्वेश्वरान्ता ब्रह्मलिङ्गाः	२४-२६
विष्णुजनान्ताः पुरुषोत्तमलिङ्गाः	२६-३३
विष्णुजनान्ता लक्ष्मीलिङ्गाः	३३-३४
विष्णुजनान्ता ब्रह्मलिङ्गाः	३४-३५
विशेषण-लिङ्गाः	३५
[संख्यादिशब्दानां वाच्यलिङ्गता, विशेष्य-विशेषणनियमाश्च]	
कृष्णनाम-प्रकरणम्	३६-४१
अव्ययशब्दाः	४१
३। आख्यात-प्रकरणम्	४२-६१
अच्युतादि-संज्ञाः	४२-४३
भ्वादि-परपदप्रक्रिया	४३-५८
उपेन्द्राः	४४
अनिटो धातवः	५०-५१
भ्वादि-आत्मपदप्रक्रिया	५६-६०
भ्वादि-मिश्रप्रक्रिया	६१-६२
अदादिः	६३-६७
ह्लादिः	६८-६९
दिवादिः	६९-७१

विषयाः	पत्राङ्काः
स्वादिः	७१
तुदादिः	७२-७३
रुधादिः	७३
तनादिः	७४
क्रधादिः	७५
चुरादिः	७६
णि-प्रत्ययान्ताः	७७-७९
सनन्ताः	७९-८१
यङन्ताः	८१-८२
चक्राण्यः	८३-८४
विभुः	८५-८६
उपेन्द्रविधौ कश्चिद्विशेषः	८६-८९
४। कारक-प्रकरणम्	९१-११६
वचनप्रयोगविधिः, सम्बन्धः,	
कारकलक्षणञ्च	९१-९२
कर्तृकर्मणी	९३-१०१
द्विकर्मक धातवः	९६
ण्यन्तप्रयोगे कर्तृकर्मविवेकः	९७
अधिकरणम्	१०१
अपादानम्	१०२
सम्प्रदानम्	१०३-१०४
करणम्	१०४
कारकाणां परस्परसन्देहे व्यवस्था	१०४
उपपदविष्णुभक्तयः	१०५-११०
अच्युताद्यर्थाः	११०-११४
आत्मपद-परपद-प्रक्रियाविशेषौ	११४-११६
५। कृदन्त-प्रकरणम्	११६-१४८
अच्युताभाधोक्षजाभ-प्रत्ययाः	११६-१२१
विष्णुनिष्ठाः	१२१-१२४
क्त्वा-यप्	१२५-१२७
खमुण्-णम्	१२७-१२९
तुमु-णकौ	१३०
अण्-खल्-यत्-ण्यत्-यपः	१३०-१३१
केलिम-णक-तृण-अन-णिनि-	
अत्-क-श-णाः	१३२-१३५

श्रीश्रीहरिनामामृत-व्याकरणस्य विषय-सूची

१२१

विषयः	पत्राङ्काः
अत्-ट-ख-ग-खनट्-खिण्णु-खुकण्-क-	
क्विप्-सक्-ण्वि-मनिप्-क्वनिप्-	
वनिप्-वयः	१३३-१३६
असि-खस्-णिनि-क्विप्-क्वनिप्-	
अच्-ङ्-वनिप्-तृन्-इण्णु-स्तुवन्-	
णिनि-घिणुनः	१४०-१४१
णक-अन-उकण्-आकट्-आलु-क्वर-	
घुर-कुर-क्वरप्-ऊक-र-उ-कि-नजिङ्-	
आरु-वर-क्विप्-उच्-त्र-इत्राः	१४२-१४३
उणादयः	१४३-१४७
निय-ग्र-घण्-अल्-ण-घ-क्तिम्-	
अथु-न-क्ति-डाप्-इक्-शक्तिप्-	
इण्-अन्-टनाः	१४४-१४८
कृदन्ते षत्वानि	१४८

६। समास प्रकरणम्	१४८-१७२
समासप्रकारास्तत्संज्ञाश्च	१४८-१४९
श्यामरामः	१४८-१५१
दिक्कृष्णपुरुषः	१५१-१५२
त्रिरामी-कृष्णपुरुषः	१५२
नञ्कृष्णपुरुषः	१५२
द्वितीयादि-कृष्णपुरुषाः	१५२-१५४
अन्यः प्रथमप्रधानः कृष्णपुरुषः	१५४-१५५
पीताम्बरः	१५५-१५७
रामकृष्णनिर्णयस्तदादिलिङ्ग-	
निर्णयश्च	१५७-१५९
अव्ययीभावः	१५९-१६०
समासमाङ्ग्ये व्यवस्था,	
केवल समासाश्च	१६०
पूर्वपरनिपाताः	१६१
एकशेषः	१६१-१६२
अलुक् त्रिविक्रमविधिरश्च	१६२-१६४
वामनविधानं पञ्चद्व्यावश्च	१६४-१६५
सहस्र सः, ममानस्य सः,	
समासाश्रयविधिरश्च	१६६
समासे सन्धिकाट्यविशेषः	१६७
समासे षत्व-णत्व विधानम्	१६८-१६९

विषयः	पत्राङ्काः
विष्णुमर्गस्य ष स विधानम्	१६९-१७०
उत्तरपदादेशः	१७०-१७१
अपरस्पर पृषोदरादि साधुशब्दाः	१७१
द्विरुक्त प्रकरणम्	१७२
७। तद्धित-प्रकरणम्	१७३-२२६
तद्धित कार्याणि	१७३-१७७
समासान्ताः (अरामादिः)	१७७-१८२
केशवारामः	१७९-१८१
अरामः	१८१
कप्प्रत्ययो लक्ष्मीप्रकरणश्च	१८१-१८६
प्रत्ययपरिभाषा	१८६
अपत्य-गोत्रापत्यादि-तद्धिताः	१८७-१९१
रक्त-देवता समूह तद्धिताः	१९१
तदधीते वेद, दृष्टं साम, परिवृतः,	
युक्तः काल इत्यादि तद्धिताः	१९१-१९३
स्मरहर-चातुरर्थिकास्तद्धिताः	१९३-१९५
शेषार्थ-तद्धिताः	१९५-१९८
तत्र जातः, स्थितः, कालादित्यादि	१९८-१९९
तत्र भवस्तस्य व्याख्यानाञ्च, तत आगतः	
भक्तिः तेन प्रोक्तम् तस्येदमित्यादि	१९९-२०२
विकारार्थास्तद्धिताः	२०२-२०४
तेन दीव्यति, संस्कृतमित्यादि	२०४-२१३
तस्य भावे त्वतापो, इमनिर्यश्च	२१४
स्वार्थिका भवनक्षेत्राद्यर्थास्तद्धिताः	
साधुशब्दाश्च	२१५-२१६
पूरणार्था अचादयस्तद्धिताः	२१७-२१८
क-इनि-मतु-ल-प्रभृति-प्रत्ययाः	
आमयावि प्रभृति साधुशब्दाश्च	२१९-२२२
आ-आहि-घा-पाण-चर-रूप-तराम्-	
तमाम्-क-प्रभृति प्रत्ययाः	२२३-२२४
तरट् इवार्थे क-प्रभृतयः, कृत्वसुः	
मयडादयः	२२५-२२६
स्वार्थ-प्रत्ययाः, तस्-शस्-आचश्च	२२७-२२८
कृड्योगे आच्, अभूततद्भावे विः,	
सान्तिप्रयोगश्च	२२९
ग्रन्थोपसंहारः	१३०



नरेन्द्र सरोवर में सपरिकर श्रीमद्भागवती कथा श्रवणरत श्रीश्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु
प्रवक्ता—श्रील गदाधर पण्डित गोस्वामी